भोजपुरी शब्द-परिचय

[सप्रयोग]

जपुरी शब्द-परिचय

[सप्रयोग]

डॉ० श्यामकुमारी श्रीवास्तव

एम.ए. (बी.एच.यू.), डी.फिल्., डी.लिट्.

(इलाहाबाद विश्वविद्यालय)

शारदा प्रकाशन

५४२ के० एल कीडगज २११००३

संकेत-सूची

अ० क्रि०	:	अकर्मक क्रिया
अ० पु०	:	अन्यपुरुष
उ० पु०	:	उत्तम पुरुष
कहा०	:	कहावत
क्रिया वि०	:	क्रिया विशेषण
दे०	:	देखिए
प्र०	:	प्रयोग
फा०	:	फारसी
भवि०	:	भविष्यत्काल
भूत०	:	भूतकाल
भो० लो०, भोज० लोक	:	भोजपुरी-लोक पत्रिका
मुहा०	:	मुहावरा
लोको०	:	लोकोक्ति
वर्त०	:	वर्तमानकाल
विस्मयादि०	:	विस्मयादि बोधक अव्यय
संके०	:	संकेतार्थक
सम्बन्ध०	:	संबन्धबोधक अव्यय
स० क्रि०	:	सकर्मक क्रिया
समुच्चय०	:	समुच्चयबोधक अव्यय
स्त्री०	:	स्त्रीलिंग

अनुक्रमणिका

आशीर्वचन

मेरी पुरानी और प्रिय शिष्या डॉ० (श्रीमती) श्यामकुमारी श्रीवास्तव ने अपनी मातृभाषा भोजपुरी से सम्बन्धित एक बहुत अच्छा भाषा-वैज्ञानिक कार्य कर डाला है। इस विशिष्ट क्षेत्र में प्रवेश करना किसी भी विद्वान के लिए साहस का काम है। शब्द-ब्रह्म उपासक हमारे देश में बहुत कम हैं, उंगलियों की गिनती मे भी नहीं उतरते।

यह एक संदर्भ-ग्रंथ है जिसकी कद्र और उपयोगिता भोजपुरी भाषी ही नहीं, वे भी जो इस बहुत बड़ी हिन्दी बोली का व्यावहारिक परिचय पाना चाहते हैं, अथवा जो अपनी मातृ-बोली से कट गये हैं या इसे भूलते जा रहे हैं इस शब्दकोश, शब्द संग्रह या शब्द परिचय (जिस नाम से अभिहित करें) के दो-चार-छः पन्ने पलटने पर ही समझ जायेंगे और जान जायेंगे कि यह उनके लिए कितनी महत्त्वपूर्ण सौगात है। रत्न तो रत्न ही है, उसे कोई नाम दे दें। पारखी और गुणज्ञ उसका मूल्य आँक ही लेते हैं।

मेरा विश्वास है कि हिन्दी भाषा-वैज्ञानिक साहित्य में और विशेषतः हिन्दी बोलियों के वाङ्मय में इसका अपना विशेष स्थान रहेगा।

शुभकामनाएँ और आशीर्वाद।

हरदेव बाहरी

(हरदेव बाहरी)
गुरुपूर्णिमा, जुलाई १९९९

१०, दरभंगा कैसिल
इलाहाबाद-उ० प्र०
(भारत)

आत्माभिव्यक्ति

भोजपुरी माटी की बेटी होने के कारण मेरी मातृ-भाषा भोजपुरी तो रही है, किन्तु किशोरावस्था के आरम्भ अर्थात् १३-१४ वर्ष की आयु मे हमारा परिवार जब लखनऊ निवासी हुआ तो धीरे-धीरे हम उस लखनवी वातावरण में अपने को ढाल लेने के प्रयास में बोलचाल में अधिक से अधिक खडीबोली अपनाने लगे। माता पिता तो आपसी बातचीत मे अपनी लीक पर ही रहे, हाँ, बाबूजी (पिता जी) भले ही हम लोगों से यदाकदा अथवा दूसरे लोगो के सामने खड़ीबोली ही बोलते थे। परन्तु हम भाई-बहनों को ऐसा लगता था कि हम अपनी भोजपुरी बोली के कारण अपने उस परिवेश में 'फिट' नहीं हो पा रहे हैं। अत: प्रयास यही रहता था कि हम 'जेसा देस वैसा भेस' (जैसा देश वैसा वेश) के अनुसार ही अपनी हुलिया बना लें। इस प्रयास में 'माई' 'अम्मा' हो गयी (लखनऊ आने के पूर्व हम 'माँ' को 'माई' कहते थे लेकिन लखनऊ आने पर हम उसे 'अम्मा' कहने को विवश हो गये)। कुछ दिनों तक तो 'माई' को 'अम्मा' सम्बोधित करने मे बनावटीपन का एहसास होता था किन्तु कालान्तर में 'अम्मा' सम्बोधन में भी 'माई' की मधुरता आ ही गयी।

इस प्रकार जैसे-जैसे हम पश्चिम की ओर बढ़ते गये, भोजपुरियों से सम्पर्क टूटता-सा गया। मेरठ की बोली तो खड़ीबोली है ही, उसमें भी हस्तिनापुर की बोली तो विशुद्ध (ठेठ) खड़ीबोली है। वहाँ हम भोजपुरी भाषियों को 'पुरबिये' नाम से सम्बोधित करते थे और हमारी आपस की बातचीत से नितान्त अभिज्ञता प्रकट करते थे। फिर भी हमारी बोली उन्हें बहुत कोमल और मधुर लगती थी, चाहे समझ में आये या न आये। वहाँ हमें उनके साथ सम्बन्ध बनाने में, पारस्परिक विचारों का आदान-प्रदान करने में उन्हीं की बोली अपनानी पडती थी। इसलिए भी आपसी बोलचाल में हम खड़ीबोली का ही प्रयोग करने लगे।

विवाह के पश्चात् इलाहाबाद आने पर तो घर में भी मुझे भोजपुरी परिवेश नहीं मिला। फिर भी अपने को भोजपुरी प्रेम-बन्धन से मैं मुक्त नहीं कर पाई। समय-समय पर माता-पिता तथा अन्य परिजनो से मिलने पर मैं आत्मीयता वश भोजपुरी में ही बाते किया करती। उनसे खड़ीबोली बोलते समय एक विचित्र कृत्रिमता का आभास होता था इसी सन्दर्भ मे मुझे एक प्रसग याद हमारे ताऊ जी

एवं पिताजी के निधन (जो कुछ ही दिनों के अन्तराल में हुआ था) के उपरान्त अन्तिम सस्कार (दसवॉ-तेरही) के लिए जब पिता के तीनों भाइयों का विस्तृत परिवार गोरखपुर (सेमरा) में एकत्रित हुआ तो सम्पूर्ण परिवेश भोजपुरीमय होने के कारण मैं जब धड़ल्ले से भोजपुरी मे बातें करती तो मेरे ताऊ लोगों की बहुएँ अर्थात हमारी बडी भाभियॉ गद्‌गद्‌ हो जातीं। मेरी इस भोजपुरीप्रियता से प्रभावित हो एक दिन मेरी एक भौजाई ने अपना उद्‌गार प्रकट कर ही दिया—'हमार बबुनी (छोटी ननद का सम्बोधन) एतना दिन बादो आपन बोलिया ना भुलइलीं।' यह सुनते ही मैं तपाक से बोल उठी—'ए भउजी, का एतना दिन बाद हम अपने ताऊ ताई, भइया-भउजी आ भतीजवन- भतीजिअन के भुला गइलीं? त उनकर बोलिया बोलिया कइसे भुला जाइब? [ए भौजी, क्या इतने दिन बाद मैं अपने ताऊ ताई भैया भाभी, भतीजे-भजीजियों को भूल गयी? तो उनकी ही गयी बोली कैसे भूल जाऊँगी?]' मेरी बात सुनकर सभी भोजपुरीभाषी भाभियॉ बहुत प्रसन्न हुईं।

यह सब कुछ बताने का मेरा तात्पर्य यह है कि भोजपुरी से मेरा लगाव बराबर बना रहा है और विशेष रुचि मुझे भोजपुरी लोकगीतों में रही है—गाने में भी और सुनने में भी। इन गीतों में मुझे अतीव माधुर्य एवं प्रसाद का बोध बचपन से ही होता रहा है। आगे चलकर जैसे-जैसे मैं मानसिक एवं बौद्धिक स्तर पर परिपक्वता को प्राप्त होने लगी और मेरी चिन्तन प्रक्रिया बढ़ने लगी तो इन गीतों मे मैंने सास्कृतिक तत्वों का आगार पाया और इन्हें लिपिबद्ध करने के लिए मेरी लेखनी उद्यत हो उठी। उस समय तक मैं हिन्दी के भाषा वैज्ञानिक विषयों पर शोध कार्य करके डॉ. फिल्‌ तथा डी लिट्‌ की उपाधियॉ अर्जित कर चुकी थी। इन शोध-कार्यों के अतिरिक्त मेरी कुछ समीक्षात्मक रचनाएँ भी प्रकाशित हो चुकी थीं। जिससे मेरी शोधात्मक प्रकृति और भी प्रखर हो चली थी। परिणाम स्वरूप मैंने भोजपुरी लोकगीतों का भी सूक्ष्म अध्ययन करके उनमें निहित सास्कृतिक तत्वों का अनुशीलन कर उसे 'भोजपुरी लोकगीतों मे सांस्कृतिक तत्व' नाम से एक ग्रन्थ का रूप दे डाला।

मेरी यह रचना सामान्य पाठकों एवं विद्वज्जनों द्वारा बहुत सराही गयी, जिससे प्रोत्साहित हो मैं अब भोजपुरी की सेवा मे और भी समर्पित हो गयी। आकाशवाणी एव पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हिन्दी के कार्यक्रमों के साथ-साथ मेरी भोजपुरी भाषा एवं साहित्य सम्बन्धी रचनाओं का भी प्रसारण एव प्रकाशन होता रहा। इसके लिए मुझे अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित होने का भी गौरव प्राप्त हुआ। अब मेरे मन में भोजपुरी भाषा के विकास एवं प्रसार के लिए कुछ करने की इच्छा भी प्रबल हुई और मैं इस क्षेत्र में उतर पड़ी। मैंने पाया कि भोजपुरी के फैलाव एव विकास हेतु यह [illegible] है कि भोजपुरी विभाषी उसमे प्रयुक्त ठेठ शब्दों के

अर्थ एवं प्रयोग से परिचित हो (जैसा कि मैंने 'ग्रन्थ परिचय' के अन्तर्गत व्यक्त किया है)। इसी उद्देश्य को लेकर मैं प्रस्तुत रचना का सृजन करने को सन्नद्ध हुई। मेरी यह कृति भोजपुरी के हितैषीगण एवं जिज्ञासाओं को तुष्टि प्रदान कर सकी तो मैं अपने प्रयास की सार्थकता समझूँगी।

प्रस्तुत कृति के लिए सर्वप्रथम मैं भोजपुरी भाषा एवं साहित्य के पुरोधा स्व पं० नर्मदेश्वर चतुर्वेदी जी के प्रति आजीवन आभारी रहूँगी, जो हिन्दी भाषा एवं साहित्य के साथ-साथ भोजपुरी के प्रति भी अर्पित मेरी सेवाओ से अत्यधिक प्रभावित होकर इस क्षेत्र में निरन्तर कुछ न कुछ करते रहने को प्रेरित करते रहे। जब मैं बाबूजी (चतुर्वेदी जी) के निकट सम्पर्क में आई उस समय मेरे शोध ग्रन्थों तथा कुछ अन्य रचनाओ के साथ-साथ 'भोजपुरी लोकगीतो मे सास्कृतिक तत्व' भी प्रकाशित हो चुका था। बाबूजी ने मेरी उपलब्धियों से भावविभोर हो मुझे 'प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व' से ही विभूषित कर दिया और तभी से मुझे बराबर हिन्दी के साथ भोजपुरी की भी सेवा में निरत रहने को उकसाते रहे।

उनकी उसी प्रेरणा एवं आशीर्वाद की देन प्रस्तुत ग्रन्थ है जिसका अधिकांश कार्य तो उनके जीवन-काल में ही हो गया था किन्तु अब इसे पूर्णता प्रदान कर मैं उस दिवगत आत्मा को श्रद्धावनत हो समर्पित करती हूँ।

उसके पश्चात् मैं अपने पिता तुल्य गुरुदेव सुप्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक एवं कोश रचना में विश्वस्तर पर कीर्तिमान स्थापित करने वाले श्रद्धेय डा हरदेव बाहरी के प्रति मनसा-वाचा-कर्मणा आभारी हूं जिनके कुशल निर्देशन मे डी फिल्. एवं डी लिट्. से सम्बन्धित भाषा-वैज्ञानिक शोध-कार्य करके किसी भाषा की प्रकृति एव उसके व्यावहारिक रूप की पहचान करने का ज्ञान अर्जित कर सकी। प्रस्तुत ग्रन्थ की संरचना में भी आपका सौहार्दपूर्ण निर्देशन प्राप्त करती रही हूँ। आपके भोजपुरी शब्दकोश 'भोजपुरी शब्द-सम्पदा' से भी मुझे भोजपुरी के खांटी शब्दों के चयन मे पर्याप्त सुविधा प्राप्त हुई। रचना-प्रक्रिया में आपकी कर्मठता सदैव मेरे लिए प्रेरणा-स्रोत रही है। तिरानबे वर्ष की आयु में भी सारे शारीरिक कष्टो से लोहा लेते हुए सृजन-साधना मे आपकी संलग्नता हम सभी के सम्मुख कर्मनिष्ठता का अनुपम आदर्श प्रस्तुत करती है। ईश्वर उन्हें इसी रूप में शतायु करे, यही हमारी हार्दिक मंगलकामना है।

अखिल भारतीय भोजपुरी परिषद् की महामन्त्री एवं भोजपुरी-लोक पत्रिका की प्रधान सम्पादक डॉ राजेश्वरी शांडिल्य एव भाई श्रीविलास तिवारी जी के प्रति मैं अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने हिन्दी तथा विशेषत भोजपुरी भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में की गयी मेरी सेवाओं के महत्त्व को समझा तथा सम्बन्धित सस्थाओ

द्वारा मुझे समय-समय पर विविध मान-सम्मान से अलंकृत करवाते रहे। आप लोगों द्वारा प्रदत्त मान-प्रतिष्ठा से भोजपुरी के प्रति मेरी कर्त्तव्यनिष्ठता को जो बल मिलता रहा है, उसी के परिणाम की कड़ी में प्रस्तुत ग्रन्थ भी एक है।

भोजपुरी साहित्य को अपनी अनेक रचनाएँ प्रदान करने वाली अपनी पुत्री रूपा अनुजा डॉ कमला सिंह के प्रति भी मैं उपकृत हूँ जिन्होंने भोजपुरी शब्दों एवं उससे सम्बन्धित सामग्री द्वारा मेरी रचना की पूर्णता में सहयोग दिया। इन दिनों वह पूर्ण निष्ठा के साथ राजनीति में उतर आई हैं। मैं हृदय से मंगलकामना करती हूँ कि वह अपने क्षेत्र में सफलता के उच्च शिखर पर आरूढ़ होती रहें। बहन कमला द्वारा ही प्राप्त प्रो ब्रजविहारी कृत भोजपुरी शब्द-कोश से भी मैंने भोजपुरी के पर्याप्त ठेठ शब्द लिये हैं। मैं कोश के रचनाकार के प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ।

भोजपुरी के उन रचनाकारो, पत्र-पत्रिकाओं के प्रति भी मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिनकी रचनाओ से मैंने भोजपुरी शब्द एवं उनके प्रयोग के उदाहरण प्रस्तुत ग्रन्थ में उद्धृत किये हैं।

इस अनुष्ठान की पूर्णता में मैं अपने बड़े भैया श्री शंकटाप्रसाद श्रीवास्तव (एस पी. श्रीवास्तव) के ऋण से भला कैसे उऋण हो सकती हूँ जिनका वात्सल्यपूर्ण वरद् हस्त सदा हम दोनो (पति-पत्नी) पर रहा है और हमारे लेखन कृत्य में उनका प्रोत्साहन सदैव हमारा सम्बल रहा है। प्रस्तुत ग्रन्थ के निर्माण की अवधि मे जब भी वह इलाहाबाद आते, भोजपुरी शब्द सम्बन्धी कतिपय समस्याओं का निराकरण करते और साथ ही कुछ नये शब्द भी दे जाते। मैं नतमस्तक हो अपने प्रति उनके स्नेहसिक्त उत्तरदायित्व के निर्वहन का समादर करती हूँ।

अर्द्धांगिनी होने के नाते मैं अपने पति हिन्दी साहित्यकार श्री महेन्द्र 'रञ्जन' को धन्यवाद देना तो दिखावा मात्र समझती हूँ क्योंकि जो कुछ मेरा है वह उनका भी तो है, किन्तु इतना अवश्य कहना चाहूगी कि भोजपुरी भाषी न होते हुए भी मेरे भोजपुरी सेवा सम्बन्धी अभियान में उनका पूर्ण और सोत्साह सहयोग मिलता रहा है। इनकी इसी सहयोगिता के फलस्वरूप मैं इस कृतित्व को प्रस्तुत करने में सक्षम हो सकी हूँ।

और आगे मैं उन विद्वज्जनों के प्रति विशेष आभारी होऊँगी जो इसका सम्यक अवलोकन करके अपने बहुमूल्य विचारों और सुझावों से मुझे अवगत करायेंगे।

कृति-केन्द्र
४०६, कृष्णा नगर-त्रिवेणी रोड
२११००३ उ.प्र (भारत)
दूरभाष ६०७०२९

श्यामकुमारी श्रीवास्तव
जुलाई १९९९

ग्रन्थ-परिचय

प्रस्तुत ग्रन्थ भोजपुरी भाषा में प्रयुक्त समस्त शब्दों (जिनमें अधिकांशत: खडीबोली अवधी, ब्रज आदि के भी हैं) का संग्रह अथवा कोश नहीं है। इसमें भोजपुरी बोली अथवा भाषा में प्रयुक्त मात्र उन खाँटी (विशुद्ध, ठेठ) शब्दो का परिच्चय दिया गया है जिनके अर्थ एवं प्रयोग से भोजपुरी विभाषी परिचित नहीं है और ऐसी स्थिति में उनके लिए भोजपुरी भाषा जटिल एवं बोधरहित होने के कारण अरुचिकर प्रतीत होती है। यहाँ तक कि भाषा की इसी अनभिज्ञता के कारण लोग भोजपुरियों मे बाते करने अथवा सम्बन्ध बनाने में भी हिचकते हैं। प्राय: हिन्दी भाषियो (विशेषत: पश्चिमी क्षेत्र वालों) को यह कहते सुना जाता है कि अर, इन भोजपुरियों की 'अइली-गइली' हमारी समझ में नहीं आती तो हम इनस क्या बात करें अथवा इनसे कैसे रिश्ता जोड़ें? और यह तो सर्वमान्य है कि भाषा विभेद ही व्यक्ति को व्यक्ति से, समूह को समूह से, समाज को समाज से और क्षेत्र को क्षेत्र से अलगाव उत्पन्न कर देता है। व्यक्ति व्यक्ति के उद्‌गारों एवं भावनाओं को समझ नहीं पाता और इसीलिए उससे तालमेल नहीं बैठा पाता। अत: भाषा-भेद भी पारस्परिक एकसूत्रता स्थापित करने में बाधक सिद्ध होता है।

अद्यावधि भोजपुरी के जितने शब्द-कोश मेरी दृष्टि में आये हैं, उनमें लगभग अस्सी प्रतिशत शब्द तो हिन्दी तथा उसकी अन्य उपभाषाओं के ही हैं जिनसे भोजपुरी भाषी एवं विभाषी भलीभाँति अवगत हैं। अत: मैंने प्रस्तुत ग्रन्थ में व्यर्थ ही उन शब्दों की भर्ती करके इसके कलेवर का विस्तार करना उचित नहीं समझा और इसीलिए इसे ठेठ भोजपुरी का परिचयात्मक ग्रन्थ मानते हुए इसका नाम 'भोजपुरी शब्द-परिचय' रखा है।

जुलाई १९९४ ई० मे भोजपुरी कोश-विज्ञान पर आयोजित एक परिचर्चा में भोजपुरी कोश की शब्दावलियों के सम्बन्ध में जो विचार-विनिमय हुआ था, उसमें भी विद्वानों का मत यही था कि भोजपुरी-कोश में खाँटी भोजपुरी शब्दों को ही स्थान देना चाहिए।[1]

---

[1] 'भोजपुरी कोश विज्ञान पर भोजपुरी अकादमी के तत्वावधान मे २९ से ३१ जुलाई १९९४ मे एक समीनार सम्पन्न हुआ जिसमें दिल्ली के भाषा विज्ञान के प्रा रवीन्द्र श्रीवास्तव केन्द्राय भाषा प्रभाग के प्रसाद कटक के प्रो चन्द्र सेन जैन के

भोजपुरी मूलतः पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं पश्चिमी बिहार की भाषा है। किन्तु भोजपुरी भाषा भाषियों के सार्वदेशिक फैलाव के कारण इसका क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है और निरन्तर इसकी व्यापकता बढ़ती ही जा रही है। इस प्रकार इसका क्षेत्र **उत्तर प्रदेश में**—बलिया, गाजीपुर, देवरिया, गोरखपुर बनारस, मिर्जापुर जौनपुर, आजमगढ़,. बस्ती; **बिहार में**—भोजपुर. रोहतास, पलामू, राँची, हजारीबाग छपरा, सिवान, गोपालगंज एव चम्पारन, **मध्यप्रदेश में**—जसपुर तथा सरगुजा के आसपास के क्षेत्र तथा **नेपाल में**—बुटवल, कलैया एव तराई आदि है। इसके अतिरिक्त विदेशों में भी जहाँ-जहाँ भोजपुरी भाषी जाकर बस गये है, वहाँ वहाँ अपनी भाषा की अस्मिता बनाये हुए हैं। ये देश हैं—फिजी, मॉरीशस, सूरीनाम ट्रिनीडाड, गुयना आदि। भोजपुरी भाषा के मनीषी स्व. पं नर्मदेश्वर चतुर्वेदी के शब्दों में—'भोजपुरी भाषा-भाषियो की यह विशेषता रही है कि वे संसार के जिस कोने में गये हैं, अपनी भाषा और अपना संस्कार भी लेते गये हैं।' डॉ राजेश्वरी शाडिल्य के विवरणानुसार भोजपुरी भाषा-भाषी विश्व के लगभग २२ देशो में बहुतायत से हैं और जहाँ भी हैं, अपनी पहचान बनाये हुए हैं। भोजपुरी की इस व्यापकता को देखते हुए इसके समर्थकों ने इसे 'अन्तर्राष्ट्रीय भाषा' से अभिहित किया है। इस भाषा के प्रामाणिक व्याख्याता जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने लगभग सौ वर्ष पूर्व यह स्वीकारा था कि 'भोजपुरी एक बलाढ्य जाति की व्यावहारिक भाषा है जो परिस्थितियों के अनुसार अपने को परिवर्तित करने के लिए सदैव तत्पर रहती है और जिसने सम्पूर्ण भारत पर अपना प्रभाव स्थापित किया है' (भोजपुरी लोक दिस. ९६, पृ० ४३, भारत का भाषा सर्वेक्षण—डॉ० ग्रियर्सन—के० जितराम)।

विदेशों में बसे भोजपुरी भाषियों की भाषा के कलेवर अथवा स्वरूप मे जहाँ वे बस गये हैं वहाँ की भाषा के मिश्रण से परिवर्तन भले ही हो गया हो किन्तु उसमें प्रयुक्त खाँटी शब्दो मे अधिक बदलाव नहीं मिलता है। उदाहरणार्थ—मारीशस की मूल भाषा क्रियोल है जो कई भाषाओं की शब्दावली से बनी है जिसमें भोजपुरी के शब्द भी पर्याप्त मात्रा में हैं किन्तु यहाँ पर हिन्दी के नाम पर खाँटी भोजपुरी का ही प्रयोग होता है। अतः वहाँ की मानक हिन्दी भोजपुरी से ही प्रभावित है।

भाषा जन-सम्पर्क का एक आवश्यक सूत्र है। इसके पारस्परिक अभेद मे

रामदेव त्रिपाठी, बिहार के प० गणेश चौबे, श्री सत्यनारायण लाल और अकादमी के निदेशक हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' ने भाग लिया था। इसमें पूर्ण विचार विनिमय के बाद निश्चय हुआ कि भोजपुरी कोश में खाँटी भोजपुरी शब्दों को ही स्थान दिया जाय' (भोजपुरी लोक अप्रैल १९९५ पृ० २४ प्र त्रिपाठी प्रो० विश्वनाथ प्रसाद सिंह भोजपुरी के मानक वर्तनी

ही हम एक दूसरे से जुड़ते हैं और विभेद से हम एक दूसरे से अलग-थलग हो जाते हैं क्योंकि भाषा-भेद के कारण हम एक दूसरे से अपने-अपने विचारों एवं संस्कृतियों का तालमेल नहीं बैठा पाते। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण आज के राजनीतिक कुचक्र मे हम पाते हैं। यद्यपि बहुत सी सामाजिक एवं सांस्कृतिक सस्थाएं देश मे एकता स्थापित करने के उद्देश्य से विभिन्न भाषा-भाषियों को एक सूत्र मे पिरोने के प्रयास में जुटी हुई हैं फिर भी राजनीतिक षड्यन्त्र उनके प्रयासो मे बाधक सिद्ध होता रहता है।

भोजपुरी हिन्दी की उपबोली है अतः इसके साथ हिन्दी का तथा हिन्दी के साथ इसका सम्पर्क एवं समन्वय बढ़ना ही जा रहा है। हिन्दी-भाषी क्षेत्रो मे भोजपुरी भाषा की लोकप्रियता लोक-साहित्य (विशेषतः लोकगीतो) के माध्यम से और भी बढ़ती जा रही है। इसलिए भी भोजपुरी भाषा की प्रकृति से अन्य भाषा-भाषी भी प्रायः परिचित होना चाहते हैं।

आज जो भोजपुरी के मानकीकरण का प्रश्न जोरों पर है, उसके तहत भी अधिकांश विद्वत्‌गण भोजपुरी के उसी रूप को मान्यता देने के पक्ष मे हैं जो हिन्दी के अधिक निकट हो। किन्तु उनके मतानुसर भी भोजपुरी के ठेठ शब्द जो स्वाभाविक रूप से प्रयोग में आते हैं, उन्हे ज्यो का त्यों रहने देना चाहिए। यही मान्यता भोजपुरी के विकास के सम्बन्ध में हितकर भी है। यह अवश्य है कि इन ठेठ शब्दों के कारण भोजपुरी को पूर्णरूपेण समझने मे कुछ कठिनाई हो सकती है, अत. इन शब्दावलियो के हिन्दी पर्याय एवं इनके प्रयोग की प्रकृति से भी विभाषीगण को परिचित कराना आवश्यक है। इसी उद्देश्य से मैंने प्रस्तुत ग्रन्थ की रचना की है।

इस ग्रन्थ की रचना में मुझे कुछ अशों में शब्दकोश की रचना पद्धति की परम्परा से अलग होना पड़ा है। एक तो यह कि प्रति शब्द के साथ उसके व्याकरणिक स्वरूप अथवा व्युत्पत्ति आदि का विवरण न देकर सम्पूर्ण शब्दो का बँटवारा व्याकरणिक शब्द-भेद के अनुसार करके ही आकारादि क्रम से उनकी तालिका प्रस्तुत की गई है। तदनुसार संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया एव अव्यय खण्डों के अन्तर्गत शब्दों का विभाजन किया गया है।

दूसरा, शब्दों की पहचान को मैंने भोजपुरी के जिज्ञासुओ के लिए अधिक से अधिक सुगम बनाने की चेष्टा की है। इस प्रयास मे शब्दों की व्युत्पत्ति, क्षेत्रीयता आदि का विवरण न देकर उनका हिन्दी अर्थ अथवा पर्याय तथा प्रयोग का प्रस्तुतीकरण ही आवश्यक समझा है।

तीसरा वाक्य प्रयोग में भोजपुरी वाक्यों का हिन्दी रूपान्तर भी इस ध्येय से किया गया है कि अन्य भाषा भाषा जो हिन्दी समझते हो वे इन

प्रयोगों की प्रकृति को भली भाँति समझते हुए सुगमता पूर्वक अभ्यास कर सकें।

चौथा, जैसा कि पहले कहा जा चुका है, प्रस्तुत ग्रन्थ विशेष रूप से भोजपुरी के प्रति उन जिज्ञासुओं के लिए निर्मित किया गया है जो भोजपुरी भाषी नहीं होते हुए भी भोजपुरी सीखने-समझने में रुचि रखते हैं अतः मैंने क्रिया के धातु रूप मे 'ना' प्रत्यय लगाकर प्रस्तुत किया है। हिन्दी के सम्पर्क में होने के कारण भोजपुरी पर बहुत कुछ खडीबोली हिन्दी का प्रभाव पड चुका है। उधर भोजपुरी के विकास की दृष्टि से उसके प्रचार-प्रसार एवं मानकीकरण की प्रक्रिया भी प्रगति पर है। ऐसी स्थिति मे यह आवश्यक है कि हम हिन्दी (खड़ीबोली) के सहारे ही आगे बढाया जाय जिससे अधिकाधिक जन के लिए यह बोधगम्य एवं ग्राह्य हो सके। इसी उद्देश्य से मैंने क्रिया के मूल रूप (धातु रूप) में 'ना' प्रत्यय का योग करके प्रस्तुत करना उचित समझा है यथा—अझुराना, (उलझना या उलझाना), अरुआना (बासी पड़ना), उखिलाना (उकताना), धधाना (उत्तेजित होना), बुझाना (समझ में आना), रीन्हना (पकाना) लउकना (दिखाई देना) लुकाना (छिपाना) आदि। यद्यपि भोजपुरी के अधिकांश भाषाविद् इस मत से सहमत नहीं हो सकते क्योंकि उनके मतानुसार भोजपुरी क्रिया के साथ 'अल' एवं 'इल' प्रत्यय के योग का ही विधान है। यथा—अझुराइल, अरुआइल, उखिलाइल, धधाइल, बुझाइल, रीन्हल, लउकल, लुकाइल आदि। मैंने क्रिया के उक्त रूप को विशेषण के अन्तर्गत रखकर क्रिया एवं विशेषण के स्वरूप में अन्तर स्पष्ट किया है। यथा—अझुराइल डोरा, अरुआइल भात, धधाइल बबुआ, बुझाइल बात, लुकाइल चोर आदि।

मैंने पाया है कि भोजपुरी की अनेक क्रियाओं को हिन्दी शब्द कोश में 'ना' के साथ प्रस्तुत किया गया है भले ही इन शब्दों को 'पूरबी हिन्दी' अथवा 'क्षेत्रीय प्रयोग' नाम से अभिहित किया गया है, यथा—उसरना, निकसना, निरेखना, आदि। ऐसे शब्द हिन्दी शब्द-सागर में उल्लिखित हैं। यहाँ तक कि जब संस्कृत शब्द का क्रिया रूप निर्गमना, तथा स्वीकारना को हिन्दी शब्द-कोश मे स्थान दिया गया है तो मेरे द्वारा भोजपुरी को हिन्दी की समता में रखकर अधिकाधिक बोधगम्य बनाने के प्रयास में उसकी क्रिया की पहचान 'ना' प्रत्यय के योग से कराये जाने पर भोजपुरी के संरक्षक वृन्द को आपत्ति नहीं होनी चाहिए क्योंकि ऐसा करना भोजपुरी के विकास में एक महत्त्वपूर्ण योगदान सिद्ध होगा

ध्वनिगत विशेषताओं से लेकर व्याकरणिक स्वरूप की विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है। 'प्रकरण—दो' में शब्दों का समाहार (तालिका) अर्थ एवं प्रयोग सहित प्रस्तुत है।

भोजपुरी बोली एवं भाषा को अन्य भाषा-भाषियों के लिए सहज, सुबोध तथा ग्राह्य बनाने के उद्देश्य से मेरे द्वारा रचा गया यह 'भोजपुरी शब्द परिचय' अपने लक्ष्य में कहाँ तक सफल हो सकेगा, इसका निर्णय सुधी पाठक एवं आलोचकगण ही कर सकेंगे।

●●●

—लेखिका

भोजपुरी शब्दों का परिचय प्रस्तुत करते समय उनकी संरचनात्मक प्रकृति से भी अवगत कराना आवश्यक है। यों तो भोजपुरी भाषा हिन्दी क्षेत्रों में अपने प्रसार-फैलाव के कारण हिन्दी की सहगामिनी होती जा रही है फिर भी उसकी वर्तनी, उच्चारण और पद रचना सम्बन्धी कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं जो उसे हिन्दी (विशेषत: खड़ीबोली) से भिन्न करती हैं। प्रस्तुत खण्ड में भोजपुरी शब्दों की ध्वनि शब्द एवं पद रचना सम्बन्धी उन्हीं विशेषताओं का उल्लेख किया जायेगा।

ध्वनि

भोजपुरी मूलत: तद्भव-प्रधान भाषा है। उसके इसी तद्भवीकरण के कारण प्राय: भाषा-वैज्ञानिकों ने इसे बोली ही माना है। भाषा के तद्भवीकरण में ध्वन्यात्मक परिवर्तन होना स्वाभाविक है। भोजपुरी भाषा अपनी वर्तनी तथा उच्चारण सम्बन्धी जिन विशेषताओं के कारण हिन्दी से पृथकता रखती है, वे इस प्रकार हैं—

क—स्वर सम्बन्धी विशेषताएँ

१. हिन्दी 'अ' का उच्चारण भोजपुरी में 'अ॑' हो जाता है किन्तु लिखा 'अ' ही जाता है।

२. भोजपुरी में प्राय: 'अ' के स्थान पर 'इ' तथा 'उ' का प्रयोग किया जाता है, यथा—आँखि (आंख), जुगुति (जुगुत), राति (रात), दीठि (दीठ), बइठि (बइठ/बैठ) पइठि (पैठ), तथा आजु (आज), सासु (सास), सुनु (सुन) कहु (कह) आदि।

३. 'इ' का उच्चारण 'ए' होता है, यथा—एकहरा (इकहरा), एकतालिस (इकतालिस) एकाई (इकाई), एकट्ठा (इकट्ठा), एकावन (इक्यावन) आदि।

४. 'ऋ' के स्थान पर प्राय: 'रि' लिखा जाता है, यथा—रिन (ऋण), रितु (ऋतु), रिसि (ऋषि) आदि।

५. 'ए' तथा 'ओ' के उच्चारण में अधिकांश शब्दो में ह्रस्वीकरण हो जाता है यथा—देउता (देवता) नेउता (नेवता) घेंटुआ ओकरा बोकला नोनिया आदि

६ 'ऐ' को 'अइ' तथा 'औ' को 'अउ' बोला और लिखा जाता है, यथा—पइसा (पैसा), अइसे (ऐसे), मइका (मैका), चइत (चैत/चैत्र), अउतार (औतार), अउर (और), कउर (कौर), ठउर (ठौर), मउर (मौर) आदि।

७ स्वरों का दीर्घीकरण भी भोजपुरी उच्चारण की मुख्य विशेषता है, जैसे—तावा (तवा) की (कि) प्र०—जात हउअऽ की नाहीं (जा रहे हो कि नहीं), दीन (दिन), सूघड (सुघड), ऊजर (उज्ज्वल/उजला) आदि।

स्वरवृद्धि की प्रक्रिया में आदि अक्षर में स्वरवृद्धि कर उसके पश्चात् के संयुक्ताक्षर को एकाक्षर कर दिया जाता है यथा—आछा (अच्छा), माठा (मट्ठा), माथा (मत्था), पाठा (पट्ठा) पाँजर (पञ्जर), बाती (बत्ती) आदि।

इसके अतिरिक्त कहऽताऽ (कहता है), सुनऽहोऽ (सुनो जी), आवऽजाऽ (आओ), जइबूऽ (जाओगी), बोलऽतानी (बोलता हूँ) आदि क्रिया रूपों में स्वभावतः स्वर वृद्धि हो जाती है।

८ प्रायः अक्षरों का अनुनासिकीकरण भी भोजपुरी की विशेषता है, यथा—दुनियाँ (दुनिया), बढ़ियाँ (बढिया), पूँछना (पूछना), मोंच (मोच) आदि।

—व्यंजन सम्बन्धी विशेषताएं

१ 'ण' के स्थान पर 'न' का प्रयोग होता है, यथा—प्रान (प्राण), बान (बाण), बानी (वाणी), बीना (वीणा), मनि (मणि), मानिक (माणिक/माणिक्य) रान (रण) आदि।

२. 'ड़' का 'र' तथा 'ढ़' का 'र्ह' उच्चारण खाँटी भोजपुरी बोली की पहचान है, भले ही लेखन में 'ड' तथा 'ढ' का ही प्रयोग हो। यथा—घोरा (घोड़ा), बरा (बड़ा), कपरा (कपड़ा), बराई (बड़ाई), बारी (बाड़ी), सरक (सड़क) सारी (साड़ी), पर्हाई (पढ़ाई), साँर्ह (साँढ़), चर्हना (चढ़ना) प्र०—पहार पर जनि **चर्हऽ** (पहाड़ पर मत चढ़ो), पर्हना (पढ़ना) प्र०—ऊ इस्कूल मे **पर्हेले** (वह स्कूल में पढ़ती है) आदि।

३. 'य' के स्थान पर प्रायः 'अ' अथवा 'इ' का उच्चारण सुनाई पड़ता है, यथा—कनिआ (कनिया), दुपहरिआ (दुपहरिया), बछिआ (बछिया), भइआ (भइया या भैया), गाइ (गाय), पाइँ (पायँ) क्रि०-जाइँ (जायँ) प्र०—रउरा **जाईं** (आप जायँ) आदि।

४ जैसा कि कहा जा चुका है भोजपुरी में तद्भवीकरण की प्रवृत्ति मुख्यत है तदनुसार व का उच्चारण सर्वथा ब ही होता है और प्राय लेखन

मे भी 'ब' का ही प्रयोग होता है, यथा—बिमुख (विमुख), बिमाता (विमाता), बिद्वान (विद्वान), बेद (वेद), बिरह (विरह), बिलाप (विलाप) बीर (वीर) आदि।

तालव्य 'श' तथा मूर्द्धन्य 'ष' के स्थान पर 'स' तथा कहीं कहीं मूर्द्धन्य 'ष' के स्थान पर 'ख' का प्रयोग भी भोजपुरी उच्चारण की प्रमुख विशेषता है। यथा- चस्मा (चश्मा), बिस्राम (विश्राम), परदेस (परदेश), सादी (शादी), स्याम (श्याम), आसा (आशा), भासा (भाषा), मनुस्य (मनुष्य), तोख (तोष) भाखा (भाषा) आदि।

'ड' के समान ही 'ल' के स्थान पर भी 'र' का उच्चारण ठेठ भोजपुरी की पहचान है, यथा—चउपार (चौपल), तारी (ताली), थारी (थाली), पारी (पाली), बार (बाल) आदि।

अक्षरों के महाप्राणीकरण की प्रवृत्ति भी खाँटी भोजपुरी के उच्चारण और तदनुसार प्राय: लेखन में भी मिलती है, यथा काल्ह (कल), खिस्सा (किस्सा), फतिंगा (पतंगा), धउड़ना (दौड़ना) प्र०—**धउड़ऽ** जनि, नाहीं त हाँफि जइबऽ [दौड़ो मत, नहीं तो हाँफ जाओगे], सभ (सब) आदि।

भोजपुरी शब्दों के वर्तनी-प्रयोग मे क्षेत्रीय भिन्नता भी पाई जाती है। यह भिन्नता भोजपुरी भाषा के मानकीकरण में एक जटिल समस्या बन गयी है। इन विभिन्न प्रयोगों का उल्लेख शब्द रूप (पद) रचना के अन्तर्गत किया जायेगा।

शब्द

संज्ञा-सर्वनाम

—मूल रूप

ंज्ञा शब्दों में प्राय: अन्तिम अक्षर के स्वर का ह्स्वीकरण करके उसमे अथवा 'या' का योग करने का विधान है। यह भोजपुरी भाषा की प्रमुख ता है और भोजपुरी के प्रत्येक क्षेत्र में इस रूप का प्रचलन है, यथा— अकारान्त अथवा आकारान्त शब्द में 'वा' लगाया जाता है, यथा—कमलवा ला), गोड़हरवा (गोड़हरा) दुधवा (दूध), मितवा (मीत) लड़िकवा (लड़का), वा (हँडिया), हँसुअवा (हँसुआ) आदि। प्र०—**कमलवा** घर में हउए की (कमला घर में है कि नहीं) **गोड़वा** में **गोड़हरवा** पहिर ले (गोड (पैर) हरा पहन ले) उनके **लरिकवा** बिगरि गइल बा (उनका लडका बिगड

गया है), हँसुअवा से पियाज काटि लऽ (हँसुआ से प्याज काट लो) आदि।

इकारान्त अथवा स्त्रीलिंग अकारान्त शब्द में 'या' जोड़ने का प्रचलन है जैसे—कसइलिया (कमडली) कहँतरिया (कहँतरी), गितिया (गीत), चुहनिया (चुहानी), चेरिया (चेरी), महतरिया (महतारी), [illegible]—

कसइलिया सगैता से काट डारऽ (कमडली सरौता से काट डालो), **कहँतरिया** से दही निकालके ले आवऽ (कहँतरी से दही निकालकर ले आओ) [illegible] **गितिया** बहुत बढियाँ होखेले (तुम्हारी गीत बहुत अच्छी होती है), बिना नहइले **चुहनियाँ** मे जनि घुसिहऽ (बिना नहाये चुहानी/रसोई में मत घुसना), [illegible] **महतरिया** से बात कइ लीहऽ (अपनी महतारी से [illegible] कर लेना) आदि।

सर्वनाम—मूल रूप

हिन्दी सर्वनाम 'मैं' के स्थान पर भोजपुरी में 'हम' का प्रयोग होता है, यथा—**हम** अकेले आइब (मैं अकेला आऊँगा/आऊँगी), तू **हमके** लिखि दीहऽ (तुम मुझे लिख देना), ऊ **हमार** भाई लागेले (वह मेरे भाई लगते हैं) आदि।

'तू' के लिए 'तें' तथा तुम के लिए 'तू' या 'तूँ' का प्रयोग [illegible] का द्योतक है। यथा—**तें** कहवाँ जात बाड़ (तू कहाँ जा रहा है), तें [illegible] (तू इधर आ), तू/ तूँ का करत हवऽ (तुम क्या कर रहे हो) [illegible] तूँ [illegible] आवऽ (तुम इधर आओ) आदि।

'जो' के स्थान पर 'जौन', 'जवन', 'जेवन' तीनों रूपों का [illegible] के अनुसार प्रयोग होता है, यथा—**जौन** तोहके पसन्द होखे माँगि लऽ (जो तुमको पसन्द हो मांग लो) **जवन** पंडित के पतरा, [illegible] के अँचरा (जो पंडित के पत्रे में (है) वह पंडितानी के आंचल में (है)), ई भोजपुरी के [illegible] पुस्तक मानल बा **जेवन** सभ तरह से आकर्षक आ विचारो से प्रेरक बा (यह भोजपुरी की पहली पुस्तक मानी गयी है, जो सब तरह से आकर्षक और विचार से भी प्रेरक है) आदि।

'यह' के स्थान पर 'ई' तथा 'वह' के स्थान पर ऊ का प्रयोग किया जाता है, यथा—**ई** का हऽ (यह क्या है?), **ई** सभ बेकार के बात हऽ (ये सब बेकार की बाते हैं) **ऊ** केकर लइका हऽ? (वह किसका लड़का है?) **ऊ** एहरे आ रहल बा (वह इधर ही आ रहा है) आदि

१. लिंग सम्बन्धी

संज्ञा शब्दों में सामान्यत: स्त्रीलिंग प्रत्यय लगने से शब्दों का रूप स्त्रीलिंग हो जाता है, यथा—गगरा-गगरी, डलवा-डलिया, खपरा-खपरी, छउँड़ा-छउँड़ी (लड़का-लड़की), पड़वा-पड़िया, बेटवा-बिटिया, थारा-थरिया, पथरा-पथरी, बछवा-बछिया, नारा-नारी (नाला-नाली) टोपा टोपी, ढोलक-ढोलकी, काका-काकी, आजा-आजी (दादा-दादी), लइका लइकी (लड़का-लड़की) आदि। किन्तु संज्ञा तथा सर्वनाम के सम्बन्ध कारक के विभक्ति-प्रत्यय में उसके सम्बन्धी शब्द के स्त्रीलिंग होते हुए भी परिवर्तन न होना भोजपुरी की विशेषता है, यथा—**राम क/के भाई—राम क/के माई, राम क/के चाचा—राम क/के चाची, उनके भाई—उनके बहिन, उनके घर—उनके किताब, तोहार घर—तोहार साड़ी, हमार बेटा—हमार बेटी** आदि।

२. वचन सम्बन्धी

संज्ञा शब्दों के बहुवचन में भी प्राय: विकार नहीं होता, उसे एक वचन रूप में ही प्रयोग किया जाता है, यथा—एक लइका/लइकी—दुई लइका/लइकी। प्र०—उनके दुइ **लइका** आ दुइ **लइकी** बाड़ी सन् (उनके दो लडके और दो लडकियां हैं)। पूजा में पाँच **फर** (फल) के भोग लगावे के चाहीं (पूजा में पाँच फलों का भोग लगाना चाहिए)। बनारस में जादातर **घर** मे इनार होला (बनारस मे ज्यादातर घरों मे इनार (कुआँ) होता है)। ऊ अधिकतर **कविता** छायावाद पर लिखले बाड़ें (उन्होंने अधिकतर कविताएँ छायावाद पर लिखी हैं)।

कुछ प्रयोगों में 'न', 'वन', 'यन' अथवा 'न्ह' लगाकर बहुवचन का रूप दिया जाता है, जैसे—लरिका/लड़िका—लरिकन/लरिकवन या लडिकन/लड़िकवन। प्र०—उनके चारो **लरिकन** पढ़ल लिखल बाड़ें (उनके चारो लड़के पढे-लिखे हैं); मोहन के दूनों **लड़िकवन** बिदेस में बसि गइलें (मोहन के दोनो लडके विदेश में बस गये), उनके **लरिकवन** के केहू पूछनहार बा? (उनके लडको को कोई पूछने वाला है?)। लड़की-लडकियन, बूढ़ा-बुढ़ियन। प्र०—फूलचन्द के तीनों **लड़कियन** के बिआह हो गइल (फूलचन्द की तीनों लडकियों का विवाह हो गया), घर के **बुढ़ियन के** देखभाल करे वाला केहू ना बा (घर की बुढियो की देखभाल करने वाला कोई नहीं है)। घर—घरन/घरन्ह। प्र०—काल्ह राति कई **घरन/घरन्ह** में चोरी भइल (कल रात कई घरों मे चोरी हुई)। पहुना—**पहुनन/पहुनन्ह** प्र०—**पहुनन/पहुनन्ह** के पहिले जिमा दऽ (पाहुनों को पहले जिमा (खिला) दो) आदि

जैसा कि कहा जा चुका है भोजपुरी मे सर्वनाम 'मैं' के स्थान पर 'हम' का प्रयोग किया जाता है जो हिन्दी में बहुवचन का रूप है। बहुवचन में 'हम के साथ 'लोगन' का योग प्राय: हो जाता है, यथा—**हम लोगन** के केहू पुछन्तो बा? (हम लोगो का कोई पूछनहार भी है?)। परन्तु सामान्य प्रयोगों में 'हमन या हमहन', 'हमनी कऽ या हमनी के', आता है, यथा—**हमन** ई बात माने के तइयार नइखीं (हम या हम लोग यह बात मानने को तैयार नहीं है) **हमहन** आजे अपने निवास पर लउट जाइब (हम लोग आज ही अपने निवास पर लौट जायेंगे), चार चोर चउदह **हमनी के,** चोरवा लखेदलस भगनी जा **हमनी के,** बाह रे **हमनी के!** (चार चोर (और) चौदह हम लोग, चोर ने दौड़ाया तो भाग गये हम लोग, वाह रे हम लोग!)।

मध्यम पुरुष बहुवचन के लिए 'तुम लोग' के स्थान पर भोजपुरी में 'तोहन लोगन' या 'तू पाचन' का प्रयोग किया जाता है, यथा—**तू पाचन** जवन फैसला करबऽ हमके मंजूर होई। (तुम लोग जो फैसला करोगे मुझे मंजूर होगा), **तोहन लोगन** हमार साथ देबऽ की नाही? (तुम लोग मेरा साथ दोगे या नहीं?) आदि।

अन्य पुरुष बहुवचन के लिए 'ये' अथवा 'ये लोग' के स्थान पर 'ई लोग' 'एह लोग', 'इहन लोग' का प्रयोग होता है, यथा—**ई लोग** हमके बेकूफ बनावऽतान (ये लोग मुझे बेवकूफ बना रहे है), **एह लोग** के बाते अउर हऽ (इन लोगों की बात ही और है), **इहन लोग** बराबर हमरे घरे आवत रहेलें (ये लोग बराबर मेरे घर आते रहते हैं) आदि।

३. कारक सम्बन्धी

सर्वनाम के उत्तम पुरुष 'मैं' के सम्बन्ध कारक 'मेरा', 'मेरे' का रूप भोजपुरी में 'हमार', 'हमरे' अथवा 'मोर', 'मोरे' हो जाता है, जैसे—**हमार** सब समान **हमरे** घरे चहुँपा दीहऽ (मेरा सब सामान मेरे घर पहुँचा देना), **मोर** बात मान के **मोरे** साथ चलऽ (मेरी बात मानकर मेरे साथ चलो) आदि।

मध्यम पुरुष 'तू' के सम्बन्ध कारक रूप 'तेरा' तथा 'तेरे' के स्थान पर 'तोर' तथा 'तोरे' का प्रयोग होता है, यथा—इहे **तोर** घरवा हऽ का? (यही तेरा घर है क्या?), हम **तोरे** घरे काल्हि आइब (मैं तेरे घर कल आऊँगा)। 'तुम' के सम्बन्ध कारक रूप 'तुम्हारा' तथा 'तुम्हारे' के स्थान पर कहीं 'तहार' 'तहरे' तो कहीं 'तोहार', 'तोहरे' का प्रयोग होता है, यथा—इहे **तहार** बेटवा हवे का? (यही तुम्हारे बेटे हैं क्या?), हम **तहरे** घरे काल्हि आइब (मैं तुम्हारे घर कल आऊँगा) **तोहार** इरादा ठीक **नइखे** (तुम्हारा इरादा ठीक नहीं है)

तोहरे बात पर हम यकीन कइसे करी? (तुम्हारी बात पर मैं यकीन कैसे करूँ?) आदि।

अन्य पुरुष 'यह' (लघुता सूचक) के सम्बन्ध कारक रूप 'उसका', 'उसके' के स्थान पर 'ओकर', 'ओकरे' का प्रयोग होता है, यथा—**ओकर** घरवा केतना दूर बा? (उसका घर कितनी दूर है?), **ओकरे** घर मे केहू नइखे (उसके घर में कोई नही है)। शेष 'वह' के सम्बन्ध कारक रूप के 'उनका, 'उनके' के स्थान पर भोजपुरी मे 'उनकर', 'उनकरा', 'उनकरे' का प्रयोग होता है, यथा—ई बात सुनके **उनकर** माथा ठनकल (यह बात सुनकर उनका माथा ठनका), **उनकरा** बात के हम कौनो भरोसा ना करत हई (उनकी बात का मैं कोई भरोसा नहीं करता), ई सभ कुछ **उनकरे** माथे जाई (यह सब कुछ उनके ही मत्थे जायेगा) आदि।

●●●

विशेषण

भोजपुरी की विशेषण सम्बन्धी कतिपय विशेषताओं मे हिन्दी के ऐसा, वैसा, जैसा, तैसा आदि के रूप भोजपुरी मे इस प्रकार होते है—

ऐसा—अइसन, अइस, अस। प्र०—**अइसन** आदमी मुस्किले से मीलेला (ऐसा आदमी मुश्किल से ही मिलता है), **अइस** काम ना करे के चाहीं जेसे बदनामी होखे (ऐसा काम नहीं करना चाहिए जिससे बदनामी हो), तूँ **अस** बात कहि दिहलऽ कि हमके क्रोध आ गइल (तुमने ऐसी बात कह दी कि मुझे क्रोध आ गया) आदि।

वैसा—ओइसन। प्र०—जइसन रंग तूँ बतवले रहलू **ओइसन** रंग हमके ना मीलल (जैसा रंग तुमने बताया था वैसा रंग मुझे नहीं मिला) जइसन बात तू कहबू **ओइसने** बात ऊहो कहिहें (जैसी बात तुम कहोगी वैसी ही बात वह भी कहेगी)।

जैसा-तैसा—जइसन-तइसन, जस-तस। प्र०—ओकर **जइसन** हुलिया तूँ बनवले रहलऽ **तइसने** हुलिया ऊहो बनवले रहलें (उसका जैसा हुलिया तुमने बनाया था तैसा ही हुलिया उन्होंने भी बताया था), **जस** काम करबऽ **तस** फल पइबऽ (जैसा काम करोगे तैसा फल पाओगे), मुहा०—**जस** करनी **तस** भरनी (जैसी करनी तैसी भरनी) आदि।

संख्या वाचक विशेषण में 'गो' अथवा 'ठो' प्रत्यय लगाने का नियम है—

एगो, दूगो, तीन गो, एक ठो, दु ठो तीन ठो आदि। प्र०—उनके **एगो** लरिका आ **तीनगो लरकियन बाड़ी सन्** (उनके एक लडका और तीन लडकियां हैं)

दूगो आम आ **चारगो** लीची बचवा के दे दऽ (दो आम और चार लीचियां बच्चे को दे दो), **एकठो** रजाई आ **दूठो** तकिया एह साल भरवली हँऽ (एक रजाई और दो तकिया इस साल भरवाई हैं) **एकठो** रोटी में पेट कइसे भरी **तीन-चारठो** होखे त काम चले (एक रोटी मे पेट कैसे भरेगा तीन-चार हो तो काम चले एक रोटी से पेट कैसे भरेगा, तीन-चार हो तो काम चले) आदि।

संख्या के निश्चय सूचक रूप में 'ही' के स्थान पर 'ए' स्वर की वृद्धि कर दी जाती है, यथा —

एके (एक ही), दुइए (दो ही), तीने (तीन ही) आदि। प्र०—**एके** थरिया में दूनो जने खा लेबऽ? (एक ही थाली मे दोनो जन खा लोगे?), जाए दऽ, **दुइए** रुपइया में काम चला लेइब (जाने दो, दो ही रुपये मे काम चला लूँगा), ऊ **तीने** दिन में आवे वाले बाड़ें (वे तीन ही दिनों मे आने वाले हैं) आदि।

●●●

क्रिया

भोजपुरी के क्रियापद ही मुख्यत: उसे खड़ीबोली हिन्दी की संरचना से भिन्न करते हैं। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि भोजपुरी भाषा की पहचान उसके क्रियापदों से ही अधिक होती है। अत: भोजपुरी भाषा का परिचय कराते समय उसके क्रियापद रूपों की समीक्षा विशेष रूप से वांछनीय है। उदाहरण के रूप में हम सर्वप्रथम सहायक क्रिया 'होना' के विभिन्न रूपों को लेते हैं जिसके योग से प्राय: क्रियापदों की पूर्णता होती है। भोजपुरी मे इस सहायक क्रिया में क्षेत्रीय अथवा स्थानीय प्रयोगों मे अनेकरूपता पाई जाती है, यथा—

१. वर्तमान कालिक रूप—

	एकवचन	बहुवचन (कुछ क्षेत्रों मे एकवचन के रूप मे ही 'जा' का योग हो जाता है)
उ० पु०—	हूँ—हई, हवीं, बानी, बाड़ीं बाटीं	हैं—हईजा हवीं, बानी जा बाड़ीं जा बाटीं

उपर्युक्त उदाहरण केवल पुल्लिंग के हैं। क्रिया के उत्तम पुरुष रूप के स्त्रीलिंग पुल्लिग मे कोई अन्तर नहीं होता, यथा—

पुल्लिंग		स्त्रीलिंग
वर्त —हईं, हवीं, बानी, बाटीं	:	हईं, हवीं, बानीं, बाटीं
भूत —रहली, रहनी	:	रहलीं, रहनीं
भवि —होइब, होखब	:	होइब, होखब
सकेता —होतीं, होइतीं, होखतीं	:	होतीं, होइतीं, होखती

किन्तु मध्यम पुरुष के लघुता सूचक कर्त्ता 'तें' की क्रिया के रूप को छोड़कर अन्य सभी रूपो मे पुल्लिग स्त्रीलिंग मे भेद होता है। यथा—

वर्त —हउअऽ/हवऽ, बाड़ऽ, बाटऽ	:	हऊ, बाड़ू, बाटू
भूत.—रहलऽ	:	रहलू
भवि.—होइबऽ, होवऽ, होखबऽ	:	होइबू, होवू, होखबू
सकेता.—होइतऽ, होतऽ, होखतऽ	:	होइतू, होतू, होखतू

अन्यपुरुष के कुछ प्रयोगों को छोड़कर शेष में स्त्रीलिंग रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता। अत: यहाँ उन्हीं प्रयोगों के उदाहरण दिये जा रहे हैं जिनमे स्त्रीलिंग रूप में विकार होता है यथा—

वर्त —हऽ, बा, बाटे	:	हई, बिया, बाटी
भूत —रहल/रहलें, रहलस	:	रहली/रहलीं, रहलसि
भवि.—होइहन	:	होइहनि
सकेता —होइत/होइते	:	होइती/होइतीं

क्रिया का रूपान्तर काल तथा अर्थ के अनुसार होता है। अत: भोजपुरी क्रियापदो का परिचय भी उसी आधार पर कराना होगा। उदाहरण के रूप में यहाँ 'आना' (अकर्मक) तथा 'पढ़ना' (सकर्मक) क्रियाओं को प्रस्तुत किया जा रहा है जिनके अनुरूप ही प्राय: अन्य क्रियाओं का भी रूप-निर्माण होता है।

हिन्दी में क्रिया के मुख्य पाँच अर्थ होते हैं—(१) निश्चयार्थ, (२) सम्भावनार्थ, (३) सन्देहार्थ, (४) आज्ञार्थ एवं (५) संकेतार्थ। इन्हीं अर्थों में काल (वर्तमान, भूत, भविष्य) तथा पुरुष (उत्तम मध्यम अन्य) के अनुसार भोजपुरी क्रियाओं के जो रूप प्रयोग में लाये जाते हैं उनका विवरण इस प्रकार है

आना (अकर्मक क्रिया)

१. निश्चयार्थ

वर्तमान काल

क सामान्य वर्तमान—

उ० पु०— मैं आता हूँ—हम आवेनी, हम आवेलीं, हम आईलाँ

म० पु०— तू आता है—तें आवेले

तु आते हो—तूँ आवेलऽ

अ० पु०—वह आता है—ऊ आवेला

वह/वे आते हैं (आदरार्थ)—ऊ आवेने/आवेले

ख. अपूर्ण वर्तमान—

उ० पु०— मैं आ रहा हूँ—हम आवऽतानी, हम आवत बानी, हम आवत बाड़ीं हम आवत हईं, हम आवत बाटीं

म० पु०— तू आ रहा है—तें आवऽतारे , तें आवत बाटे, ते आवत हउए/आवत हवे

तुम आ रहे हो—तूँ आवऽतारऽ, तू आवत बाटऽ, तू आवत हउअऽ/आवत हवऽ

अ० पु०—वह आ रहा है—ऊ आवऽता, ऊ आवत बा, ऊ आवत बाटे, ऊ आवत हउए/हवे

वह/वे आ रहे हैं—ऊ आवऽताने, ऊ आवत बाने, ऊ आवत बाटें, ऊ आवत बाड़ें, ऊ आवत हउएँ/हवें

ग. पूर्ण वर्तमान—

उ० पु०— मैं आया हूँ—हम आइल बानी, हम आइल बाटीं, हम आइल बाड़ीं, हम आइल हईं/हवीं

म० पु०— तू आया है—तें आइल बाड़े, तें आइल बाटे, तें आइल हउए, तें आइल हवे

तुम आये हो—तूँ आइल बाड़ऽ, तू आइल बाटऽ, तूं आइल हउअऽ, तू आइल हवऽ

अ० पु० वह आया है—ऊ आइल बा ऊ आइल बाटे ऊ आइल हउए, ऊ आइल हवे

वह/वे आये हैं (आदरार्थ)—ऊ आइल बाने, ऊ आइल बाड़े, ऊ आइल बाटें, ऊ आइल हउएँ, ऊ आइल हवें

भूतकाल

क. सामान्य भूत—

उ० पु०— मैं आया—हम अइलीं, हम अइनी

म० पु०— तू आया—ते अइले

तुम आये—तूँ अइलऽ

अ० पु०— वह आया—ऊ आइल, ऊ अइलस

वह/वे आये—ऊ अइलें, ऊ अइलन

ख. अपूर्णभूत—

उ० पु०— मैं आता था/आ रहा था—हम आवत रहनीं हम आवत रहलीं, हम आवत रहीं।

म० पु०— तू आता था/आ रहा था—ते आवत रहले, तें आवत रहे।

तुम आते थे/आ रहे थे—तूं आवत रहलऽ तू आवत रहऽ।

अ० पु०— वह आता था/आ रहा था—ऊ आवत रहल, ऊ आवत रहलस, ऊ आवत रहे।

वह/वे आते थे/आ रहे थे—ऊ आवत रहलें, ऊ आवत रहने, ऊ आवत रहलन, ऊ आवत रहें।

भविष्यत्काल

सामान्य भविष्यत्—

उ० पु०— मैं आऊँगा—हम आइब

म० पु०— तू आयेगा—तें अइबे

तुम आओगे—तूँ अइबऽ

अ० पु०— वह आयेगा—ऊ आई

वह/वे आयेंगे—ऊ अइहें ऊ अइहन

अ पु०— वह आता हो—ऊ आवत होखे, ऊ आवत होखस
वह/वे आते हो—ऊ आवत होखें, ऊ आवत होखँस/होखँसु

ख सम्भाव्य भूतकाल

उ० पु०— मैं आया होऊँ—हम आइल होखीं, हम आइल होईं
म० पु०— तू आया हो—तें आइल होखे
तुम आये हो—तूँ आइल होखऽ
अ० पु०— वह आया हो—ऊ आइल होखे, ऊ आइल होखस
वह/वे आये हों—ऊ आइल होखें, ऊ आइल होखँसु

ग. सम्भाव्य भविष्यत्

उ० पु०— मैं आऊँ—हम आई
म० पु०— तू आये—तें आउ
तुम आओ—तूँ आवऽ
अ० पु०— वह आये—ऊ आवे
वह/वे आयें—ऊ आवे
(भविष्यत् काल के अन्य रूप सन्देहार्थ की भाँति होते है)

३. सन्देहार्थ

क. सन्दिग्ध वर्तमान

उ० पु०— मैं आता होऊँगा—हम आवत होइब, हम आवत होखब
म० पु०— तू आता होगा—तें आवत होइबे, तें आवत होखबे
तुम आते होगे—तूँ आवत होइबऽ, तूँ आवत होखब
अ० पु०— वह आता होगा—ऊ आवत होई, ऊ आवत होखी
वह/वे आते होंगे—ऊ आवत होइहे, ऊ आवत होखिहे, ऊ आवत होखँस।

ख. सन्दिग्ध भूत

उ० पु०— मैं आया होऊँगा—हम आइल होइब, हम आइल होखब
म० पु०— तू आया होगा—तें आइल होइबे, तें आइल होखबे
तुम आये होगे—तूँ आइल होइबऽ, तूँ आइल होखबऽ
अ० पु०— वह आया होगा—ऊ आइल होई ऊ आइल होखी
वह/वे आये होगे—ऊ आइल होइहें ऊ आइल होखिहें

४. आज्ञार्थ

आज्ञार्थ क्रिया दो रूपों में होती है—प्रत्यक्ष विधि एवं परोक्षविधि। आज्ञा के अर्थ में क्रिया का प्रयोग मध्यम पुरुष एवं अन्य पुरुष के लिए ही होता है अतः यहाँ इन्हीं दोनों पुरुषों में रूपों की पहचान करायी जायेगी।

क. प्रत्यक्षविधि

म० पु०— तू आ—तें आउ

तुम आओ—तूँ आवऽ

अ० पु०— वह आये—ऊ आवे

वह/वे आयें—ऊ आवें

ख. परोक्षविधि

म० पु०— तू आना, ते अइहे

तुम आना—तूँ अइहऽ

अ० पु०— वह आयेगा—ऊ आई } सामान्य भविष्यत् की भाँति।

वह/वे आयेंगे—अइहें }

किन्तु वाक्य-प्रयोग के अर्थ में अन्तर हो जाना है, यथा—**भविष्यत्‌काल में**—कालिह भगवानदीन हमरे घरे **अइहें। परोक्ष विधि में**—उनसे कहि दीहऽ कि कथा में जरूर **अइहें।**

५. संकेतार्थ

'होना' सहायक क्रिया के रूपों की भाँति—

क. सामान्य संकेतार्थ

उ० पु०— मैं आता—हम अइतीं

म० पु०— तू आता—ते अइते

तुम आते—तूँ अइतऽ

अ० पु०— वह आता—ऊ आवत

वह/वे आते ऊ अइतें

म० पु०— तू आता होता—ते आवत होइते, तें आवत होते, तें आवत होखते

तुम आते होते—तूँ आवत होइतऽ, तूँ आवत होतऽ, तूँ आवत होखतऽ

अ० पु०— वह आता होता—ऊ आवत होइत, ऊ आवत होत, ऊ आवत होखत

वह/वे आते होते—ऊ आवत होइतें, ऊ आवत होतें, ऊ आवत होखतें

ग. पूर्ण संकेतार्थ

उ० पु०— मैं आया होता—हम आइल होइतीं, हम आइल होतीं, हम आइल होखतीं

म० पु०— तू आया होता—ते आइल होइते, ते आइल होते, तें आइल होखते

तुम आये होते—तूँ आइल होइतऽ, तूँ आइल होतऽ, तूँ आइल होखतऽ

अ० पु०— वह आया होता—ऊ आइल होइत, ऊ आइल होत, ऊ आइल होखत

वह/वे आये होते—ऊ आइल होइतें, ऊ आइल होतें, ऊ आइल होखते।

पढ़ना (सकर्मक क्रिया)

निश्चयार्थ

वर्तमान काल

क. सामान्य वर्तमान

उ० पु०— मैं पढ़ता हूँ—हम पढेनी, हम पढ़ेलीं, हम पढ़ीलाँ

म० पु०— तू पढता है—तें पढ़ेले

तुम पढ़ते हो—तूँ पढेलऽ

अ० पु०— वह पढता है—ऊ पढेला

वह/वे पढते हैं ऊ पढेलें ऊ पढेने

ख. अपूर्ण वर्तमान

उ० पु०— मैं पढ़ रहा हूँ—हम पढ़ऽतानी, हम पढ़त बानी, हम पढ़त बाटीं, हम पढ़त पढ़त हईं।

म० पु०— तू पढ़ रहा है—तें पढ़ऽतारे, ते पढ़त बाड़े, तें पढ़त बाटे, तें पढ़त हउए/हवे

तुम पढ़ रहे हो—तूँ पढ़ऽतारऽ, तूँ पढ़त बाड़ऽ, तूँ पढ़त बाटऽ, तूँ पढ़त हउअ/हवऽ

अ० पु०— वह पढ़ रहा है—ऊ पढ़ऽता, ऊ पढ़त बा, ऊ पढ़त बाटे, ऊ पढ़त हउए। हवे

वह/वे पढ़ रहे हैं—ऊ पढ़ऽताने, ऊ पढ़त बाने, ऊ पढ़त बाड़े, ऊ पढ़त बाटें, ऊ पढ़त हउएँ/हवें

ग. पूर्ण वर्तमान

उ० पु०— मैंने पढ़ा है—हम पढ़ले बानी, हम पढ़ले बाटीं, हम पढ़ले हईं

म० पु०— तूने पढ़ा है—ते पढ़ले बाड़े, तें पढ़ले बाटे, ते पढ़ले हउए/हवे

तुमने पढ़ा है—तूँ पढ़ले बाड़ऽ, तूँ पढ़ले बाटऽ, तूँ पढ़ले हउअ/हवऽ

अ० पु०— उसने पढ़ा है—ऊ पढ़ले बा, ऊ पढ़ले बाटे, ऊ पढ़ले हउए/हवे

उन्होंने पढ़ा है—ऊ पढ़ले बाने, ऊ पढ़ले बाटे, ऊ पढ़ले हउएँ/हवें

भूतकाल

क. सामान्य भूत

उ० पु०— मैंने पढ़ा—हम पढ़नी, हम पढ़लीं

म० पु०— तूने पढ़ा—तें पढ़ले

तुमने पढ़ा—तूँ पढ़लऽ

अ० पु— उसने पढ़ा—ऊ पढ़लस

उन्होने पढ़ा—ऊ पढ़ल, ऊ पढ़लन

ख. अपूर्णभूत

उ० पु०— मै पढ़ता था/पढ़ रहा था—हम पढ़त रहनी, हम पढ़त रहली, हम पढ़त रहीं

म० पु०— तू पढ़ता था/पढ़ रहा था—तें पढत रहले, तें पढ़त रहे तुम पढ़ते थे/पढ रहे थे—तूँ पढ़त रहलऽ

अ० पु०—वह पढ़ता था/पढ़ रहा था—ऊ पढ़त रहे, ऊ पढत रहल/रहलस

वह/वे पढते थे/पढ़ रहे थे—ऊ पढत रहें, ऊ पढ़त रहले, ऊ पढ़त रहलन

ग. पूर्णभूत

उ० पु०— मैंने पढ़ा था—हम पढ़ले रहनी, हम पढ़ले रहलीं

म० पु०— तूने पढ़ा था—ते पढ़ले रहले,

तुमने पढ़ा था —तूँ पढले रहलऽ

अ० पु०—उसने पढ़ा था—ऊ पढले रहल/रहलस

उन्होंने पढा था—ऊ पढले रहले/रहलन

भविष्यत् काल

क. सामान्य भविष्यत्

उ० पु०— मैं पढ़ूँगा—हम पढ़ब

म० पु०— तू पढ़ेगा—तें पढ़बे

तुम पढ़ोगे—तूँ पढबऽ

अ० पु०—वह पढ़ेगा—ऊ पढ़ी

वह/वे पढ़ेंगे—ऊ पढ़िहें, ऊ पढ़िहन

(भविष्यत् काल के अन्य रूप सन्देहार्थ की भाँति होते हैं)

२. सम्भावनार्थ

क. सम्भाव्य वर्तमान

उ० पु०— मैं पढ़ता होऊँ—हम पढ़त होईं, हम पढ़त होखीं

म० पु०— तू पढता हो—ते पढत होखे

तु पढते हो/होओ—तूँ पढत होखऽ

अ० पु०—वह पढता हो—ऊ पढत होखे

वह/वे पढ़ते हो—ऊ पढत होखें/होखस/होखसु

ख. सम्भाव्य भूत

उ० पु०— मैंने पढ़ा हो—हम पढ़ले होई/होखीं

म० पु०— तूने पढा हो—तें पढ़ले होखे

तुमने पढा हो—तूँ पढ़ले होखऽ

अ० पु०—उसने पढ़ा हो—ऊ पढ़ले होखे

उन्होंने पढ़ा हो—ऊ पढ़ले होखे

ग. सम्भाव्य भविष्यत्

उ० पु०— मैं पढ़ूँ—हम पढ़ीं

म० पु०— तू पढ़े—ते पढ़े

तुम पढ़ो—तूँ पढ़ऽ

अ० पु०—वह पढ़े—ऊ पढे

वह/वे पढ़े—ऊ पढ़े

३. सन्देहार्थ

क. सन्दिग्ध वर्तमान

उ० पु०— मैं पढ़ता होऊँगा—हम पढ़त होखब/होइब

म० पु०— तू पढ़ता होगा—ते पढत होखबे/होइबे

तुम पढ़ते होगे—तूँ पढ़त होखबऽ/होइबऽ

अ० पु०—वह पढ़ता होगा—ऊ पढ़त होखी/होई

वह/वे पढ़ते होंगे—ऊ पढ़त होखिहें/होइहें, ऊ पढ़त होइहन

ख. सन्दिग्ध भूत

उ० पु०— मैंने पढ़ा होगा—हम पढ़ले होखब/होइब

म० पु०— तूने पढ़ा होगा—तें पढ़ले होखबे/होइबे

तुमने पढ़ा होगा—तूँ पढले होखबऽ/होइबऽ

अ० पु०—उसने पढा होगा—ऊ पढले होई/होखी

उन्होंने पढा होगा—ऊ पढले होखिहें/होइहें/होइहन

४. आज्ञार्थ (विधि)

आज्ञार्थ क्रिया केवल मध्यम पुरुष एवं अन्य पुरुष के लिए ही प्रयोग में लाई जाती है अत: यहाँ इन्हीं दोनों पुरुषों में क्रियारूपों का विवरण दिया जायेगा। इसे दो अर्थो मे प्रयुक्त किया जाता है—(क) प्रत्यक्ष विधि (ख) परोक्ष विधि।

क. प्रत्यक्ष विधि—

म० पु०— तू पढ़—ते पढ, तें पढु
तुम पढ़ो—तूँ पढऽ

अ० पु०— वह पढ़े—ऊ पढे
वह/वे पढ़ें—ऊ पढ़े, ऊ पढ़ँसु

ख. परोक्ष विधि—

म० पु०— तू पढना—ते पढिहे
तुम पढना—तूँ पढ़िहऽ

अ० पु०— वह पढ़ेगा—ऊ पढी
वह/वे पढेंगे—ऊ पढ़िहैं/पढिहन } ये रूप तो सामान्य

भविष्यत् की भाँति होते हैं किन्तु अर्थ के अनुसार प्रयोग में अन्तर होता है। यथा—

सामान्य भविष्यत् में—काल्हि से बचवा इस्कूल में **पढ़ी** [कल से बच्चा स्कूल में पढ़ेगा]

परोक्ष विधि में—ओ से कहि दीहऽ की हमार किताब जरूर **पढ़ी** [उससे कह देना कि मेरी किताब जरूर पढ़ेगा]

५. संकेतार्थ

क. सामान्य संकेतार्थ—

उ० पु०— मैं पढ़ता—हम पढ़तीं

म० पु०— तू पढ़ता—तें पढ़ते/पढ़िते
तुम पढ़ते—तूँ पढ़तऽ/पढ़ितऽ

अ० पु०— वह पढ़ता—ऊ पढ़त
वह/वे पढते—ऊ पढ़तें

ख अपूर्ण संकेतार्थ

उ० पु मैं पढता होता—हम पढत होखतीं/होइतीं

म० पु०— तू पढता होता—तें पढत होखते, होइत, होते

तुम पढ़ते होते—तू पढ़त होखतऽ/होइतऽ/होतऽ

अ० पु०— वह पढता होता—ऊ पढत होखत/होइत/होत

वह/वे पढते होते—ऊ पढत होखतें/होइतें/होतें

ग. पूर्ण संकेतार्थ

उ० पु०— मैंने पढा होता—हम पढ़ले होखतीं/होइतीं/होतीं

म० पु०— तूने पढ़ा होता—तें पढले होखतें/होइतें/होतें

तुमने पढा होता—तूँ पढ़ले होखतऽ/होइतऽ/होतऽ

अ० पु०— उसने पढा होता—ऊ पढ़ले होखत/होइत/होत

उन्होंने पढा होता—ऊ पढले होखतें/होइतें/होतें

आदर के अर्थ में प्रयुक्त क्रियाओं के म० पु० एवं अ० पु० संगा के रूप उ० पु० की भाँति ही होते हैं। यहाँ तीनों कालों में दोनों क्रियाओं 'आना' और 'पढ़ना' के उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं—

क. वर्तमान काल

म० पु०— आप आते हैं—रउआँ/रउरा आईलाँ/आवेलाँ/आवेलीं

आप पढ़ते हैं—रउआँ/रउरा पढ़ीलाँ/पढ़ेलाँ/पढ़ेलीं

अ०पु०— वह/वे आते है—उहाँ के आईलाँ/आईले/आवेली/आवेलीं

वह/वे पढ़ते हैं—उहाँ के पढ़ीलाँ/पढ़ीले/पढ़ेली/पढ़ेलीं

ख. भूतकाल

म० पु०— आप आये—रउआँ/रउरा अइनी, अइलीं

आपने पढ़ा—रउआँ/रउरा पढ़नी/पढ़लीं

अ० पु०— वह/वे आये—उहाँ के अइनी, अइली

उन्होंने पढा—उहाँ के पढनी/पढ़ली

ग. भविष्यत्काल

म० पु०— आप आयेंगे—रउआँ/रउरा आइब

आप पढ़ेंगे—रउआँ/रउरा पढब

अ० पु०— वह/वे आयेंगे—उहाँ के आइब

वह/वे पढगे—उहाँ के पढब

निश्चयार्थक, सम्भावनार्थक, सन्देहार्थक, एवं संकेतार्थक सभी अर्थों में आदरार्थ प्रयुक्त क्रिया के रूप उपर्युक्त ही होते हैं किन्तु आज्ञार्थ में कुछ और रूप भी प्रयोग में लाये जाते हैं। अतः आज्ञार्थक क्रिया के रूपों का विवरण अलग से देना आवश्यक हो जाता है। ये रूप है—

क. प्रत्यक्ष विधि

म० पु०— आप आइए—रउआँ/रउरा आईं, रउआँ आइल जाउँ
आप पढ़िए—रउआँ/रउरा पढ़ीं, रउआँ पढ़ल जाउँ

अ० पु०—वे आयें—उहाँके आई, उहाँ के आइल जाउँ
वे पढ़ें—उहां के पढ़ीं, उहाँ के पढ़ल जाउँ

ख. परोक्ष विधि

म० पु०— आप आइएगा—रउआँ/रउरा आइब, रउआ आइल जाई
आप पढ़िएगा—रउआँ/रउरा पढ़ब, रउआँ पढ़ल जाई

अ० पु०—वे आयेंगे—उहाँ के आइब, उहाँ के आइल जाई
वे पढ़ेंगे—उहाँ के पढ़ब, उहाँ के पढ़ल जाई

लिंग

भोजपुरी क्रियाओं के लिंग प्रयोग में उत्तम पुरुष के दोनों लिंगों अर्थात् पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग में कोई अन्तर नहीं होता किन्तु मध्यम तथा अन्य पुरुष के पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग प्रयोग में अन्तर होता है। तदनुसार मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग क्रिया मे 'अ' के स्थान पर 'ऊ' तथा अन्य पुरुष स्त्रीलिंग क्रिया में 'ए' के स्थान पर 'ई' स्वर का प्रयोग होता है। यथा—

	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
म० पु०—	तूँ आवेलऽ [तुम आते हो]	तूँ आवेलू [तुम आती हो]
	तूँ आवऽतारऽ [तुम आ रहे हो]	तूँ आवत बाड़ू [तुम आ रही हो]
	तूँ अइलऽ [तुम आये]	तूँ अइलू [तुम आईं]
	तूँ आइल रहलऽ [तुम आये थे]	तूँ आइल रहलू [तुम आई थी]
	तूँ अइबऽ [तुम आओगे]	तूँ अइबू [तुम आओगी]
अ० पु	ऊ आवेलें [वह आते हैं]	ऊ आवेली [वह आती हैं]

ऊ आवऽतारें [वह आ रहे हैं] ऊ आवऽतारी [वह आ रही हैं]
ऊ आवत बाड़ें [वह आ रहे हैं] ऊ आवत बाड़ी [वह आ रही हैं]
ऊ अइलें [वह आये] ऊ अइली [वह आयीं]
ऊ आइल रहलें [वह आये थे] ऊ आइल रहली [वह आयी थीं]

भविष्यत् काल की क्रिया के लिंग मे अन्तर नहीं होता। यथा—

ऊ अइहें [वह आयेंगे] ऊ अइहें [वह आयेंगी]

इसके अतिरिक्त अपने से छोटे (लघुतासूचक) 'कर्ता' से सम्बद्ध क्रिया के मध्यमपुरुष में भी पुल्लिंग-स्त्रीलिंग का अन्तर नहीं होता, यथा—

तें आवेले [तू आता है] ते आवेले [तू आती है]
तें आवऽतारे [तू आ रहा है] ते आवऽतारे [तू आ रही है]
तें अइलें [तू आया] तें अइले [तू आई]
तें अइबे [तू आयेगा] ते अइबे [तू आयेगी]

किन्तु अन्य पुरुष के रूप में कुछ क्रियाओं के पुल्लिग-स्त्रीलिंग में अन्तर होता है, यथा—

ऊ आवेला [वह आता है] ऊ आवेले [वह आती है]
ऊ आवऽता [वह आ रहा है] ऊ आवऽतिया [वह आ रही है]
ऊ आवत बा [वह आ रहा है] ऊ आवत बिया [वह आ रही है]

कुछ प्रयोगों में मूल क्रिया को 'इकारान्त' कर दिया जाता है, यथा—

ऊ आइल [वह आया] ऊ आइलि [वह आयी]
ऊ अइलस [वह आया] ऊ अइलसि [वह आयी]
ऊ आवत रहे [वह आ रहा था] ऊ आवति रहे [वह आ रही थी]
ऊ आवत रहलस [वह आ रहा था] ऊ आवति रहलस [वह आ रही थी]

भविष्यत् कालीन क्रिया के अन्य पुरुष मे भी अन्तर नहीं होता—

ऊ आई [वह आयेगा]   ऊ आई [वह आयेगी]

वचन

क्रियापदों के जो परिचय अब तक दिये गये हैं वे सभी एकवचन के हैं। बहुवचन में अधिकांश क्षेत्रीय प्रयोग की क्रियाओं में 'सँ'/सन्', 'जा' का योग होता है।

अपने से छोटो के लिए प्रयुक्त मध्यम पुरुष तथा अन्य पुरुष की बहुवचन क्रियाओं में प्राय: 'सँ' अथवा 'सन्' का योग होता है, यथा—

म० पु०— तोहनीक आवेले सँ/सन् [तुम लोग आते हो/आती हो]
तोहनी क आवऽतारे सँ/सन् [तुम लोग आ रहे हो/आ रही हो]
ते सभे आइल रहले सँ/सन् [तुम सब आये थे/आई थीं]
तोहनी क अइबे सँ/सन् [तुम लोग आओगे/आ ओगी]

अ० पु०—ऊ सभ ओवेलें सँ/सन् [वे सब आते हैं], ऊ सभे आवेली सँ [वे सब आती हैं]
ऊ सभ आवऽताने सँ/सन् [वे सब आ रहे हैं] ऊ सभ आवऽतारी सँ/सन् [वे सब आ रही हैं]
लरिकवन आवऽताने/आवत बाने सँ/सन् [लड़के आ रहे हैं] ऊ सभ आइल रहले सँ/सन् [वे सब आये थे], ऊ सभ आइल रहली सँ/सन् [वे सब आई थी]
ऊ सभ अइहें सँ/सन् [वे सब आयेंगे], ऊ सभ अइहें/अइहीं सँ/सन् [वे सब आयेंगी]

शेष सभी पुरुषों (उ०, म०, अ०) के कर्त्ताओं से सम्बद्ध क्रियाओं के बहुवचन रूप में 'जा' प्रत्यय का योग होता है, यथा—

उ० पु०— हम्नी के आवेनी जा/आवेलीं जा [हमलोग आते हैं/आती हैं]
हमहन आवऽतानी जा/आवत हईं जा [हम लोग आ रहे हैं/आ रही हैं]
हमनी क अइली जा/अइनी जा [हम लोग आये/आई]
हमनीक आइब जा [हम लोग आयेंगे/आयेंगी]

म० पु तँ लोगन/त पाचन आवेलऽ जा [तुम लोग आते हो]

तूँ लोगन/पाचन आवेलू जा [तुम लोग आती हो]
तूँ लोगन आवऽतारऽ जा [तुम लोग आ रहे हो]
तू लोगन आवऽतारू जा [तुम लोग आ रही हो]
तू सभे आइल रहलऽजा [तुम सब लोग आये थे]
तू सभे आइल रहलू जा [तुम सब लोग आई थीं]
तू सभे अइबऽ जा [तुम सब लोग आओगे]
तू सभे अइबू जा [तुम सब लोग आओगी]
पु०—ऊ लोगन आवेलें जा [वे लोग आते हैं]
ऊ लोगन आवेली जा [वे लोग आती हैं]
ऊ लोगन आवऽताने जा [वे लोग आ रहे हैं]
ऊ लोगन आवऽतारी जा [वे लोग आ रही हैं]
सगरो लोगन अइलें जा [सब लोग आये]
सगरो लोगन आइल रहले जा [सब लोग आये थे]
सगरो लोग आइल रहली जा [सब लोग आयी थीं]
सभे केहू अइहें जा [सब कोई आयेंगे]
सभे केहूँ अइहीं जा [सब कोई आयेंगी]

कुछ अन्य क्षेत्रों, यथा—गोरखपुर, देवरिया एवं बनारस आदि र...
बहुवचन में 'जा' का योग नहीं भी किया जाता। उदा०—
पु०— हमनीके आवत बानी (देवरिया), हमहन आवत हईं/हवीं...
हम लोग आवत बाटीं (गोरखपुर)
पु०— तू सब लोग आवत बाड़ऽ (देवरिया), तू सब लोग आव...
हवऽ (बनारस) तू सब लोग आवत बाटऽ (गोरखपुर)
पु०—ऊ सबलोग आवत बाने (देवरिया), ऊ सब लोग आवत...
(बनारस) ऊ सब लोग आवत बाटें (गोरखपुर)
...त्रों की भूत एवं भविष्यत् काल की बहुवचन क्रियाओं में भी जा...
होता।

...क्त क्रिया

है किन्तु पूर्वकालिक कृदन्त के योग से बनी क्रिया अपने धातु रूप मे अविकृत रहती है। उदाहरणार्थ—क्रियार्थक सज्ञा से बनी संयुक्त क्रिया की मुख्य क्रिया मे हिन्दी के 'ना' तथा 'ने' के स्थान पर भोजपुरी में 'ए' का योग होता है, यथा—

मैं जाना चाहता हूँ—हम **जाये** चाहऽतानी, वह वहाँ जाना चाहता है—ऊ टहाँ **जाये** चाहता, आने दूंगा—**आवे** देइब/देब, जाने दूंगा—**जाये** देब/देइब, पढ़ने लगे—**पढ़े** लगले, जाने पायेंगे—**जाये** पइहें आदि।

शेष सहयोगी क्रियाओ, जैसे—पड़ना, होना, चाहना आदि के योग से निर्मित संयुक्त क्रियाओं की मुख्य क्रिया में 'के' प्रत्यय का भी योग होता है, यथा—

पढना पडेगा—**पढ़े के** परी/पडी, आना होगा—**आवे के** होई|होखी
जाना चाहिए—**जाये के** चाही, करना चाहिए—**करे के** चाहीं आदि।

वर्तमान कालिक कृदतो से बनी संयुक्त क्रियाओं की मुख्य क्रिया में 'ता', 'ते', 'ती' के स्थान पर 'त' का ही योग करके अर्थ-काल के अनुसार परिवर्तन किया जाता है, यथा—

मैं देखता रहा—हम **देखत** रहि गइलीं, तुम पढ़ते जाते हो—तूँ **पढ़त** जात हउअऽ, लड़का बोलता जाता है—लड़िकवा **बोलत** जात बा, लडकी गाती जाती है—लइकी **गावत** जात बिया, वह चलता भया—ऊ **चलत** भइल, आदि।

भूतकालिक कृदतो से बनी क्रियाओ में 'ल' के योग से विकार होता है, यथा—

दर्द के मारे सिर फटा जाता है—दरद के मारे सिर **फाटल** जाला/जात हऽ, मैं फिक्र के मारे मरी जा रही हूँ—हम फिकिर के मारे **मरल** जात हई/हवीं, तुम देखो, न देखो, मैं तुम्हें देखा करूँ—तूँ देखऽ, ना देखऽ, हम तोहके **देखल** करीं, नींद के कारण वह गिरा पड़ रहा है—नींद के कारन ऊ **गीरल** परत हउए, मैं तुम्हें भेजा चाहता हूँ—हम तोहके **भेजल** चाहऽतानी, वह वहाँ जाया चाहता है—ऊ उहवाँ **जाइल** चाहता आदि।

पूर्वकालिक कृदंत के योग से बनी क्रियाओं में मुख्य क्रिया अपने मूल रूप मे ही रहती है यथा—

छोड दिया—छोर/छोड दिहलस पढ लो पढ लऽ गिर

परल/पडल, चल दिया जाय-चल दीहल जाउ, कर लेगा—कर लेई,
उठ बैठा—ऊठ बइठल, बोल पड़ा—बोल पड़ल/पड़लस आदि।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि भोजपुरी भाषा की पहचान मुख्यतः उसके क्रियापदों से ही होती है। इस दृष्टि से क्रियारूप का परिचय अन्य शब्दरूपों की अपेक्षा कुछ विस्तार से देना पड़ा है। उदाहरण के रूप में जिन क्रियाओं को प्रस्तुत किया गया है उन्हीं के समान लगभग सभी क्रियाओं के रूप होते हैं, उनके क्षेत्रीय प्रयोगों में अवश्य अन्तर पाया जाता है जैसा कि क्रिया के सामान्य रूपों के अन्तर्गत उद्धृत किया जा चुका है।

•••

अव्यय

भोजपुरी अव्ययों (क्रिया वि०, सम्बन्ध०, समुच्चय०, विस्मयादि०) में हिन्दी शब्दों से ध्वनि अथवा रूपगत भिन्नता सम्बन्धी विशेषताएँ प्रायः अन्य शब्द भेदों, यथा—संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि के ही समान पाई जाती हैं, जैसे—

अबहिन (अभी), इहाँ/इहवाँ (यहाँ), उहाँ/उहवाँ (वहाँ) एइजा/ एहिजा (इस जगह), ओहर (उधर), ओहीजा (उसी जगह), कहूँ (कहीं), जब (जब ही/जभी), तबो (तभी), तरे (तले), नाहीं (नहीं), पाछे (पीछे), फेर (फिर), बैर (बार), रतिया (रात को), अइसे (ऐसे) आनऽ (या तो), ना तऽ (न तो), मानू/माने (मानो), वाह! (वाह!) लऽ! (लो!), सच्चहू! (सच!), हँऽ/हूँ (हाँ), आदि।

ऐसे शब्दों का स्पष्टीकरण 'शब्द समाहार' के अन्तर्गत इनके हिन्दी पर्यायों द्वारा स्वतः हो गया है। अतः यहा अव्यय शब्दों का विस्तृत विश्लेषण करने की आवश्यकता नहीं समझी गयी है।

•••

प्रत्यय एव परसर्ग

बहुधा अकारान्त, उकारान्त एवं एकारान्त शब्दों में 'आ', 'वा' अथवा 'अवा प्रत्ययों का तथा इकारान्त शब्दों में 'या' अथवा 'यवा' प्रत्ययो का योग होना भोजपुरी भाषा की विशेषता है। यथा—

'आ', 'वा', 'अवा'—

ऊकारान्त शब्दो में 'ऊ' का हस्वीकारण होकर 'आ' का योग हो जाता है, यथा—

मेहरारू—मेहररुआ, राजू—रजुआ, बाबू—बबुआ, भानू—भनुआ आदि। अकारान्त शब्दों में 'वा' का योग होता है। यदि 'आ' स्वर होता है तो 'वा' के पूर्व उसका हस्वीकरण हो जाता है, यथा—

मानिक—मनिकवा, लड़का—लड़िकवा, कमला—कमलवा आदि। एकारान्त में 'अवा' प्रत्यय का योग होता है, यथा—

राधे—रधेअवा, बाँके—बँकेअवा, रामे-रमेअवा आदि।

'या' 'यवा'

इकारान्त शब्दों में उक्त दोनों प्रत्ययो का योग होता है। प्रत्यय लगने पर 'ई' का हस्वीकरण हो जाता है, यथा—

लड़की-लड़किया, महतारी—महतरिया, चमेली—चमेलिया

बड़की—बड़कियवा, हरी—हरिया/हरियवा, माली—मलिया/मलियवा आदि।

'इ'

पुल्लिग अकारान्त शब्दों को स्त्रीलिग रूप देने के लिए प्राय: 'इ' प्रत्यय का योग हो जाता है, यथा—

गवाँर—गवाँरि, कुआँर—कुआँरि, मुरझाइल—मुरझाइलि आदि।

'इन' प्रत्यय के योग से बने स्त्रीलिंग शब्दों में भी अन्त में 'इ' का प्रयोग होना ठेठ भोजपुरी की पहचान है, यथा—

कोइरिन—कोइरिनि, मलहोरिन—मलहोरिनि, मालिन—मालिनि, धोबिन—धोबिनि, पडिताइन—पांडिताइनि आदि।

उक्त प्रत्ययो के योग से बने अधिकाश सज्ञा शब्दों के सज्ञा शीर्षक के अन्तर्गत दिये जा चुके हैं

'ए'

हिन्दी के 'ही' अथवा 'मात्र' शब्दों के स्थान पर भोजपुरी शब्द मे 'ए' प्रत्यय के योग से विकार होता है। यथा—

संज्ञा—बाबू ही जायेंगे—**बाबुए** जइहें, पतोहू ही घर में रहेगी—**पतोहुए** घर मे रही, लड़के ने ही कहा—**लड़िकवे** कहलस, बोलीमात्र से पेट नहीं भरेगा—**बोलिए** से पेट ना भरी आदि।

सर्वनाम—सर्वनाम शब्दो मे अन्य पुरुष के कुछेक रूप मे ही 'ए' लगता है। शेष में 'ही' का ही योग होता है, यथा—वही/वह ही जायेंगे—**ऊहे** जइहे/जइहन, उसने ही बताया था—**ऊहे** बतवले रहे, वही तो मैं भी कह रहा था—**ऊहे** त हमहू कहत रहनी आदि। शेष मे 'ही' का ही प्रयोग होता है, यथा—मैं ही जाऊँगा—**हम ही** जाइब, तू ही जायेगा—**तें ही** जइबे, तुम्ही करोगे—**तूं ही** करबऽ, वही जायेंगे—**उनही** जइहें, उन्हीं से कहना—**उनही** से कहिहऽ आदि।

विशेषण—पका आम ही चाहिए—**पाकले** आम चाही, सुन्दर लड़की को ही सब पसन्द करते हैं—**सुन्दरे** लडकी के सभे पसन्द करेला, बढ़िया ही हाल है—**बढ़ियें** हाल बाटे, जाड़े भर गरम पानी ही पीना—जाड़ा भर **गरमें** पानी पीहऽ आदि।

क्रिया—करूँगा ही—**करबे** करब, होगा ही—**होइबे** करी, पढ़ेगा ही—**पढ़बे** करी आदि।

अव्यय—उनके साथ ही जाना—उनके **साथे** जइहऽ, वहीं गये हैं—**उहवें** गइल बाने, आगे ही उनका घर है—**अगवे** उनके घर बा, बाहर ही सो रहे हैं—**बहरवे** सूतल हउअन आदि।

क्रियार्थक संज्ञा से निर्मित संयुक्त क्रिया में 'ना' प्रत्यय के स्थान पर 'ए' स्वर का योग भी भोजपुरी भाषा की विशेषता है, यथा—बाँचना जानते हैं—**बाँचे** जानत हउएँ/हउअन, हँसने लगे—**हँसे** लगलें, खेलना चाहता है—**खेले** चाहऽता, करना पड़ेगा—**करे** के पड़ी, जाना चाहिए—**जाये** के चाहीं आदि।

'हू', 'ओ', 'यो'

हिन्दी के 'भी' के स्थान पर भोजपुरी में 'हू' अथवा 'ओ' 'यो' प्रत्यय का शब्द के साथ योग होता है

भी जाऊँगा—**हमहू** जाइब, तुम भी जाओगे—**तूहू** जइबऽ आदि। किन्तु अन्य पुरु
मे 'ओ' का योग होता है, यथा—वह भी जायेग/जायेगे—**ऊहो** जाई/जइहें।

शेष अन्य अकारान्त, उकारान्त, एकारान्त तथा ओकारान्त शब्दों में 'ओ' तथा 'ई' कारान्त में 'यो' का योग होता है। यथा—

राम भी जायेगा—**रामो** जाई, तुम तनिक भी नहीं बोलोगे?—तूँ **तनिको** नाहीं बोलबऽ? कमला भी जायेंगी—**कमलो** जइहें/जइहन, कमला भी जायेगी—**कमलओ** जाई, राधे से भी कह देना—**राधेओ** से कहि दीहऽ, साधो से भी कह देना—**सधोओ** से कहि दीहऽ आदि।

भाई भी जायेंगे—**भाइयो** जइहें/जइहन, माई भी साथ चलेगी—**माइयो** साथे चली, तुम अपनी बोली भी भूल गये?—तू आपन **बोलियो** भुला गइलऽ?

कर्म कारक के परसर्ग 'को' तथा सम्बन्ध कारक के परसर्ग 'का', 'के', 'की' से सम्बन्धित भोजपुरी मे जो रचनागत भेद होता है, वह इस प्रकार है—

कर्मकारक प्रत्यय 'को' के स्थान पर **'क'**, **'का'**, **'के'** का प्रयोग—

राम को बुलाओ—**राम क** बोलावऽ/**राम का** बोलावऽ/**राम के** बोलावऽ आदि।

बच्चे को मिठाई दो—**बचवा क** मिठाई दऽ/**बचवा का** मिठाई दऽ/**बचवा के** मिठाई दऽ आदि।

तुमको मैं क्या दूँ—**तोहकऽ** हम का दीं/**तोहका** हम का दीं/**तोहके** हम का दीं आदि।

उसे कुछ दे देना—**ओहकऽ** कुछ दे दीहऽ/**ओहका** कुछ दे दीहऽ/**ओके** कुछ दे दीहऽ आदि।

सम्बन्ध कारक के 'का', 'के', 'की' के स्थान पर भोजपुरी में **'क'** का प्रयोग—

मुन्नी का बेटा आया है—**मुन्नी क** बेटवा आइल बा।

मुन्नी के घर में कोई आया **है—मुन्नी क घरे कौनो** आइल **बा/केहू** आइल **बा**

रामू के घर में चोरी हुई—**रामू के** घर में चोरी भइल

'की' के स्थान पर सर्वत्र '**क**' अथवा '**के**' का ही प्रयोग होता है वहां सम्बन्धित शब्द के स्त्रीलिंग होने पर भी कोई अन्तर नहीं पड़ता, यथा—

राम की पुस्तक यहाँ है—**राम क** पुस्तक इहवाँ बाटे/**राम के** पुस्तक इहवां बाटे, वह लता की कुटिया मे बैठी है—ऊ **लता के** कुटिया में बइठल बिया आदि।

संख्यावाचक विशेषण में प्राय: '**गो**' या '**ठो**' लगाने की प्रकृति है, एक, दो तीन—**एगो, दूगो, तीन गो** अथवा—**एक ठो, दुई ठो, तीन ठो** आदि। प्रयोग 'विशेषण' शीर्षक के अन्तर्गत दिये जा चुके हैं।

कुछ क्षेत्रों मे इच्छाबोधक/कामना सूचक, आज्ञार्थक तथा सम्भावनार्थ क्रियाओ के अन्य पुरुष रूप में प्राय: '**स**' अथवा '**सु**' प्रत्यय लगा दिया जाता है, यथा—

भगवान करें तुम आगे बढ़ो—भगवान **करेंस** तूँ आगे बढ़ऽ

वही जाने कि क्या करना चाहते हैं—ऊहे **जानस** कि का करे चाहत बाड़न

उनसे कह दो कि घर जायें—उनसे कहि दऽ की घरे **जासु**

आना चाहें खुशी से आयें—आवे **चाहसु** खुसी से **आवंसु**

सम्भवत: वह आज आयें—सम्भवत: ऊ आज **आवंसु**/आवें

अपने से छोटों के लिए क्रिया के बहुवचन में '**सँ**' अथवा '**सन्**' का योग भी भोजपुरी की अपनी विशेषता है, यथा—

तुम सब आ रहे हो?—तोहनी के **आवऽतारे सँ/सन्?**

वे सब आ रहे हैं—ऊ सभ आवऽताने **सँ/सन्**

ये सब समाज के घुन हैं—ई कुल समाज के घुन **हउएँ सँ/सन्**

क्रिया के तीनों पुरुषों (उत्तम, मध्यम, अन्य) के बहुवचन में **जा** प्रत्यय का योग भी भोजपुरी प्रयोग की पहचान है, यथा—

हम लोग आ रहे हैं—हमनी क **आवऽतानी जा**

तुम लोग आ रहे हो—तू लोगन **जा**

वे लोग आ रहे हैं—ऊ लोग **आवऽताने जा**

सँ/सन् तथा 'जा' प्रत्ययों के प्रयोग के उदाहरण क्रिया के बहुवचन रूप के अन्तर्गत भी दिये जा चुके हैं।

भोजपुरी मे '**का**' परसर्ग का प्रयोग अन्य रूपों एव अर्थों में भी होता है, यथा—

वस्तु सूचक—

क्या देख रहे हो?—**का** देखत हउअऽ?

प्रश्न सूचक—

उनसे मिले हो क्या?—उनसे मीलल हउअऽ **का**ऽ आदि।

●●●

प्रकरण : दो

शब्द-समाहार

[सप्रयोग]

संज्ञा

अ

अइच— तनाव, खिचाव। प्र०—हथवा के नसवा मे अइच भइले से बहुत पीड़ा होखऽता [हाथ की नस में तनाव होने से बहुत पीडा हो रही है]।

अकटा—छोटा कंकड, कंकरीट, मिट्टी अथवा पत्थर का छोटा टुकडा। प्र०—चउरा मे बहुत अकटा बाटे, ठीक से बीन के बनइहऽ (चावल मे कंकड़ ज्यादा है, अच्छी तरह बीनकर बनाना)।

अकरा—एक प्रकार का छोटा बीज या दाना जो गेहूं, चना आदि मे अवांछित रूप मे रहता है, जिसे निकालकर अलग करना पड़ता है।प्र०—गोहूँआ से अंकरा-माटी निकाल के पिसइहऽ [गेहूँ से अकरा मिट्टी निकालकर पिसवाना]।

अंकवार/अंकवारी—मिलन, आलिंगन, भेंट, एक दूसरे को बाहों मे लिपटा कर भेटने की प्रक्रिया। प्र०—(१) समधिन जी से हमार भेंट अकवार कहि दीहल जाई [समधिन जी से मेरा भेंट-अंकवार कह दीजिएगा]। (२) हमके देखते ऊ धधा के अंकवारी मे भरि लिहले [मुझको देखते ही उन्होंने प्रसन्न होकर मेरा आलिंगन किया]।

अखुआ—अंकुर, डाभ, कल्ला।प्र०—अंखुआ फूटल चना भा मूंग खइले से तन्दरुस्ती के फायदा होखेला [अकुर फूटे हुए चने अथवा मूग खाने से तन्दरुस्ती को फायदा होता है]

अंगिया—चोली, नारी का उत्तरार्द्ध वस्त्र। प्र०—गरीबी के कारन अपने मेहरारू के तन ढांपे खातिर एगो अगिया तक ना जुटा सकेलन [गरीबी के कारण अपनी पत्नी का तन ढकने के लिए एक चोली तक नहीं जुटा सकते]।

अंजोर—उजाला, प्रकाश। प्र०—रउआं हँस दी त भोर हो जाई। (१) सगरो अगना अंजोर हो जाई। [आप हँस दीजिए तो भोर हो जायेगा। पूरा आगन प्रकाशमय हो जायेगा]। (२) एतना आंधियारे मे कहवां जात बाडऽ! तनी अजोर हो जाये दऽ [इतने अंधेरे मे कहाँ जा रहे हो! जरा उजाला हो जाने दो]।

अंटकर—अटकल, अनुमान, अन्दाजा। प्र०—(१) आगे का होई, एकर हम अंटकर ना लगा सकीले [आगे क्या होगा, इसका मैं अनुमान नहीं कर सकता]। (२) तनी अटकर लगा दऽ, केतना चउरा रीन्ही [जरा अन्दाजा लगा दो, कितना चावल पकाऊँ]।

अंटिया—कटी हुई फसल का छोटा गट्ठर। प्र०—धनवा के बडहन बोझा ना बान्ह के छोट-छोट अंटिया बनावऽ जेसे लरिकवन के ढोवले मे सहूलियत होई [धान के बड़े बोझे न बनाकर या बांधकर छोटे-छोटे बोझे बनाओ जिससे लड़को को ढोने मे आसानी हो]।

अटी—दुशाले की तरह ओढने की चादर

प्र०—भागलपुरी अटी सबसे बढ़िया होखेला [भागलपुरी अटी सबसे बढ़िया होता है]।

अठई—कुत्ते के शरीर में चिपका रहा कीट जो उसके रक्त को चूसकर उसे पीड़ा देता है। प्र०—अठई परले से कुकुरा छौंछिया-छौंछिया के एहर-ओहर भागत फिरत बा [अठई पड़ने से कुत्ता बेचैन हो-होकर इधर-उधर भागता फिरता है]।

अठुली—आम का बीज, गुठली। प्र०—आम के अठुली मडाके ओकरे बीच के गूदा निकाल के दवाई बनावल जाला। [आम की गुठली मड़ाकर उसके बीच का गूदा निकालकर दवा बनाई जाती है]।

अंडरा—पाला। प्र०—असों अइसन अंडरा परल कि सगरो फसल नसा गइल [इस वर्ष ऐसा पाला पड़ा कि सम्पूर्ण फसल नष्ट हो गई]।

अंडसा—तंग जगह में फसाव, दबाव। प्र०—एतना छोट खटोला पर दुइ-दुइ बच्चन के लेके सुतले पर अंडसा होला [इतने छोटे खटोले पर दो दो बच्चों को लेकर सोने में अंड़सा होता है]।

अड़हुल—एक प्रकार का लाल फूल, गुड़हल, जपा। प्र०—अड़हुल के फूल पीस के पीये से भीतर के गरमी सिरा जाल [गुड़हल का फूल पीसकर पीने से भीतर की गर्मी शान्त हो जाती है]।

अतरा—एक दिन छोड़कर उसके बाद का दिन अथवा एक स्थान छोड़कर उसके बाद का स्थान मलेरिया बुखार की एक कोटि जिसमें बुखार एक दिन छोड़कर फिर चढ़ जाता है। प्र०—(१) रोज रोज ना आवेला। एक दिन के अंतरा पर आवेला। [रोज रोज नहीं आता, एक दिन छोड़कर आता है]। (२) हमरा घर के एक घर अंतरा पर उनके घर बा [मेरे घर के बाद एक घर छोड़कर उनका घर है]। (३) उनके बेटवा के अंतरा बोखार आवत बा [उनके बेटे को अंतरा बुखार आता है]।

अँतरी—अँतड़ी, आँत। प्र०—उनके पेट पिरात रहता। शायद अंतरी में घाव हो गइल बा [उनके पेट में पीड़ा है। शायद आँत में घाव है]।

अइछन—मनौती हेतु देवी देवता को समर्पित सिक्के अथवा धनराशि। प्र०—बच्चा के अइछन उतार के देवी देवता पर चढ़ा दीहऽ [बच्चे का अइछन उतारकर देवी देवता को भेंट चढ़ा देना]।

अकाज—समय का व्यर्थ जाना, कार्य की हानि, हर्ज। प्र०—जल्दी से पइसा ले के चलि द, नाहीं त तोहार काम के अकाज हो जाई [जल्दी से पैसा लेकर चल दो, नहीं तो तुम्हारे काम के समय का नुकसान हो जायेगा]।

अकिल (फा अक्ल)—बुद्धि, बहुत सोच-समझ के अकिल लगा के काम करिहऽ [बहुत सोच-समझकर अक्ल (बुद्धि) लगाकर काम करना]।

अख्तियार—अधिकार, वश, काबू। प्र०—(१) दोसरे के बाल-बच्चा पर हमार का अख्तियार बा? [दूसरे के बाल

बच्चे पर हमारा क्या अधिकार है या वश है?] (२) अपने सेवा से ऊ सबके अपने अख्तियार मे क लिहले हई [अपनी सेवा से उन्होंने सबको अपने काबू मे कर लिया है]।

ुरहट—उलझन, झमेला, पेचीदगी। प्र०—जइसे जइसे जिनगी अझुरहट मे फँसल जा रहल बा, ओइसे ओइसे भोजपुरी उपन्यास के कथानक सश्लिष्ट होखल जा रहल बा [जैसे-जैसे जिन्दगी उलझन में फँसती जा रही है, वैसे-वैसे भोजपुरी उपन्यास का कथानक संश्लिष्ट होता जा रहा है]।

ार—नदी का तट, मेढ़, ढेर, बड़ा समूह। प्र०—(१) उहां गंगा जी के अड़ार बहुत ऊँच बाटे [वहाँ गंगा जी का तट बहुत ऊँचा है] (२) (गीत) गंगा जी के ऊँच अडरिया तिवइया एक रोवेले होऽ [गंगा जी के ऊँचे तट पर एक तिरिया (नारी) रो रही है] (३) आरे उनके खेत-खरिहान में धान के अड़ार लागल बाटे [अरे, उनके खेत-खलिहान में धान का ढेर लगा हुआ है]।

ुरी—उडद अथवा चने की पिसी दाल में पेठा एव अन्य मसाले मिलाकर बनायी गयी सूखी बरी, बडियाँ। प्र०—आलू में अदउरी डार के तरकारी बना लीहऽ [आलू में बड़ियाँ डालकर सब्जी बना लेना]।

ुहन—भोजन (चावल-दाल) पकाने के लिए पहले से गर्म होने के लिए चूल्हे पर चढाया गया पानी। प्र०—दलिया के अदहन चढा के नहाये चलि जा आके दाल धो के डार दीहऽ [दाल का अदहन चढ़ाकर नहाने चली जाओ, आकर दाल धोकर डाल देना]।

अनखुन—दोष, अवगुण, ऐब। प्र०—हमरे कमवा मे तूँ कौनो ना कौनो अनखुन जरूरे निकालेलू [मेरे काम मे तुम कोई न कोई दोष/ऐब जरूर निकालती हो]।

अनगुताह—सबेरा, भोर। प्र०—अनगुताह भइले हम उहाँ से उठि के चलि दिहनी [सबेरा होते ही मैं वहाँ से उठकर चल पड़ा]।

अनभल—बुराई, अहित। प्र०—(१) तोहरे खातिर हम अनभल ना चेतीलाँ [तुम्हारे लिए मैं अहित की बात नहीं सोचती]।

अन्हउरी—घमौरी, गर्मी से शरीर पर निकली छोटी फुन्सियाँ, अम्हौरी। प्र०—अन्हउरी निकलले से सगरो देहियाँ बरत बाटे [घमौरी निकलने से पूरा शरीर जल रहा है]।

अन्हार—अन्धकार, अंधेरा। प्र०—अन्हार भइला पर कुछ देखाई नाही परऽता [अन्धकार/अधेरा होने पर कुछ दिखाई नही पड रहा है]।

अबटन—उबटन, शरीर पर मलने के लिए सरसों, आटा, हल्दी आदि का लेप। प्र०—अबटन लगा के नहाए से देह के रंग साफ हो जाला अउर चमडो मोलायम हो जाला [उबटन लगाकर नहाने से शरीर का रग साफ हो जाता है और चमड़ा भी मुलायम पड जाता है]।

अमोला—आम का छोटा पौधा। प्र०—घूर पर आम के अँठुली फेंक दिहलीं त

अमोला जामि गइल [घूरे पर आम की गुठली फेंक दी तो अमोला जम गया]।

अम्हउरी—अन्हौरी, घमौरी, फुन्सी। प्र०—अबकी एतना अम्हउरी निकल आइल कि सगरो देहिया भभात बाटे [इस बार इतनी घमौरी निकल आई कि पूरा शरीर जल रहा है]।

अरिछन—बलैया, न्यौछावर। प्र०—केई लीहे अरिछन केई लीहे परिछन केई लीहे सुखडार रे। [कौन अरिछन लेगा, कौन परिछन लेगा, कौन सुख की डाल लेगा]।

अलग—अंग, भाग, हिस्सा। प्र०—(१) हड्डी के रोग पकडला से उनके देह के कौनो अलग ठीक से काम ना करत बा [हड्डी का रोग होने से उनके शरीर का कोई अग ठीक से काम नहीं कर रहा है]। (२) लहगा त धरऽली अलग पर चुनरी पलंग पर हो .. [लहंगा तो अग पर धारण किया और चुनरी पलंग पर...]।

अलवातिन/अलवाती—*जिसको बच्चा* पैदा हुआ हो, जच्चा। प्र०—अलवाती के खान-पान के परभाव बच्चो पर परेला [जच्चा के खाने-पीने का प्रभाव बच्चे पर भी पड़ता है]।

अलाव—राशि, समहू, ढेर, किसी वस्तु की अधिकता। प्र०—उनकर खरिहान त आज काल्हि धान के बोझा के अलाव से पटि गइल बा [उनका खलिहान तो आजकल धान के बोझों के बहुतायत से पट गया है]।

अवँठी—किनारा छोर प्र० हमार सास रोटी के बीच के हिस्सा खा के अवँठी छोड देत रहली [मेरी सास रोटी के बीच का भाग खाकर किनारे के हिस्से को छोड़ देती थी]।

अवँरा—आवँला, आमला, आमलक। प्र०—कातिक में अवँरा के पेड़ के नीचे खइले से पुन्य होला [कार्तिक में आँवले के पेड़ के नीचे खाने से पुण्य होता है]।

असकत—आलस्य। प्र०—ई कमवा करे में असकत मत करऽ, जल्दी से सुरू कर दऽ [इस काम को करने में आलस्य मत करो, जल्दी से शुरू कर दो]।

असवार—सवार, आरूढ़। प्र०—दूर से घोड़ा पर एगो असवार आवत देखिके जियरा घबड़ा/घबरा गइल [दूर से घोड़े पर एक सवार को आते देखकर जी घबड़ा गया]।

अहरा—कंडी अथवा उपले की आँच, *जलसंग्रह के लिए बाँधा गया बाँध*। प्र०—गोइठा भा चिपरी के अहरा पर हँडिया में रीन्हल/रींहल दाल आउर लिट्टी खइले में बढ़िया लागेला [अहरा पर हंड़िया में पकायी गयी दाल और बाटी खाने में अच्छी लगती है]।

अहिवात—सौभाग्य, सुहाग। प्र०—खुस रहऽ, तोहार अहिवात बनल रहे [खुश रहो, तुम्हारा सौभाग्य बना रहे]।

अहोर-बहोर—नव वधू का ससुराल से नैहर (मायके) जाना और आना। प्र०—अबहिन हमरे पतोहू के अहोर-बहोर नइखे भइल [अभी हमारी बहू का मायके की जवाई और लौटाना नहीं हुई है]

आ

आँकर—(दे० अकटा या अंकरा)।

आंकुस—अंकुश, रोक, नियन्त्रण। प्र०—तोहरा अपने लडिकवा/लरिकवा पर तनिको आंकुस नइखे। एही से त ऊ एतना बिगड़ल जात बा [तुम्हारा अपने लड़के पर तनिक भी अंकुश नहीं है। इसी से वह इतना बिगडता जा रहा है]।

आंगछ—भाग्य। प्र०—हमार आंगछे खराब बा, एमें कवनो के दोस नइखे [हमारा भाग्य ही खराब है, इसमें किसी का दोष नहीं है]।

आंठी—गुठली (दे० अठुली)। हड्डी। प्र०—उनके देह के मांस गरि के खाली आंठी बचल बा [उनके शरीर का मांस गलकर केवल हड्डी बची है]।

आँड़ी—अण्डकोष, गाठ, कन्द। प्र०—(१) आँड़ी सरीर के बहुत नाजुक अंग होला [अण्डकोष शरीर का बहुत नाजुक अंग होता है]। (२) रजनी-गन्धा भा लिली के आँड़ी से पौधा उगेला [रजनीगन्धा या लिली फूल के कन्द से पौधा उगता है]।

आंतर—अन्तर, फासला (शेष दे० अंतरा)। प्र०—उनके घरवा से एक घर के आंतर दे के दुसरका घर हमार हउए [उनके घर से एक घर के बाद दूसरा घर मेरा है]।

आई—आयु, उम्र। प्रा०—राम करे हमरे बचवा के हमार आई लागि जा [राम करे मेरे बच्चे को मेरी आयु लग जाय]

आजा (स्त्री. आजी)—पिता के पिता, दादा, पितामह। प्र०—हमार लरिकवा/लड़िकवा अपने आजा-आजी के पा के बहुत खुस भइल [मेरा लडका अपने दादा-दादी को पाकर बहुत खुश हुआ]।

आसरा—आशा, उम्मीद, सहारा। प्र०—(१) हम एही आसरा से तोहरे लगे आइल बानी कि तू हमार कुछ मदद करबू [मैं इसी आशा से तुम्हारे पास आई हूँ कि तुम मेरी कुछ मदद करोगी] (२) हम तोहरे आसरे जीयत बानी [मै तुम्हारे ही सहारे जी रही हूँ]।

इ

इंकड़ा—मिट्टी के बर्तन का टूटा हुआ छोटा टुकड़ा, छोटा ककड़ या ककरीट (दे० अंकड़ा), अकरा। प्र०—लरिकवा घइलिया फोर के ओकरे इकड़वा से खेलत बाटे [लड़का घड़ा फोड़कर उसके टूटन से खेल रहा है]।

इंगुर—लाल सिन्दूर, लाल बिन्दी। प्र०—बहुरिया के माथे पर लाल इगुर के टीका बहुते सोभेला [बहू के माथे पर लाल सिन्दूर या टीका बहुत ही शोभित होता है]।

इनार—कुआँ। प्र०—जा, इनार से पानी भरि के ले आवऽ [जाओ, कुएँ से पानी भर कर ले आओ]।

इयाद—याद, स्मृति। प्र०—हमार इयाद तोहके आवेला की ना? [मेरी याद तुम्हें आती है कि नहीं?

इयार (फा यार)—मित्र साथी सगी

प्र०—हम अपने इयार के साथ कौनो हाल पर नाहीं छोडब [मै अपने मित्र का साथ किसी भी हाल पर नहीं छोडूँगा]।

इयारी—मित्रता, दोस्ती। प्र०—ऊ दूनो जने मे गहिर इयारी बाटे [उन दोनो जन मे गहरी मित्रता है]।

इरिखा—ईर्ष्या, जलन। प्र०—हमार बढती देखि के ऊ बहुते इरिखा करेले [मेरी वृद्धि देखकर वह बहुत ईर्ष्या करती है]।

ई

ईस—हल में लगी हुई लम्बी लकड़ी। प्र०—ईस हर के एक खास हिस्सा होला [ईस हल का एक खास भाग होता है]।

ईसर—ईश्वर, भगवान। प्र०—ईसर पइसें दरिद्दर निकसे [ईश्वर प्रवेश करें, दरिद्र निकले]।

उ

उँघाई—नींद, निद्रा। प्र०—हमके बहुत जोर से उँघाई आवत बा [मुझे बहुत जोर से नींद आ रही है]।

उघटा-पुरान—किसी पर अपने किये का एहसान जताना। प्र०—जौन कुछ अबले दिहले बाड़ ऊ ले लऽ, काहे कि हम ई उघटा-पुरान सुने के तइयार नइखीं [जो कुछ अब तक दिया है वह ले लो, क्योंकि मैं यह उघटा-पुरान सुनने को तैयार नहीं हूँ]।

उचकुन—चूल्हे के ऊपर मिट्टी का बना वह टेक जिस पर बर्तन के टिके होने पर चूल्हे का मुँह बन्द नहीं होता और आग की लपट ऊपर निकलती रहती है।

उछाह—उत्साह। प्र०—मेला जाए खातिर लरिकन के मन में केतना उछाह बाटे [मेला जाने के लिए लड़कों के मन मे कितना उत्साह है]।

उजास—प्रकाश, रोशनी, उजाला। प्र०—गुरु के गियान से मन में उजास हो गइल [गुरु के ज्ञान से मन मे प्रकाश हो गया]।

उजियार—(दे० उजास)। प्र०—सूरज के उगले से सगरो अन्हियार मेट के उजास हो गइल [सूर्य के उगने पर सम्पूर्ण अन्धेरा मिटकर उजाला हो गया है]।

उझिला—उबटन बनाने के लिए उबाली हुई सरसों। प्र०—बेटवा के बिआह मे उझिला के छीपा बरात के साथ भेजल जरूरी होला [बेटे के विवाह में उझिला की छिलनी/टोकरी बारात के साथ भेजनी जरूरी होती है]।

उरिद—उर्द, उड़द। प्र०—पछिमी जिला मे उरिद के दाल ज्यादा खाइल जाला [पश्चिमी जिले में उड़द की दाल अधिक खाई जाती है]।

ऊ

ऊँख—ईख, गन्ना। प्र०—ऊँख के ताजा रस पीलिया के बीमारी में बहुत फायदा करेला [गन्ने का ताजा रस पीलिया की बीमारी में बहुत फायदा करता है

ऊमी—गेहूँ अथवा जौ की बालियों को भूनकर उनमें से निकाला गया अन्न। प्र०—गोहुँआ भा जउआ के बलिया जब गदरा जाले त ओहकर ऊमी बना के गाँव के लोग बहुत स्वाद से खाले [गेहूँ अथवा जौ की बालियाँ जब गदरा जाती हैं तो उनकी ऊमी बनाकर गाँव के लोग बहुत स्वाद से खाते हैं]।

ए

एहवात—(दे० अहिवात)। प्र०—खुस रहऽ। तोहार एहवात बनल रहे। [खुश रहो। तुम्हारा सोहाग बना रहे]।

ऐ

ऐगुन—अवगुण, दोष, ऐब। प्र०—ओकरा मे कवनो ऐगुन नइखे। ओकर बुराई तू काहे करत बाड़ू? [उसमे कोई दोष नहीं है। उसकी बुराई तुम क्यो कर रही हो?]।

ओ

ओंघाई—(दे० ऊँघाई)। प्र० –हमके बहुत जोर से ओंघाई आवत बा, हम सुते जात बानी [मुझे बहुत जोर से नीद आ रही है, मैं सोने जा रहा हूँ]।

ओंठगन—सहारा, टेक। प्र०—(१) दूठो तकिया के ओंठगन लगा के बबुआ के बइठा दऽ '[दो तकिये का टेक देकर बच्चे को बैठा दो]। (२) अरे हमार ओठगन तऽ तू हीं हउअऽ न [अरे मेरा सहारा तो तुम्हीं हो न]

ओइछन—(दे० अरिछन)।

ओकाई—उबकाई, उकलाई, उल्टी, कै। प्र०—ओकरा चक्कर दे के ओकाई आवत बा [उसको चक्कर देकर उबकाई आ रही है या उल्टी हो रही है]।

ओखर—ऊखल, ओखली। प्र०—(१) ओखर-मूसर धान कूटे के औजार हउए सन् [ओखल और मूसल धान कूटने के औजार हैं]। (२) ओखरी में मूड बाटे त मूसर के कउन गिनती [ओखली में सिर है तो मूसल की कौन गिनती]।

ओज—कमी, किफायत। प्र०—हम तोहरा के पहिरावे-ओढ़ावे में तनिको ओज नइखीं कइले [मैने तुम्हे पहनाने-ओढाने मे थोडी सी भी कमी नही की है]।

ओदर—उदर, पेट, गर्भ। प्र०—उनके ओदर में कउनो बात पचेला, भला! [उनके पेट मे कोई बात पचती है, भला!] (२) तोहके नौ महीना ओदर में राखि के जउन दुख सहनी, ओकर लाज त रख लऽ, बेटवा! [तुमका नौ माह गर्भ मे रखकर जो दुख सहा, उसकी लाज तो रख लो बेटा!]।

ओनचन—वह मोटी रस्सी जिससे चारपाई की बिनावट कसी जाती है, ओरदावन। प्र०—ओनचनवा टूट गइला से खटिअवा एकदमे झोझर हो गइल बाटे [ओरदावन के टूट जाने से खटिया एकदम से ढीली हो गई है]।

ओरचन- (दे० ओनचन)

ओरहना भ प्र

गलती केहू करे, ओरहना केहू सुने, इ कवनो बात हऽ? [गलती कोई करे, उलाहना कोई सुने, यह कोई बात है?]।

ओरी—छप्पर अथवा छाजन आदि का नीचे की ओर झुका किनारा। ओर, तरफ। प्र०—(१) छानी के ओरी जादा नीचे हो गइले से मूड़ी मे छुआत बाटे [झोपड़ी की ओरी ज्यादा नीचे होने से सिर में लग रही है]। (२) हमरे ओरी आवे के किरपा कइल जाई [मेरी ओर आने की कृपा कीजिएगा]।

ओल—सूरन, जमीकन्द। प्र०—ओल के तरकारी खइला से गटइया कनकनाए लागल [सूरन की तरकारी खाने से गला कनकना रहा है]।

ओसवनी—हवा के द्वारा अन्न और भूसी अलग करने की क्रिया। प्र०—पछुआ हवा में ओसवनी करे से दाना असानी से अलग हो जाला [पछाहीं हवा में ओसवनी करने से दाने आसानी से अलगे हो जाते हैं]।

ओसारा—मकान के कमरो के आगे का वह भाग जिसके ऊपर केवल छप्पर/छाजन हो और सामने से खुला हो। बरामदा। प्र०—कोठरिया में से निकल के ओसारा में सूतऽ त गरमी नाहीं लागी [कमरे से निकलकर बरामदे में सोओ तो गरमी नहीं लगेगी]।

ओहार—कपड़े का वह पर्दा जो छाजन, पालकी अथवा डोली आदि के ऊपर डाला जाता है। प्र०—(गीत) कहतू त ए बेटी छतर छवइतीं कहतू त नेतवे ओहार [हे बेटी यदि तुम कहतीं तो छत्र छवा देता और कहतीं तो रेशमी वस्त्र का ओहार लगा देता]।

औ

औंरा—(दे० अवँरा)।

क

कक—राक्षस, दरिद्र। प्र०—(१) ऊ आदमी नाहीं हऽ, कक हऽ [वह आदमी नहीं है, राक्षस है]। (२) ओकरे लगे अब कुछो नइखे। एकदमे कंके होके जीअत बा [उसके पास अब कुछ भी नहीं है। एकदम दरिद्र ही होकर जी रहा है]।

कंकरी—(दे० अंकरा, अंकटा)।

कंचिया—घास काटने का छोटा हँसुआ या हंसिया। कैंची। प्र०—खेती बारी करे वालन के भा गाय बछरू रखेवालन के कंचिया एगो खास अउजार हउए [खेती-बारी करने वालों अथवा गाय, भैंस रखने वालो के लिए कंचिया एक खास औजार है]।

कंठा—कंठ अथवा गले का आभूषण। प्र०—कंठा-हँसुली सगरो गहनवा बिटिउआ के दिहले बानी [कंठा-हँसुली सभी गहने बिटिया को दिये हैं]।

कंडा—सूखे गोबर का ईंधन जो लगभग एक-सवा फुट लम्बा होता है और बल्ली की भाँति मोटा होता है तथा चूल्हे में लकड़ी की भाँति लगाकर जलाया जाता है सरपत को डंठी [यह कुर्सी मोढ़े तथा कलम बनाने

के काम आता है, सरकंडा]। प्र०—(१) गाँव मे जेकरा घरे गोबर होखेला ऊ लकड़ी के बदले कंडे से खैका बनावेला [गाँव में जिसके घर में गोबर होता है वह लकडी की जगह पर कडे से ही खाना बनाता है]। (२) बढ़िया खत काट के कंडा के कलम से लिखल बहुत साफ आ सुन्दर होला [बढ़िया खत काटकर कडा के कलम से लिखा हुआ बहुत साफ और सुन्दर होता है]।

न—हरे बाँस की पतली डंडी। प्र०—बिआह मे माडो छावे में हरिस के साथ कइनो लगावल जाले [विवाह मे मंडप छाने में हरिश के साथ हरे बाँस की पतली डंडी भी लगायी जाती है]।

ड़ा—घास-फूस अथवा सूखी पत्तियों को जलाकर तापने के लिए बनाई हुई आग, अलाव। प्र०—(१) गरीब-गुरबा लोग कउड़ा ताप के कठिन से कठिन जाड़ा काट ले लें [गरीब-गुरबा लोग कउड़ा या अलाव तापकर कठिन से कठिन जाडा व्यतीत कर लेते है]। (२) जाड़ा बहुत बा, एहर-ओहर मे खर-पतवार बटोर के कउड़ा जग दिहल जा [जाडा बहुत है, इधर-उधर से खर-पतवार बटोर कर अलाव जला दिया जाय]।

कना—कंकण, कंगन। विवाह के समय दुलाहा-दुलहिन के हाथ में बाँधा जाने वाला मंगलसूत्र। प्र०—(१) हम अपने पतोहू के सवा-सवा तोला के ककना मुँह देखाई में देहली हँऽ [मैंने अपनी पुत्र वधू को सवा सवा तोले का कगन मुँह-देखाई मे दिया है]। (२) आज नइकी दुलहिनिया के ककना छूटी, अइहऽ जरूर [आज नयी दुलहिन का कगन खुलेगा, आना जरूर]।

ककही—कघी। प्र०—पहिले त लकड़ी का सीग के ककही बनत रहे, अब प्लास्टिक के बनेला [पहले तो लकडी अथवा सींग की कंघी बनती थी, अब प्लास्टिक की बनती है]।

ककन—(दे० ककना)।

कगरी—तट, किनारा, पास, समीप। प्र०—(१) आरे, जमुना के कगरी सोहावन लागे (गीत) [अरे, यमुना का तट सुवाहन लगता है]। (२) हमरे कगरी अइहऽ जनि [मेरे पास आना नही]।

कछनी—लंगोटी, छोटी धोती, भगई। प्र०—गाँव के गरीबवन के तन ढापे खातिर एगो कछनिये मिल जाय त बडहन बात बाटे [गाँव के गरीबो को शरीर ढंकने के लिए एक लंगोटी ही मिल जाय तो बड़ी बात है]।

कनइल—कडैल अथवा कनेर का पीला फूल। प्र०—कनइल के फूल त फूल, ओकर बीया के दवाई बनेला [कंडैल का फूल तो फूल, उसके बीज की भी दवा बनती है]।

कनई—कीचड़, पक। प्र०—पानी पड़ले से धुरहा सड़क पर कनइये-कनई हो गइल बा [पानी पड़ने से धूल भरी सड़क पर कीचड़ ही कीचड़ हो गया है]।

कनिया—नव विवाहिता वधू, दुलहन। गोदी कोरा प्र (१) उनके घर कनिया अइले से रौनक हो गइल बा

[उनके घर में नई नवेली दुलहन के आने से रौनक हो गयी है]। (२) (गीत) नन्द बाबा कान्हा के कनिया खेलावे [नन्द बाबा कन्हैया को गोद में खेला रहे हैं]।

कनैठी/कनइठी—क्रोध में ऐंठा गया कान। प्र०—उनके बीच में बचवा बोल का दिहलस कि कनइठी खींच के मारे लगली [उनके बीच में बच्चे ने बोल क्या दिया कि कान ऐंठकर मारने लगीं]।

कबाहट—झझट, परेशानी, झमेला। प्र०—हमरे ऊपर एह घड़ी बड़ा कबाहट आ गइल बा [हमारे ऊपर इस समय बहुत झझट आ गया है]।

करइल/करइला/करइली—करेला, एक प्रकार की सब्जी। प्र०—करइला के तरकारी कडुआ होखेले एही से लकिवन के ना भावेल [करेले की सब्जी कड़वी होती है, इसीलिए बच्चों को पसन्द नहीं आती]। (गीत) बैगन बारी में करइला तुरे ना जइबों हरी।

करार—वादा, वचन देना। प्र०—(१) तू हमार पूरा खर्चा निबाहे के करार क के पीछे हटि गइलऽ? [तुम मेरे पूरे खर्चे के निर्वाह का वादा करके/वचन देकर पीछे हट गए?]। (२) बारह बजे के करार मदरसा से ना अइले बालमा (गीत)।

करिखा—कालिख, मसि, स्याही। प्र०—(१) देख रे, कहीं तोरे लुगवा में करहिया के करिखा जनि लागि जा [देख री, कहीं तेरी साड़ी में कड़ाही की कालिख न लग जाय]। (२) ई नजायज काम करके ऊ अपने मुँह में करिखा पोत लिहलन [इस नाजायज काम को करके उसने अपने मुँह में कालिख पोत लिया है]।

करिहाँइ/करिहाँव—कमर, कटि। प्र०—हमरे करिहाँव में बड़ा दरद होत बा [मेरी कमर में बहुत दर्द हो रहा है]।

कसइली—सुपारी बहुत गोल और कड़ा बीज जिसके टुकड़े पान में डालकर खाया जाता है। प्र०—पनवा में डाले खातिर तनी सरउता से कसइली त काट द [पान में डालने के लिए, जरा सरौते से सुपारी तो काट डालो]।

कसार—चावल का आटा भूनकर उसमें शक्कर या चीनी या गुड़ मिलाकर बनाया गया लड्डू, ढोंढा। प्र०—बिटिया के बिआह में लड्डू खाजा के साथ कसार दिहल त जरूरी बा [बिटिया के विवाह में लड्डू-खाजा के साथ कसार भी तो देना जरूरी है]।

कहँतरी—मिट्टी से बना दही रखने का बर्तन। प्र०—कहँतरिया सिकहर पर चढ़ा दीहऽ नाहीं त बिलरिया जुठार देई [कहँतरी सिकहर पर चढ़ा देना नहीं तो दही बिल्ली जूठा कर देगा]।

काँटी—कील, काँटा, लोहे अथवा लकड़ी की बनी नोकदार औजार। प्र०—जुतवा में कील ठोकवा द, नाहीं त ओकर सोलवा निकरि आई [जूते में कील ठोकवा दो, नहीं तो उसका सोल निकल जायेगा]।

दलदल प्र०—अरे रुकि

जा, पानी कांदो में कहाँ जइब? [अरे, रुक जाओ, पानी कीचड में कहाँ जाओगे?]।

काठी—घोडे पर कसी जाने वाली जीन।

काड़ा—पैर का वह मोटा आभूषण जो चाँदी या गिलट का बना होता है, पैर का कड़ा। प्र०—बहुरिया के गटइया मे हंसुली आ गोड़वा में काड़ा जरूरे होखे के चाही [बहुरिया के गले मे हंसुली और पैर में कडा जरूर होना चाहिए]।

कान्ह/कान्हा—कन्धा, स्कन्ध। प्र०—अपने बुढिया अइया के कान्हे पर बइठा के तीरथ करा अइनी हँऽ [अपनी बुढ़िया दादी को कन्धे पर बैठाकर तीर्थ कराकर आया हूँ]।

काबू—अधिकार, वश, सामर्थ्य। प्र०—(१) ऊ उनके सब जमीन-जायदाद अपने काबू मे ले लिहले बाड़े [उन्होंने उनकी सब जमीन जायदाद अपने अधिकार मे कर ली है]। (२) बड़का बेटवा बिल्कुल से बहकि गइल रहे बाकी अब काबू मे आ गइल [बड़ा बेटा तो बिल्कुल बहक गया था किन्तु अब वश मे आ गया है]।

किकोरी—खुरचन, पकाने के बर्तन मे चिपका हुआ भात या दूध का अंश जो कलछी-चम्मच आदि से खुरचकर निकाला गया हो। प्र०—दूध के किकोरी बबुआ बहुत पसन्द करेला [दूध का खुरचन बच्चा बहुत पसन्द करता है]।

किरवना—कीड़ा कीट पतगा प्र बरसात के मौसम में किरवना फतिगा के डर हरमेस बनल रहेला [बरसात के मौसम मे कीट-पतंग का डर हमेशा बना रहता है]।

किरिया—सौगन्ध, कसम। क्रिया-कर्म, श्राद्ध-कर्म, अन्तिम कर्म। प्र०—(१) आपन किरिये, हम तोहार कवनो अनहित ना चाहीले। (२) ऊ अपने बाप के किरिया-करम मे बहुत धन खरच कइलन हँ [उन्होने अपने बाप के क्रिया-कर्म में बहुत धन खर्च किया है]।

कुंडा—मिट्टी का बड़ा बर्तन, मटका। प्र०—गरमी में पानी पिआवे खातिर बड़हन-बड़हन कुंडा रखले बानी [गर्मी में पानी पिलाने के लिए बडे-बडे कुंडे रखे हैं]।

कुक्कुर—कुत्ता। प्र०—(१) एगो कुक्कुर पाल लिहले बानी [एक कुत्ता पाल लिया है]। (२) (मुहावरा) आन्हर, कुक्कुर बतासे भोके [अन्धा कुत्ता हवा चलने से भौंकता है]।

कुरिया—ढेरी, एक स्थान पर बटोर कर रखी सामग्री। प्र०—दस-दस आम के कुरिया बना के बेचत हउएँ [दस-दस आम की ढेरी बनाकर बेच रहे हैं]।

कुरुई—मूंज की बनी हुई छोटी-गहरी डलिया या मंजूषा। प्र०—गावँ के मेहरारू लोग मूंज के बढिया-बढ़िया रंग मे रंगि के सुन्नर-सुन्नर मउनी-कुरुई बनावेली [गाँव की स्त्रियाँ मूंज को बढ़िया-बढ़िया रंग में रंगकर सुन्दर-सुन्दर मउनी कुरुई बनाती हैं]

ऊन अथवा गरम कपड़े

का बना हुआ सिर ढकने का वस्त्र। प्र०—बड़ा जाड़ा परत बा, बबुआ के कुलही त पहिरा दऽ [बहुत जाडा पड़ रहा है, बच्चे को कंटोप तो पहना दो]।

कूंचा—सिलबट्टे पर या खरल में कुचलकर बनायी गयी चटनी। झाड़ू। संकरी गली। प्र०—(१) हम लहसुन-मरिचा के कूंचा से रोटी सौक से खा लेनी [मैं लहसुन-मिर्चे के कूचे से रोटी रुचि से खा लेती हूँ]। (२) घर बहारे खातिर एगो सींका के कूचा ले अइहऽ [घर बटोरने के लिए एक सींक का झाड़ू लेते आना]। (३) गली-कूंचा मे ना जाके सीधे सडक से जइहऽ [गली कूचे मे न जाकर सीधी सडक से जाना]।

कूँड़ा—(दे० कुंडा)।

कूँड़ी—पत्थर का छोटा बर्तन पथरी। प्र०—खटाई वाली चीज कूँड़ी मे रखले से खराब ना होखेले [खटाई की वस्तु पथरी में रखने से खराब नहीं होती]।

केना—बैजयन्ती का फूल।

केराव—मटर। **केराइ**—छोटी मटर। प्र०—केराव/केराई के दाल मसाला डार के बना लऽ [मटर की दाल मसाला डालकर बना लो]।

कोंढ़ी—कली। प्र०—दक्खिन मे चमेली/बेला के कोंढ़ी के माला चोटी में लगावे के बहुत रेवाज हऽ [दक्षिण मे बेला/चमेली की कली की माला चोटी में लगाने का बहुत रिवाज है]।

कोइनी—(दे० कइन)

कोठार—कोठी, बखार, अनाज रखने का घर। प्र०—उनके इहाँ धान-गोहूँ क बड़हन-बड़हन कोठार हउए [उनके यहाँ धान-गेहूँ के बड़-बड़े बखार हैं]।

कोठिला—(दे० कोठार)। प्र०—(गीत) कोठिला ही बहुअरि हो सरली कोदइया रे ना, बहुअरि मेड़वे मसुरवे के सगवा रे ना [हे बहू, बखार में सड़ी हुई कोदो है और मेड़ पर उगी हुइ साग है]।

कोताई/कोताही—कमी, कंजूसी। प्र०—हम उनके खरचा सम्हाले में कवनो कोताई नइखीं कइले [मैंने उनका खर्च सम्भालने में कोई कमी या किसी प्रकार की कजूसी नहीं की है]।

कोदो—एक प्रकार का इतर चावल जो साबूदाने के आकार का परन्तु उससे छोटा होता है। प्र०—हमरा धान के चाउर कहाँ जुरे! कोदो-सावाँ भरपेट मिल जा त इहे बहुत बा [मुझे धान का चावल कहाँ से नसीब हो। कोदो सावाँ (सावाँ भी एक प्रकार का इतर चावल) भरपेट मिल जाय तो यही बहुत है]।

कोर—किनारा किनारे का भाग। प्र०—(१) सड़िया के कोर मोड़ के सी दीहऽ नाहीं त किनारे से फाटि जाई [साड़ी का किनारा मोड़कर सिल देना नहीं तो किनारे से फट जायेगी]। (२) आँसू से उनके आँखी के कोर भींज गइल बा [आँसू से उनकी आँख का किनारा भींग गया है]।

कोरा—गोद, गोदी। प्र०—बचवा हऽ कि कोरा से उतरते नइखे [बच्चा है कि गोद से उतरता ही नहीं]

कोला—वह स्थान जहाँ साग-सब्जी उगाई जाती है, सब्जी बाटी या सब्जी की बगिया। प्र०—जा कोला में से थोरे बेगन तूरि के ले आवऽ [जाओ, सब्जी-बगिया से थोड़े बैंगन तोड़ लाओ]।

ख

खसी—बकरा। प्र०—काली के पूजा मे खंसी के बलि दीहल जाला [काली की पूजा में बकरे की बलि दी जाती है]।

खइंच—बाँस या लकड़ी का महीन-पतला रेशा जो शरीर के किसी अंश में चुभकर पीड़ा देता है, फांस। प्र०—गोड़वा मे खइंच गड़ि गइला से बहुत पिरात बा [पैर में फांस गड़ने से बहुत पीड़ा हो रही है]।

खइंची—छोटी टोकरी। प्र०—एक खइंची घास से भला बछरुआ के पेट भरि जाई? [एक छोटी टोकरी की घास से भला बछड़े का पेट भर जायेगा?]।

खइनी—तम्बाकू। प्र०—गाँव के आदमी सबसे जादा खइनी के नसा करेलन [गाँव के आदमी सबसे अधिक तम्बाकू का नशा करते हैं]।

खएका—खाना, भोजन। प्र०—लरिकवा बेगमी के मारे खएका नइखे खात [लड़का बीमारी के कारण खाना नहीं खा रहा है]।

खरखोरन/खरखोरी—(दे० किकोरी)।

खरई—सरकंडा। प्र०—गाँव में खरई के टटिया पर झोपड़ी बनेले [गाँव में सरकंडे की टट्टा पर झोपड़ी बनती है]

खरहर/खरहरा—अरहर या हरड़ के डंठल का झाड़, जो गाँवों मे खेत-खलिहान अथवा गोशाला आदि बहारने के काम आता है। प्र०—एतना कूड़ा-कचरा कूचा मे कइसे निकरी? खरहर मे बहार दऽ [इतना कूड़ा-कचरा झाड़ू म कैसे निकलेगा? खरहर से बटोर दो]।

खरिका—दो दाँतो के बीच मे फँसे हुए खाद्यान्न के अंश को निकालने की सींक या पतला तिनका। प्र०—खाए के बाद खरिका से दाँत के मसूढ़ा साफ क लेबे के चाही [खाने के बाद खरिका से दाँत का मसूढ़ा साफ कर लेना चाहिए]।

खरी—खली तेल निकालने के बाद तेल-हन की बची हुई सिट्ठी। प्र०—सरसों तीसी के खरी भूसी मे मेरा दिहला से गाय-गोरू सानी रुचि से खाले सन [सरसों-अलसी की खली भूसी में मिला देने से गाय-गोरू सानी/चारा रुचि से खाते हैं]।

खलार—नीची जमीन। प्र०—ओह टीला के नीचे खलार मे उनके घर बाटे [उस टीले के नीचे की भूमि मे उनका घर है]।

खान्ही—केले का पौद। गाँव के धोबी, नाऊ, महरा आदि को अनाज के रूप में मिलने वाला पारिश्रमिक। प्र०—गाँव-गिराँव के परजा के नया फसल कटले के बाद छव महीना या सालभर के खान्ही दे दीहल जाला [गाँव-गिराँव की प्रजा को नयी फसल कटने के बाद छः माह अथवा पूरे साल का पारिश्रमिक अनाज के रूप मे दे दिया जाता है]

खिस्सा—किस्सा कथा, कहानी। प्र०—सीधे-सीधे सही बात बतावऽ खिस्सा मत गढ़ऽ [सीधे से सही बात बताओ, कहानी मत गढ़ो]।

खुद्दी—चावल आदि का टूटा हुआ महीन दाना, किनकी। प्र०—खाए के खुद्दी चूनी जूरत जा, ईहे बहुत बा [खाने को खुद्दी-चूनी नसीब होती रहे, यही बहुत है]।

खूंटा—गाँठ। मवेशी बाँधने के लिए जमीन में गड़ी हुई लकड़ी। प्र०—(१) पइसवा खूँटा मे गठिया लऽ, नाहीं त एहर-ओहर रखि के भुला जइबू [पैसा साड़ी के छोर में बाँध लो, नहीं तो इधर-उधर रखकर भूल जाओगी]। (२) बेटी त गइया हौन्ले। जवने खूँटा मे बान्ह दिहल जाई ओही में बन्हाइल रही [बेटी तो गाय होती है, जिस खूँटे में बाँध दिया जाय उसी में बँधी रहेगी]।

खेझरा—मिश्रित खाद्यान्न, बेर्रा। प्र०—मलिकाइन के इहाँ जौ, गोहूँ, चना के फटकन के जवन खेझरा निकसैला ओही के रोटी से पेट भर लेइले [मालकिन के घर मे जौ, गेहूँ, चना के फटकन से जो अनाज निकलता है उसी की मिश्रित रोटी से पेट भर लेती हूँ]।

खैका/खैकवा—(दे० खएका)।

खोंखी—खाँसी। प्र०—बचवा के ठंडा लागि गइला से खौंखी बहुत आवत बा [बच्चे को ठंड लग जाने से खांसी बहुत आ रही है]।

खोइया—रस निकालने के बाद बची हुई गन्ने की मिट्टी। प्र०—देहात मे ऊँख के खोइया जरावे के काम आवेला [देहात में ईख की मिट्टी जलाने के काम आती है]।

खोई—(दे० खोइया)।

खोजवा—हिंजड़ा, जनखा, नामर्द। प्र०—घर मे बच्चा जनमले पर भा सादी-बिआह भइले पर खोजवा सभ नाचे गावे आ जाले अउर भारी नेग मांगेले [घर मे बच्चे के जन्म लेने पर अथवा शादी ब्याह होने पर हिजड़े नाचने-गाने आ जाते है और भारी नेग मांगते हैं]।

ग

गंजी—बनियाइन। शकरकन्द। प्र०—(१) एतना जाड़ा मे खाली गंजी लुंगी पहिर के काहे घूमत हउअऽ? [इतनी ठंड में केवल बनियाइन-लुंगी पहनकर क्यों घूम रहे हो?]। (२) बरत रखले बानी एही से गंजी उसिन के खात बानी [व्रत रखा है इसलिए शकरकंद उबालकर खा रही हूँ]।

गगरा—पीतल, लोहे या तांबे का बना पानी रखने का पात्र, कलश। प्र०—सगरो गगरा-गगरी मांज-धो के पानी भर ल जाऽ [सभी गगरे-गगरी मांज-धोकर पानी भर लो]।

गगरी—मिट्टी का घड़ा, कलश। प्र०—गर्मी में गगरिये के पानी ठंडा होला [गर्मी मे घड़े का ही पानी ठंडा होता है]।

गँटई—गर्दन, गला, ग्रीवा। प्र०—रहिया में गँटई ले पानी भरल बा [रास्ते में गले तक पानी भरा है]

गड़गड़ा—हुक्का, फरसी। प्र०—गड़गड़ा के चीलम भर दऽ त तनी धुआं-धक्कड़ हो जाय [हुक्के का चिलम भर दो तो थोड़ा धुआं-धक्कड़ हो जाय]।

गतर—अंग। प्र०—दीन रात काम मे जूटल रहला से देही के गतर-गतर दुखाए लगेला [दिन-रात काम मे जुटे रहने से देह (शरीर) का अंग-अंग दुखने लगता है]।

गधबेरा—गोधूली, दिवस का समापन। प्र०—गधबेरा के जून सगरो चरवाहा आपन मवेसी ले के घरे लउट आवेलें [गोधूली के समय सभी चरवाहे अपने मवेशी लेकर घर लौट आते हैं]।

गमछा—अगोंछा, अंग पोछने का छोटा वस्त्र। प्र०—बचवा भीज गइल बा, गमछा से सगरो देहियाँ पोंछ दऽ [बच्चा भींग गया है, अगोंछे से पूरी देह पोंछ दो]।

गर—गला, गर्दन, ग्रीवा, (दे० गटई)। प्र०—(१) देखऽत, दूनो भाई कइसे एक दूसरे से गरे मीलल हउए [देखो तो, दोनो भाई कैसे एक-दूसरे में गले मिल रहे हैं]। (२) आरे, इ त हमरे गरे के फासी बन गइल [अरे, यह तो मेरे गले की फांसी बन गया है]।

गरारी—गडारी, कुएँ पर पानी भरने के लिए बनी चरखी या घिर्री। प्र०—गरारी पर रसरी चढ़ा के पानी खिंचले से जोर ना परेला [गडारी पर रस्सी चढ़ाकर पानी खींचने से जोर नहीं पड़ता]।

गवति—पालतू पशुओ को दिया जाने वाला चारा, लेहना। प्र०—गोरुअन खातिर गवति लेबे त जाही के परी नाही त भूखल रहि जइहें सन् [पशुओं के लिए चारा लेने तो जाना ही पडेगा नहीं तो भूखे रह जायेंगे सब]।

गहुआ—दो उंगलियों के बीच का गड्ढा। प्र०—जादा पानी में रहले से अंगुरियन के बीच के गहुआ सड़ि गइल बाड़ें सन् [अधिक पानी में रहने से उंगलियों/ अंगुलियों के बीच मे गहुए सड गये हैं]।

गाँछ—गाछ, पेड़, डाल, डार। प्र०—पीपर के गाँछ पर बानर बइठल बा [पीपल की डाल पर बन्दर बैठा है]।

गाज—फेन, झाग। प्र०—कइसन साबुन बा हो! एमें त तनिको फेन नइखे निकसत [कैसा साबुन है जी! इसमें तो जरा सा भी फेन नहीं निकल रहा है]।

गाटा—कलाई। प्र०—तनरुस्ती ठीक हो गइले से इनके गाटो मोट-मोट हो गइले सन् [तन्दुरुस्ती ठीक हो जाने से इनकी कलाइयाँ भी मोटी-मोटी हो गईं]।

गाद—फल का गाढा रस [पके आम व ताड़ के फल के अर्थ मे]। प्र०—खूब पाकल बीजू आम के गाद सुखा के अमावट बनेला [खूब पके हुए देशी आम का रस सुखाकर अमावट बनता है]।

गिरह—गाँठ, ग्रन्थि। प्र०—एतना कस के गिरह परल बा कि खुलते नइखे [इतना कसकर गाँठ पड़ गया है कि खुलता ही नही]। मुहा०—चोर के भाई गिरहकट।

गिरहथ—गृहस्थ, घर-द्वार अथवा खेती-बाडी का काम-काज सम्भालने वाला व्यक्ति प्र हम गिरहथ हईं

नोकरी-चाकरी के बारे में का जानी [मैं गृहस्थ हूँ, नौकरी-चाकरी के विषय मे क्या जानूँ]।

गुड़धानी—गुड़ की लइया, गुड के पाग में भुने चावल को मिलाकर बनाया गया लड्डू। प्र०—सगरो सिपहियन के पेड़ा जलेबी, अपने चबाली गुडधानी एहो झांसी वाली रानी [झासी की रानी सभी सिपाहियों को पेड़ा-जलेबी (देती हैं) और स्वयं गुड़ लाई/गुड की लइया चबाती हैं]।

गुणुरू—रेखा, जिस रेखा को खींचकर सीमा निर्धारित किया जाता है। प्र०—(गीत) राम लखन दूनो चलेले अहेरिया, सीता क गुणुरू खिंचाइ [राम लक्ष्मण दोनो सीता की रक्षा के लिए सीमा रेखा खींचकर आखेट के लिए जा रहे हैं]।

गुरम्हा—कच्चे आम को गुड में पकाकर बनाया गया व्यंजन। प्र०—कच्चा आम के छील-काट के गुड़ में सिंझा के गुरम्हा बनेला [कच्चे आम को छील-काटकर गुड में पकाकर गुड़म्बा बनता है]।

गुरहथी—छोटे भाई के विवाह के अवसर पर उसकी होने वाली बहू के लिए बड़े भाई द्वारा लाया गया चढावे का सामान (वस्त्राभुषण आदि]। कनिया के माड़ो में बइठावऽ, ससुर जी गुरहथी के समान लेके आवऽताने [दुल्हन को मडप मे बैठा दो, जेठ जी चढ़ावे का सामान लेकर आ रहे हैं]।

गुरिया—मोती का दाना। माला की लडी का एक दाना' मांस का छोटा टुकड़ा होरी प्र०—(१) माला के डोरी टुटला से सगरो गुरिया एहर-ओहर बिखर गइल [माला की डोर टूट जाने से उसके सभी दाने इधर-उधर बिखर गये हैं]। (२) मछरी के एक-एक गुरिया अउर रसा सबके परोस दिहली [मछली की एक-एक बोटी और रसा सबको परोस दिया]। मुहा०—पानी मे मछरी नौ-नौ गुरिया बखरा [पानी मे मछली है किन्तु नौ-नौ बोटी का बखरा (हिस्सा) लग गया]।

गुरुम्ही—एक प्रकार का जंगली फल।

गुर्हीं—बोझा बाँधने के लिए घास को लपेट कर बनायी गयी रस्सी। प्र०—बड़ बड़ बोझा बाँधे के बा, गुर्हिया मजबूत बनइहऽ [बड़े-बड़े बोझे बाँधने हैं, गुर्हियों को मजबूत बनाना]।

गेंड़ा—खेत का घेरा, खेत अथवा बगीचे के चारो ओर बनी हुई मेड। प्र०—धान के खेत के गेंड़ा तनी ऊँच बान्हे के चाही जेसे खेत में पानी रुकल रहे [धान के खेत की मेड़ थोडी ऊँची बाँधनी चाहिए जिससे खेत में पानी रुका रहे]।

गेडुरी—साँप का गोलाकार होकर बैठने का रूप, कुंडली। प्र०—दिअवा देखवत सँपवा गेडुरी मारके बइठ गइल [दीपक दिखाते ही साँप कुडली मारकर बैठ गया]।

गेना—गेंद, गेंदे का फूल। प्र०—(१) सगरो लकिवन मैदान में गेना खेलत बाने सन् [सभी लडके मैदान मे गेंद खेल रहे हैं]। (२) बडे-बड़े गेना के फूल से माड़ो सजावल गइल रहे [बड़े बड़े गेंदे के फूलों से मडप सजाया गया था]

गोइठा—(दे० कंडा)। प्र०—घर में लकड़ी नइखे। आज गोइठा से खैका बना लऽ [घर में लकड़ी नहीं है। आज गोइठे से खाना बना लो]।

गोड़—एक जाति विशेष, भड़भूजा, भुजवा। प्र०—(१) पूरबी जिला मे गोंड एक जाति होखेले [पूर्वी जिले मे गोड़ एक जाति होती है]। (२) जा, ओही गोड़वा के भाड मे भूजा भुजा ले आवऽ [जाओ उसी भड़भूजा के भाड़ मे चबेना भुनवा लाओ]।

गोड़सारी—भड़भूजे का भाड़ या दुकान जहाँ अन्न भुना जाता है। प्र०—ओकरे गोंड़सारी मे भूजा भुजावे वालन के भीड़ लागल रहेला [उसकी गोंड़सारी मे चबेना भुनाने वालो की भीड़ लगी रहती है]।

गोइयाँ—साथी, मित्र। प्र०—अपने गोइयाँ के साथे त तु अइबे करबऽ [अपने मित्र के साथ तो तुम आओगे ही]।

गोजइ—गेहूँ और जौ का मिश्रण। प्र०—खालिस गोहू के आटा ना हऽ, गोजई के आटा हउए। चाल के बनइहऽ [शुद्ध गेहूँ का आटा नहीं है गेहूँ-जौ का मिला हुआ आटा है, छानकर बनाना]।

गोड़—पाँव, पैर। प्र०—चलत-चलत हमार गोड़ पिराए लागल बा [चलते-चलते मेरा पैर दुखने लगा है]।

गोड़तारी—चारपाई या खाट का वह भाग जिधर सोते समय पैर रहता है, पैताना। प्र०—तू दूनों जने सोझे-सोझे सूतऽ, हम तोहरे लोगन के गोड़तरिये में सूति जाइब [तुम दोनों जन सीधे-सीधे सोओ मैं तुम्हारे पैताने ही सो जाऊँगी]

गोड़हरा—पैर का आभूषण जो चाँदी अथवा गिलट का होता है, कडा। प्र०—तोहार गोड़हरवा गीलट के हऽ, ऊ फइला के ना निकसी, तूरि के निकारे के परी [तुम्हारा गोड़हरा गिलट का है इसलिए वह फैलाकर नहीं निक-लेगा तोडकर निकालना पडेगा]। (दे० काड़ा)

गोतिन—जेठानी या देवरानी, गोतिया। प्र०—ई लोग हमार गोतिन-दयादिन लागेली [ये लोग मेरी गोतिया-दयादिन लगती है]।

गोतिया—(दे० गोतिन)। प्र०—(गीत) आवहु गोतिया दयादिन पलग चढि बइठहु हो [हे गोतिया-दयादिन आओ, पलग पर चढ़कर बैठो]।

गोदना—नीले रग के द्रव पदार्थ मे सूई भिगो कर उसी सूई से शरीर के विभिन्न अंगो यथा हाथ, पाँव, मुँह नाक पर बनाया गया चिह्न अथवा चित्र। गाँवों में महिला के विवाह के उपरान्त गोदना अनुष्ठान मानकर गोदवाया जाता है। प्र०—बहुरिया के जबले गोदना ना गोदा जाई तबले ओकर बनावल रसोई कइसे खाइल जाई? [बहुरिया को जब तक गोदना नहीं गोदवा दिया जायेगा तब तक उसकी बनाई रसोई कैसे खाई जायेगी]।

गोदा—पीपल, पाकड़, बरगद आदि का फल। प्र०—किछु ना मीलऽता त पकड़िया के गोदे बीन-बीन के खात बाटे [कुछ नहीं मिलता है तो पकड़ी का गोदा ही बीन-बीनकर खा रहा है]

गोधना—कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया का पर्व। इस दिन गोबर्द्धन की पूजा महिलाएँ करती हैं, भाई दूज। प्र०—गोधना के बाद से बिआह-सादी के साइत बन जाला [गोबर्द्धन पूजा अथवा भाई दूज के बाद से विवाह शादी का मुहूर्त बन जाता है]। इसीलिए इस दिन पूजा करती हुई महिलाएँ गाती है—उठहु ए देव उठहु हो, सुतले भइल छव मास। तोहरे बिन बारी नाँ बिअहीलें हो, बिअहल ससुरे न जासु [हे देव उठो सोते हुए छः माह बीत गये। तुम्हारे बिना क्वारी कन्या का विवाह नहीं कर रही हूँ और न हीं ब्याही ससुराल जा रही है]।

गोनसारी—(दे० गोड़सारी)।

गोरू—गाय, भैंस, बैल आदि का साम्हूहिक नाम, मवेशी, डंगर, ढोर। प०—ऊ भोरे अपने गोरुअन के सानी-पानी देवे में जुट जालन [वह भोर मे ही अपने मवेशियों को चारा-पानी देने में जुट जाते हैं]।

गोहरा—(दे० गोइठा)। प्र०—सीतला गोबर बटोर के अब गोहरा पाथे में जूटल बाड़ी [सीतला गोबर इकट्ठा करके अब गोहरा पाथने में जुटी हैं]।

गोहार—गुहार, पुकार, रक्षा के लिए जोर-जोर से चिल्लाने की क्रिया। प्र०—हे भगवान, हमार गोहार सुन के हमरे बाबू के ठीक कर दऽ [हे भगवान, मेरी गुहार सुनकर मेरे बच्चे को ठीक कर दो]।

गोहूँ—गेहूँ। प्र०—आज काल्हि गोहूँ के बजार बहुत गरम बा [गेहू का बाजार बहुत गरम है]

घ

घइला—बड़ा घड़ा, मटका। प्र०—एतना भीड में दू चार घइला पानी भर के रखही के परी [इतनी भीड़ मे दो चार घड़ा पानी भर कर रखना ही पड़ेगा]।

घइली—गगरी, छोटा घड़ा। (दे० गगरी)

घटवार—घाट पर रहने वाला व्यक्ति, नदी पार करवाने वाला मल्लाह। घाट पर बैठकर दान लेने वाला ब्राह्मण। प्र०—भगवाने हमार घटवार बनके जिनगी के नदी से उबारिहें [भगवान हीं मेरा घटवार बनकर जीवन रूपी नदी से उद्धार करेंगे]।

घरनी—गृहिणी, घर सम्भालने वाली नारी। प्र०—(१) घरनी के बिना घर उजाड हो जाला [गृहणी के बिना घर उजाड हो जाता है]। (२) (मुहा०) बिनु घरनी घर भूत के डेरा [बिना गृहिणी के घर भूत का निवास होता है]।

घरी—घडी (दिन रात का बत्तीसवाँ भाग) समय। प्र०—ऊ हमरे घरी-पल के हिसाब रखेलें [वह हमारे घडी पल का हिसाब रखते हैं]। (२) एह घड़ी हम बिलकुले खाली नइखीं [इस समय मैं बिल्कुल खाली नहीं हूँ]।

घवद—गुच्छा, समूह। प्र०—केरवा के पूरा के पूरा घवद मोहन उठा ले गइले [केले का पूरा का पूरा घवद मोहन उठा ले गये]।

घाँटी—गले की भीतर की घंटी, कौआ। प्र०—बचवा के गँटइया के घाँटी बढ़ि गइल बा एही से ओकरा खोंखी जादा आवऽता [बच्चे के गले का कौआ

(टान्सिल) बढ़ गया है, इसी से उसे खाँसी ज्यादा आ रही है]।

ाघ—नक्षत्रों के ज्ञाता कवि का नाम, चालाक, कुटिल रहस्यमय, चतुर। प्र०—(१) कहै घाघ हम होइब जोगी, कुइयाँ के पानी से धोइबे धोबी। (२) आरे, तूँ अइसन घाघ हउअऽ कि तोहरे मन के केहू जान ना सकेला [अरे, तुम ऐसे चालाक हो कि तुम्हारे मन का कोई जान नहीं सकता]।

ाठी—भुने हुए चने के सत्तू में अजवायन मंगरेल, लहसुन, मिर्च, नमक, खटाई आदि मिलाकर बाटी (भउरी) में भरने के लिए तैयार किया गया मसाला। प्र०—घाठी में अब नया फैसन के लोग मेवो मिला देला [घाठी में अब नये फैशन के लोग मेवे भी मिला देते है]।

ानी—कोल्हू मे तेल निकालने के लिए अथवा चक्की मे पीसने के लिए एक बार डाला जाने वाला तेलहन या अन्न।

ाम—धूप। प्र०—ई बरवा उमिर से पाकला बा, घाम मे ना सुखवले हई [यह बाल उम्र से पका है, धूप मे नहीं सुखाया है]।

घुआमाना—पैर के दोनों घुटनों को मोड़कर उस पर बच्चे को पेट के बल लिटाकर खेलाने की एक क्रिया। खेलाते समय यह गीत भी गाया जाता है—'घुघुआमाना, उपजे धाना, एही राहे अइहें बबुआ के मामा .।'

रहू—घूरे की वस्तु, व्यर्थ की वस्तु, अहवेलित व्यक्ति प्र०—(मुहा०)—ई मत जानऽ कि हमार पूछ कबो ना होई। आरे घुरहुओ के दिन कबो फीरेला [यह मत जानो कि मेरी पूछ कभी नहीं होगी। अरे, घुरहू के दिन भी कभी फिरते हैं]।

घूघ—घूंघट, अवगुंठन। प्र०—ससुर-भसुर के सामन घूघ ना काढ़ल बेसरमी हऽ [ससुर-जेठ के सामने घूंघट न निकालना बेशरमी है]।

घूरा—कूडे कचरे की ढेर, वह स्थान जहाँ घरों का कूड़ा-कचरा फेंका जाता है। प्र०—जा, ई सभ कूडा-कचरा घूरा पर फेंकि आवऽ [जाओ यह कूडा-कचरा घूरे पर फेंक आओ]।

घेंओड़ा—नेनुआ, तरोई, तोरी (जो सब्जी के काम आती है)। प्र०—हरियर तरकारी मे घेंओडा जादा लोग पसन्द करेला [हरी सब्जी मे नेनुआ-तरोई अधिक लोग पसन्द करते हैं]।

घेंघा—गले का एक रोग जिसमें गिल्टी उभर आती है। पूर्वी जिलों में यह रोग विशेष रूप से आयोडीन की कमी से होता है।

घेंटुआ—(दे० गैंटई)। प्र०—ऊ पापी ओकर घेंटुआ दबा के मार डरलस [उस पापी ने उसका गला दबाकर मार डाला]।

घेवड़ा—(दे० घेंओड़ा)।

घोरुआ—अलसी/तीसी को भून पीसकर उसमें मसाले मिलाकर बनायी गयी बुकनी, जिसे पूर्वी जिले में दाल में मिलाकर बहुत स्वाद से खाया जाता है। प्र०—रहर के दाल में घोरुआ मिलाके खइले से खैका के सवाद बढ़ियाँ हो जाला [अरहर की दाल

में घोरूआ मिलाकर खाने से भोजन का स्वाद बढ़ियाँ हो जाता है]।

च

इता—चैता, चैत्र मास मे गाया जाने वाला गीत। प्र०—चइत (चैत्र) के महीना लागि गइल। अब चइता गावल सुरू क देवे के चाहीं [चैत्र का महीना लग गया है। अब चैता गाना शुरू कर देना चाहिए]। गीत का उदा०—चइत मासे चरखा कतइहऽ आरे सावंरिया।..

इती—चैत्र मास में होने वाली फसल, यथा—गेहू, जौ, चना, मटर आदि। प्र०—अब त चइती फसल के बोआई सुरू हो जाए के चाहीं [अब तो चैत्र में होने वाली फसल की बोआई शुरू हो जानी चाहिए]।

इपइया/चउपरिया—चौपाल में, पास समीप। प्र०—(गीत) हमहिं भइया रे एके कोखी जनमीलाँ, दुधवा त पीलाँ डफाडोर। भइया के लीखल बाबा चउपइया/चउपरिया हमके लीखल दूर देस [मैं और भैया ने एक ही कोख मे जनम लिया और भरपूर दूध पिया (किन्तु) भैया के भाग्य मे बाबा के पास रहना लिखा था और मेरे भाग्य मे दूर देश का निवास]।

उरा—वेदिका, वेदी, देवी देवता की स्थापना का स्थान यथा—देवी के चउरा, बरम बाबा के चउरा आदि। प्र०—जा देवी के चउरा पर माथा टेकि आवऽ, सगरो दुख-बेरामी दूर हो जाई [जाओ देवी के स्थान पर माथा टेक आओ, सब दुख-बीमारी दूर हो जायेगी]।

चटकन—चाँटा, थप्पड़, चटकने की सी पीड़ा। प्र०—(१) एक चटकन देइब त तोहार दिमाक ठेकाने लागि जाई [एक थप्पड़/चाँटा दूँगा तो तुम्हारा दिमाग ठिकाने लग जायेगा]। (२) हमरे कपरा मे अइसन चटकन होता कि सहल ना जाला [मेरे सिर में ऐसी चटकन हो रही है कि सहा नहीं जाता]।

चटाकी—लकड़ी का बना उपानह, खटपटी, खड़ाऊँ, पादुका। प्र०—साधु सत अपने गोड़े में चमड़ा के जुता ना पहिन के खाली चटाकी पहिरेलें [साधु संत अपने पांव मे चमड़े का जूता न पहनकर केवल खटपटी/खड़ाऊँ पहनते है]।

चनक—चणक, चना। प्र०—(गीत) ठठ भइले चनक गोटइलीं गोजइया [चना ठूठा हो गया (और) गोजई (गेहूँ जौ) के दाने कड़े पड़ गये]।

चनन/चन्नन—चन्दन, सन्दल। प्र०—(१) चन्नन के लकड़ी घीस के कपरा मे लगा लऽ त पीड़ा खतम हो जाई [चन्दन की लकड़ी घिसकर मस्तक पर लगा लो तो पीड़ा खतम हो जायेगी]। (२) चनन काठे के चउकिया त मोतियन झालर, ताही चढ़ि राम नहाले सीता रानी बिहँसेली।

चरक—चर्म की बीमारी, शरीर का उजला या सफेद दाग। प्र०—बेचारी के देह में चरक भइले से सगरो देह चितकबरा हो गइलबा [बेचारी के शरीर में सफेद

दाग की बीमारी होने से सारा शरीर चितकबरा हो गया है]।

ाल—आचरण, स्वभाव, चलने की क्रिया। प्र०—देख, तूँ आपन चाल सुधार लऽ नाहीं त सभे तोहसे नफरत करी [देखो, तुम अपना आचरण सुधार लो, नहीं तो सभी तुमसे नफरत करेंगे]।

वडरा—चिवड़ा, चूड़ा। प्र०—गाँव में चिउरा-दही खाये के बहुत रेवाज हऽ [गाँव में चिवड़ा दही खाने का बहुत रिवाज है]।

चपरी—गोबर से बना वह ईंधन जो गोबर को हथेली से मोटी रोटी की भाँति बनाकर सुखा दिया जाता है, उपरी या उपली। प्राय: मोटी, बेडौल तथा बिना फूली रोटी या चपाती की तुलना चिपरी से कर दी जाती है, यथा—का रे, तोके रोटी पकावे के तनिको सहूर नइखे? चिपरी अइसन रोटी पो के रखि दिहले बाड़े? [क्यों री तुझे रोटी बनाने का तनिक भी शऊर नहीं है? चिपरी जैसी रोटी बना के रख दी है?]।

चिचिहरी—महीन पतली लकीर या रेखा। प्र०—देवार पर चिचिहरी खींच के काहे खराब करत बाड़ऽ? [दीवार पर रेखा खींचकर क्यों खराब कर रहे हो?]। (२) एमे तोहार कवनो कला त देखाइए नइखे देत। लागऽता कि खाली चिचिहरी खींच के छोड़ि दिले बाड़ [इसमें तुम्हारी कोई कला तो दिखाई नहीं देती। लगता है कि केवल चिचिहरी खींच कर रख दी है]

चिन्हार—पहचानने की निशानी, चिह्न, वह वस्तु जिससे किसी की पहचान हो। जाना-पहचाना व्यक्ति। प्र०—(१) उनकर पता लगावे खातिर कौनो चिन्हार देबऽ तबे त पहिचानल जाई [उनकी पता लगाने के लिए कोई चिह्न दोगे तभी तो पहचाना जायेगा]। (२) आरे ई त हमार चिन्हार हउएँ [अरे, यह तो मेरे परिचित हैं]।

चिन्हारी—(दे० चिन्हार)।

चिनिया बदाम—मूँगफली।

चिरउरी—चिरौरी, विनती, दीनतापूर्वक प्रार्थना। प्र०—एतना छोट काम खातिर एतना चिरउरी कइल अच्छा नइखे लागत [इतने छोटे काम के लिए इतनी चिरौरी करना अच्छा नहीं लगता]।

चिरकुट—चिथड़ा, फटे कपड़े का छोटा अंश। प्र०—(१) तोहार लुगवा चिरकुट-चिरकुट हो गइल, अब एकर जान छोड़ि दऽ [तुम्हारी साड़ी चिथड़ा-चिथडा हो गयी है अब इसकी जान छोड़ दो]। (२) का हो, कपड़ा के नाम पर तहरा एगो चिरकुटो ना जूरल बा? [क्यों जी, कपड़े के नाम पर तुम्हें एक चिथडा भी नहीं जुरा है?]।

चिरुकी—चुटिया, चुटइया, चुन्दी। प्र०—पुरान विचार के हिन्दू लोग मूड़ी पर चिरुकी जरूरे रखेला [पुराने विचार के हिन्दू लोग सिर पर चुटइया जरूर रखते हैं]।

चिल्होर—चील पक्षी। प्र०—पोखरवा के चारों ओर मछरी खातिर चिल्होर मड़राऽताने सन् [पोखर के चारों ओर मछली के लिए चील मँडरा रहे हैं]

चीन्हा-परची–जान पहिचान, परिचय। प्र०–हमार उनसे कउनो चीन्हा-परची नइखे [मेरा उनसे कोई परिचय नहीं है]।

चुक्कड़—कुल्हड़, मिट्टी का बना वह पात्र जिसमें ताडी आदि पी जाती है। प्र०—(१) बिना एक-दू चुक्कड़ ताड़ी पियले ऊ रहि ना सकेलें [बिना एक दो कुल्हड ताड़ी पिये वह रह नहीं सकते]। (२) (गीत)—बनल बनावल खेल बिगड़ले बा माटी के चुक्कड। केतने के बरबाद क दिहले बा माटी के चुक्कड [बना बनाया खेल बिगाड़ दिया है मिट्टी के चुक्कड (कुल्हड़) ने कितनो को बरबाद कर दिया है मिट्टी के चुक्कड़ ने]।

चुहानी—चौका, रसोई का स्थान। प्र०—(१) चुहानी मे रसोई बना के उहवें सूत जाइले [चौके में रसोई बनाकर वहीं सो जाती हूँ]। (२) कहा०—बात बोले, पुरनिया, हगे के चुहनिया [बात तो पुरखे जैसा बोलते हैं, और चौके में (बच्चे के समान) हग देते हैं (पखाना कर देते हैं)]।

चेंव-चेंव—चूँ-चूँ (चिड़ियों की बोली)। (१) आरे, चिरइया के बचवन चेंव-चेंव बोलऽताने सन् [अरे, चिडिया के बच्चे चूँ-चूँ बोल रहे हैं]। (२) मुहा०—अडा सिखावे बच्चा के चेंव-चेंव जिन करऽ [अंडा सिखाता है बच्चे को कि चें-चें मत करो]।

चेरी—दासी, सेविका, नौकरानी। प्र०—(१) देखऽ, हम तोहार चेरी नाहीं हईं जे एतना रोब झारऽतारू [देखो, मैं तुम्हारी दासी नहीं हूँ जो इतना रोब झाड़ रही हो] (२) (गीत) ई मति जनिहऽ कवन देई आवेल्नो चेरिया तोहार। चेरिया हो चेरिया हो जनि करऽ, आवेल्नो पूत बहुआरि [हे अमुक देवी, यह मत जानो कि यह तुम्हारी दासी/नौकरानी आ रही है। दासी-दासी मत करो यह तुम्हारी पुत्रवधू आ रही है]।

चोइंटा—मछली के ऊपर का कडा छिलका। प्र०—हसुअवा से रगड़ि के चोइंटवा छोडाके मछरिया कटिहऽ [हँसिया से रगड़कर चोइंटा छुड़ाकर मछली काटना]।

चोखा—भर्ता, उबाले या भुने हुए आलू अथवा बैगन को मसलकर बनाया गया सालन। प्र०—आलू, बैगन के चोखा के सगे लिट्टी बहुत मजदार लागेला [आलू-बैगन के भर्ता के साथ लिट्टी (बाटी) बहुत मजेदार लगती है]।

चोप—आम के फल के डंडो के सिरे का रस जो निचोड़कर फेंक दिया जाता है। प्र०—देसी आम के चोप निकाले के बाद खाए के चाहीं नाही त मुँह खजुआए लगेला [देशी आम का चोप बाहर निकालने के बाद खाना चाहिए नहीं तो मुँह खुजलाने लगता है]।

छ

छँउड़ी—छोकरी, बेटी, लड़की। प्र०—उनकर छँउड़ी बिआहे लायक हो गइल होई [उनकी लड़की ब्याहने लायक हो गयी होगी]।

छकुनी—छड़ी कच्चे बाँस की डंडी।

छठिहार—बच्चा पैदा होने के छठे दिन का उत्सव छठी प्र०—छठवें दिन

नहान करके छोटिहार हो जाई [छठें दिन नहान के बाद छूती हो जायेगी]।

छनौटा—छन्नी, पूड़ी कचौड़ी आदि को कड़ाही से तलकर निकालने वाला छेददार सपाट कलछी, अरना झन्ना। प्र०—छनौटा से पूरी कचउरी छनले से घीव निथर जाला [छन्नी से पूड़ी कचौड़ी निकालने से घी छन जाता है]।

छरका—नीम आदि की हरी टहनी (दातून के लिए। प्र०—माई हो, निमिया के पेड़वा से एगो छरका तूरि ले आवऽ त दतुअन कइल जा [माँ जी, नीम के पेड़ से एक टहनी तोड़ लाओ तो दातून किया जाय]।

छाँट/छाँटि—कै, वमन, उल्टी। प्र०—भाई, ना जाने का खइले हउएँ जे बार बार छाँट आवऽता [अरे, न जाने क्या खाया है कि बार बार उल्टी हो रही है]।

छाँटी—सानी, चारा कुट्टी जो गँड़ासी अथवा मशीन से काटकर पशुओं को खिलाई जाती है। प्र०—भइया मवेशियन खातिर छाँटी काटत हउएँ [भैया मवेशियों के लिए छाँटी काट रहे हैं]।

छान—गधे के पैर में बाँधने की रस्सी या फन्दा। प्र०—(१) गदहवा भागे ना लागे एही खातो धोबी लोग अगिला दूनो गोड़वा में छान डाल देला। [गधा भागने न लगे इसी लिए धोबी लोग अगले दोनों पैरों में फन्दा डाल देते हैं]। (२) (गीत)—धोबी के घर गदहा होइबऽ छिलल घास नाहीं पाइबऽ। ले लदिया घटिया पहुँचइबऽ उल्टे छान छनइबऽ। भजन बिनु बैल बिराना होइबऽ।

छाल्ही—मलाई, दूध या दही के ऊपर जमी परत। प्र०—छाल्ही वाला सजाव दही केकरा ना पसन्द होई [मलाईदार जमा हुआ दही किसे न पसन्द होगा]।

छिउंकी—एक प्रकार का छोटा चींटा या चींटी जिसके काटने से बहुत पीडा होती है।

छिउली/छिउलिया—एक पेड जिसके पत्ते घने होते है। प्र०—(गीत) छापक पेड छिउलिया त पतवन गहबर हो। आरे ताही तर ठाढि हरिनिया त हरिना से अरज करे होऽ।

छितनी—बाँस या सरकंडे की बनी छिछली डलिया, छीटा। प्र०—बरात के साथे बुनिया, खुरमा उझिला सभ भेजे खातिकर पाँच ठो छितनी चाही [बारात के साथ बुंदिया खुरमा (शकरपाला) उझिया [उबटन के लिए सरसो) आदि भेजने के लिए पाँच छीटे चाहिए]।

छिपुली—छोटी थाली, तश्तरी। प्र०—बचवा अपने छिपुलिये में खाला, थरिया मे नाहीं [बच्चा अपनी छोटी थाली में ही खाता है, बड़ी थाली मे नहीं]।

छींट—छापेदार वस्त्र। प्र०—हमरा के सादा साड़ी दीहऽ, हम छींटदार कपड़ा ना पसन्द करीले [मुझे सादी साड़ी देना, मैं छापेदार कपड़ा नहीं पसन्द करती]।

छींटा—(दे० छितनी)।

छीपा—बंसी, मछली मारने का डंडा जिसमे मजबूत धागा बाँधकर कटिया बाँधी जाती है जिसमें मछली फँस जाय

प्र०—हमार लरिकवा दिन भर मछली मारे खातिर पोखरा मे छीपा डाल के बइठल रहेला [मेरा लड़का दिन भर मछली फंसाने के लिए पोखर मे छीपा डाले बैठा रहता है]।

छीया—गन्दी या खराब वस्तु, घृणित वस्तु, मल, पखाना। यह शब्द छोटे बच्चों से बात करने में प्रयुक्त होता है। प्र०—(१) ए बाबू, तोहरे गोड़वा मे छीया लागल बा, धोआ लऽ [ए बच्चा, तुम्हारे पैर में छीया (कीचड़ आदि) लगा है, धुला लो]। छीया क लिहल? आवऽ गाँड़ धो दीं। [टट्टी कर ली? आओ शौच करा दूँ]।

छेंका—बरीच्छा, सगाई। प्र०—उनके बेटउआ के छेंका-तिलक हो गइल, अगले महीना में बिआह होई [उनके बेटे का बरीच्छा तिलक हो गया अगले माह में विवाह होगा]।

छोराई—छोलाई, छीलने की क्रिया। प्र०—आज काल्ह भोला अपने ऊँख के छोराई मे जूटल हउएँ। आजकल भोला अपने ईख/गन्ने की छोलाई में जुटे हैं]।

छोवा—गुड़ का राब, गन्ने के रस को गुड़ के लिए पकाते समय उसमें से निकाला गया फेन जो अधिक जमा हुआ नहीं रहता, महिया। प्र०—गउँअन में महिया के साथे बजरी के भा मकई के रोटी बहुत चाव से खाइल जाला [गाँवों में गुड के राब के साथ बाजरे अथवा मक्के की रोटी बहुत चाव से खाई जाती है]।

ज

जंगला—झरोखा, खिड़की, गवाक्ष। प्र०—कनिया-बहुरिया जंगला मे भले बहरा झाँकि ले बाकी दरवाजा के बहरा पैर ना रखि सकेली [नई-नवेली दुल्हनें खिड़की से भले ही बाहर झाँक ले किन्तु दरवाजे के बाहर पैर नहीं रख सकती]।

जड़इया—जाड़ा देकर बुखार, जूड़ी-ताप, मलेरिया बुखार। प्र०—भोला महीना भर से जड़इया से परेशान बाड़ें [भोला महीने भर से जुड़ी बुखार से परेशान हैं]।

जम—यम, मृत्यु के देवता।

जमदुतिया—यम द्वितीया, भाई दूज।

जमराज—(दे० यम)

जर/जरि—जड़, मूलधन। प्र०—(१) (गीत) निबिया के जरि करुआइन सीतली बयरिया बहे ताही तर ठाढ़ कवन दुलहा नयना से नीर झरे। (२) जर-जोरू-जमीन ई तीनों झगड़ा के कारन बनेला [जर-जोरू-जमीन ये तीनो झगड़े का कारण होते है]।

जाँगर—कार्य करने की शक्ति या क्षमता। प्र०—ओकरे पास काम-काज करे के जाँगरे नइखे। जागर ना होखे के कारने त सासु के पियारी ना भइल [उसके पास काम-काज करने की शक्ति ही नहीं है। शक्ति न होने मे ही तो वह सास की प्यारी नहीं हो सकी]।

जाँत/जाँता—आटा पीसने की हाथ की चक्की। प्र०—(१) जाँता मे पीसल आटा मसीन के चक्की से पीसल आटा

से ज्यादा फायदामन्द होला। [इस का [illegible] में [illegible] अधिक लाभदायक होता है]। (२) लोकोक्ति—[illegible] आदि के [illegible] [illegible] कहने लगी]।

[illegible]र—परिवार विस्तार, समाज समुदाय। प्र०—[illegible] के लोग [illegible] परिवार के लोग हैं]।

[illegible] और [illegible] मे [illegible] वाला [illegible]।

[illegible]—मवेशियों के [illegible] पर लगायी जाने वाली [illegible] [illegible]। प्र०—[illegible] के समय [illegible] के मुँह पर [illegible] [illegible] के समय [illegible] के मुँह पर [illegible] लगा दी जाती है]।

...उतिया—एक व्रत जो पुत्र के लिए स्त्रियाँ रखती हैं। [जिउतिया व्रत में पहना जाने वाला गले का सूत्र। प्र०—पूरब में जिउतिया व्रत के बहुत रवाज बा [पूर्व में जिउतिया व्रत रखने का बहुत रिवाज है]।

...त/जुगुति—युक्ति, उपाय। प्र०—कौनो जुगुत से हमार बाबू ठीक हो जायँ त हम ऊ सब करे के तइयार बानी [किसी उपाय से मेरा बच्चा ठीक हो जाय तो मैं वह सब करने को तैयार हूँ]

जून—समय। प्र०—एही जून तोहके सभ काम सुलझ करे के परी।

जूना—बोझा ढोने के लिए बनायी गयी घास या मूँज की रस्सी।

जेवना—भोजन, जीमने का सामान, आदर से प्रस्तुत भोजन। (१) प्र०—जेवना के समय हो गइल बा, मेहमानन के बोला के जेवे खातिर बइठा दऽ [जीमने भोजन का समय हो गया है मेहमानों को बुलाकर जीमने के लिए बैठा दो]। (२) (गीत)—सोने के थारी में जेवना परोसलों। जेवना लिहले हम ठाढ मदरसे से ना अइलें बालम [सोने की थाली में भोजन परसा है। भोजन लेकर मैं खड़ी हूँ किन्तु स्कूल से बालम नहीं आये हैं]।

जेवनार—अतिथि को भोजन कराते समय उनके मनोरंजनार्थ गाया जाना वाला गीत। इसमें प्रायः अतिथि के लिए गाली गायी जाती है। प्र०—आरे, बिना जेवनार गवले सूखल-सूखल जेवना करावत बाड़ू जा [अरे बिना जेवनार गाये सूखा-सूखा भोजन जिमा रही हो]।

जोई—जोड़ी, पत्नी। प्र०—(१) ए बाबू, राउर जोई सलामत रहे, ईहे हमार अभिलासा बा [हे बाबू, आपकी जोडी सलामत रहे, यही मेरी अभिलाषा है]। (२) लोकोक्ति—सगरो रमायन खतम हो गइल त पूछे लगलें कि सीता केकर जोई रहली [सम्पूर्ण रामायण खतम हो गया तो पूछने लगे कि सीता किसकी पत्नी थीं]।

जोगीड़ा—होलिकोत्सव पर टोली बना कर घर घर जाकर होली गाने वाले और

उसके बदले में नेग-न्योछावर मांगने वाले गायक। प्र०—बसन्त पचमी के बादे से जोगिडवन घरे-घरे घूम-घूम गावे-बजावे लागलें सन् [बसन्त पचमी के बाद से ही जोगीड़ा सब घर-घर घूमकर गाने-बजाने लगते हैं]।

न्हरी—मक्का, मकई, एक प्रकार का खाद्यान्न। प्र०—जोन्हरी के आटा मे लस ना होला एही से रोटी बनावे मे दिक्कत होखेले [मक्के के आटे में लिसलिसापन नहीं होता इसीलिए रोटी बनाने में दिक्कत होती है]।

न्ही—तारा। प्र०—अन्हरिया राति में असमान में जोन्ही अइसन लागत बाड़ी सन् जइसे करिया रंग के साड़ी में सितारा टाकला होखे [अन्धेरी रात में आसमान में तारे ऐसे लगते हैं जैसे काले रग की साड़ी में सितारे टंके हो]।

न—जामन, दही का वह थोड़ा सा अंश जो दही जमाने के लिए दूध मे डाला जाता है। प्र०—दुधवा के गुनगुना क के तनी से जोरन डार दऽ त दही जामि जाई [दूध को कुनकुना करके थोड़ा सा जामन डाल दो तो दही जम जायेगा]।

झ

हा—लकड़ी या छोटा डंडा जिसे झटके से फेककर फल आदि तोड़ा जाता है, सोंटा। प्र०—तें झटहा से मार-मार केतना कच्चा आम तूरि दिहले [तूने डंडा मारकर कितने कच्चे आम तोड डाले]

झलका—फफोला। प्र०—गरम तेल के छीटा परले से हथवा में झलका परि गइल [गरम तेल का छींटा पडने से हाथ मे फफोला पड़ गया]।

झाँपी—मूज की बनी पिटारी, पेटी या सन्दूक। पूर्वी उत्तर प्रदेश व बिहार की महिलाएँ प्रायः मूंज के रंग-बिरगे रेशे से इसे बनाती हैं। घरेलू महिलाओ की हस्तकला में मौनी, डलिया आदि के निर्माण के साथ इसकी गणना भी होती है। प्र०—बेटी के साथे सास-ननद खातिर झाँपी भर समान दिहनी तबो उनकर मुँह सीधा ना भइल [बेटी के विवाह में झाँपी भर सामान दिया तब भी उनका मुँह सीधा नहीं हुआ]।

झांवा—वह ईंट या ईंट का टुकड़ा जो जलकर काला पड़ गया हो। प्र०—झावा से तावा भा जरल कड़ाही माजे से बरतन साफ हो जाला [झाँवा से तवा या जली हुई कड़ाही माजने से बर्तन साफ हो जाता है]।

झाड़ा—पाखाना, मल, मैला, टट्टी। प्र०—झाड़ा फीरे जात हउअऽ का? [पाखाना करने जा रहे हो क्या?]।

झिझरी—नाव को चन्द्राकार गति घुमाकर खेला जाने वाला खेल। प्र०—ऊ नदी में झिझरी खेले गइल बा [वह नदी मे झिझरी खेलने गया है]।

झिलँगा/झिलिंगा—ढीली-ढाली अथवा टूटी-फूटी खाट। प्र०—ऊ दारू पी के एगो झिलँगा पर परल रहेला [वह दारू पीकर एक टूटी-फूटी चारपाई पर पड़ा रहता है]।

झिल्ली—उबटन या बुकवा का वह व्यर्थ

अंश जो शरीर पर उबटन का लेप करने के बाद रगड़कर झाड़ दिया जाता है। प्र०—होली के एक दिन पहिले घर भर के बूकवा लगाके ओकर झिल्ली सम्बत जरे पर ओही में जरा दिहल जाले [होली के एक दिन पहले घर भर को उबटन लगाकर उसकी झिल्ली सबत् जलने पर उसी में जला दी जाती है]।

झींक—पीसने के लिए जाँता में एक बार डाला जाने वाला अन्न। प्र०—जँतवा के बड़हन-बड़हन झींक मति डारऽ नाहीं त अटवा मोट निकरी [चक्की मे बड़ी बड़ी झीक मत डालो नहीं तो आटा मोटा निकलेगा]।

झुलनी—नाक के बीच में पहनने वाला लटकता हुआ आभूषण। प्र० (गीत)—मरबों झुलनिया के धक्का बलमु कलकत्ता निकरि जइहें।

झुल्ला—ढीली कुर्ता। प्र०—गाँवन में झुल्ला लुग्गा पहिरे के रिवाज अबहिनों बाटे। [गाँवों में कुर्ता-धोती पहनने का रिवाज अभी भी है]।

झूमर—कान का आभूषण। लोकगीत की एक विधा, जिसमें हास-परिहास पूर्ण प्रसंग होता है। प्र०—(१) टीका, झूमर आ गरे के हार चढावा में आइल रहे [टीका/बेंदी, झूमर और गले का हार चढ़ावे मे आया था]। (२) अब बिआह के गीत ना होई। नकटा-झूमर गावऽ लोगन [अब विवाह का गीत नहीं होगा। तुमलोग नकटा-झूमर गाओ]।

झूला—(दे० झुल्ला)

झेखुर—झाड़-झंखार, झुरमुट, उलझी हुई वनस्पति। प्र०—(गीत)—बाबा वने उपजे हरदिया झेखुरवा बने नारियर [बाबा के वन मे हल्दी उपजती हे और झेखुर वाले वन मे नारियल]।

झोंझ—गुच्छा, झुँड, समूह। प्र०—अबकी त आम झोंझ के झोंझ फरल बा [इस बार तो आम गुच्छा-गुच्छा फला हुआ है]।

झोरा—झोला, थैला। प्र०—झोरा भर समान लेके कहवाँ जात हउअऽ [झोला भर सामान लेकर कहाँ जा रहे हो?]।

झोरा-झटा—सामान, असबाब। प्र०—आपन झोरा-झंटा उठाके इहवां से चलि जा। अपना सब सामान लेकर यहाँ से चले जाओ]।

ट

टंगरी—टाग, पाँव, पैर। प्र०—बहरा निकरबऽ त हम तोहार टंगरी तूरि देब [बाहर निकलोगे तो मैं तुम्हारे पॉव तोड़ दूंगा]।

टंगारी—कुल्हाड़ी, लकड़ी चीरने/फाड़ने का औजार। प्र०—भोला से टंगारी माँग के तनी जरावे खातिर लकड़ी चीर डारऽ [भोला से कुल्हाड़ी मांगकर जरा जलाने के लिए लकडी चीर डालो]।

टांग—(दे० टंगरी)

टांगी—(दे० टंगारी)

टांगुन—एक प्रकार का छोटे गोल दाने का इतर चावल। प्र०—धान के चाउर भाग में कहाँ लीखल बा सावा टागुन के चाउर मिल जा ईहे बह बात होई

[धान का चावल भाग्य मे कहाँ लिखाहै! सावां-टांगुन का चावल मिल जाय, यही बडी बात होगी]।

टाप—मछली पकडने का टोकरीनुमा बाँस का जाल। प्र०—मछरीमार सभ टाप ले-ले के मछरी फसावे पोखरवा के ओर चलल जात बाने [मछली पकडने वाले टाप ले-लेकर मछली फंसाने के लिए तालाब/पोखर की ओर चले जा रहे हैं]।

टिकरी—टिकियानुमा रोटी, छोटी मोटी रोटी। प्र०—(गीत) सबके खिआई भइया सबके पिआई हो ना। भइया बचि जाय पिछली टिकरिया रे ना [हे भैया, सबको खिला पिला लेती हूँ तो अन्त मे बाद की बनाई हुई टिकिया बच जाती है]।

टिकोरा—आम का छोटा कच्चा फल, बतिया आम। प्र०—अमवा के जबसे टिकोरा लागि जाला तबे से लरिकवन तूरि-तूरि खाए लगेलें [आम में जबसे टिकोरा लग जाता है तभी से बच्चे तोड़-तोड़ खाने लगते हैं]।

टूड़—गेहूं या जो की बाली के शीर्ष पर लगा पतला महीन नुकीला रेशा।

टेट—धोती या साड़ी का कमर मे बँधा हुआ भाग जिसमे प्राय: रुपया पैसा अथवा यत्न की जाने छोटी मोटी वस्तु खोसकर सुरक्षित कर ली जाती है। प्र०—आरे काहें रुपयवा एहर-ओहर रखत बाड़ऽ? टेंटे में खोस ल न [अरे, रुपया इधर-उधर क्यों रख रहे हो? टेंट में खोंस लो न]।

टम्ही—(१) किसी पौधे का अग्र भाग फुनगी। (२) दीपक की बत्ती का अगला सिरा। प्र०- निमिया के टम्ही तूर देबऽ त उ बढ़ी कइसे? [नीम की फुनगी तोड़ दोगे तो वह बढ़ेगा कैसे? (२) देखऽ दियना कहीं बुझा न जाए, ओके टम्हिया ऊपर घुसका दऽ [देखो, दीपक कहीं बुझ न जाय उसका सिरा ऊपर खिसका दो]।

टोंस—हाथ या पैर का नस खिंचकर तीव्र पीड़ा देना। प्र०—गोड़वा में बड़ी जोर से टोंस लागल बा हो, तनी खींच के सीधा कर दऽ [पैर मे टोंस लग गया है जी, जरा खींचकर सीधा कर दो]।

टोटहिन—टोनहिन टोटका या टोना करने वाली। प्र०—अरे, ऊ गजब के टोटहिन हऽ, बच्चवा पर जादू टोना कई दिहले होई [अरे, वह गजब की टोनहिन है बच्चे पर जादू टोना कर दिया होगा]।

ठ

ठकठेनी—झगड़ा-लड़ाई बढ़ाने के लिए छेड़छाड़। प्र०—अब तू ठकठेनी क के झगड़ा अउर बढ़ावे चाहत हउअऽ [अब तुम ठकठेनी करके झगड़ा और बढ़ाना चाहते हो]।

ठकुरसोहाती—चापलूसी की बात, खुशामद, मिथ्या प्रशंसा। प्र०—अपने मतलब से त तूँ ठकुरसोहाती करबे करबऽ [अपने मतलब से तो तुम खुशामद करोगे ही]।

ठाईं—स्थान जगह प्र०—(१) एही ठाईं

[illegible] गइल [illegible] [illegible]।

ाठ आगामी मकान के लिए बाँस का बनाया ढाँचा। प्र०—[illegible] के पहिले बाँस के ठाठ तइयार करे के परेला [आगे बनाने के पहले बाँस का ठाठ तैयार करना पड़ता है]।

ार— मौसिक [illegible], शीत ऋतु। प्र०—अबकी बार त [illegible] ठार परत बा हो, [अबकी बार तो [illegible] पड़ रही है जी]।

ाव- (दे० ठाई)।

ठकरा— मिट्टी के बर्तन का टूटा छोटा भाग। प्र०—(१) लरिकवा मेटुकिया फोर के ओकरे ठिकरवा से खेलत बा [लड़का मटकी फोड़कर उसके टुकड़े से खेल रहा है]। (२) बच्चा होखे के होला त मेहरारू लोग ठिकरा फोर फोर खाली, ई ठीक ना हऽ [बच्चा होने को होता है तो महिलाएँ ठिकरा फोड़ फोड़ खाती हैं, यह ठीक नहीं होता]।

री/ठूरी—धान या मक्का आदि भूनने पर बिना फूटा या खिला हुआ कड़ा दाना। प्र०—बरसात के मारे मकइया के लावा ठीक से ना फूटल, ठुर्री जादा रहि गइल बा [बरसात के मारे मक्के का लावा ठीक से नहीं फूटा है, ठुर्री ज्यादा रह गयी है]।

ठी कार्क काग प्र सिसिया के ढेंपिया अच्छी तरह बन्द होए नाहीं त दवइया गिर जाई [शीशी का ढक्कन/कार्क अच्छी तरह बन्द कर देना नहीं तो दवा गिर जायेगी]।

ठेंपी- (दे० ठेंठी)।

ठेक/ठेकि- अनाज रखने की बखारी।

ठेकुआ—मोटी पूड़ी की भाँति गुड़-आटे से बना मीठा पकवान। प्र०—बिटिउआ के बिदाई में ओकरे साथे ठेकुआ पूरी जरूरे जाए के चाहीं [बिटिया की बिदाई के समय उसके साथ ठेकुआ-पूड़ी जरूर जानी चाहिए)।

ठेहा—लकड़ी की चौड़ी मोटी सतह, जिस पर रखकर लकड़ी या मांस आदि के टुकड़े किये जाते हैं। उसी पर पशुओं को खिलाने के लिए चारा भी गडासी से काटा जाता है।

ठेहुना—घुटना। प्र०—बरसात मे ओह सड़किया पर ठेहुना ले पानी भरि जाला [बरसात में उस सड़क पर घुटने तक पानी भर जाता है)।

ठोप—बूंद। प्र०—आज सबेरे से बम्बा से एको ठोप पानी ना चुअल [आज सबेरे से बम्बे से एक भी बूंद पानी नहीं टपका]।

ठोर—चोंच। प्र०—उनके नाक त सुग्गा के ठोर जइसे सुन्दर बा [उनकी नाक तो सुग्गे की चोंच जैसी सुन्दर है]।

ड

डँड़ार—मेड़, डाँड। प्र०—खेतवा के चारो ओर ऊँच डँड़ार होखे के चाहीं जेसे खेत क पानी बहरा ना निकसे [खेत

के चारों ओर ऊँची मेड होनी चाहिए जिससे खेत का पानी बाहर न निकले]।

डँस—एक प्रकार की मक्खी जो पशुओं के शरीर पर चिपक जाती है और उनका रक्त चूसती है। प्र०—कुतवा के सगरो देही भर मे डँस लपटल बा एही से ऊ छौंछिया-छौंछिया के एहर-ओहर भागत बा [कुत्ते के पूरे शरीर मे डँस लिपटा है इसी से वह छटपटा-छटपटा कर इधर-उधर भाग रहा है]।

डगर—रास्ता, बाट, मार्ग। प्र०—कौने डगर जइबऽ, ई तोहके पता बाटे? [किस रास्ते से जाओगे, यह तुमको पता है?]।

डगरा—मूज या बाँस की बनी बड़ी थाल अथवा परात के आकार का बर्तन। प्र०—गउआँ के मेहरारू-बिटिया लोग रग-बिरग के मूजो के बड-बड़ डगरा बनावेली जा [गाँव की महिलाएँ एवं बेटियाँ मूज के भी रग-बिरगे डगरे बनाती हैं]।

डगरी—छोटे आकार का डगरा।

डभका—फोड़ा, पकला। अधभुना चना या मटर। प्र०—(१) बचवा के डभकवा बड़ा टभकत बा, का लगाईं? [बच्चे का फोड़ा बहुत टभक रहा है, क्या लगाऊँ?] (२) हमके चना मटर के डभका भूजा से जादा अच्छा लागेला [मुझे मटर का डभका पूरे भुने हुए से अधिक अच्छा लगता है]।

डँक—हाँक पुकार, बुलावा प्र०—अरे उनके डँक दे के बोला लऽ [अरे उनको पुकार कर बुला लो]। साँप के काटने पर प्रायः मन्त्रादि से विष उतारने वालों की पुकार के लिए यह शब्द प्रयोग में यह कहकर लाया जाता है—'डँक परल बा होऽ' [डँक पडी है, जीऽ]। इस प्रतीकात्मक उद्बोध से सुनने वाला समझ जाता है कि किसी को सर्प ने डँस लिया है।

डाँड़—मेड (दे० डँड़ार)। नाव खेने का डडा। कमर, कटि। प्र०—(कमर के अर्थ में) आज हमार डाँड़ एतना पिराता कि ऊठल-बइठल नइखे जात [आज मेरी कमर में इतना दर्द है/मेरी कमर इतनी पीडा दे रही है कि उठा-बैठा नही जा रहा है]।

डाँड़ी—लकीर, रेखा गुणुरी। तराजू की डडी। प्र०—(१) लछमन जी सीता जी के बचावे खातिर कुटिया के चारो ओर डाँड़ी खींच के मिरिग के सिकार करे गइलन [लक्ष्मण जी सीताजी की सुरक्षा के लिए कुटिया के चारो ओर लकीर खींचकर मृग का शिकार करने गये]। (२) बेइमान बनिया समान तउले में मौका पाके डाँड़ी मार देले [बेइमान बनिया सामान तौलने मे मौका पाकर डंडी मार देते हैं]।

डाढ़—ईर्ष्या। वृक्ष की डाल, शाखा। प्र०—(१) [ऊ ना जाने काहे हमसे एतना डाढ़ करेलन [वह न जाने क्यो मुझसे इतनी ईर्ष्या करते हैं]। (२) देखऽ न! पिपरा के डाढ़ पर कइसन बानर बइठल बा [देखो न। पीपल की डाल पर कैसा बन्दर बैठा है]।

अकुर कोपल प्र चनवा के डाभ निकरि आइल बा अब खेते में छौंटि

दऽ [चने मे अंकुर निकल आया है। अब खेत मे छींट दो]।

डासन—बिछावन, सेज। प्र०—(गीत) मइले ओढन मइले डासन कोइदया चउरा पंथ परे हो. [मैला (मलिन, गन्दा) ओढना, मैला बिछावन और कोदों के चावल का पथ्य दिया जाता है ...]।

डीह—टीला, उजड़ी हुई बस्ती का ऊँचा स्थान। प्र०—(बच्चे को डीह के सूने स्थान पर जाने के लिए बर्जना करती हुई माँ कहती है) ए बाबू, डीह पर मति जइहऽ, उहाँ भुत रहेला [ए बच्चा, डीह पर मत जाना, वहाँ भूत रहता है]।

डेग—डग, कदम। प्र०—लम्मा-लम्मा डेग भरके चलऽ, अबहिन बहुत लामे चलेके बा [लम्बे-लम्बे कदम बढा-कर चलो. अभी बहुत दूर चलना है]।

डेहुँगी—(दे० डहुँगी)।

डोमघाउज—आपस मे व्यर्थ का शोर-शरापा, हुज्जत। प्र०—आरे सभ जने मिलि के एतना डोममउज काहें करत हउअऽ? [अरे, सब लोग मिलकर इतना हल्ला-गुल्ला क्यों कर रहे हो?]।

ढ

ढँपना—ढकना, ढक्कन। प्र०—दुधवा ढँपना मे ढाँपि दऽ नाहीं त कुछ परि जाई [दूध ढक्कन से ढंक दो नहीं तो कुछ पड़ जायेगा]।

ढगरिन/धगरिन—बच्चा जनाने वाली महिला चमारिन प्र०—(१) गउओं में घर ही मे ढगरिन बोला के बच्चा जनवा-वल जाला [गाँव में घर में ही धगरिन बुलाकर बच्चा पैदा करवाया जाता है]। (२) (गीत) ए धगरिन मागे नार के कटाई, तनी नह के कटाई नउनियो के [धगरिन नाल की कटाई मांगती है, जरा नाखून की कटाई नाउन को भी (चाहिए]।

ढाब—कीचड़युक्त जमीन, दलदल। प्र०—पनिया बरसले से रहिया में ढाबे ढाब हो गइल बा [पानी बरसने पर रास्ते मे कीचड़ ही कीचड़ हो गया है]।

ढूँढ़ी—भुने हुए बाजरे, चावल, मक्का आदि को गुड़ या चीनी में पागकर बनाया गया लड्डू। चावल अथवा गेहूं के आटे को भूनकर चीनी या गुड़ मिलाकर बनाया गया लड्डू। ढोंढ़ी, कसार। प्र०—(१) खिचड़ी पर तिलवा-ढूँढ़ी बनबे करी [खिचड़ी के अवसर पर तो तिल तथा चावल बाजरे एव मक्के की ढोंढी बनेगी ही]। (२) पूरब मे बहिन-बेटी के बिदाई में ढूँढ़ी बना के देबे के रेवाज हऽ [पूर्व में बहन-बेटी की विदाई में चावल के आटे का लड्डू बनाकर देने का रिवाज है]।

ढेंकी—धान से चावल निकालने का लकड़ी में लोहा जड़कर बनाया गया वह औजार जो पैर से चलाया जाता है। प्र०—ढेंकी में धान कूटल ओखरी से जादा आसान होला [ढेंकी मे धान कूटना ओखली से ज्यादा आसान होता है]।

ढेंकुली—लट्ठे में लोहे का बडा बर्तन कुएँ से खेत की सिचाई आदि

के लिए पानी निकाल निकाल कर नहर में डालने का साधन। ढाक का पेड़। प्र०—(१) गाँव मे रहँट नाहीं ढेकुली से खेत के सिचाइ होखेला [गाँव मे रहँट अथवा ढेकुली से खेत की सिचाइ होती है]। (२) खेतवा बंजर परल रहले से ओमे ढेकुली के पेड़ जामि गइल बा। अब सब पेड़ निकालल जा त खेत तइयार होखे [खेत के बंजर पड़े रहने से उसमें ढाक के पेड़ जम गये हैं, अब सभी पेड़ निकाले जायँ तो खेत तैयार हो]। (३) (गीत) हरियरी ढाक ढेकुलवा के नीचे त हरिना के [illegible] हो।

ढेंढ़ी—छीमी फली। प्र०—केराव के ढेंढ़ी केकरा बढ़िया ना लागेले [मटर की फली किसे अच्छी नहीं लगती]।

ढेंपी—फल अथवा सब्जी का वह भाग जिसमे डंडी लगी रहती है। प्र०—देसी आम ह न, ओकरे ढेंपिया से चोप गार के निकाल दऽ, नाहीं त गरउआ में लागि जाई। [देशी आम है न! इसका ढेंपी से चोप निचोड़ कर निकाल दो नहीं तो गले में लग जायेगा]।

ढोंढ़ी—नाभि, नाभी। प्र०—नरवा ठीक से ना कटइले से बचवा के ढोंढ़िया में घाव हो गइल बाटे [नाभी का नाल ठीक से न कटने से बच्चे की नाभी में घाव हो गया है]। (दे० ढूढ़ी भी)।

त

तरकुल—ताड़ का पेड़, ताड़ का फल। प्र०—पाकल तरकुल के गाद गउवाँ के बचवन बड़े चाव से खाने सन् [illegible] गाँव के बच्चे बड़े चाव से खाते हैं]।

तागपाट—[illegible] विवाह के समय [illegible]। यह [illegible] के समक्ष [illegible] का आसन [illegible] है। प्र० पहिले [illegible] तागपाट [illegible] के [illegible] [पहले [illegible] तागपाट [illegible] तब [illegible]]।

ताड़ातड़ी—शीघ्रता, जल्दबाजी। प्र०—एतना ताड़ातड़ी मचवले बाड़ऽ, लेकिन [illegible] [इतनी जल्दबाजी मचा रहे हो तुम [illegible] नहीं हो]।

तेखार—[illegible] जुगाड़।

तोख—[illegible]। प्र० उनके कतनो [illegible] उनके तोख ना होला [उन्हें कितना भी दे दो किन्तु उन्हें सन्तोष नहीं होता]।

थ

थइला—थैला, झोला। प्र०—सब गुड़वा एगो थइला में भरि के भेज दीहऽ [सभी गुड़ एक थैले में भरकर भेज देना]।

थइली—थैली, जेब, पाकेट। प्र०—(१) छोट छोट थइली बना के मसलवा भर दऽ [छोटी-छोटी थैली बनाकर मसाला भर दो]। (२) कमीज में थइली जरूर बनवा लीहऽ [कमीज में जेब अवश्य बनवा लेना]

थनइली—स्त्रियों के स्तन मे होने वाला फोड़ा। प्र०—ओकरे छतिया में थनइली हो गइला से बचवा के दूध ना पिया सकत बिया [उसको छाती मे थनइली हो जाने से बच्चे को दूध नहीं पिला सक रही है]।

थपरी—थपड़ी, ताली। हउ देख। उनके जितले पर कइसन थपरी बजा-बजा के लोग नाचऽता! [वह देखो, उनकी जीत पर कैसे ताली बजा-बजाकर लोग नाच रहे हैं!]।

थपुआ—चौड़ा खपड़ा जो छाजन के ऊपर बिछाकर फिर दो खपड़ों के संयोग स्थल पर नरिया लगाया जाता है।

थरिया—थाली, भोजन परोसने कर देने का पात्र। प्र०—एके थरिया में दुनो के खाना परोस दऽ [एक ही थाली मे दोनों को खाना परस दो]।

थाक- थकान। प्र०—सबेर से सझा ले काम करत करत थाक लागि गइल बा [सुबह से शाम तक काम करते-करते थकान लग गई है]।

द

दँवक—ताप। प्र०—आग लगले से ओकर दँवक दूर-दूर फइल गइल रहे [आग लगने से उसका ताप दूर-दूर तक फैल गया था]।

दँवरी—दवनी, मड़ाई, गेहूँ अथवा धान की पकी फसल को काटकर उसे फैलाकर उसके ऊपर बैलों को चलवाकर अन्न निकालने की क्रिया। प्र०—गोहुँआ के के सूखि गइला बा। अब दँवरी करि दऽ, जेमें भूसा बढ़ियाँ होई [गेहूँ का डण्ठल कड़कड़ा कर सूख गया है। अब दवनी कर दो जिससे भूस बढिया हो जायेगा]।

दउरी—बाँस के पतले फट्टों से बनी टोकरी, 'डला' जो अन्न या साग-सब्जी रखने के काम आता है। प्र०—आरे, कौनो डलिया-दउरी ले अइबऽ तबे न समनवा रखबऽ [अरे, कोई डलिया-दौरी ले आओगे तभी तो सामान रखोगे]।

दउलत—दौलत, सम्पत्ति। प्र०—उनके लगे बहुत दउलत बा [उनके पास बहुत दौलत है]।

दसगातर—दसवाँ, मृत्यु के दसवे दिन का धार्मिक कृत्य। प्र०—उनके दसगातर हो गइल अब तिसरे दिन तेरही होई [उनका दसवाँ हो गया अब तीसरे दिन तेरही होगी]।

दहारि—बाढ़, बूड़ा। प्र०—अबकी साल एतना पानी बरसल हऽ कि केतना जगह दहारि आ गइल बा [अबकी साल इतना पानी बरसा है कि कितनी जगह बाढ आ गई है]।

दाँज—बराबरी, समता, तुलना, स्पर्द्धा। प्र०—उनके दाँज मत करऽ, उनके तोहरे करनी मे बड़ा फरक बा [उनकी तुलना (अपने से] मत करो। उनकी तुम्हारी करनी में बहुत फर्क है]।

दीठ/दीठि—दृष्टि, नजर। प्र०—(१) हमरे दीठि से देखऽ त बुराई-भलाई समझ में आ जाई [मेरी दृष्टि से देखो तो बुराई-भलाई समझ मे आ जायेगी]। (२) बचवा के कौनो दीठि लगा दिहले

बाऽ एही मारे दूध नइखे पियत [बच्चे को किसी ने नजर लगा दी है इसीलिए दूध नहीं पी रहा है]।

दीदा—दृष्टि, दीठ, आँख। मन, ध्यान। प्र०—(१) हमरे आँख न दीदा, कइसे सिलाई-पुराई करीं? [मेरी आँख-दृष्टि तो है नहीं, कैसे सिलाई-पुराई करूं?]। (२) हमरे रमुआ के पढ़ाई-लिखाई मे जरिको दीदा ना लागेला।

दुआर—द्वार, दरवाजा। प्र०—(गीत) ए केकरे दुआरे बाजन बाजेला, बाजत सोहावन [अरे किसके द्वार पर बाजा बज रहा है, बाजा बजते हुए सुहावना लग रहा है]।

दुचिता—द्विविधा, द्वैधता। प्र०—(१) दुचिता वाला आदमी कबो चैन से ना रहि सकेला [द्विविधा वाला आदमी कभी चैन से नहीं रह सकता है]। (२) दुचिता की दुइ थूनी गिरानी मोह बलीडा टूटा रे (कबीर) [द्वैधता की दो थूनियाँ गिर गयीं, मोह की बल्ली टूट गयी]।

दुलुकी—तेज चाल। प्र०—तू त बडा दुलुकी चलऽतारऽ होऽ [तुम तो बहुत तेज चाल चल रहे हो, जी]।

देआदिन—देवरानी-जेठानी, पट्टीदार आदि। बिआह-जनेऊ में गोतिया दयादिन के मान रखल जरूरी हठए [ब्याह-जनेऊ में गोतिया दयादिन का मान रखना जरूरी है]।

देई—देवी, नारी के नाम के आगे जुडी उपाधि यथा—कमला देई, फूलन देई आदि।

देखनहरू—लडकी अथवा लडके के विवाह हेतु देखने के लिए आने वाला व्यक्ति। प्र०—आज उनके लड़िकवा के देखे खातिर लडकी के घरे से देखनहरू लोग आइल रहलन [आज उनके लडके को देखने के लिए लडकी के घर से देखनहरू लोग आए थे]।

दोख—दोष, बुराई, अपराध। प्र०—(१) जे दोसरे में दोख ना देख के गुण देखेला, ऊ महान होला [जो दूसरों के दोष न देखकर गुण देखता है वह महान होता है]। (२) हमसे एतना बडा दोख त ना भइल जवन तूँ माफ ना करि सकेलऽ [मुझसे कोई इतना बडा अपराध तो नहीं हो गया जिसे तुम माफ नहीं कर सकते]।

ध

धंधा—कार्य, पेशा, व्यवसाय। प्र०—घरे बइठके का करबऽ, जा आपन काम-धंधा सम्हालऽ [घर में बैठकर क्या करोगे, जाओ अपना काम-धंधा सम्भालो]। (२) ई उनके रोज के धंधा हऽ, एमे घर वालन कुछो ना करि सकेलन [यह उनका रोज का काम है, इसमें घर वाले कुछ नहीं कर सकते]। (३) आज कल तूँ कवन धंधा करत हउअऽ? [आजकल तुम कौन सा व्यवसाय कर रहे हो?]।

धपस—तपन, ताप, दँवक। प्र०—सूरज डूबि गइल, तबो ओकर धपस ना गइल [सूरज डूब गया तब भी उसकी तपन नहीं गयी]।

धना/धनी/धनिया—पत्नी, स्त्री। प्र०—(१) गीत—हम त रहब मइया बाबा

चउपरिया धना, धनि होइहें दासी तोहार [हे माँ, मैं तो बाबा के चौपाल मे रहूँगा और मेरी पत्नी तुम्हारी सेविका होगी। (२) गीत—धनिया बोलाइ भेद पूछेले अपने कवन रंगे [पत्नी को बुलाकर भेद पूछते हैं कि आप कैसी हैं]।

धनहरा—मक्के के पौध के ऊपर लगे धान के आकार के फूल। प्र०—मकइया मे धनहरा फूटि गइल, अब बाली लागी [मक्के में फूल आ गया है अब बाली लगेगी]।

धन्नी—फूस अथवा खपडे के मकान के छाजन को सम्भालने वाला लकडी का बड़ा लट्ठा, शहतीर। प्र०—फूस के धन्नी से खपडा के धन्नी जादा मजबूत होखे के चाही [फूस की धन्नी से खपड़े की धन्नी ज्यादा मजबूत होनी चाहिए]।

धरनी—(दे० धन्नी)।

धसोरा—धक्का।

धापा—धब्बा, दाग। प्र०—तोहरे लुगवा में मथवा के तेल क धापा लागि गइल बा, साबुन से धो डारऽ [तुम्हारी धोती में मत्थे के तेल का धब्बा लग गया है, साबुन से धो डालो]।

धाह—(दे० धपस)।

धीआ—पुत्री, बेटी। प्र०—(गीत) हमरे धीआ के जोगे बर खोजीं बाबा हो, धीआ मोर भइली सयान। [हे पिता, मेरी पुत्री के योग्य वर ढूँढ़िये, मेरी पुत्री सयानी हो गयी है]।

धूर—धूल, धूलि।

धोंधा—भूने हुए अन्न, यथा-चावल, मक्का बाजरा आदि को गुड में पाग कर बनाये गये लड्डू या लइया का बडा रूप, बडे आकार की लइया प्र०—खिचड़ी के तिउहार पर लाई, मकई के लावा अउर चाना के धोंधा पूरब मे खूब बनावल जाला [खिचड़ी के त्योहार पर लाई, मक्के का लावा तथा चने के बड़े-बड़े लड्डू पूरब में खूब बनाये जाते हैं]।

धोकरा—थैला, बड़ा झोला। प्र०—देखऽ एहर-ओहर मत घूमऽ, नाही त लकड़सुंघवा तोहके धोकरा मे भारि के उठा ले जाई [देखो, इधर-उधर मत घूमो, नहीं तो लकड़सुंघवा तुम्हे झोले में भरकर उठा ले जायेगा]। (२) बड़े पेट के अर्थ में—एतना खैका खइलहू पर तोहार धोकरा ना भरल? [इतना खाना खाने पर भी तुम्हारा बोरानुमा पेट नहीं भरा?]।

धोन्हा—लोंदा, मिट्टी का पिंड। प्र०—तू मटिया के धोन्हा बना के हमके पकड़ावत जा त हम ओके देवलवा पर बिछावत जाईं [तुम मिट्टी का लोदा बनाकर मुझे पकडाते जाओ तो मैं उसे दीवाल पर फैलाता जाऊँ]। पत्थर के अर्थ मे भी प्रयुक्त, यथा—उनकर सभ साहित्य सेवा नेव के धोन्हा बन गइल बा बाकी भारत भाषा सर्वेक्षण के विशाल काम अचम्भा में डालि देबे वाला बा (भोजपुरी लोक) [उनकी सब साहित्य-सेवा नींव का पत्थर बन गई है किन्तु भाषा सर्वेक्षण का विशाल कार्य अचम्भे में डाल देने वाला है]।

न

नगरनाच—नखरा चोंचला। (प्र०—देखऽ सीधे से खा लऽ बहुत मत

देखावऽ [देखो सीधे से खा लो, बहुत नखरा मत दिखाओ]।

नटई—(दे० गँटई तथा घेंटुआ)। प्र०—बहुत बोलबऽ त तोहार नटइया दबा देइब [बहुत बोलोगे तो तुम्हारा गला दबा दूँगा]।

नरकट—बेत की तरह पोले डंठल का वह पौधा जो कलम, निगाली (हुक्का पीने वाली), दौरी आदि बनाने के काम आता है, नरकुल। प्र०—नरकट के बनल डलिया-दउरी कड़ा से ज्यादा मजबूत होखेला [नरकुल की बनी डलिया-दौरी सरकडे से अधिक मजबूत होती है]।

नरिया—मेहराबदार खपड़ा जो दो थपुओं के जोड़ पर लगाया जाता है। प्र०—खपड़ा के घर बनवले में नरिया थपुआ दूनो के जरूरत परेला [खपडे का घर बनाने मे नरिया थपुआ दोनो की जरूरत पड़ती है]।

नरेटी—(दे० नटई)।

नाइ—नाव, नौका, नैया। प्र०—(गीत) नाइ नवे परबत नवे सिर कबहू ना नवे। बेटी ही कवन देइ के कारने सिर आजु नवेला [नाव झुक जाती है पर्वत झुक जाता है किन्तु सिर कभी नहीं झुकता। (वही) सिर अमुक नाम बेटी के कारण आज झुक रहा है]।

नावँ—नाम, कीर्ति, यश। प्र०—(१) तोहार नावँ का हऽ? [तुम्हारा नाम क्या है?]। (२) ऊ अइसन कामे कइले रहने कि उनकर नावँ दूर-दूर ले फइल गइल बा [उन्होने ऐसा काम ही किया था कि उनका नाम (कीर्ति) दूर दूर तक फैल गया है]।

निकसार—घर से बाहर निकलने का रास्ता, निकास, घर से बाहर निकलने या जाने की क्रिया। प्र०—(१) उनके घर के निकसार केहर से बा? [उनके घर का निकास किधर से है?]। (२) का बताईं आजकाल काम एतना बढ़ि गइल बा कि घर से निकसारे नाहीं हो सकत बा [क्या बताऊँ आजकल काम इतना बढ़ गया है कि घर से निकास/निकलना ही नहीं हो पाता]।

निकसारी—चेचक, शीतला रोग।

निकाई—अच्छाई, भलापन। प्र०—अपना निकाई के गुन के कारने राम 'राम' हो गइलन [अपनी अच्छाई के गुण के कारण ही राम 'राम' हो गये]।

निख/नीख—चखना, परीक्षण। प्र०—(गीत) पूत हो जान्हऽ पूत: गउरा पिआइल, दुधवा के निख/नीख माँगे दऽ [हे पुत्र, तुम तो गौरी के स्तन ... करने जा रहे हो, मुझ दूध का बदला तो दे दो]।

निसाफ—इन्साफ, न्याय। प्र०—हमरे खातिर तू ठीक से निसाफ ना कइलऽ [मेरे लिए तुमने ठीक से न्याय नहीं किया]।

निहोरा—आग्रह, प्रार्थना, अनुग्रह। प्र०—(१) हम तोहके एतना निहोरा क के बोलवली तबो पर तू ना अइलऽ [मैंने तुम्हें इतने आग्रह से बुलाया, तब भी तुम नहीं आई]। (२) (कबिता) औ कबिरा कासी मरे तो रामहि कौन निहोरा

नून—लोन नमक लवण प्र० (कहा०)

तीन चीज इयाद आवे नून, तेल, लकडी [(उत्तरदायित्व आने पर) तीन चीजे याद रहती हैं—नमक, तेल और लकड़ी]।

/नेउरा—नेवला। प्र०—ए नेउरा तोरे बिल्गिया मे साँप [ए नेवले, तेरे बिल मे साँप है]।

आ—नट, गा-बजाकर शारीरिक अभिनय करके जीवन निर्वाह करने वाला व्यक्ति। गर्दन, गला। प्र०—नेटुआ एक जगह ना रहेले, एहर-ओहर घूम के आपन कर्तब देखाके जीविका कमाले सन् [नेटुए एक स्थान पर नही रहते। इधर-उधर घूमकर अपना कर्तव्य दिखाकर जीविका कमाते हैं सब]।

—जडाऊ रेशमी चादर। प्र०—(गीत) कहतू त ए बेटी छतर छवइती कहतू त नेतबे ओहार [हे बेटी, यदि कहती तो मैं छत्र छवा देता और कहती तो नेतकी चाँदनी डलवा देता]।

तहरू—जिसे नेवता दिया गया हो, निमन्त्रित किया गया हो, निमन्त्रित अतिथि। प्र०—सभ नेवतहरू लोग आ गइल बाने, अब भोजन के तइयारी होखे के चाही [सभी निमन्त्रित लोग आ गये हैं, अब भोजन की तैयारी होनी चाहिए]।

या—मिट्टी, गारे आदि से दीवाल घर आदि बनाने वाली जाति, लोनिया। प्र०—(कहावत) नोनिया के बेटी के ना नइहरे सुख ना ससुरे सुख [लोनिया की बेटी को न नैहर में सुख न ससुराल में सुख]

प

पंइचा—उधार, ऋण। प्र०—जेकरे-नेकरे से उधार-पइचा ले के त धिअवा के बिआह कइनी हँऽ [जिस-तिस से उधार लेकर तो बेटी का ब्याह किया है]।

पंजरी—आस्थि-पजर, हड्डियो का ढाँचा, छाती की हड्डियाँ, पसली। प्र०—(१) गाडी के झटका मे उनके अजरी-पजरी सगरो खडखड़ा गइल [गाडी के झटके से उनका अस्थि-पंजर सब खडखडा गया]। (२) सरदी लगले से लरिकवा के पजरी पिरात बा [सरदी लगने से बच्चे की पजरी मे दर्द हो रहा है]।

पइठ—प्रवेश, ज्ञान या जानकारी की गहराई पैठ। प्र०—देखऽ भाई, उनके धरम के बारे मे हमार जादा पइठ नइखे [दखो भई, उनके धर्म के बारे मे मेरी अधिक पैठ नहीं है]।

पइला—अन्न-तेल आदि नापने का बर्तन, पैमाना जो लकडी अथवा लोहे आदि का होता है। पइली—छोटे माप का पात्र।

पइसार—(दे० पइठ)। प्रवेश द्वार, घुसाव, प्रवेश। प्र०—(१) उनकर घर के पइसार पूरब की ओर बाटे [उनके घर का प्रवेश-द्वार पूर्व की ओर है। (२) सरोजा के घर में उनके पइसार एकदमे बन्द हो गइल हवे [सरोजा के घर मे उनका प्रवेश एकदम ही बन्द हो गया है]।

पएँत—पैताना, शय्या का वह भाग जिधर पैर रहता है। (दे० गोड़तारी)। प्र०—(गीत) खोलऽ गउरा बजर केवाड पएँत लागि सोइबि [हे गौरा वज्र किवाड

खोल दो, मैं तुम्हारे पैताने सो जाऊँगा]।

पगहा—पशु बाँधने की रस्सी। प्र०—(१) अरे ऊ देखऽ, गइया पगहा तुड़ा के भागल जात बिया [अरे वह देखो, गइया रस्सी तुड़ाकर भागी जा रही है]। (२) (मुहा०) आगे नाथ न पीछे पगहा [आगे न नथने की डोर है न पीछे पकड़ने की डोर अर्थात् जिस पर कोई उत्तरदायित्व न हो]।

पट्टीदार—हिस्सेदार, एक ही वंश का। प्र०—उनके जयदाद में सभ पट्टीदार लोगन के हिस्सा लागी [उनकी जायदात में सभी पट्टीदारों का हिस्सा लगेगा]।

पड़रू—भैंस का नर बच्चा, पाड़ा। प्र०—उनकर भइसिया पड़रू बिआइल बिया [उनकी भैंस पाड़ा ब्यायी है]।

पड़िया—भैंस की मादा शिशु, पाड़ी। प्र०—भोला के पड़िया अब भइस हो गइल [भोला की पाड़ी अब भैंस हो गयी]।

पतई—पत्ता, पत्ती। प्र०—पतई बटोरत लछमिनिया के देखनी, लकड़ी तुरत धनपाल [पत्ती बटोरते हुए लछमिनिया को देखा (और) लकड़ी तोड़ते हुए धनपाल को]।

पतुकी—भोजन पकाने की छोटी हाँडी। प्र०—अहरा पर पतुकी चढ़ा के दाल रीन्हि लऽ, फेर लिट्टी लगइहऽ [अहरा (कंडी की आँच) पर पतुकी चढ़ाकर दाल बना लो फिर लिट्टी लगाना]।

पनही—जूता, उपानह। प्र०—एतना गरीब बाड़न जे पाईं में पनहिओ नइखे जूरत [इतने गरीब हैं कि पैर में जूता भी नहीं नसीब होता]।

की पलक प्र०—पपनी पर फुन्सी निकरि अइला से अँखिया पिरात हउए [आँख की पलक पर फुन्सी आने से आँख दुख रही है]।

पपरा—रोटी की पतली और हल्की परत, रोटी का छिलका। मूंग की पीठी, बेसन अथवा आटे की घोल को तवे पर पतला सा फैलाकर तेल अथवा घी मे सेंका हुआ खाद्य पदार्थ, चिल्ला। प्र०—(१) अबहिन ओकर मेदा कमजोर बा। रोटी के पपरा आ मूग के दाल के पानी खाये के दीहऽ [अभी उसका मेदा कमजोर है। रोटी का छिलका तथा मूग की दाल का पानी खाने को देना]। (२) बेसन घोर के नीमक, मरिचा डार के पपरा बना लऽ [बेसन घोलकर नमक, मिर्चा डालकर पपरा बना लो]।

पय/पै—बुराई, दोष, अवगुण। प्र०—उनकर आन केहु मे पय/पै देखे के बान परि गइल बा [उन्हें दूसरे में दोष देखने की आदत पड गई है]।

परई—मिट्टी का छिछले कटोरेनुमा बर्तन, मिट्टी का प्याला। प्र०—पत्तल पर खैका आ परई मे मिठाई देहले रहलन [पत्तल पर खाना और परई में मिठाई दी थी]।

परतीख—उदाहरण, समता, तुलना। प्र०—हमके केहू के परतीख के जरूरत नइखे, हम जइसन बानी ओइसही रहब [मुझे किसी के उदाहरण या तुलना की जरूरत नहीं है, मैं जैसा हूँ वैसा ही रहूँगा]।

परान—प्राण, जान। प्र०—(१) एतना बोलते उनके परान निकरि गइल [इतना बोलते उनका प्राण निकल गया] (२) इहि

नु हमार जान-परान हउएँ [यही न मेरे जान-प्राण हैं]।

ोज/परोजन—समारोह, भोज, आयोजन। प्र०—हमरे इहाँ के काज-परोज में ऊ लोग हरदम सामिल होला [मेरे यहाँ के काज-परोज मे वे लोग हमेशा शामिल होते हैं]।

रोरा—परवल, एक प्रकार की हरी सब्जी। प्र०—आलू-परोरा के तरकारी बना लऽ [आलू परवल की तरकारी/सब्जी बना लो]। (मुहा०) बाप खाये साग पात पूत खाय परोरा।

वँरिया—मांगलिक अवसर पर द्वार पर आकर भाव-भंगिमा के साथ गाने-बजाने वाला पुरुष वर्ग। पुत्र-जन्म के अवसर पर ये लोग विशेष रूप से आते हैं। उनके सिर पर मुरैठी वाली पगड़ी तथा शरीर पर अचकन-पायजामा होता है। प्र०—दुअरे पर पवँरिया आइल बाड़ें, जा के उनके नेग-नेओछावर दे दऽ [द्वार पर पवँरिया आये हैं, जाकर उन्हें नेग-न्योछावर दे दो]।

वनी—प्रजा, घर के नाई, धोबी, नौकर-चाकर आदि। प्र०—(१) कौनों खुसी के काज-परोज में पवनी लोगन के कपड़ा-लत्ता जरूर देवे के चाहीं [किसी खुशी के आयोजन में घर में काम-काज सम्भालने वाले प्रजागण को कपड़े-लत्ते जरूर देने चाहिए]। (२) (मुहा०) सात रोटी घर के सत्ताइस रोटी पवनिन के [सात रोटियाँ घर वालों के लिए और सत्ताइस पवनियों क लिए]

पलानी—फूस का छप्पर, झोपडी का छाजन। प्र०—आज उनके पलानी छवाता, काल्हि चढ़ावे वालन के जरूरत परी [आज उनकी झोपड़ी का छाजन छाया जा रहा है, कल चढ़ाने वालों की जरूरत पड़ेगी]।

पसेव—पसीना, स्वेद। प्र०—गरमी के मारे सगरो देहिया पसेव मे भींज गइल बा [गर्मी के मारे पूरी देह पसीने से भीग गयी है]।

पसेवा—परिश्रम, मेहनत। प्र०—काम करत जा, तोहार पसेवा बिरथा ना जाई [काम करते जाओ, तुम्हारा परिश्रम व्यर्थ नहीं जायेगा]।

पहँसुल—सब्जी काटने का औजार, हँसिया, हँसुआ। प्र०—हमार पहँसुले से तरकारी काटे के बान हऽ छूरी चाकू से नाहीं [मेरी हँसिया से ही सब्जी काटने की आदत है, छुरी-चाकू से नहीं]।

पह—पौ, रात्रि के पश्चात् आकाश में भोर का दृश्य। प्र०—(गीत)—भइल बिहान पह फाटेला चिरइया एक बोलेले [भोर होते ही पौ फटने पर एक चिड़िया बोलती है]।

पहरुआ—पहरेदार, रखवाला। प्र०—किसुन जी के जनम होते जेलखाना के पहरुआ सब सूति गइलन [कृष्ण के जन्म होते ही जेलखाने के सब पहरेदार सो गये]।

पाछा—पीछा। प्र०—(१) हम जवन कुछ कहत हईं उनकर पाछा सूनत होई [मैं जो कुछ कह रहा हूँ, उनका पीछा सुन रहा होगा] (२) ऊ कौनो काम के आगा पाछा सोचले बिना ऊ काम

कर डारेले [वह किसी काम का आगा-पीछा (परिणाम) सोचे बिना उस काम को कर डालते हैं]।

पाट—रेशम, चिकना धागा। प्र०—(गीत) ए पाट चोलिया भींजेला पसेनवा भलहि घरे बँसहर [अरे रेशम की चोली पसीने से भींग रही है, भले घर में बँसहर है]।

पाठा—बकरी का नर बच्चा। (स्त्री पाठी)। प्र०—बुधई के बकरिया पाठा बिआइल बा कि पाठी? [बुधई की बकरी पाठा ब्याई है कि पाठी?]।

पाड़ा—(दे० पड़रू)।

पाड़ी—(दे० पड़िया)।

पातख—पाप। प्र०—हे भगवान हमार सब पातख माफ कके हमरे बचवा के नीक कर दऽ [हे भगवान! मेरे सब पाप माफ करके मेरे बच्चे को ठीक कर दो]।

पिअरी/पियरी—पीली साड़ी, पीलिया रोग। प्र०—(१) हे गंगा मइया तोहके पिअरी चढइबो [हे गंगा मइया तुम्हें पियरी चढ़ाऊँगी.]। (२) एकर देहिया तऽ पीयर देखाता, कहीं पियरी बीमारी ना हो गइल होखे [इसकी देह (शरीर) तो पीली दिख रही है, कहीं पीलिया बीमारी न हो गयी हो]।

पिचाढ़—घोड़े की पीठ पर जीन कसने वाली रस्सी।

पिड़िया—महिलाओं का एक त्योहार, जो भाई दूज के सवा माह बाद होता है। पिंडी, जो किसी खाद्य-पदार्थ को मुट्ठी मे बाँधकर बनाई जाती है। प्र०—औरवा पीस के ओमे नीमक मिर्चा मिला के पिड़िया बना के सुखा डारऽ गाहे बगाहे चटनी बनावे के काम आई [आँवला पीसकर उसमें नमक मिर्च मिलाकर पिंड़िया बनाकर सुखा लो समय असमय पर चटनी बनाने के काम आयेगा]।

पितिया चाचा—पिता के भाई, चाचा, ताऊ। प्र०—हमार पितिया लोग हमरे बाप से अलगे रहेला [मेरे चाचा लोग मेरे पिता से अलग रहते हैं]।

पियनी—तम्बाकू (चिलम वाला)। प्र०—हमरा पियनी-खइनी के नसा नइखे [मुझे पियनी (खाने वाला तम्बाकू-सुर्ती) का नशा नहीं है]।

पियराह—हल्का पीला। प्र०—तोहार मुँहवाँ पियराह काहे लागताऽ बेराम बाड़ऽ का? [तुम्हारा मुँह पीला क्यों लग रहा है, बीमार हो क्या?]।

पिसान—आटा। प्र०—आधा सेर ले पिसान सान के रोटी बना डारऽ [आधा सेर तक आटा गूँधकर रोटी बना डालो]।

पुछार—कोई विपत्ति पड़ने अथवा किसी की मृत्यु होने पर स्वजनों द्वारा सान्त्वना या शोक प्रदर्शन। प्र०—बिटिरक्षा के ससुर मरि गइले त पुछार करे न जाइए के परी [बेटी के श्वसुर मर गये हैं तो शोक प्रकट करने के लिए तो जाना ही पड़ेगा]।

पुटपुटा/पुटपुरी—कनपटी, कान और आँख के बीच का कोमल भाग। प्र०—तोहरे पुटपुटी में दरद बा त अमृताजन काहे नाही लगा लेत हउअऽ [तुम्हारी कनपटी मे दर्द है तो अमृताजन क्यो नहीं लगा ले रहे हो?]

पुरवासाखी—साक्ष्य, गवाही। प्र०—उनके पंचाइत में पुरवासाखी खातिर बोला-वल गइल रहनी [उनकी पंचायत मे गवाही देने के लिए बुलाया गया था]।

पुरहथ—अक्षत, आखत। प्र०—पंडित जी के आगे पुरहथ राखि दऽ त आपन अनुस्ठान सुरू करें [पंडित जी के आगे अक्षत रख दो तो अपना अनुष्ठान शुरू करें]।

पुलुँई/पुलुई—फुनगी, वृक्ष अथवा शाखा का अग्र (ऊपरी सिरे का) भाग। प्र०—पेड़वा के पुलुई पर ऊ चिरइया देखात बाटे [पेड़ की फुनगी पर वह चिड़िया दिखाई दे रही है]।

पुहुत—पुश्त, पीढ़ी। प्र०—हमनी के बलिया में कई पुहुत से रहत बानी जा [हमलोग बलिया मे कई पुश्त से रह रहे हैं]।

पेहान—(दे० ढपना)।

पैना—छड़ी, डंडा, सोंटा। प्र०—(गीत) तेली के घर नाटा होइबऽ छिलल घास नाहीं पइबऽ। आपु चढ़िहें दुइ पाथर लदिहें पैने-पैने पिटबऽ। भजनु बिनु बैल बिगाना होइबऽ। तेली के घर में नाटा (कोल्हू चलने वाला बैल) होओगे छिली हुई घास नहीं पाओगे, अपने चढ़ेंगे दो पत्थर लादेंगे (और) पैने-पैने (सोंटे-सोंटे) पिटे जाओगे]। भजन के बिना उपेक्षित बैल हो जाओगे]।

पोतना—चूल्हा-चौका या घर लीपने का कपड़ा। प्र०—पोतना से पहिले चूल्हवा पोत दऽ तब जमीन धोवऽ [पोतने से पहले चूल्हा पोत दो तब जमीन धोना]।

पोखरा छोटा तालाब प्र गउआ के लरिकवन दिन भर पोखरवा मे मछरी मारत बइठल रहेलें सन् [गांव के लड़के दिन भर पोखरा में मछली मारने बैठे रहते है]।

फ

फँसरी—फन्दा, फाँसी। प्र०—(१) उनका बिआह के फँसरी में पड़ही के परी [उन्हे विवाह के फन्दे में पड़ना ही पड़ेगा]। (२) उनकर जवान बिटिया फँसरी लगा के मरि गइल (उनकी जवान बेटी फाँसी लगाकर मर गयी]।

फंसिया—एक प्रकार की मछली।

फजीर—सबेरा, प्रातःकाल। प्र०—फजीर होत हम रउरे दुआरे हाजिर हो जाइब [सबेरा होते ही मैं आपके द्वार पर हाजिर हो जाऊँगा]।

फरगुद्दी—छोटी चिड़िया, गौरैया। प्र०—(१) फरगुद्दी घरइती चिरइया होली सन् [फरगुद्दी घरेलू चिड़िया होती हैं]। (२) (मुहा०) जब पेट में परे गुद्दी तब नाचे फरगुद्दी [जब पेट में गुद्दी पड़ती है तब फरगुद्दी नाचने लगती है]।

फरदावँ—विस्तृत तथा खुली जगह, फैला हुआ स्थान। प्र०—उनके घरवा के अगवाँ फरदावँ हउए [उनके घर के आगे खुली जगह है]।

फरुआ/फरुहा—कुदाल, फावड़ा। प्र०—दिन-दिन भर खेतवा में फरुआ चलावत-चलावत उनके हथवा में घट्टा परि गइल बा [दिन-दिन भर खेत मे फावड़ा चलाते चलाते उनके हाथ में घट्टा पड़ गया है]

फरुही—छोटी कुदाली। लाई, भाड़ में भुना चावल। प्र०—(भुने चावल के अर्थ मे) जा हो, थोरे फरुहो भुजवा के ले आवऽ त गुड में पागि के ढूढी बना देईं [जाओ जी, थोडी लाई भुना लाओ तो गुड़ मे पागकर लइया बना दूँ]।

फलाना—अमुक, फलाँ, नाम की जगह पर सम्बोधन। प्र०—ऊ कहले कि जा फलाने के बोला ले आवऽ [उन्होने कहा कि जाओ फलाँ को बुलाकर ले आओ]।

फाँड़—अंचल, अंचरा, आँचल। आँचल का वह भाग जिसके दोनों सिरे कमर में खोसकर झोलानुमा बनाकर महिलाएँ सामान रख लेती हैं। प्र०—(१) देखऽ न! कइसे जल्दी-जल्दी सगवा खोटि-खोटि के फँड़वा मे डारत जात बाडी सन् [देखो न, कैसे जल्दी-जल्दी साग खोंट-खोट कर फाँड़ मे डालती जा रही हैं]। (२) (कविता) खोंटत साग बटोरत फाँड़ चिढ़ावत नैनन बान चलावे।

फाँद—फन्दा। प्र०—बैला के गरदन में फाँद डारि दऽ त कहीं भाग नाहीं पाई [बैल की गरदन में फन्दा डाल दो तो कहीं भाग नहीं पायेगा]।

फुटहरी—बाटी, भउरी, आटा के भीतर मसालेदार सत्तू भरकर गोलाकार बनाकर उपले की आँच पर सेंककर बनाया गया भोजन। प्र०—आज फुट-हरी-चोखा बनी, सब लोग मीलजुल के खइहे [आज बाटी-भर्ता बनेगा, सब लोग मिल-जुलकर खायेंगे]

फुफुती—साड़ी का चुन्नट किया हुआ वह भाग जो कमर के आगे की ओर खोंसा जाता है। प्र०—(गीत) हाथ उठाइ चले फुफुती धनिया अरु पायल गोड़ बजावे [नारी अपनी साड़ी की चुन्नट को हाथ से ऊपर उठाकर चलती है और पैर मे पायल बजाती है]।

फूआ—बुआ/बूआ, पिता की बहन। प्र०—हमार फूआ हमके बहुत मानेली [मेरी बुआ मुझे बहुत चाहतीहैं]।

फूहा—फुहार, **फूही**--ओंसा। प्र०—खाली फूहा पड़ताऽ, जोर से पानी नइखे बरसत [केवल फुहार पड़ रहा है, जोर से पानी नहीं बरस रहा है]।

फेचकुर—मुँह से कष्ट या बेहोशी की दशा में निकला झाग। प्र०—अबहिन तोहके एतना मारब कि मुँह से फेंचकुर निकरि आई [अभी तुम्हें इतना मारूँगा कि मुँह से झाग निकल आयेगा]।

फेटा—कमर मे बाँधा गया धोती का भाग। प्र०—फेटवा कस के बन्हिहऽ नाहीं त धोतिया खुलि जाई [कसके फेटा बांधना नहीं तो धोती खुल जायेगी]। (मुहा०) फेटा बाँधना अर्थात कमर कसना। प्र०—एतना कहते फेटा बाँधि के मैदान में उतरि गइलन [इतना कहते ही कमर कसके मैदान में उतर पड़े]।

फेड़—पेड़, वृक्ष।

फेर—झंझट, चक्कर। प्र०—जब से हमके ई बात के खबर मिलल, हम बहुत फेर में परि गइल बानी कि का करीं, का ना करीं [जब से मुझे यह खबर मिली, मैं बहुत चक्कर मे पड गया हूँ कि क्या करूँ क्या न करूँ] (२)

हम ई फेर मे बिल्कुल परे ना चाहत बानी [मैं इस झंझट में बिल्कुल पड़ना नहीं चाहता]।

फोंफी—नली, फुकनी। प्र०—लकड़िया से खाली धूआँ निकरत बा, तनी फोंफी से फूक के जरा त दः [लकड़ी से केवल धुआँ निकल रहा है, जरा फुँकनी से फूक कर जला तो दो]।

फोकचा—फफोला, छाला। प्र०—चलत-चलत गोडवा के तलइया में फोकचा पड़ि गइल बा [चलते-चलते पैर के तलवे में फफोला पड गया है]।

ब

बड़ेरी—खपरैल अथवा फूस के मकान के ऊपर का उठा हुआ भाग]। प्र०—रूई डूबे सिल उतराय ओरी के पानी बड़ेरी न्ने जाय कहीं देखलऽ हो साधो.... (कबीर) [रूई डूबती है और सिल उतराता है तथा ओरी का पानी बड़ेरी तक जाता है, कहीं देखा है साधो (कि नाव में नदी डूबती जा रही है)]।

बँसखट/बँसखटिया—बाँस की बनी खाट या खटिया। प्र०—लकड़ी के पलंगिया मत निकरिहऽ, भारी बा। बँसखट निकाल के बिछा दऽ [लकड़ी की पलग मत निकालना, भारी है। बँसखटिया निकाल कर बिछा दो]।

बइठा/बरेठा—धोबी, कपडे धोने वाला। प्र०—(१) (कविता)—चलती को गाड़ी को कहे बने दूध को खोआ, ठठे को बइठा कहे देख कबीरा रोआ। (२) बरेठा कपड़ा धो के ले आइल बाड़े, रखि लऽ [बरेठा कपडा धोकर ले आये है, रख लो]।

बखरा—हिस्सा, भाग, बँटवारा। प्र०—(१) सबके अलगे-अलगे बखरा लगा दऽ [सबको अलग-अलग हिस्सा लगा दो]। (२) (मुहा०) पानी मे मछरी नौ-नौ गुरिया बखरा [पानी में मछली है और नौ-नौ कुटिया (टुकड़े) हिस्सा लगाने लगे]।

बखरी/बखार—मिट्टी अथवा फूस का बना वह घेरा जिसमें सुरक्षा के लिए अन्न की राशि रखी जाती है, अन्न-भण्डार। (दे० कोठार) प्र०—(१) किसान लोग फसल तइयार हो गइले पर साल भर के अनाज बखार में रख देलन [किसान लोग फसल तैयार होने पर साल भर के अनाज बखार में रख देते है]। (२) (गीत) हम त लूटबि ओही सुहवा कवनि देई भरि जइहें बखरी हमार [मैं तो उस सौभाग्यवती अमुक देवी को लूटूँगा (जिससे) मेरा भंडार भर जायेगा]।

बछिया—(लाक्षणिक अर्थ में)—प्यारी बेटी, लाडली बच्ची। प्र०—आरे हमरे बछिया के के डंटले हठए हो? [अरे, मेरी लाडली बेटी/बच्ची को किसने डाँटा है?]।

बजरा—ज्वार, जोन्हरी, एक प्रकार का सफेद गोल दाने का अन्न। प्र०—बजरा राजस्थान, मरवाड़ में गोहू-चाउर से जादा खाइल जाला [ज्वार राजस्थान मारवाड में गेहूँ-चावल से ज्यादा खाया जाता है]

री—बाजरा, सफेद-स्याह मिश्रित रंग का छोटे दाने का अन्न जिसका आटा गेहूँ के आटे से इतर समझा जाता है। भाईदूज के अवसर पर गोवर्द्धन पूजा के पश्चात् भाई को खिलाया जाने वाला लावा-लाई एवं मिठाई। प्र०—(१) हमके बजरी के ठेकुआ बहुत पसन्द हऽ [मुझे बजरी का ठेकुआ (पुआ) बहुत पसन्द है]। (२) हमार भइया बजरी खा के हमके साड़ी दिहलें [मेरे भाई ने भाई दूज की मिठाई खाकर मुझे साड़ी दी]।

ला—भोजन पकाने का बड़ा बर्तन बटुआ। प्र०—ढेर लोगन के खाना बनावे के हऽ, भात खातिर बड़का बटुला चढ़ावे के परी [ढेर लोगों का खाना बनाना है, भात के लिए बड़ा वाला बटुआ चढ़ाना पड़ेगा]।

ली—बटुला का छोटा रूप, बटलोई, बटुई। प्र०—दाल के बटुली भात के बटुला से छोट होखेले [दाल की बटलोई भात के बटुए से छोटी होती है]।

मार—लुटेरा, राहजनी करने वाला, ठग। प्र०—गाँव के रहिया में सझा होते बटमरवन लूक-छिप के बइठ जाने सन् [गाँव के रास्ते मे शाम होते ही ठग-लुटेरे छुपकर बैठ जाते हैं]।

नी—झाड़ू, कूचा। प्र०—बजारे जइहऽ त घर बहारे खातिर एगो बढ़नियो लेत अइहऽ [बाजार जाना तो घर बटोरने के लिए एक झाड़ू भी लेते आना]। उपेक्षा सूचक वाक्यांश 'मेरी बला से' के स्थान पर प्रयोग—मार बढ़नी रे, हमके एसे का लेबे देबे के बा [मेरी बला से, मुझे [illegible] क्या लेना देना है]।

बताम—हवा, वायु, आदि रोग, भूत प्रेत आदि का आक्रमण। प्र०—(भूत प्रेत के अर्थ में)—आज, हमके [illegible] बताम लागि गइल बा, कतना [illegible] आरवा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] फूँक करवा दो]। हवा के अर्थ में—(मुहा०) आन्हर कुकुर बताम भूँके [अन्धा कुत्ता हवा के स्वर पर भी भूकता है]।

बनउरी—ओला, उपल, भादों में बरसने वाले बर्फ के गोले अथवा गोलियाँ। प्र०—रात बरखा के साथ बनउरियो परल [रात में वर्षा के साथ ओले भी पड़े]।

बनरा—बन्ना, दूल्हा। विवाह में गाया जाने वाला गीत (बन्ना)। प्र०—(गीत) बनरा अइलें दुआरे हो बनरी के बिआहे [बन्ने द्वार पर बन्नी को ब्याहने आये हैं]।

बनरी—बन्नी, दुल्हन। कन्या के विवाह में गाया जाने वाला गान (बन्नी)। प्र०—(दे० बनरा)।

बनि—दैनिक मजदूरी। प्र०—मजूरवन के बनि दे दीहल जाँ [मजदूरों को आज की मजदूरी दे दीजिए]।

बनिज—व्यापार, वाणिज्य। प्र०—(१) हमार घर वाला पूरब में बनिज करे गइल हउएँ [मेरे घरवाले (पति) पूर्व में व्यापार करने गये हैं]। (२) (गीत)—तुहू त जालऽ पिया पुरुबी बनिजिया हो, हमरा के का हो ले अइब गवल मुनिया [हे पिया तुम

तो पूर्व में व्यापार के लिए जा रहे हो, हे गहल मुनिया मेरे लिए क्या लाओगे]।

बबुआ/बबुना—बच्चा, लड़के के लिए प्यार का सम्बोधन। प्र०—ए बबुआ तनी हमरे लगे आवऽ [ए बच्चा, जरा मेरे पास आओ]।

बबुई/बबुनी—बच्ची, लड़की के लिए प्यार का सम्बोधन।

बभनी—तीन चार इंच का साँप के आकार का कीड़ा। आँख की पलक का एक रोग जो फुन्सी के आकार का होता है। प्र०—तोहार अँखिया में बभनी निकरि आइल बा तबे एतना दुखात हउए [तुम्हारी आँख में बभनी निकल आई है तभी इतना दुख रही है]।

बयरबरा—नटखट, चंचल। प्र०—ई लरिकवा त बड़ा बयरबरा बा [यह लड़का तो बहुत चंचल है]।

बयार—हवा, वायु, समीर। प्र०—(गीत)—हमरे लेखे हवे अँगिया सीतल बयार [मेरे लिए यही आग शीतल हवा है]।

बर—बरगद, वटवृक्ष। प्र०—बर के पेड़ के छाँह बहुत घना होला [बरगद के पेड़ की छाया बहुत घनी होती है]।

बरध—बैल। प्र०—(१) अबकी साल के फसल पर ऊ एक जोड़ा बरध कीन लिहले हँउ [अबकी साल की फसल पर उन्होंने एक जोड़ा बैल खरीद लिया है]। (२) (गीत) जब मोरे मरिचा बिकइहें अवरु झिनवा चाउर हे राम जब मोरे बरध दुरुगिहें तबहिं घरे आइब [जब मेरी मिर्च और महीन चावल बिक जायगा और जब मेरे बैल अच्छी तरह पल जायेंगे तभी घर आऊँगा]।

बरम—ब्रह्म, सृष्टिकर्ता। प्र०—(१) (गीत) सरगे जे बाने बरम बाबा, उनहू के नेवतहु [स्वर्ग मे जो बरम बाबा हैं उनको भी न्योता दो]। (२) गउआँ के बड़के पिपरा के नीचे बरम बाबा के चउरा बा [गाँव के बड़े पीपल के नीचे बरम बाबा का चौरा हे]।

बरई—पान उपजाने वाला, तमोली, मंडप छाने वाला। प्र०—बिआह मे माड़ो छावे के काम बरई करेला [विवाह में मडप छाने का काम बरई करता है]। (२) (गीत)—केई जे लीपेला पोतेला, बेदी पटावेला, केई जे बरई बोलावेला, माड़ो छवावेला [कौन लीपता-पोतता है (और) बेदी बनाता है। कौन बरई बुलाता है (और) मडप छवाता है]।

बरहा—मोटा रस्सा। **बरही**—रस्सी, रसरी। एतना मोट बरहा से बैला के बन्हले रहनी, तबो तुरा के भाग गइल [इतने मोटे रस्से मे बैल को बाँधा था तब भी तुड़ाकर भाग गया]।

बरा—उरद अथवा चने का बडा। प्र०—(गीत) बरा-बरी बेसन बहु भाँतिन, परवर के तरकारी जी। जेवन बइठे कृस्न कन्हइया, देली सखी सब गारी जी। (२) छठी बरही मे बरा-बरी बनही के चाहीं [छठी-बरही में बड़ा और बरी (बेसन की पकौड़ी) बननी ही चाहिए]।

बरी—बेसन की पकौड़ी। प्र०—(दे० बरा)।

बरुआ—ब्रह्मचारी, जिसका जनेऊ संस्कार हो रहा हो। प्र०—(गीत) नदिया के पार एक पीपर बरुआ पुकारेला [नदी

के पार एक पीपल है (जहाँ से) बरुआ पुकार रहा है]।

बरेठा—धोबी। प्र०—बरेठा आ गइलन। कपड़ा गिन क धोए खाती दे दऽ [धोबी आ गये हैं। कपड़ा गिनकर धोने के लिए दे दो]। (दे० बइठा)।

बरोठा—बरामदा। प्र०—बहरा के बरोठा में सभ केहू बइठल बा, जा भेंट क लऽ [बाहर के बरामदे मे सब कोई बैठे हैं, जाओ मिल लो]।

बसुला/बसूला—लकड़ी व ईंट पत्थर तराशने व काटने का औजार जो बढ़ई अथवा राजगीर आदि प्रयोग में लाते हैं। प्र०—तोहरे लगे छेनी बसूला होखे त हमार हरवा बना दऽ [तुम्हारे पास छेनी-बसूला हो तो हमारा हल बना दो]।

बहँगी—काँवर, वह डंडा जिसके दोनों सिरे पर सामान का झोला आदि लटकाकर कन्धे पर रख लिया जाता है, तीर्थ यात्रा आदि के लिए दो सिरों का झोला जिसे कन्धे पर लटका लिया जाता है। प्र०—आपन आपन बहँगी लटका के सब लोग तीरथ करे निकरि गइल [अपनी अपनी बहँगी लटकाकर सब लोग तीर्थ करने निकल गये]।

बहुरा—भाद्रपद मास का एक व्रत जिसे स्त्रियाँ मनाती हैं। प्र०—(कहावत)—बहुरा से दिन लहुरा खिचड़ी से दिन जेठ [बहुरा से दिन छोटा होता है (और) खिचड़ी से दिन बड़ा]।

बहुरी—अधपकी बालियों को आग मे भूनकर निकाला गया अन्न। चबेना। प्र० बहुरी में नीमक मिर्चा अउर तनी मे तेल मिला के खाये में बड़ा मजा आवेला [बहुरी मे नमक, मिर्च और थोड़ा सा तेल मिलाकर खाने मे बड़ा मजा आता है]।

बाई—वात रोग, वायु विकार, बतास। प्र०—पेटवा में बाई होखले के कारन फूलि गइल बा [पेट मे वायु विकार होने के कारण फूल गया है]।

बाती—बाँस की फट्ठी। दीपक की बत्ती। प्र०—मसहरी लगावे खातिर चार गो बाँस के बाती ले आ दीहऽ [मसहरी लगाने के लिए चार बाँस की फट्ठी ला देना]। (२) इ संसार दिया अउर बाती के तरह हऽ, जबन भोर होखते जर के बुता जाये के हऽ [यह संसार दीपक और बाती की तरह है जिसे भोर होते जलकर बुझ जाना है]।

बाधा—पीड़ा, दर्द। प्र०—हम माथे के बाधा से परेसान बानी [मैं सिर के दर्द से परेशान हूँ]।

बान—आदत, स्वभाव। प्र०—(१) सब काम सोच-समझ के करे के बान डाल लऽ त जिनगी बोझिल ना होई [सब काम सोच समझ कर करने की आदत डाल लो तो जिन्दगी बोझिल नहीं होगी]। (२) (गीत) तोहार कवन बान राजा रोज रिसिआलऽ [हे राजा, यह तुम्हारा कैसा स्वभाव है कि रोज रिसिआते हो (क्रोध करते हो)]।

बिख—विष, माहुर, जहर। प्र०—एतना दुख सहले से त बिख-माहुर खा के मरि जाइल भल बा [इतना दुख सहने से तो विष-जहर खाकर मर जाना अच्छा है]

बिजे—भोज में जीमना आरम्भ करने का आग्रह। प्र०—(१) अब आपन लोग बिजे करीं जा [अब आपलोग जीमना आरम्भ करें]। (२) बीजे के बोलावा आई तबे न जाइब? [भोजन करने का बुलावा आयेगा तभी न जाऊँगा?]।

बिठई—फूस आदि लपेट कर बनाया गया आसन या सिर पर घड़ा आदि रखने का टेक। प्र०—मुड़िया पर बिठई रखि के गगरिया रखिहऽ [सिर पर बिठई रखकर घड़ा रखना]।

बिनिया—खेत में गिरे अनाज की बाली चुनने का कार्य। प्र०—जौ, गोहूँ के कटाई होखते महरारू लोग बिनिया करे खेत मे पहुँच जाली [जौ, गेहूँ की कटाई होते ही नारियाँ खेत मे बालियाँ बिनने (चुनने) पहुँच जाती हैं]।

बिरीन्ही—बर्रे, बरैया। काला चमकदार बरैयानुमा पतगा जिसका डंक पीडा-दायक होता है। प्र०—बिरिन्हिया के काटे से हथवा फूलि आइल बा आ दरदो बहुत होखऽता [बरैया के काटने से हाथ फूल आया है और दर्द भी बहुत हो रहा है]।

बीता—बित्ता, अँगूठे से कनिष्ठा उँगली तक फैलाकर लिया गया नाप या पैमाना, बालिश्त। प्र०—तोहके हम बीता भर जमीन त देइब ना, बीघा-दू-बीघा त दूर के बात हऽ [तुमको मैं एक बालिश्त भूमि तो दूँगा नहीं, बीघा दो बीघा तो दूर की बात है]।

बीफे—बीफे, वृहस्पतिवार। प्र०—बीफे ले हमार मगरो काम सपर जाई [वृह-स्पतिवार तक मेरा सभी काम निपट जायेगा]।

बुकवा—उबटन, भुना हुआ अथवा उबला हुआ सरसो पीसकर बनाया गया लेप जिसे शरीर पर लगाकर मालिश किया जाता है। प्र०—जाड़ा के दिन मे नहाये के पहिले बुकवा लगवले से सरीर चीकन आ मोलायम रहेला [जाडे के दिनो में बुकवा/उबटन लगाने से शरीर चिकना और मुलायम रहता है]।

बुलाक—नाक के बीच मे पहनने वाला आभूषण, बेसर।

बेकत/बेकति—व्यक्ति, आदमी। प्र०—(१) ऊ कवनो से डेराये वाला बेकत ना हउएँ [वह किसी से डरने वाल व्यक्ति नहीं हैं]। (२) उनके खानदान से एको बेकति ना अइलन [उनके खानदान से एक भी व्यक्ति नहीं आये]।

बेगौं—अपच, बदहजमी। प्र०—खाये पीये मे बदपरहेजी से बेगौं हो गइल [खाने-पीने की बदपरहेजी से बद-हजमी हो गयी]।

बेढनी—चने की दाल भरकर बनायी गई पूडी, दलभरी, दालपूडी। प्र०—कुछ तिउहारन में सादा पूरी के बदले बेढनी, रसिआव बनेला [कुछ त्योहारों में सादी पूडी की जगह दालपूडी, मीठा चावल बनता है]।

बेना—पंखा, हवा करने वाला ताड़ के पत्ते, बाँस की पतली पट्टियों अथवा सीकों से बना उपकरण। प्र०—तनी बेना डोलावऽ होऽ, बड़ा गरमी लागऽता [जरा पंखा झलो जी, बहुत गरमी लग रही है]।

पखा प्र गीत) सासु

जे बेनिया डोलावे ननद मुँह चूमेली हो...[सास बेनिया डोलाती है (और) ननद मुख चूमती है]।

बो—बहू, नारी के लिए उसके पति के नाम या रिश्ते के साथ लगाने वाला संकेत, यथा—रामधनी बो, भइयाबो, लाला बो आदि। प्र०—लाला बो हमरा के बहुत माने-जानेली [लाला बो मुझे बहुत मानती-जानती है]।

बोकला—छिलका, गूदे के ऊपर का भाग जिसे अलग करके गूदे का सेवन किया जाता है। प्र०—लोग केरा के बोकला निकारि के रहिया में फेंक दन्ला, जेसे राह चलत लोग बिछल जाला [लोग केले का छिलका निकाल कर राह/रास्ते में फेंक देते हैं जिससे राह चलते लोग फिसल जाते हैं]।

बोरसी—मिट्टी का बना डलियानुमा पात्र जिसमें तापने के लिए आग जलाई जाती है, गोरसी, सिगड़ी। प्र०—बोरसी भरके अगिया जरा लऽ, सब लोग बइठ के तापसु [बोरसी भरकर आग जला लो, सब लोग बैठकर तापें]।

बोहनी—पहली नकद बिक्री। प्र०—अबहिने बेचल सुरू कइले बानी, एही मारे उधार नइखी देत। कुछ बोहनी कर दऽ [अभी बेचना शुरू किया है इसीलिए उधार नहीं दे रहा हूँ कुछ बोहनी कर दो]।

बोहा—(दे० दहारि)।

भ

भगरइया—भृंगराज का पौधा, एक प्रकार की वनस्पति जो दवा तथा तेल बनाने के काम आता है। प्र०—भगरइया के तेल बहुत ठंडा होला [भगरैया (भृंगराज) का तेल बहुत ठंडा होता है]।

भंटा—भांटा, गोलाकार बैंगन। प्र०—हमके भउरी आ भंटा के चोखा बहुत नीक लागेला [मुझे बाटी और भाटा का भर्ता बहुत अच्छा लगता है]।

भउरा—गर्म राख, फुटहरी। प्र०—बोरसी के भउरा में एतना आँच होला कि ओमें आलू, कन्द डार दऽ त पाकि जाला [बोरसी के भउरा में भी इतनी आँच होती है कि उसमें आलू, कन्द डाल दो तो पक जाता है]।

भउरी—(दे० फुटहरी), बकुनी बाटी।

भकजोगनी/भगजोगनी—प्र०—भादो के अन्हियारी रात में एहर ओहर भकजोगनी के रोसनी बड़ा नीक लागेले [भादो की अन्धेरी रात में जुगनू की रोशनी बहुत अच्छी लगती है]।

भखवटी—मनौती। प्र०—देवी देवता से भखवटी क के कौनो तरह इनके जान बचवली हईं [देवी देवता से मनौती करके किसी तरह इनकी जान बचाई है]।

भगई—(दे० कछनी)। प्र०—एतना बड़हन लरिका उघार घूमऽता, एगो भगई त पहिरा दऽ [इतना बड़ा लड़का नंगा घूम रहा है, एक कछनी तो पहना दो]।

भटकोइया—मकोय, रसभरी। प्र०—भटकोइया के खटमिट्ठा सवाद बहुत बढ़िया लागेला [भटकोइया का खट्टा मीठा स्वाद बहुत बढ़िया लगता है]

भथुआ—बरिया कोंहड़ा, सफेद कुम्हड़ा, पेठा। प्र०—भदउआ में भथुआ के खमीर क के खाइल जरूरी होला [भादों (भादों) में सफेद कुम्हड़ा खमीर करके खाना जरूरी होता है]।

भदई—भादो मास में तैयार होने वाला चावल। प्र०—भदई चाउर अगहनी चाउर से मोट होला [भदई चावल अगहनी चावल से मोटा होता है]।

भदवारि वर्षा ऋतु, बरसात। प्र०—भदवारि में चारो ओर पानीए पानी देखाला [वर्षा ऋतु में चारों ओर पानी ही पानी दिखाई देता है]। (२) भदवारि आ गइल, घर ना छवा सकलो [बरसात आ गयी, घर नहीं छवा सका]।

भरुका—कुल्हड़, मिट्टी का गहरा प्याला। प्र०—एगो भरुका में रसदार तरकारी भरि के दे दीहऽ [एक कुल्हड़ में रसेदार सब्जी भरकर दे देना]।

भरुकी—छोटा कुल्हड़।

भवहि—छोटे भाई की पत्नी। प्र०—गाँव में भसुर भवहि के ना छूएले [गाँव में जेठ भयाहु को नहीं छूते]।

भसुर—जेठ, पति का बड़ा भाई। प्र०—(१) भसुर-भसुर के सामने तनी घूँघुट निकाल लिहल करऽ [भसुर जेठ के सामने थोड़ा घूँघट निकाल लिया करो]। (२) (गीत) भसुर जी त आवत बाने कानी आँख चमकावत बाने भवही निरेखत बाने [भसुर जी आ रहे हैं, कानी आँख चमका रहे हैं, भयाहु (छोटे भाई की पत्नी) को देख रहे हैं]

भिनसार/भिनसार भोर, सबेरा प्रात काल। प्र०—(गीत) पइयाँ जगावेली बेटी हो कवन देई उठऽ बाबा भइले भिनुसार [प्रवेश करके अमुक नाम बेटी जगाती हैं कि ए बाबा उठो, सबेरा हो गया]।

भुरकुस—चूर-चूर हुई वस्तु, चकनाचूर। प्र०—ई माटी के खेलवना त बचवा खन भर में तूर-तार के भुरकुस क देई [यह मिट्टी का खिलौना तो बच्चा क्षण भर मे तोड़-ताडकर चूर-चूर करके भुरकुस कर देगा]।

भुसाहुल—भूसा रखने का कमरा, भूसाघर। प्र०—घर में जगह ना रहे से ओके भुसाहुल में सूते के परल [घर मे जगह न होने से उसे भूसाघर मे सोना पड़ा]।

भूजा—भुना हुआ अन्न, चबैना। प्र०—काल्हि कुछ बनावे के ना मन करल त भूजा-गुड़ खा के रहि गइनी [कल कुछ बनाने का मन न हुआ तो चबैना और गुड़ खाकर रह गया]।

भेंटी—फल अथवा सब्जी का वह भाग जिसमें डंडी लगी रहती है या जो डाल से जुडा रहता है। प्र०—भिंडी के भेंटी निकाल के अलगे कर दीहऽ [भिंडी के डंडी का भाग निकालकर अलग कर देना]।

भेव—भेद, अन्तर। प्र०—हम बेटा-बेटी मे कवनो भेव ना मानीले [मैं बेटा-बेटी में कोई भेद नहीं मानती]।

भैने—भांजा, बहन का लड़का। प्र०—आज काल्ह ऊ अपने भैंने के घर में रहत बाने वह अपने भाजे के घर में रह रहे हैं]

म

मइला—मल, पाखाना। प्र०—अपने घर के मइला नरिया मे बहा दीहल अच्छा ना होला [अपने घर का मल नालों मे बहा देना अच्छा नही होता]।

मउअति—मौत, मृत्यु। प्र०—एतना कष्ट सहऽताने, भगवान उनके मउअति काहे नाही दे देतन [इतना कष्ट सह रहे हैं, भगवान उन्हे मौत क्यो नहीं दे देते]।

मउगा/मउग्गा/मउगड़ा—स्त्रियों जैसा आचरण करने वाला पुरुष, जनखा मेहरा। प्र०—का मउग बनके मेहरारुअन के बीच में घूमल बाड़ऽ [क्या मेहरा बनकर औरतों के बीच में घुमे हो]।

मउगी—स्त्री। प्र०—आरे, ऊ मउगी के हम अच्छी तरह जानऽतानी [अरे, उस स्त्री को मैं अच्छी तरह जानता हूँ]।

मकुनी—(दे० फुटहरी, भउरी) प्र०—हमार बाबूजी हास-परिहास मे मकुनी के 'मकुन्दचन्द' कहल करे [मेरे पिताजी हास-परिहास में मकुनी को 'मुकुन्द-चन्द' कहा करते थे]।

मडुआ—एक प्रकार का अन्न जो आकार और रंग में राई के दाने के समान होता है और उसकी रोटी ग्रामीण जन खाते हैं।

मतारी—महतारी, माता, जननी। प्र०—मतारी-बाप के प्यार सबसे बढ़के होला [माता-पिता का प्यार सबसे बढ़कर होता है]

मथहर का जो भाग सिर पर होता है उस पर सिर की रगड़ से लगी मैल या तेल का धब्बा। प्र०—एतना दिन से ई मड़िया पहिरत-पहिरत एमे मथहर लागि गइल बा, अब एके धोआ लऽ [इतने दिन से यह साड़ी पहनते-पहनते उसमें मथहर (सिर के तेल आदि का धब्बा) लग गया है, अब इसको धुला लो]।

मनई—मनुष्य, पुरुष। पति। प्र०—(१) अइसन मनई दीया लेके खोजबऽ तबो ना मिली [ऐसा आदमी दीपक लेकर ढूंढोगे तब भी नही मिलेगा]। (२) इहे तोहार मनई हउएँ का? [यही तुम्हारे पति है क्या?]।

मनिहार—चूड़ी बेचने वाला। मनिहारिन (स्त्री०)।

ममहर—मामा का घर। प्र०—आजकल ऊ अपने ममहरे गइल बाने [आजकल वह अपने मामा के घर गये है]।

मयभा/मैभा—सौतेली माँ। प्र०—ओकर माई मरि गइल त बाप मैभा ले आके बइठा दिहलन। ऊ ओके बहुते सतावले [उसकी माँ मर गई तो बाप ने सौतेली माँ लाकर बैठा दिया। वह उसे बहुत सताती है]।

मरिची—काली मिर्च। प्र०—(गीत) जनु हम जनती कि धीया कोखि रे होइहे, पियती मै मरिची झरार.. [यदि मैं जानती कि बेटी कोख में होगी तो कड़वी मिर्च पी लेती....]।

मलहोरी—माली। प्र०—(गीत) आरे-आरे मलहोरिया तू मउरी ले आव। तोहरे मउरिये मलहोरिया होइहें बिआह [अरे मलहोरी तुम मौरी ले आओ

नुम्भों की मौतें से विवाह होगा]।

मस—मच्छड़/मच्छर। प्र०—भादो कुआर के महीना में बहुत मस पैदा हो जाले सन् [भादो क्वार के महीने में बहुत मच्छर पैदा हो जाते हैं]।

महिया—गुड़ बनाने की क्रिया में गन्ने का रस पकाते समय ऊपर से निकाला गया गाढ़ा फेन जो अलग करके खाने के काम आता है। प्र०—जाड़ा के दिन में रोटी पर महिया लगा के खाये में बहुत मजा आवेला [जाड़े के दिनों में रोटी पर महिया लगाकर खाने में बहुत मजा आता है]।

महक—गंध, सुगन्ध। प्र०—हमके गुलाब के महक बहुते बढ़िया लागेला। [मुझे गुलाब की महक बहुत ही अच्छी लगती है]।

महतो—आदर सूचक सम्बोधन, एक विशेष जाति। प्र०—ए महता, रउरा हमरे घरे कबो पधारीं [हे महतो, आप मेरे घर कभी पधारिये]।

महतारी—(दे० मतारी)।

महुअर/महुअरि—महुए की रोटी या पूड़ी।

माखी—मक्खी। प्र०—देखऽ, दुधवा में माखी ना परि जाय [देखो, दूध में मक्खी न पड़ जाय]।

माछी—(दे० माखी)। प्र०—(१) बरसात में माछी बहुते पइदा हो जाली सन् [बरसात में मक्खियाँ बहुत पैदा हो जाती हैं। (२) देखऽ, जीयत माछी त केहू ना घोंट सकेला [देखो, जीती मक्खी तो कोई नहीं निगल सकता]।

माड़ो—मण्डप जो वैवाहिक अनुष्ठान के लिए आगन में फूस के छाजन से बनाया जाता है, मड़वा। प्र०—(गीत) आलरि बसवा कटाइले माड़ो छवाइले ताहि चढ़ि भइया निरेखेले, बहिनिया नाहीं आवेली [आला बाँस कटवाकर मंडप छवाया है उसपर चढ़कर भैया देखते हैं कि बहन नहीं आ रही है]।

मानर—ढोल, नगाड़ा। प्र०—ए केकरे दुआरे मानर बाजेला, बाजत सोहावन [अरे, किसके द्वार पर नगाड़ा बज रहा है नगाडे का बाजा सुहावना लग रहा है]।

मानर पूजा—विवाह संस्कार के पूर्व ढोल या नगाड़े की पूजा का रस्म।

मार्हा—गोल दाने का भुना हुआ एक अन्न जो दही आदि में मिलाकर खाया जाता है। प्र०—बिआह में अइले परजा लोगन के भर-भर पेट, मार्हा-चिउरा खिअइहऽ, एमे कवनो कोताई जनि करिहऽ [विवाह में आये प्रजागण को भर-भर पेट मार्हा-चिउड़ा खिलाना, इसमें कोई कमी मत करना]।

माहुर—विष, जहर। प्र०—ई दरद सहले से त माहुर खा के मरि गइल भल हऽ [इस दर्द को सहने से तो जहर खाकर मर जाना अच्छा है]।

मिनती—विनती, मिन्नत, प्रार्थना। प्र०—हे भगवान, हमार मिनती सुन के हमरे बचवा पर दया कर दीं [हे भगवान, मेरी विनती सुनकर मेरे बच्चे पर दया कर दीजिए]।

मिरचाई—हरी अथवा लाल मिर्च जो आकार में बहुत छोटी होती है पर उसमे तिक्तता अधिक होती है। प्र०—मरिचा से मिरचाई में तिताई जादा होले [मिर्चे से मिरचाई में तिक्तता अधिक होती है]

मिरची—(दे० मिरचाई)।

मुदना—(दे० ढँपना)। प्र०—देखऽ, ई कटोरवा के कवनो मुंदना लेके ढांपि दऽ [देखो, इस कटोरे को कोई ढक्कन लेकर ढक दो]।

मुन्हार—बहुत सबेरा, भोर। प्र०—मुन्हार भइले चलि दीहल जाई त साझ बेरा ले पहुच जाइल जाई [भोर में चल दिया जायेगा तो शाम तक पहुँच जायेगे]।

मुरुई—मूली, मूरी। प्र०—(१) नेनुआ-मुरुई के तरकारी बढ़िया लागेले [नेनुआ-मूली की तरकारी सब्जी अच्छी लगती है। (२) लडाई में गाजर-मुरुई के तरे आदमी काटल गइल रहले [लडाई में गाजर-मूली की तरह आदमी काटे गये थे]।

मुरेठा—कपड़े को लम्बाई से मोड-मोडकर बनाई गई पगड़ी, साफा। प्र०—राजस्थानी लोगन के मूड़ी पर मुरेठा जरूर रहेला [राजस्थानियों के सिर पर पगड़ी जरूर रहती है]।

मुसहर—पूर्वी भारत (बिहार) की एक जाति विशेष।

मूड़ी—सिर, कपार, माथा। प्र०—तनी ई बोझवा उठवा के हमरे मुड़िया पर चढ़वा दऽ [तनिक यह बोझा उठवाकर मेरे सिरपर चढवा दो]।

मूस—चूहा। प्र०—खेत में मूस पैदा हो के फसल के नोकसान पहुँचावऽताने सन् [खेत में चूहे पैदा होकर फसल को नुकसान पहुँचा रहे हैं]।

मूसर मूसल ओखल में खाद्यान्न कूटने का मोट डंडानुमा अस्त्र प्र०—। मुहा०: ओखरी में सिर बा त मूसर के कउन गिनती [ओखल में सिर है तो मूसल की क्या गिनती]।

मेहरारू—स्त्री पत्नी। प्र०—(१) उनके घर के मेहरारू लोग अपना काम काज ना करली [उनके घर की स्त्रियाँ कोई काम काज नहीं करती हैं]। (२) आ ई रामलोटन के मेहरारू ह ना! [और, यह रामलोटन की पत्नी है ना]।

मैथा—(दे० मयभा)।

मोजर—मंजरी आम की बौर, आम्र मंजरी। प्र०—बसन्त अवते आमन में मोजर लागि जाला [बसन्त आते ही आम में बौर लग जाता है]।

मोटरी—गठरी, पोटली, पुटकी। प्र०—तु अब आपन गठरी मोटरी ले के इहा से चलत न जा [तुम अपनी गठरी पोटली, गट्ठर मोटरी लेकर यहाँ से चलते तो जाओ]।

र

रखौनी—राखी, रक्षाबन्धन रक्षाबन्धन का त्योहार। प्र०—(१) पूरब में बाभन लोग रखौनी बान्हेला अउर जजमान से दच्छिना पावेला [पूरब में ब्राह्मण लोग रक्षाबन्धन बाँधते हैं और यजमान से दक्षिणा पाते हैं]। (२) अबकी रखौनी पर भइया रखौनी बन्हवावे इहवें अइहें [अबकी राखी के अवसर पर भैया राखी बधवाने यहाँ आयेगे]।

रसरी—रस्सी, डोर, डोरी। प्र०—(१) रसरी ले अइबऽ तबे त इनरवा से पनिया खींचब [रस्सी/डोरी लाओगे तभी तो कुएँ से पानी खींचूँगा] २ करत

करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते सिल पर परत
निसान।

रसिआउ/रसिआव—गुड़, शक्कर या गन्ने के रस में पकाया गया मीठा चावल, रसाखीर। प्र०—कौनो शुभ काम में रसिआव बनावल जरूरी होला [किसी शुभ कार्य में रसिआव बनाना जरूरी होता है]।

रहन—स्वभाव, चाल चलन। प्र०—उनके रहन ठीक ना हऽ, सबसे झगड़ा करत रहेलें [उनका स्वभाव ठीक नहीं है सबसे झगड़ा करते रहते हैं]।

रहर—अरहर, एक प्रकार का दलहन, [illegible]।

रहिला—चना। प्र०—मैदा के रोटी से त रहिला के रोटी भल हऽ जो मन लगा के परसल जाये [मैदे की रोटी से तो चने की रोटी अच्छी है जो मन लगाकर परोसी गयी हो (रहिमन रहिला की भली जो परसे मन लाय, परसत मन मैलो करे सो मैदा जरि जाय)]।

रिखि—ऋषि। प्र०—हमहूँ तोहरे तरे साधारन आदमिये हईं, कवनो रिखि-मुनि ना हईं [मैं भी तुम्हारी तरह साधारण आदमी ही हूँ, कोई ऋषि मुनि नहीं हूँ]।

ल

लँहेड़ा—आवारा, निकम्मा। प्र०—(गीत) कइले बखेड़ा बा, लमहर लँहेड़ा बा [बखेड़ा कर दिया है, बहुत आवारा है]।

लइकनी—लड़की, छोटी आयु की बच्ची। प्र०—(१) उनके एगो लड़का आ दूगो लड़कनी बाड़ी सन् [उन्हे एक लड़का और दो लड़कियाँ हैं]। (२) अबहिन उनके बहुरिया छोट लइकनिये त बा, एतना समझ ओकरा नइखे [अभी उनकी बहू छोटी बच्ची ही तो है। इतनी समझ उसे नहीं हैं]।

लड़का—लड़का, छोटी आयु का बच्चा। प्र०—उनके लइकवा बड़ा होशियार बाऽ [उनका लड़का बहुत होसियार है]। (२) एतना बड़ होके लइके बनल रहबऽ? [इतने बड़े होकर छोटा बच्चा ही बने रहोगे?]।

लड़की—लड़की। (दे० लइकनी)

लउँड़ी—लौंडी, दासी, नौकरानी। प्र०—हम कोनो नहार/तोहार लउँडी ना हईं जे दिन-रात तहरे इसारा पर नाचत रहीं [मैं कोई तुम्हारी दासी नहीं हूँ जो दिन रात तुम्हारे इशारे पर नाचती रहूँ]।

लउर/लउरी—लाठी, डंडा, लकुट। प्र०—रात-बिरात कतहूँ जात भै हाथ मे लउर जरूर रहे के चाहीं [रात-बिरात कही जाते समय हाथ मे लाठी जरूर रहनी चाहिए]।

लकठा—बाँस की लग्गी। गुड़ अथवा चीनी के पाग से मैदे अथवा बेसन की बनी उंगली के आकार की मिठाई। प्र०—(१) छनिया गीरत बिया, ओ में बाँस के लकठा लगा द त थमि जाई [झोपड़ी गिर रही है, उसमे बाँस की लग्गी लगा दो तो थम जायेगी]। (२) बजारे जइहऽ त हमरा खातिर लकठा आ खुरमा जरूर लेत अइहऽ [बाजार जाना तो मेरे लिए लकठा और

जरूर लेते आना]।

लम्मर—नम्बर, संख्या)। प्र०—ताहरे गड़िया के लम्मर का ह? ओही, मे त पहिचानल जाई [तुम्हारी गाड़ी का नम्बर क्या है? उसी से तो पहचानी जायेगी]।

लयनू—नैनू, नवनीत, मक्खन। प्र०—किसुन जी लयनू खा के मट्ठा ढरका देत रहने [कृष्ण जी नवनीत खाकर मट्ठा गिरा देते थे]।

लरकोरी—नवजात शिशु की माँ, छोटे बच्चे की माँ। प्र०—आरे, ऊ लरकोरी नु हऽ, आपन लरिका छोड़ के केतना देर रहि सकी [अरे, वह छोटे बच्चे की माँ है न, अपना नवजात शिशु छोड़कर कितनी देर रह सकेगी?]। (२) (मुहा०) लरिका के भाग से लरकोरियो जीयेले [बच्चे के भाग्य से बच्चे की माँ भी जीती है]। (दे० विशेषण भी)।

लवना—ईंधन, रसोई के लिए जलाने वाली लकड़ी। प्र०—(गीत) केई लइहे लकड़ी हो लवना केई पकइहें हो खानि [कौन लकड़ी लवना लायेगा और कौन खाना पकायेगा]।

लहठी—लाख की चूड़ी। प्र०—कतहूँ-कतहूँ सोहाग खातिर लहठी पहिरल जरूरी होखेला [कहीं-कहीं सोहाग के लिए लहठी पहनना जरूरी होता है]।

लहना—सूद पर दिया गया रुपया, ब्याज, धनराशि।

लहरा—लालच, लारा, प्रलोभन। प्र०—अब तू एके खेलवना के लहरा लगा दिहलऽ त ऊ लइ के छोड़ी। प्र०—अब तुमने इसको खिलौने की लालच दे दी तो वह लेकर ही छोड़ेगा]।

लाटा—भुना हुआ महुआ और भुनी हुई अलसी (तीसी) को ओखली में कूटकर बनाया गया खाद्य पदार्थ।

लाढ़—लाड, दुलार, प्यार। प्र०—हम तोहके एतना लाढ़-पियार से पलले बानी आ तू हमके ई बदला देत बाड़ऽ [मैंने तुमको इतने लाड-प्यार से पाला है और तुम मुझे यह बदला दे रहे हो]।

लाफ—अंकुर, अंखुआ। प्र०—देखऽ हो, जमुनिया के बिअवा में लाफ निकरि आइल [देखो जी, जामुन के बीज में अंकुर निकल आया]।

लाव-लस्कर—सम्बन्धी लोग। प्र०—उनके साथे उनके सगरो लाव-लस्कर आइल रहले [उनके साथ उनके सभी सम्बन्धीजन आये थे]।

लिट्टी—मोटी रोटी। उपली अथवा कोयले की आँच पर पकाई हुई आटे की लोई, बाटी। प्र०—(१) चोकर के लिट्टी लहसुन मरिचा के चटनी के साथे खा के अइनी हँऽ [चोकर की मोटी रोटी लहसुन-मिर्चे की चटनी के साथ खाकर आई हूँ]। (२) अहरा पर के लिट्टी आ दाल बहुत बढ़िया लागेला [उपली को आँच पर बनाई गयी बाटी और दाल बहुत अच्छी लगती है]।

लुआठ/लुआठी—सुलगती हुई लकड़ी, लुकाठी। प्र०—ऊ लुआठिया अबहिन ले सुलगत बा, ओके बुता त दऽ [वह लुकाठी अभी तक सुलग रही है, उसे बुझा तो दो]

लुगरी—फटी पुरानी साड़ी, लुज-पुज जनानी धोती। प्र०—(गीत) अरे भइया भउजी के लुगरो धोअइतऽ त सेहू ले ले अइतऽ [अरे भैया, भौजी की फटी-पुरानी साड़ी ही धुलाकर लेते आते]।

लुग्गा—साड़ी, जनानी धोती। प्र०—ऊ खाए के साथे हमरे लुग्गा-वस्तरो के जिम्मेदारी ले लिहले हउएँ [उन्होंने खान के साथ मेरे साड़ी-वस्त्र की भी जिम्मेदारी ले ली है]।

लुचुई—मैदे की बहुत पतली लचीली पूड़ी। प्र०—(गीत) मैदा हो चालि-चालि लुचुई पकवलों रे ना आरे ताही पर घिउआ के धरिया हो ना [मैदा चाल चालकर लुचुई पकाई उस पर घी की धार (गिराया)]।

लुतकारी—आग की चिनगारी, स्फुलिंग। प्र०—देखऽ, हवा से लुतकारी एहर-ओहर ना छिटके नाहीं त घर में आगिये लगि जाई [देखो, हवा से चिनगारी इधर उधर न छिटके नहीं तो घर मे आग ही लग जायेगी]।

लुतकी—(दे० लुतकारी)। प्र०—एको लुतकी कपड़ा पर परि जाई त तोहार सगरो देह भसम हो जाई [एक भी चिनगारी कपड़े पर पड़ जायेगी तो तुम्हारी सारी देह भस्म हो जायेगी]

लुत्ती—(दे० लुतकी)। प्र०—आगी के एक ठो लुत्ती सगरो गाँव भसम कर देले [आग की एक चिनगारी सम्पूर्ण गावं को भस्म कर देती है]।

लूकी—(दे० लुत्ती)। प्र०—एके लूकी से सूखल पतइया जरि जाई [एक ही चिनगी से सूखी पत्ती जल जायेगी] (मुहा०) लूकी लगाना—दो व्यक्तियों या दो दलों में चुगली करके झगडा लगवाना। प्र०—हमार बतिया सून के कहीं उनसे लूकी ना लगा दीहऽ [मेरी बात सुनकर कहीं उनसे चुगली न करा देना]।

लूती—(दे० लूकी)। प्र०—देखऽ, आगी के लूती उड़के कहीं तोहरे लुगवा पर ना आ जाय [देखो आग की चिनगारी उडकर कहीं तुम्हारी धोती/साड़ी पर न आ जाय]। (मुहा०) लूती लगाना—(दे० लुकी लगाना)। प्र०—तोहार त कामें हऽ सबके बात सून के लूती लगाके आपस में झगड़ा करवावल [तुम्हारा तो काम ही है, सबकी बातें सुनकर चुगली करके आपस में लडाई करवाना]।

लूर—समझ, जानकारी, व्यवहार का ढग। प्र०—तोहरा ससुरा जाये के हऽ, काम-काज के लूर-ढंग ना सिखबू त कइसे गुजारा होई? [तुम्हें ससुराल जाना है, काम-काज का तौर-तरीका नहीं सीखोगी तो कैसे गुजारा होगा?]।

लूह—लू, गर्म हवा। प्र०—अबकी गरमी में लूह से बहुत लोग मरि गइले [इस बार की गर्मी मे लू से बहुत लोग मर गये]।

लेंगा—झगडा, फूट, वैमनस्य। लेगा लगाना—झगड़ा करवाना, फूट डलवाना। प्र०—उनके त कामे हऽ लेगा लगावल [उनका तो काम ही है फूट डलवाना/झगड़ा लगाना]।

लेंढ़ा का छोटा फल बतिया कटहल प्र० के लेंढा के

तरकारी के आपन अलगे स्वाद होला [छोटे कटहल की तरकारी का अपना अलग ही स्वाद होता है]।

लेहना—पशुओं का चारा, कुट्टी। प्र०—भोरे उठि के सबसे पहिले गोरुअन के लेहना लगाइले [तड़के उठकर सबसे पहले मवेशियों को चारा देता हूँ]।

लैनू—(दे० लवनू)।

लोकनी—सेविका, नौकरानी, दासी। प्र०—उनके बहुरिया के साथे नइहर से एगो लोकनियो आइल बिया [उनकी बहू के साथ मायके से एक दासी भी आयी है]।

लोर—आँसू, अश्रु। प्र०—(गीत) अँखिया से बरसे लोर हो मोरे पिया बिना [मेरे प्रिय (पति) के बिना मेरी आँखों से आँसू बरस रहा है]।

स

संघतिया—साथी, संग चलने या रहने वाला, मित्र। प्र०—भोला आ बेचू दूनो जने पक्का संघतिया हउअन [भोला और बेचू दोनों जन पक्के मित्र हैं]।

संझा—सन्ध्या, साँझ। प्र०—संझा हो गइल अब घरे लउट चलऽ [शाम हो गई, अब घर लौट चलो]।

सगउती/सगौती—मांस (आहार का), गोश्त, कलिया। प्र०—(१) अन के छाड़े मन नहिं हटके, पारन करे सगौती (कबीर) [अन्न छोड़ देने से मन नहीं मानता तो पारन मांस से करते हैं]। (२) आज ऊ खुसी के मौका पर अपना उनों सगउती रिन्हवले हउएँ [आज उन्होंने खुशी के अवसर पर अपने यहाँ गोश्त/कलिया बनवाया है]।

सतपुतिया—तरोई के आकार की छोटे फलवाली सब्जी जो एक झुंड में लगभग सात की संख्या में फलती है।

सतुआ—सत्तू, जौ-चना आदि को भून पीसकर बनाया गया खाद्य पदार्थ। प्र०—(मुहा०) सतुआ के पेट सोहारी से कइसे भरी? [सत्तू का पेट सोहारी (पूड़ी) से कैसे भरेगा?]।

सतुआन—चैत्र मास की संक्रान्ति का वह पर्व जिसमें सत्तू खाने का विधान है, सतुआ संक्रान्ति। प्र०—(लोकोक्ति) कैथा के तीन नहान, खिचड़ी फगुआ आ सतुआन [कायस्थों का तीन नहान होता है—खिचड़ी, फगुआ और सतुआन]।

सतुई—भुने चने का सत्तू। प्र०—सतुई में अजवाइन, मंगरइल, लहसुन, मरिचा, नीमक, खटाई मिला के आटा में भरि के भउरी बनेला [सतुई में अजवायन, मगरैल, लहसुन, मिर्च, नमक, खटाई मिलाकर आटा में भरकर भौरी बनती है]। (दे० भउरी)।

सनई—सन का पौधा, पाट, पटुआ, जिसके रेशे को सुखाकर सुतली बनाई जाती है।

समउरिया—समान उम्र का, हमउम्र हमजोली, समवयस्। प्र०—सुशीला के बेटवा आ हमार बेटवा दूनू समउरिया हउए सन [सुशीला का बेटा और मेरा बेटा दोनों हमउम्र हैं]।
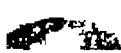
समतोला सतरा प्र पूरुब मे सन्तरा क

समनोला कहल जाला [पर्व में मन्ने को समनोला कहा जाता है]।

मरथ—सामर्थ्य, शक्ति, बूता। प्र०—(१) एतना दहेज देबे के हमार समरथ नइखे [इतना दहेज देने का मेरा सामर्थ्य नहीं है]। (२) बूढ़ मनई के एतना काम करे के समरथ कइसे होई [बूढ़े आदमी को इतना काम करने का बूता कैसे होगा]।

म्मत—संवत्, होलिका। प्र०—(१) (होलिकादहन के अवसर पर बोला जाने वाला नारा)—सम्मत मइया मरि गइलीं पुआ पका के धइ धरि गइलीं [संवत मैया मर गई और पूआ पकाकर रख गई]। (२) जवन रात सम्मत जरेला ओकरे दूसरे दिन होरी/फगुआ मनावल जाला। [जिस रात होलिका जलती है उसके दूसरे दिन होली मनाई जाती है]।

रऊ—साला, पत्नी का भाई। प्र०—इहे तोहार सरऊ हउवें का? [यही तुम्हारे साले हैं क्या?] एक प्रकार की गाली। प्र०—अब सरऊ हमसे भिड़िहें त उनके खैरियत नइखे [अब साला मुझसे भिड़ेगा तो उसकी खैरियत नही है]।

रवर/सरवरि—बराबरी, समता, तुलना। प्र०—हम गुन-ढंग मे तोहार सरवरि कइसे क सकीले [मैं गुन-ढंग में तुम्हारी बराबरी कैसे कर सकती हूँ]।

लेहरि—सहेली, सखी, साथिन। प्र०—मीलहु सखियन सलेहरि, मिलि जुलि चलहु हो... [हे सखी-सहेलियाँ इकट्ठी हो जाओ और मिल- जुलकर चलो]

सहेलरि—(दे० सलेहरि)।

साठी—एक प्रकार का धान। प्र०—(गीत) साठी के चउरा लहालही दूब रे चुमहि चलेली कवन राम धीय रे।

साध—कामना, इच्छा। प्र०—(गीत) एक ही साध मने उपजेला जहुँ हरि पुरइब हो..[एक ही साध मन मे उत्पन्न हुआ है यदि (आप) पूरा करेंगे]।

सान—इशारा, संकेत। प्र०—(१) तोहार सान मटकी हमरे समझ मे नइखे आवत [तुम्हारी इशाराबाजी मेरी समझ मे नहीं आती]। (२) (गीत) गिरगिट मेरो दुस्मन जिनि सान बुझायो, हाय अल्ला [गिरगिट मेरा दुश्मन है जिसने (गर्दन हिलाकर) ईशारा कर दिया, हाय अल्ला]।

सानमटकी—इशारेबाजी (दे० सान)।

साया—पेटीकोट, फ्रॉक। प्र०—(१) तोहरा खातिर चूनटदार/घेरदार साया सीं कि कलीदार? [तुम्हारे लिए चूनटदार/घेरदार पेटीकोट सिलूँ या कलीदार?]। (२) तोहार बिटिउआ एतहत हो गइल तबो ओके साया पहिरावेलू? अब त ओके लुग्गा/सारी पहिरे के चाहीं [तुम्हारी बिटिया इतनी बड़ी हो गई है तब भी उसको फ्रॉक पहनाती हो? अब तो उसे धोती/साड़ी पहिननी चाहिए]।

सार—(दे० सरऊ)। प्र०—(गीत) जेवन बइठे रामा सार बहनोइया रे ना, आरे सरऊ के दुढ़के अँसुइया रे ना [जीमने के लिए साले-बहनोई बैठे हैं साले की आँखों से आँसू बह रहा है]।

सावाँ—गोल महीन दाने वाला निम्नकोटि

का चावल। प्र०—कोदो-सावाँ भर पेट मिल जाय त एतने बहुत बा [कोदा सावाँ भरपेट मिल जाय तो इतना ही बहुत है]।

सिंउठा—चिमटा, चिउटा। प्र०—रसोई बनावे के जून सिउठा-सड़सी के हर बखत जरूरत परत रहेला [रसोई बनते समय चिमटा-संड़सी की हर समय जरूरत पड़ती रहती है]।

सिंघाड़ा—समोसा [नमकीन अथवा मीठा] फल।

सिंहा—एक प्रकार की मछली।

सिंही—(दे० सिंहा)। एक प्रकार का वाद्य यन्त्र, धुधुकी। प्र०—बिआह-सादी के मौका पर सिंही के सबद बहुत अच्छा लागेला [विवाह-शादी के अवसर पर सिंहीनाद बहुत अच्छा लगता है]।

सिकठा—ठिकरा, मिट्टी के बर्तन का छोटा टुकड़ा, खपड़े का टुकड़ा।

सिकहर—छींका, सीका। प्र०—सिकहर पर दूध चढ़ा दऽ, नीचे रहि जाई तऽ बिलार जुठार देई [छींके पर दूध चढा दो नीचे रह जायेगा तो बिल्ली जूठा कर देगी]। (मुहा०) सिकहर टूटना—कोई क्षति हो जाने पर किसी का लाभ हो जाना। प्र०—बिलारी के भाग से सिकहरे टूटि गइल [बिल्ली के भाग्य से छींका ही टूट गया]।

सिलुही—सीप, सीपी। प्र०—पहिले के जमाना में चिम्मच के जगह सितुही से बच्चा के दूध पिआवल जात रहे [पहले के समय में चम्मच की जगह सीपी से बच्चे को दूध पिलाया जाता था]।

सिन्होरा—सिन्दूरदानी सिन्दूर रखने का पात्र या डिबिया। प्र०—(गीत) परिछन करहि चलेली वर कामिनि, अंचर सिन्होरा हाथ रे।

सिधरी—एक प्रकार की छोटी चिपटी मछली।

सिलवट—सिल। प्र०—जा नूनवा सिल-वटिया पर पीस के ल आवऽ [जाओ, नमक सिल पर पीसकर ले आओ]।

सिवान—सीमान्त, सीमा। प्र० हमरे गउआँ के सिवान पर एगो बरगद के पेड़ बा [मेरे गाँव की सीमा पर एक बरगद का पेड़ है]।

सीत—ओस, ठंढक। प्र०—(१) कुआर के रात मे सीत परल शुरू हो जाला [क्वार के रात में ओस गिरना शुरू हो जाता है]। (२) बचवा के सीत बयार से बचावत रहिहऽ [बच्चे को ठंढ और हवा से बचाते रहना]।

सीधा—अनाज (चावल, दाल, आटा आदि) का वह अंश जो भोजन तैयार करने हेतु अथवा दान देने हेतु निकाला गया हो। प्र०—महराजिन के सीधा निकार के दे दऽ त रसोई बनावल सुरू क दे [महाराजिन को अनाज निकाल कर दे दो तो रसोई बनाना शुरू कर दें]। (२) नहा धो के बाभन के सीधा निकार द लोगन त नास्ता पानी कइल जा [नहा धोकर ब्राह्मण के लिए तुमलोग सीधा निकाल दो तो नाश्ता पानी किया जाय]।

सुंघनी—सुर्ती, तम्बाकू, खइनी। प्र०—गाँव मे सुंघनी खाए के रेवाज बहुत हऽ [गाँव में खइनी खाने का बहुत रिवाज है]

अना/सुआ—सुग्गा शुक, तोता। (गीत) प्र०—कइसे के पकरौ सुअनवा हो, सुआ उड़ि-उड़ि जाय [सुग्गे को कैसे पकड़ूँ, सुग्गा तो उड़ उड़ जा रहा है]।

तार—सुअवसर, अच्छा या उपयुक्त अवसर। प्र०—ई सुभ काम सुतार पा के जरूर क डरिहऽ [यह शुभ काम उपयुक्त अवसर पाकर अवश्य कर डालना]।

पुली—छोटा सूप, अन्न पछोरने/फटकने के सूप का छोटा रूप जिसे बच्चियाँ खेलने के लिए प्रयोग में लाती हैं। प्र०—(गीत) ऊँच घर देखलीं बाबा नीच घर देखलीं हो बँसहर देखलीं सूनाकाल। सुपुली खेलत धीया कतहूँ ना देखली हो, मोरे कुइयाँ धधकेले आगि। [हे बाबा! (बेटी के पिता) मैंने ऊपर का घर देख लिया, नीचे का घर देख लिया (और) सुनसान बँसहर देख लिया। सुपुली खेलती हुई धीया (बेटी) को कहीं नहीं देखा, मेरे हृदय में आग धधक रही है]।

रका चाउर—हरे धान का चावल, हरी डंठल से सुरके हुए धान का चावल। प्र०—पिड़िया के रात में सुरका चाउर रसिआव के कउरा में डार के खाइल जाला [पिड़िया की रात को हरे धान का चावल रसिआव के कौर में डालकर खाया जाता है]।

लफा—तम्बाकू।

टुकी—बहुत पतली डंडी। प्र०—हमार बाप हमके एतना दुलार से पललें हैं कि हमके एगो सेटुकियो से ना मरले हउएँ [मेरे बाप ने मुझे इतने दुलार से पाला है कि मुझे एक पतली डंडी से भी नहीं मारा है]।

सेवार—शैवाल, सेवाल। प्र०—बुढ़ापा म बार घास-सेवार जइसे हो जाला [बुढ़ापे मे बाल घास-शैवाल जैसे (रूखा) हो जाता है]।

सोखा—तन्त्र-मन्त्र जानने वाला व्यक्ति, तान्त्रिक, कर्मकाण्डी। प्र०—कौनो सोखा से झाड-फूँक करवा दऽ त बचवा के बोखार उतरि जाई [किसी तान्त्रिक से झाड़-फूंक करवा दो तो बच्चे का बुखार उतर जायेगा]।

सोर—जड।शोर, हल्ला।प्र०—(१) कौनो-कौनो पेड के सोर धरती मे गहिरे तक जाला [किसी -किसी पेड की जड धरती मे बहुत गहराई तक जाती है]। (२) तोहरे लोगन के सोर के आगे कुछ सुनाई परी भला [तुमलोगों के शोर के आगे कुछ सुनाई पडेगा भला]।

सोहनी—खेत से फसल के बीच में उगे हुए घास-फूस आदि को निकालना, निराई, निरावनी। प्र०—खेत में सोहनी करत समैं मेहरारू सभ बहुत नीमन-नीमन गीत गावत जाली सन् [खेत मे निराई करते समय नारियाँ बहुत अच्छे-अच्छे गीत गाती जाती हैं]।

सोहारी—पूड़ी। प्र०—(मुहा०) सतुआ के पेट सोहारी से कइसे भरी? [सत्तू का पेट पूडी से कैसे भरेगा]।

ह

हंकार/हँकारी—पुकार, डाँक प्र०—कौनो के साँप कटले बा एही से हँकार

परल बा [किसी को साँप ने काटा है इसीलिए पुकार हो रही है]।

हँसुआ—घास या साग-सब्जी काटने का औजार या अस्त्र, हँसिया। प्र०—पूरब मे हँसुआ से तरकारी काटे के चलन हउए [पूर्व में हँसिया से सब्जी काटने का रिवाज है]। (दे० पहँसुल)

हरिआई—हरियाली, हरीतिमा। प्र०—बरखा भइले से चारों ओर हरिआई हो गइल बा [वर्षा होने से चारो ओर हरियाली हो गयी है]।

हरेठा—अरहर का सूखा डंठल। प्र०—खरिहान भा गउसाला बहारे खातिर हरेठा के खरहरा ठीक परेला [खलिहान या गोशाला झाड़ने के लिए अरहर के डंठल का झाड़ू अच्छा पड़ता है]।

हलका—गले का एक आभूषण। क्षेत्र, इलाका। प्र०—(१) बिटिउआ के दहेज में अउर गहनवा के साथे हलका त देवही के परी [बिटिया के दहेज में और गहनों के साथ हलका तो देना ही पड़ेगा]। (२) हमार गउआँ एही पटवारी बाबू के हलका में परेला [मेरा गाँव इसी पटवारी बाबू के इलाके में पड़ता है]।

हाँक—(दे० हँकार)।

हाड़ा—बर्रे, हड्डा। प्र०—हाड़ा के कटले से सगरो मुहवाँ फूलि गइल बा [बर्रे के काटने से सारा मुँह फूल गया है]।

हाबुस—गेहूँ अथवा जौ की अधपक्की बालियों को आग में भूनकर खाने के लिए निकाले गये दाने। इन दानों में प्रायः नमक, मिर्च, लहसुन, खटाई, तेल आदि मिलाकर स्वादिष्ट बनाकर खाया जाता है। प्र०—जउआ गोटा गइल होखे त तूरिके ले आवऽ, हाबुस बना देईं, खा लऽ [जौ गदरा गया हो तो तोड़ कर ले आओ, हाबुस बना दे, खा लो]।

हिआव—हिम्मत, साहस। प्र०—उनकर गुस्सा देखि के उनके सामने परे के हमार हिआव नइखे होत [उनका गुस्सा देखकर उनके सामने पड़ने की मेरी हिम्मत नहीं हो रही है]।

हीक—इच्छा, चाहत। प्र०—तोहार दर्शन करे के बाद अब हमरा कौनों चीज के हीक नइखे [तुम्हारे दर्शन के करने के पश्चात् अब हमे किसी चीज की इच्छा नहीं है]।

हिरिस—स्पर्द्धा, ईर्ष्या। प्र०—तू हमसे एतना हिरिस काहे करत बाड़ऽ? का हमार बढ़ती तोहके सोहात नईखे? [तुम मुझसे इतनी ईर्ष्या क्यों करते हो? क्या मेरी सम्पन्नता तुमको अच्छी नहीं लग रही है?]।

हीत—हितैषी। सम्बन्धी, नातेदार। प्र०—(१) ई अवस्था में अब उनके कौनो हीत-मीत ना रहि गइल [इस अवस्था में अब उनका कोई हितैषी या मित्र नहीं रह गया है]। (२) ऊ हमार दूर के हीत हउअन [वह मेरे दूर के सम्बन्धी हैं]।

हुँकार—गर्जन, ललकार, चिल्लाहट। प्र०—जंगल में दूर से सेर के हुँकार सुनिके हम उल्टे पैर भागि अइनीं [जंगल में दूर से शेर का हुँकार सुनकर मैं उल्टे पैर भाग आया]।

हुँकारी—हाँ हूँ करने की क्रिया हामी

स्वीकृति। प्र०—तू त हमरे सगरो बतिया मे हुँकारी भरत जात हउअऽ कुछ अपने मनो के त कहऽ [तुम तो मेरी सभी बातों में हुँकारी भरते जा रहे हो, कुछ अपने मन की भी तो कहो]।

हुँड़ार—भेड़िया। प्र०—(१) हुँड़ार के डर से रतिया मे केहू बहरा ना निकरेला [हुँड़ार के डर से रात में कोई बाहर नहीं निकलता है]। (२) (गीत) बनवारी हो रहरी में बोलेला हुँड़ार]।

हुलास—उल्लास, उत्साह, उमंग। प्र०—जबसे हमरे पर ई बिपत परल, तीज-तिउहार के हुलास खतम हो गइल [जबसे मेरे ऊपर यह विपत्ति पड़ी, तीज-त्योहार का सब उत्साह खतम हो गया]।

हूब—कार्य करने की क्षमता शक्ति, कूवत। प्र०—अब हमरे में एतना हूब नइखे जे चौबीसो घण्टा बैल के जइसे काम में जूटल रहीं [अब मेरे में इतनी शक्ति नहीं है कि चौबीसों घण्टे बैल की तरह काम में जुटा रहूँ]।

हूल—उबकाई, वमन की क्रिया। प्र०—बसिया-तिरसिया खइले होई, एही से हूल आवताऽ [बासी तिरासी (खाना) खाया होगा इसी से उबकाई आ रही है]।

हेंगा—जोती हुई जमीन की मिट्टी को बराबर करने वाला पटरा या पाटा। प्र०—खेतवा में हर त चल गइल, अब हेंगा चल जा त खेत बोआई करे लायक हो जाई [खेत में हल तो चल गया अब हेंगा चल जाय तो खेत बोआई करने लायक हो जायेगा]।

हेलिन—मेहतरानी, जमादारिन।

होरिला—बच्चा, नवजात शिशु। प्र०—(गीत) आधी रात गइले पहर रात होरिला जनम लिहले हो, आरे बाजे लागे अनद बधाव उठन लागे सोहर हो]।

होरी—होली, फाग। प्र०—(गीत) होरी खेले रघुबीरा अवध में होरी खेलें रघुबीरा।

●●●

सर्वनाम

इ

इनकर—इनका। प्र०—इनकर कउनो नात-रिश्तेदार नइखन [इनका कोई सम्बन्धी नहीं है]।

ई

ई—यह। प्र०—सत के ई लच्छन राजनीतिक लोग मे बिरले पावल जाला [सत्य का यह लक्षण राजनीतिक लोगों मे बिरला ही पाया जाता है]।

उ

उ—वह। प्र०—आज उ हमरे घरे अइहे [आज वह मेरे घर आयेंगे]।

उनकर—उनका। प्र०—उनकर बाते अउर हऽ [उनकी बात ही और है]।

उहाँके—वह (आदर सूचक)। प्र०—आजु उहाँके हमरे कुटिया मे पधरले बानी [आज वह मेरी कुटिया मे पधारे हैं]। उनका (सम्बन्धकारक रूप)। प्र०—उहाँ के तौर-तरीका, पोशाक सब कुछ किसाने जइसन लागत रहे [उनका तौर-तरीका, पोशाक सब कुछ किसान जैसा ही लगता था]।

उहे—वही। प्र०—जे तोहरे साथे आइल रहलें, उहे ई बतिया बतवलें [जो तुम्हारे साथ आये थे, उन्होंने ही यह बात बताई थी]।

उहो—वह भी। प्र०—जवन तू कहतारऽ, उहे उहो कहत रहलन [जो तुम कह रहे हो वही वह भी कह रहे थे]

ऊ

ऊ-(उकारादि में दिए गए अधिकाश सर्वनाम ऊकारादि के अन्तर्गत आते हैं)]।

ऊ—वह। प्र०—आज ऊ हमरे घरे जरूर अइहे [आज वह हमारे घर जरूर आयेंगे]।

ऊहाँ के—(आदरार्थ)। प्र०—ऊहाँ के भला हम गरीब के इहाँ काहे आवे लगनी [वे भला हम गरीब के यहाँ क्यों आने लगे]।

ऊहाँ के—उनका। प्र०—ऊहाँ के कउनो अइसन काम ना बा जेकर तारीफ ना होखे [उनका कोई ऐसा काम नहीं है, जिसकी तारीफ न हो]।

ऊहे—वही। प्र०—जवन तूँ करबऽ, ऊहे हमहूँ करब [जो तुम करोगे, वही मैं भी करूँगा]।

ऊहो—वह भी। प्र०—जेतना लेई पूँजी रहे, ऊहो जुआ खेलि के गवाँ दिहलन [जितनी बची खुची पूँजी थी, उसे वह भी जुआ खेलकर गवाँ दिया]।

ए

एकर—इसका। प्र०—एकर कामे हऽ सबसे झगड़ा कइल [इसका काम ही है सबसे झगड़ा करना]।

एकरा—इसके। इसको, इसे। प्र० (१) एकरा खातिर हम केतना सासत सहऽतानी ई हमहीं जानऽतानी [इसके लिए मैं

कितना कष्ट सह रही हूँ, यह मैं ही जानती हूँ]। (२) एकरा ई नइखे बुझात कि ए दिनन हम केतना विपत मे बानी [इसको इसे यह नहीं समझ मे आ रहा है कि इन दिनों मे कितनी विपत्ति में हूँ ।

एकरे—इसके। प्र०—एकरे साथे रहले में हमार गुजारा नइखे [इसके साथ रहने मे मेरा गुजारा नही है।

एकरो—इसके भी। प्र०—एकरो खातिर कुछ सोचल् हऽ? [इसके लिए भी कुछ सोचा है?]।

एके—इसका। प्र०—एके कामे का बा? [इसका काम ही क्या है?]

एपर—इस पर। प्र०—एपर कउनो कपडा डार दऽ, नाही त गरदा पड़ि जाई [इस पर कोई कपड़ा डाल दो, नहीं तो गर्द पड जायेगी]

एमे—इसमें। प्र०—एमे दूध-चीनी के साथे मेवो डार दीहऽ [इसमें दूध-चीनी के साथ मेवा भी डाल देना]।

एसे—इससे। प्र०—एसे कहि दऽ कि हमसे जनि भीड़े [इससे कह दो कि मुझसे मत भिडे]।

ओ

ओकर—उसका। प्र०—सुसिलवा के का पूछत हउ, ओकर बाते दूसर हऽ [सुशीला का क्या पूछती हो, उसकी बात ही दूसरी है]।

ओकरा—उसके। प्र०—ओकरा खातिर हम दूसर कुरता ले देइब [उसके लिए मैं दूसरा कुरता ले दूंगी]।

ओकरे उसके प्र० ओकर साथे तूहूँऽ चलि जा [उसके साथ तुम भी चले जाओ]।

ओकरो—उसका भी। प्र०—जे ले आइल हऽ ओकरो हिस्सा त लागे के चाही [जो ले आया है, उसका हिस्सा भी तो लगना चाहिए]।

ओके—उसको। प्र०—जे हमरा के मानी, ओके हमहू मानब [जो मुझे मानेगा उसे मैं भी मानूंगा]।

ओपर—उस पर। प्र०—टँड़वा कमजोर बा, ओपर एतना बोझा मति लादऽ [टॉड कमजोर है, उसपर इतना बोझ मत लादो]।

ओमें—उसमे। प्र०—घइलिया छोट बिया ओमे एतना पानी ना अमाई [घइली (घड़ का छोटा रूप) छोटी है, उसमे इतना पानी नही समायेगा]।

ओसे—उससे। प्र०—ओसे कहि दऽ कि हमरे मुँह मति लागे [उससे कहि दो कि मेरे मुँह मत लगे]। (२) ओसे त फुलमतिये सुन्नर बा [उससे तो फुलमतिया ही सुन्दर है]।

क

कवन—कौन। प्र०—ई कवन बइठल हउए हो? [यह कौन बैठा है, जी?]

के—कौन। प्र०—आजु तोहरे घरे के आइल बा? [आज तुम्हारे घर कौन आया है?]

केकर—किसका। प्र०—ई केकर लरिका हउए? [यह किसका लडका है?]।

केकरा—किसके। प्र०—केकरा घरे लडाई झगड़ा ना होला? [किसके घर मे लडाई झगडा नहीं होता है?

केकरे—(दे० केकरा)। प्र० (गीत)—ए केकरे दुआरे बाजन बाजेला, बाजत सोहावन। [अरे किसके द्वार पर बाजन बज रहा है, बाजते हुए सुहावना लग रहा है]।

केकरो—किसी के भी। प्र०—केकरो खातिर ले जा, हमसे एसे कवनो मतलब नइखे [किसी के लिए भी ले जाओ, मुझसे इससे कोई मतलब नहीं है]।

केपर—किस पर। प्र०—ई आफत केपर ना आइल बा? [यह आफत किस पर नहीं आई है?]।

केमे—किसमें। प्र०—चउरा केमे रखले हऊ? [चावल किसमें रखा है?]।

केसे—किससे। प्र० (गीत)—अरे, मोर पीया गइले कचहरिया ए सखी केसे कहीं दिल के बतिया ए सखी [अरे, मेरे प्रियतम कचहरी चले गये, मैं (अपने) दिल की बात किससे कहूँ?]

ज

जवन/जौन—जो। प्र०—(१) तू जवन कहबु, हम उहे कहि देब [तुम जो कहोगी, मैं वही कह दूँगी] (२) जौन जनम लिहले बा, ऊ मरबो करी [जिसने जन्म लिया है वह मरेगा भी]।

जवना/जौना—जिसके (लिए)। प्र०—जौना खातिर एतना दुख उठवलीं ऊ हमके देखिओ ना सकेला [जिसके लिए इतना दुख उठाया, वह मुझे देख भी नहीं सकता]।

जवनाके—जिसको। प्र०—तू जवना के कहि देबु, उहे भागल चलि आई [तुम जिसको कह दोगी वही भागा चला आयेगा]।

जवना में/जौना में—जिसमें। प्र०—जवना/जौना मे तोहके सुख मीले, उहे काम करऽ, भाइ [जिसमें तुम्हें सुख मिले वही काम करो, भाई]।

जवना पर/जौना पर—जिस पर। प्र०—जवना पर तोहके विश्वास होखे ओही से पूछ लऽ [जिस पर तुम्हें विश्वास हो, उसी से पूछ लो]।

जवना से/जौना से—जिससे। प्र०—हम जौना से कहि देइब ऊहे ई काम करि देई [मैं जिससे कह दूँगा वही यह काम कर देगा]।

जे—जो। प्र०—जे जनम लिहले बा, ऊ मरबो करी [जिसने जन्म लिया है, वह मरेगा भी]।

जेके—जिसका। प्र०—जेके चीज हऽ ऊ लेबे करी [जिसकी चीज है, व लेगा ही]। जिसको। प्र०—जेके तू पुछबू ऊ तोहरो के पूछी [जिसको तुम पूछोगी, वह तुम्हें भी पूछेगा]।

जेपर—जिस पर। प्र०—जेपर बिपति परी ऊ रोई ना? जिस पर विपत्ति पड़ेगी, वह रोयेगा नहीं?]

जेमें/जेहमें—जिसमें। प्र०—जेमें अपने माई-बाप के खातिर प्रेम नाहीं हऽ, ऊ उनके सन्तान कहवावे के हक नइखे रखत [जिसमें अपने माता-पिता के प्रति प्रेम नहीं है, वह उनकी सन्तान कहलाने का हक नहीं रखता]।

जेसे—जिससे। प्र०—तू जेसे रिस्ता रखबऽ, ऊ तोहसे रिस्ता रखी [तुम जिससे रिस्ता रखोगे वह तुमसे रिस्ता रखेगा]

त

तहरा—तुम्हारा, तुम्हें। प्र०—(१) तहरा काम खातिर हम हरदम तइयार बइठल बानीं [तुम्हारे काम के लिए मैं हरदम तैयार बैठा हूँ] (२) तहरा कुछ होस बा कि ना [तुम्हे कुछ होश है या नहीं]।

तहरा के—तुम्हें, तुमको। प्र०—हम तहरा के एगो इनाम देबे के बानी [मैं तुम्हे एक इनाम देने को हूँ]।

तहरा खातिर—तुम्हारे लिए। प्र०—तहरा खातिर त हम सभे कुछ निछावर करे के तइयार हईं [तुम्हारे लिए तो मैं सब कुछ न्योछावर करने को तैयार हूँ]।

तहरा पर—तुम पर। प्र०—तहरा पर हमार पूरा भरोसा बा [तुम पर मुझे पूरा भरोसा है]।

तहरा में—तुम मे। प्र०—तहरा में हम कौनो ऐब ना देखत बानी। तुममें मैं कोई ऐब नहीं देख रही हूँ]।

तहरा से—तुम से। प्र०—हम तहरा से आपन बिपत का सुनाईं [मैं तुमसे अपनी विपत्ति क्या सुनाऊँ]। (२) तहरा से बढ़ियाँ काम चमेलिया करेले [तुमसे बढिया काम चमेलिया करती है]।

तूँ/तु—तुम। प्र०—(१) अरे ए बबुआ! तूँ कहवाँ जात हउअऽ? [अरे ए बाबू, तुम कहाँ जा रहे हो?]।

—तू। प्र०—ए फुलमतिया, ते कहवाँ जात हउए रे? [अरी फुलमतिया, तू कहाँ जा रही है, रे]।

—वह सो। प्र०—जे जइसन करी ते तइसन पाई [जो जैसा करेगा सो वैसा पायेगा]

तेके—उसका, तिसको। प्र०—जेके भगवान पेट दिहले बाड़न, तेके खाहू के दीहे [जिसको भगवान ने पेट दिया है उसे। तिसको खाने को भी देंगे]।

तेपर—उस पर, तिस पर। प्र०—जेपर तोहार मन होखे तेपर रखि दऽ [जिस पर तुम्हारा मन हो, उसपर/तिसपर रख दो]।

तेमें—उसमें, जिसमें। प्र०—जेमे तोहार सुख हऽ, तेमे हमरो सुख हऽ [जिसमें तुम्हारा सुख है उसमें/तिसमे मेरा भी सुख है]।

तेसे—तिससे, उससे। प्र०—तूँ जेसे कहबू तेसे हम जरूर बता देइब [तुम जिससे कहोगी, तिससे/उससे मैं जरूर बता दूँगी]।

तोहईं—तुम्हीं। प्र०—हम खाली तोहईं से ई बात कहत हईं [मैं केवल तुम्हीं से यह बात कह रही हूँ]

तोहरा—(दे० तहरा के विभिन्न रूप)

तोहार—तुम्हारा। प्र०—एमे तोहार कवनो दोस नइखे [इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है]।

र

रउआँ—आप ('तूँ' का आदर सूचक सम्बोधन) प्र० (गीत)—रउआँ हँस दीं त भोर हो जाई [आप हँस दीजिए तो भोर हो जायगा]।

रउरा—(दे० रउआँ)। प्र०—रउरा हमरे कुटिया में पधारे के किरपा करीं [आप मेरी कुटिया में पधारने की कृपा कीजिए]

रउरो—आप भी। प्र०—रउरो इहे कहब? [आप भी यही कहेंगे]।

रउरा के, रउरा पर, रउरा में, रउरा से—विभिन्न कारकों में प्रयोग।

ह

हई—(दे० ई)। हई का हउए, हो? [यह क्या है, जी?]।

हऊ—(दे० ऊ)। प्र०—हऊ का हउए? [वह क्या है?]।

हम—मैं। प्र०—हम अकेले जा के का करब? [मैं अकेला जाकर क्या करूँगा?]

हमके/हमरा पर/हमरा में/हमरा से—विभिन्न कारकों में 'हम' का रूप। प्र०—(१) हमके ई सभ मत सुनाव [मुझे यह सब मत सुनाओ]। (२) हमरा पर त बिपति के पहाड़ टूटि परल [मुझ पर तो विपत्ति का पहाड़ ही टूट पड़ा]। (३) हमरा में ई सभ कउनो ऐगुन नइखे [मुझमें यह सब कोई अवगुण नहीं है]। (४) ई बतिया तूँ हमरा से काहे ना बतवलू? [यह बात तुमने मुझसे क्यों नहीं बताई?]

हमनी—'हम' का बहुवचन रूप।

हमनी क/हमनी के—हम लोग। प्र०—(१) हमनीक/हमनी के चाहत बानी कि रउरा पाचन हमरे घरे जरूर पधारीं [हम लोग चाह रहे हैं कि आप लोग हमारे घर में जरूर पधारें]। (२) चार चोर चउदह हमनी के, चोरवा लखेदलस भगनी जा हमनी के बाह रे हमनी के [चार चोर (और) चौदह हम लोग चोर ने दौड़ाया तो हम लोग भागे, वाह रे हम लोग!]

हमनी पर—हम लोगों पर। प्र०—हमनी पर आफत अइले पर ऊ धउरल आ जालन [हम लोगों पर कोई आफत आने पर वह दौड़े हुए आ जाते हैं]।

हमनी में—हम लोगों में। प्र०—हमनी में बहुते मेल जोल बाटे [हम लोगों में बहुत ही मेल जोल है]।

हमनी से—हम लोगों से। प्र०—(१) हमनी से एतना भारी काम ना सपरी [हम लोगों से इतना भारी काम नहीं सम्पन्न हो पायेगा]। (२) एकरे खातिर हमनी में केहू कहबे ना कइल [इसके लिए हम लोगों में किसी ने कहा ही नहीं]।

हमरे—मेरे, हमारे। (१) हमरे बारे में तूँ का जानत हउ? [मेरे बारे में तुम क्या जानती हो?]। (२) (गीत)—हमरा धीया के जोगे बर खोजीं बाबा हो धीया मोर भइली सयान [हे बाबा मेरी बेटी के योग्य वर ढूंढो बेटी मेरी सयानी हो गयी है]।

हमहन—(दे० हमनी)। हमहन के हमहन पर/हमहन में/हमहन से—हमहन का विभिन्न कारकों में प्रयोग।

हमार—मेरा, हमारा। प्र०—ई सभ लफड़ा जफड़ा में हमार कउनो हाथ नइखे [इन सब लफड़ा जफड़ा में मेरा कोई हाथ नहीं है]।

हेमे—(दे० एमें)। प्र०—चाउर ले आ के हेमे डारि द [चावल ला कर इसमें डाल दो]

विशेषण

अ

अइचा १.—ऐंचा, खिंचा हुआ तिरछा। प्र०—चदरवा अइचा बा एही मारे खटिअवा पर सोझे बिछावत ना बनत बा [चादर तिरछी है इसीलिए खाट पर सीधे बिछाते नहीं बनता]।

अइचा २.—जिसकी एक आँख तिरछी या दूसरी ओर तनी हुई हो, काना। प्र०—उनके अँइचा ताना लरिका पैदा भइल बा [उनके काना बच्चा पैदा हुआ है]।

अकरा—पहली बार ब्यायी हुई (गाय या भैंस) अंकरा गाय आ दुसरा भइस के दूध जादा होला [पहली बार ब्यायी हुई गाय तथा दूसरी बार ब्यायी हुई भैंस का दूध ज्यादा होता है]। (कहा०)—गाइ अकरा भईस दुसरा।

अंचिको—किंचित मात्र, रंचमात्र, थोड़ा सा भी। प्र०—हमार एतना बड़ा दुख देख के उनके अचिको पीरा ना भइल [मेरा इतना बड़ा दुख देखकर उन्हें रंचमात्र भी पीड़ा नहीं हुई]।

अँजोर—प्रकाशयुक्त। प्र०—(१) अजोर जगह में रहले से दुख-बीमारी ना लागेला [प्रकाशयुक्त जगह में रहने से दुःख बीमारी नहीं लगती है]।

अँजोरिया—चाँदनी (रात)। प्र०—अजोरिया रात में उहाँ बड़ा सोहावना लागेला [चाँदनी रात में वहाँ बहुत सुहावना लगता है]।

अइसन—ऐसा इस प्रकार का। प्र०—अइसन बोली ना बोले के चाही जैसे दोसरे के दुख पहुँचे [ऐसी बोली नहीं बोलनी चाहिए जिससे दूसरे को दुख पहुँचे] (२) गीत—अइसन धीया बाबा मोर बढ़ि गइली हो जइसे बाढे दुइजी के चाँद [हे बाबा, मेरी बेटी ऐसी बढ़ गयी है जैसे दूज का चाँद बढता है]।

अकसर/अकसरुआ—अकेला। प्र०—हम अकसरुआ आदमी कहाँ जाई, कहाँ ना जाई, समझ मे नइखे आवत [अकेला आदमी कहाँ जाऊँ, कहाँ न जाऊँ, समझ मे नही आता]।

अगवढ़—अग्रिम, प्रयोजन के पहले। प्र०—खेत कीने खातिर कुछ अगवढ रुपइया दे दिहले हईं [खेत खरीदने के लिए कुछ अग्रिम रुपये दे दिये है]।

अजगूत—अद्‌भुत, विचित्र। प्र० (गीत)—हे ललना सपन देखीले अजगूत, सपना बड़ा सुन्दर हो। (२) अइसन अजगूत आदमी त हम कतहूँ ना देखले हईं [ऐसा विचित्र आदमी तो मैंने कही नहीं देखा है]।

अझुराइल—उलझा हुआ, गुथा हुआ। प्र०—एतना अझुराइल डोरा त हमसे ना सुरझी [इतना उलझा हुआ धागा तो मुझसे नही सुलझेगा]।

अनकस—अच्छा न लगने वाला, अस्वाभाविक। प्र०—ई बतिया त हमके अनकस लागत बा [यह बात तो मुझे अच्छी नहीं लगता]।

अनध/अनधा—बहुत अधिक, इफरात प्र०—आरे उनके का पूछे के बा, उनके घरे त आजकाल्ह अनधा धन आवत बाटे [अरे, उनका क्या पूछना है, उनके घर तो आजकल इफरात धन आ रहा है]

अनराज—नाराज, रुष्ट। प्र०—का तूँ हमसे अनराज बाड़ऽ ! [क्या तुम मुझसे नाराज हो?]।

अबर—अबल, बलहीन, दुर्बल, कमजोर। प्र०—हमके अबर समझ के चाहे जइसन बेओहार कइ लऽ, हम सहि लेइब [मुझ कमजोर समझ कर चाहे जैसा व्यवहार कर लो, मैं सह लूंगी]।

अरवा—बिना उबाले धान से निकाला गया चावल। प्र०—पूरब में अरवा चाउर से जादा उसिना चाउर खाइल जाला [पूरब में अरवा चावल से अधिक उसिना चावल खाया जाता है]

अलगरजी—निश्चिन्त, बेफिक्र, बेगाना। प्र०—(१) ऊ अइसन अलगरजी आदमी हउएं कि कौनों काम गहराई से ना लेलें [वह ऐसे बेफिक्र आदमी हैं कि कोई काम गहराई से नहीं लेते। (२) (कहा०)—नाऊ धोबी दरजी तीन जात अलगरजी [नाऊ, धोबी, दरजी (ये) तीन जातियाँ निश्चिन्त होती हैं]। (दे० क्रिया विशेषण भी)।

अलहदी—आलसी, प्रमादी। प्र०—तोहरे जइसे अलहदी आदमी से कौनो काम अर्हावल बेकार बा [तुम्हारे जैसे आलसी आदमी से कोई काम कहना बेकार है]

अहिवाती—सोहागिन, सधवा। प्र०—ई बरत अहिवाती मेहरारू के होला [यह व्रत सोहागिन स्त्रियों का होता है]।

आ

आइल—आया हुआ। प्र०—घर में आइल आदमी के निरादर ना करे के चाहीं [घर में आये आदमी का निरादर नहीं करना चाहिए]।

आकी-बाकी—बचा खुचा, शेष। प्र०—खास-खास काम निबटा लऽ, आकी-बाकी काम बाद में होत रही [खास-खास काम निपटा लो, शेष (बचा-खुचा) काम बाद में होता रहेगा]।

आन—दूसरा, अन्य। प्र०—(१) अपने पर जेतना अधिकार होला ओतना आन केहू पर कइसे होई [अपने पर जितना अधिकार होता है, उतना अन्य किसी पर कैसे होगा]।

आल्हर/आल्हरि—आरता, बढ़िया, कोमल हराभरा। प्र० (गीत)—अल्हर/आल्हरि बसवा कटाइले माड़ो छवाइलें, ताहि चढ़ि भइया निरखें, बहिनि नाहीं आवेली [हरा-भरा, बढ़िया बाँस कटवा कर माड़ो छवाया है, उस पर चढ़ कर भैया देखते हैं कि बहन नहीं आ रही है (विवाह का गीत)।

इ

इचिको—(दे. अंचिको)। प्र० (गीत)—भारी बेहाया बा, इचिको ना दाया बा [भारी बेहया है तनिक भी दया नहीं है]

उ

उघार—खुला हुआ, नंगा, निर्वसन प्र०—उनके पतोहिया एतना निर्लज्ज बाटे कि उघार मुह मरदन के सामने आ जाले [उसकी बहू इतनी निर्लज्ज है कि खुले मुँह (बिना घूंघट के) मर्दों के सामने आ जाती है]।

उजबक—मूर्ख, बेवकूफ। प्र०—तू कइसन उजबक मनई हउअऽ कि एतनो इसारा ना समझत हउअऽ? [तुम कैसे मूर्ख व्यक्ति हो कि इतना इशारा भी नहीं समझते?]।

उज्जर—उज्ज्वल, श्वेत। प्र०—उनके गंजा मूड़ी पर उज्जर धपधप गाधी टोपी सोहत रहे [उनके गजे सिर पर एकदम उज्ज्वल गाधी टोपी सुशोभित हो रही थी]।

उसिना—उबला हुआ, उबाले हुए धान से निकाला गया चावल प्र०—बिहार के लोग जादातर उसिने चाउर के भात खालें [बिहार के लोग ज्यादातर उसिना चावल का ही भात खाते हैं]।

उलरुआ/उलरू—प्यारा, दुलारा। प्र०—(१) तोहार उलरुआ-दुलरुआ बेटा बिगरल जात बा [तुम्हारा प्यारा-दुलारा बेटा बिगड़ा जा रहा है] (२) (गीत) केकर हउअऽ तूहूँ उलरू से दुलरू कवने बहिनिया सगे भाइ [तुम किसके लाडले-प्यारे हो? किस बहिन के सगे भाई हो?]।

ए

एइसन (दे० अइसन)।

एगो—एक एक ठो प्र०—एगो अमवा हमहूँ के देत जा [एक आम मुझे भी देते जाओ]।

एतना (दे० अतना)। प्र० (गीत)—एतना दुलार बाबा भइया के करित हो . [ए बाबा, इतना दुलार (यदि) भैया को करते..]।

एतहत—इतना बड़ा। प्र०—तोहार बेटउआ देखते देखत एतहत हो गइल! [तुम्हारा बेटा देखते ही देखते इतना बड़ा हो गया!]।

ओ

ओइसन—उस तरह का वैसा। प्र०—जइसन बिपत्ति उनके ऊपर परल बा ओइसन कउनो पर ना परे [जैसी विपत्ति उन पर पडी है, वैसी किसी पर न पडे]।

ओतना—उतना। प्र०—जेतना काम हम बूढ होके कर देनी ओतना काम तूं जवान होके ना कर सकेलू, समझलू! [जितना काम मैं बूढ़ी होकर कर देती हूँ उतना काम तुम जवान होकर नहीं कर सकती हो, समझी!]

ओद/ओदा—गीला, नम। प्र०—गोहुआँ अबहिन ओद बा, अउर घाम लागे दऽ [गेहूँ अभी गीला/नम है, और धूप लगने दो]

ओनइस—उन्नीस (सख्या)। प्र०—ऊ ओनइस दिन से बहरा गइल बाड़ें [वह उन्नीस दिनों से बाहर गये हैं]।

क

कइल—किया हुआ। प्र०—अपने से कइल काम सबसे बढिया होला' अपने से किया काम सबसे बढियाँ होता है

कइल-धइल—किया-धरा, किया-कराया। प्र०—नेक मन से कइल-धइल काम अकारथ ना जाला। [नेक मन से किया-धरा काम व्यर्थ नहीं जाता]। (२) तूँ त सगरो कइले-धइले काम पर पानी फेर दिहलू [तुमने तो सभी किये-धरे काम पर पानी फेर दिया]।

कटहवा—कटहा, काटखाने वाला (कुत्ता)। मृत्यु के दसवें दिन श्राद्ध अथवा दान-पुण्य कराने वाला ब्राह्मण। प्र०—ऊ एगो कटहवा कुक्कुर पलले बाने, ओसे बँचिहऽ [उन्होंने एक कटहा कुत्ता पाल रखा है, उससे बँचना]। (२) दसगातर के दिन कटहवा बाभने दान-पुण्य करवावेलें [दसवें के दिन कटहे ब्राह्मण ही दान-पुण्य करवाते हैं]।

कठकरेजी—कठोर कलेजे वाला, निर्दयी। प्र०—आरे, ऊ बड़ा कठकरेजी हऽ, दुसरे के दरद का जानी [अरे, वह बहुत निर्दयी है, दूसरे का दर्द क्या जाने?]

कड़ेर—कड़ा, कठोर। प्र०—रोटिया एतना कडेर बा कि हमरे दँतवा से कुचात नइखे [रोटी इतनी कडी है कि मेरे दाँत से कूँची नहीं जा रही है]

कतना/केतना—कितना। प्र०—एके दाम कतना/केतना हउए? [इसका दाम कितना है?]

करिया—काला, स्याह। प्र०—(१) अफरीका वासिन के रंग करिया होला [अफ्रीका वासियों का रंग काला होता है] (२) मुहा० करिया अच्छर भइँस बराबर [काला अक्षर भैंस बराबर]

करुआइन—कड़वा। प्र० (गीत)—निबिया के जर करुआइन सीतली बयरिया बहे... । [नीम की जड कड़वी होती है (किन्तु) हवा शीतल कहती है]

कूल्हि—कुल, सम्पूर्ण, सभी। प्र०—कुल्हि अमवा तूहीं खा लेबऽ? [कुल आम तुम्हीं खा लोगे?)]

केतहत—कितना बडा। प्र०—उनकर लगावल अमवा केतहत हो गइल होई? [उनका लगाया आम कितना बड़ा हो गया होगा?]

कोइलाँसी—दाग वाला, दगहा (आम)। प्र०—कोइलाँसी आम कच्चो रहले पर खट्टा कम होला [कोइलाँसी आम कच्चा रहने पर भी खट्टा कम ही होता है]

कोर—कोरा, बिना प्रयोग किया हुआ, जिसे उपयोग मे न लाया गया हो। प्र०—माटी के कोर मेटिया में चना भिगो के ओकर पानी पियले से फायदा होला [मिट्टी की कोरी मेटिया मे चना भिंगो कर उसका पानी पीने से फायदा होता है]। (दे० सञ्ज्ञा भी)।

ख

खनहन—फुर्तीला, हल्का-फुल्का। प्र०—मोटापा झर गइले से उनके देहिया नगदे खनहन हो गइल [मोटापा झर जाने से उनका शरीर अच्छा खास फुर्तीला हो गया]।

अतृप्त प्र तू केतनो आम खइबऽ खरकटले रहब

[तुम कितना ही आम खाओगे, अतृप्त ही रहोगे]।

ाड़—खडा, ठाढ़। प्र०—उनके स्वागत मे मुन्नी कुर्सी से उठि के खाड हो गइली [उनके स्वागत में मुन्नी कुर्सी से उठकर खडी हो गई]।

ाल—नीचा। प्र०—एही से ऊँच-खाल जमीन देखि के चले के चाही [इसी से ऊँची-नीची जमीन देखकर चलना चाहिए]।

ख़आइल—घिसा हुआ, अधिक प्रयोग किया हुआ। प्र०—ई खिआइल घइलिया हटा दऽ नाहीं त कबो फूटि के धोखा दे जाई [यह घिसी हुई घइली (घड़ा) हटा दो नहीं तो कभी फूट कर धोखा दे जायेगी]।

ाहल—उपयोग से भलीप्रकार पुष्ट हुआ, परिपुष्ट। प्र०—अच्छी तरह खेहल मेटिया में अचार रखले से तेल ज्यादा ना सूखेला [अच्छी तरह खेही हुई मेटिया में अचार रखने से तेल ज्यादा नहीं सूखता]।

ोंखर—खोखला, पोला, खोड़र। प्र०—ई भीतर से खोंखर हउए। उपरे ऊपर जवन बा तवन बा [यह भीतर से खोंखला/पोला है। ऊपर ही ऊपर जो है सो है]। (२) ई पेड़वा बहुत पुरान होखले से भीतर-भीतर खोखर होत जात बा [यह पेड़ बहुत पुराना होने के कारण भीतर ही भीतर खोंड़र होता जा रहा है]।

ग

जाइल—एक के ऊपर एक लद कर ढेर लगा हुआ प्र०—सगरो एक के ऊपर एक कके गँजाइल बा [सब कपड़ा एक के ऊपर लदकर ढेर लगा हुआ है]।

गाभिन—गर्भ धारणा की हुई (पशु के लिए)। प्र०—अबहिन हाले मे ऊ एगो गाभिन गाय कीनले हउएँ [अभी हाल में ही उन्होंने एक गाभिन गाय खरीदी है]।

गहगह—चमकदार, साफ-सुथरा। प्र०—हरदी से साफ कइले से सोना गहगह हो जाला [हल्दी से साफ करने से सोना चमकदार हो जाता है]।

गूर—निपट, बिल्कुल। प्र०—काहे कि लोगवा कही कि ई त गूर-गँवार बिया [क्योंकि लोग कहेंगे कि यह तो निपट गवाँर है]

गोटाइल—दाने पडा हुआ, कुछ कड़े दोनो वाला। प्र०—मजे के गोटाइल फसल देखे के मीलना [मजे की दानो भरी फसल देखने को मिली]।

घ

घटिहा—परस्त्रीगामी (व्यक्ति), व्यभि-चारी, तुच्छ, नीच। प्र०—ओकर बात मत करऽ, ऊ बहुते घटिहा आदमी हऽ [उसकी बात मत करो, वह बहुत ही नीच आदमी है]।

घरदूका—घर घुसना, घर के भीतर ही घुसा रहने वाला। प्र०—ऊ घरदूका मनई हउअन, बहरा कमे निकरेलें [वह घर-घुसने आदमी हैं, बाहर कम ही निकलते हैं]।

घाघ—भीतर से चालाक किन्तु ऊपर से सरल दिखने वाला धूर्त प्र०—आरे

तू बहुत घाघ हउअ तोहके जे ना जाने [अरे तुम बहुत घाघ हो, तुमको जो न जाने]।

घुरचिआह—प्रपंची, धूर्त, उलझा हुआ। प्र०—उनके जइसन घुरचिआह आदमी से त हमसे एको छिन ना पटी [उनके जैसे प्रपंची आदमी से तो मुझसे एक क्षण भी नहीं पटेगा]।

च

चंठ—दुष्ट, शैतान। प्र०—आरे ऊ बड़ा चंठ हऽ, बनल काम बिगाड़ के रख देला [अरे वह बहुत दुष्ट है, बना हुआ काम बिगाड़ कर रख देता है]

चचिआउत—चाचाजात (भाई या बहन), चचेरा प्र०—रामप्रसाद हमार चचि आउत भाई हउअन [रामप्रसाद मेरे चचेरे भाई हैं]।

चढ़बाँक—चालाक, झगड़ालू लड़ाका। प्र०—उनके लड़िकवा बहुत चढ़बाँक हऽ [उनका लड़का बहुत लड़ाका है]।

चाकर—चौड़ा, फैला हुआ। प्र०—(१) ऊ नदिया के पटवा बहुत चाकर बा [उस नदी का पाट बहुत चौड़ा है। (२) गीत—कई कोस पाकड़ जरी तोर चाकर कि कइ रे कोस ना पाकड़ पसंरले डरिया कई रे कोस ना [हे पाकड़, तेरी जड़ कितने कोस चौड़ी है (और) डाल कितने कोस तक फैली हुई है]।

चापुट—चपटा। प्र०—उनकर मुहंवा तनी चापुट बा [उनका मुंह थोड़ा चपटा है]

चीकन—चिकना। प्र०—ई लुगवा के कपड़वा बहुत चीकन बा [इस धोती/साड़ी का कपड़ा बहुत चिकना है]।

चुक्का-मुक्का—उकड़-मुकड़, घुटनो को मोड़कर केवल पैरों के तलवे के सहारे—बैठने की प्रक्रिया चुक्का-मुक्का बइठले से गोड़वा दुखा जाई। पीढा लेके बइठ जा। [उकड़ू-मुकड़ू बैठने से पैर दुख जायेगा। पीढ़ा लेकर बैठ जाओ]।

चोख—तेज, चरपरा, चटपटा। प्र०—(१) ई छुरिया चोख नइखे [यह छुरी तेज नहीं है]। (२) तरकरिया बड़ा चोख बनवले बाड़ू [तरकारी बहुत चटपटी बनाई है]।

चोखा—(दे० चोख)। बढ़िया। प० (मुहा०)—हर्रे लागे ना फिटकिरी, रंग चोखा [हर्रे लगे न फिटकिरी रंग चोखा]। (दे० संज्ञा भी)

चोटल—चोट खाया हुआ या चोट लगा हुआ। प्र०—हमार हथवा चोटल हो गइले से हम कवनो काम ना कर सकीलें [मेरा हाथ चोटल हो जाने से मैं कोई काम नहीं कर सकता]।

छ

छरहर—दुबला-पतला, फुर्तीला। प्र०—सुसीला के पतोहिया के देहिया बहुत छरहर बाटे [सुशीला के पतोहू का शरीर बहुत दुबला-पतला है]। (२) छरहर बदन आदमी सब काम फुर्ती से करेला [दुबले पतले शरीर वाला आदमी सब काम फुर्ती से करता है]

छव—छः (संख्या) छै। प्र०—उनके एक के बाद एख छव ठो लड़िका हो गइले, कइसे पलिहें सन् [उनको एक के बाद एक छः लड़के हो गये हैं, कैसे पलेंगे सब]।

छिंटुआ—छीट कर बोया गया (धान)। प्र०—ई छिंटुआ धान के चाउर हउए [यह छीटकर बोयें गये धान का चावल है]।

छिनुई—मलाई उतारा हुआ या मलाई अलग किया हुआ (दही)/प्र०—छिनुई दही जल्दी खट हो जाला [मलाई उतारा दही जल्दी खट्टा हो जाता है]।

छूँछ—खाली, रिक्त, अकिंचन। प्र०—हम हर तरह मे छूँछ आदमी, हमसे कवनो उमीद मत रखऽ [मैं हर तरह से अकिचन आदमी, मुझसे कोई उम्मीद मत रखो]।

छूँछा/छूँछी—(दे० छूँछ)। प्र०—छूँछी घइली बैल पियासा अल्ला-ताला पानी दे [खाली गगरी है, बैल प्यासा है, अल्ला ताला पानी दे]।

छोटी मूकी—छोटी सी। प्र०—छोटी मूकी रहनी त बकरी चरवनी पियनी बकेनवाके दूध [छोटी सी थी तो बकरी चराती थी और बकेन गाय का दूध पीती थी] (२) छोटी मूकी गाम मड़इया जहवाँ हम अकसर रहवइया। (भो लो. नव. १९९८)।

छोही—स्नेही, प्रेमी। प्र०—हमार बचवा बड़ा छोही हउए, सबके दुलारे लागेला [मेरा बच्चा बहुत प्रेमी है, सबको दुलारने लगता है]

जइसन—जैसा समान प्र०—हम जइसन पतोहू चाहत रहनी, ओइसने हमके मीलो गइल [मैं जैसी पतोहू चाहती थी वैसी ही मुझे मिल भी गई]।

जतहन/जेतहन—जितना (बड़ा)। प्र०—जतहन तोहार लइकवा बा ओतहने हमरो लइकवा बाटे [जितना बड़ा तुम्हारा लड़का है उतना ही बडा मेरा लडका भी है]

जबर—मजबूत, बलशाली, बलवान। प्र०—एतना जबर आदमी से निबटल मुस्किले बा [इतने बलवान आदमी से निपटना मुश्किल ही है]।

जामल—जमा हुआ, अकुरित अथवा उगा हुआ, जन्मा हुआ। प्र०—(१) बढिया से जामल दही परोसिहऽ [अच्छी तरह जमा दही परोसना]। (२) अंगनवा में जामल निमिया के पौधा के दुअरवा पर रोपि दिहनी हँऽ [आंगन मे जमे नीम के पौधे को द्वार पर रोप दिया/लगा दिया]। (३) असल माई-बाप के जामल होइबऽ त हमसे मोकाबला करबऽ, समझलऽ? [असल माँ-बाप के जन्मे होगे तो मुझसे मुकाबिला करोगे, समझे?]।

जिउगर/जिवगर—जीवन्त, जीवट, प्राण-वान। प्र०—ऊ बहुते जिउगर आदमी हउएँ [वह बहुत जीवन्त आदमी है]।

जेउआँ—जुडवा, जोड़वा। प्र०—बिमला के बेटी के जेउआँ लरिका भइल बाटे [विमला की बेटी को जोडवा लडका हुआ है]।

झ

झरार अधिक तिक्त तेज प्र० (गीत) जहँ हम जनतों कि धीय

कोख्खी होइहे, पियतो मे मरिची झगर [यदि मैं जानती कि कोख मे बेटी होगी तो झालदार मिर्च पी लेती]।

झहिया—झल्लाने वाली, तुनकमिजाज। प्र०—ओसे के भीड़, ऊ बहुत झलहिया मेहरारु हउए [उससे कौन भिड़े, वह बहुत झल्लाने वाली/तुनक मिजाज औरत है]।

झर—झाझर, झझरा झझरी का अर्थ तो वस्तुत: बहुत से छोटे-छोटे छेदों वाला, जालीदार, अनेक छिद्रों वाला, जर्जर आदि होना है किन्तु भोजपुरी लोकगीतों मे सम्भवत: इसे कशीदाकारी किये गये अर्थ में लिया जाता है तभी इस शब्द को गडुआ (पानी के पात्र) की विशेषता के रूप में प्रयोग किया गया है, यथा—झाझर गडुआ गगा जल पानी, पनिया लिहले हम ठाढ मदरसा मे ना अइलें बालम।—इस प्रकार अन्य गीतों मे भी इसका प्रयोग मिलता है।

ट

टटका—ताजा, तुरन्त का बनाया हुआ, तुरन्त घटित हुआ। प्र०—(१) बीमार आदमी के बसिया खाना ना देबे के चाहीं, टटके खाना दीहल ठीक परी [बीमार आदमी को बासी खाना नहीं देना चाहिए, ताजा खाना ही देना पड़ेगा]। (२) आवऽ हो, आज के टटका खबर सुनावऽ [आओजी, आज का ताजा खबर सुनाओ]।

टहटह—चटक, तेज। प्र०—बदरा फटने से टह-टह अँजोरिया हो गइल बा ... चाँदनी हो गयी है]।

टूअर—अनाथ, बिना माँ बाप का। प्र०—ई टूअर बालक हऽ, एकरा ऊपर किरपा कइल जाँ [यह अनाथ बालक है, इसपर कृपा किया जाय]।

टेढ़-बकटेढ़—टेढ़ा-मेढ़ा, अत्यधिक वक्र बेडौल। प्र०—ई लाठिया त एकदमे टेढ़-बकटेढ़ बाटे, एकरे सहारे कइसे चलब [भाई, यह लाठी तो एकदम ही टेढ़ी-मेढ़ी है इसके सहारे कैसे चलूँगा?]

ठ

ठकचल—भरा होना, जमा हुआ। उनके पूरा घर औरतन से ठकचल रहे [उनका पूरा घर ही औरतों से भरा हुआ था]।

ठलुआ—बेकार, निठल्ला। प्र०—ठलुआ आदमी के एहर-ओहर बइठे के अलावा कौनो अउर काम तो रहेला नाहीं [निठल्ले आदमी का इधर-उधर बैठने के अलावा कोई काम तो रहता नहीं]।

ठाढ़—(दे० खाड़)। प्र०—खेतवा मे पाकि के ठाढ़ फसल पर ऊ आपन कब्जा जमा लिहलस [खेत में पक कर खड़ी फसल पर उसने कब्जा जमा लिया]।

ड

डफाडोर—अधिक, भरपूर, बहुतायत से। प्र०—उनके घर त दूध-दही डफाडोर होला [उनके घर मे तो दूध दही भरपूर रहता है]। (२) (गीत)—हमहीं भइया ... जबहीं ... त

पीर्ले डकाडार [मैन और भैया न एक ही कोख में जन्म लिया (और) भरपूर दूध पिया]।

डभका—अधभुना, अधपका। प्र०—हमके त डभका चाना खाए में बहुत नीक लागेला [मुझे तो अधभुना चना खाने में बहुत अच्छा लगता है]।

ढ

ढुरहुर—सुन्दर, सुमुख। प्र० (गीत)—तोहरी धना हथवा के साँकर मुहवाँ के ढुरहुर हो राम, भले रे सहेबवा के धिअवा दुनहू कुल राखेली [तुम्हारी पत्नी हाथ से साँकर (मितव्ययी) मुँह से सुमुख तथा कुलीन साहब की बेटी हैं, दोनों कुलों की मर्यादा रखती है]।

त

तइसन—तैसा, वैसा। प्र०—अइसन बहुरिया हम चाहत रहनी, तइसने हमके मीलो गइल [जैसी बहू मैं चाहती थी, वैसी ही मुझे मिल भी गई]।

ततवल—गरम किया गया, हल्का भुना हुआ। प्र०—ततवल रहर के दाल सोन्ह लागेले [अरहर को हल्का भूनकर बनायी गयी दाल सोंधी लगती है]।

तातल—गरम। प्र०—एक मुट्ठी भात ले लीं न। एकदम तातले बा [मुट्ठी भर भात ले लीजिए न, एकदम गरम ही है]।

तनी—तनिक, थोड़ा। प्र०—तनी से चिउरवा ओहू के दे दऽ [थोड़ा सा चिउड़ा/चिवड़ा उसे भी दे दो]।

तरे—समान, प्रकार। प्र०—तोहरे तरे आदमी मीलल बहुत मुस्किल बा [तुम्हारे समान आदमी मिलना बहुत मुश्किल है]।

तस—जैसा। प्र० (१) जस करनी करबऽ तस फल पइबऽ [जैसी करनी करोगे, वैसा फल पाओगे] (२) जस करनी तस भोगहु ताता।

तीत—तिक्त, कड़ुवा। प्र०—मरिचवा बड़ा तीत बा हो [मिर्चा बहुत कड़वा है, जी]।

तेतर—तीन लड़कियों के बाद का (लड़का) या तीन लड़कियों के बाद की (लड़की)। प्र०—(१) उनके तीन लड़िकन के बाद तेतर लड़की पैदा भइल बिया, ई बड़ा सुभ हऽ [उनके तीन लड़कों के बाद तेतर लड़की हुई है, यह बहुत शुभ है]। (२) (कहा०)—तेतर बेटी राज रजावे, तेतर बेटा भीख मंगावे [तेतर बेटी राज करवाती है, तेतर बेटा भीख मंगवाता है]।

तेहरा—तीन गुना। तीन ओर से। प्र०—(१) ई काम से हमके तेहरा फायदा हो गइल [इस काम से मुझे तीन गुना फायदा हो गया]। (२) उनसे हमार तेहरा रिस्ता बा [उनसे मेरा तीन ओर से रिश्ता है]।

तोतरा—तुतला, तुतलाकर बोलने वाला। प्र०—उनकर बिटिअा तोतरी हऽ, साफ बोल नाही पावेले [उनकी बिटिया तोतली है, साफ बोल नही पाती है]।

द

दुब्बर, दूबर—कमजोर, दुर्बल, दुबला-पतला (१) प्र०—देखत-देखत ऊ एतना दूबर हो गइलन [देखते देखते वह इतने

दुबले हो गये]। (२) (लोको०) काजी जी दुब्बर काहें, सहर के अन्देसा से।

दुआह—दुहेजू, जिसका विवाह एक बार हो चुका हो। प्र०—बेचू अपने बिटिउआ के बिआह दुआह लरिका से कइले हउअन [बेचू ने अपनी बेटी का विवाह दुहेजू लड़के से किया है]।

दुअँछिया—वह चूल्हा जिसमें आँच पर बर्तन बर्तन रखने के लिए दो मुँह बने हों, अइला, दो आँच का (चूल्हा)। प्र०—दुअँछिया चूल्हा पर दूनो अइला पर खाना चढ़ा देले से खाना जल्दी बन जाला [दो मुँह के चूल्हे पर दोनो अइलों पर खाना चढ़ा देने से खाना जल्दी बन जाता है]

देसिल—देश सम्बन्धी, देशी। प्र०—(१) देसिल चीज सबसे अच्छा होले [देशी चीज सबसे बढ़िया होती है]

देहँचोर—आलसी, काम से जी चुराने वाला, कामचोर। प्र०—आरे ऊ बडा देहँचोर हऽ, कवनों काम करे ना चाहेला [अरे, वह बहुत कामचोर है, किसी काम को करना नहीं चाहता]।

दोसर—दूसर। प्र०—एक काम जल्दी से निबटा के दोसर काम सुरू करि दऽ [एक काम जल्दी से निपटाकर दूसरा काम शुरू कर दो]।

ध

धन/धनि—धन्य। प्र०—(१) तोहार एतना सहयोग पा के हम धन हो गइली [तुम्हारा इतना सहयोग पाकर मैं धन्य हो गयी]. (२) (गीत)—धनि भाग हमारी, धनि भाग हमारी राम अइले ससुरारी जी [मेरा धन्य भाग्य कि राम ससुराल आये हैं]

धपधप—विशेष उज्ज्वल, अधिक चमकदार। प्र०—नील लगा देले से सफेद कपड़वा धपधप हो जाले सन् [नील लगा देने से सफेद कपड़े विशेष उज्ज्वल हो जाते हैं]।

धराऊ—अधिक दिनों का रखा हुआ। विशेष अवसर पर पहनने के लिए संजोकर रखा हुआ कीमती वस्त्रादि। प्र०—(१) बहुत दिन के धराऊ होखे के कारन ई सरिया फाटल सुरू हो गइल [बहुत दिनों से रखी रहने के कारण यह साडी फटनी शुरू हो गयी]। (२) तीज-तिहुआर पर पहिरे खातिर दू चार धराऊ सारी त होखही के चाहीं [तीज-त्योहार पर पहनने के लिए तो दो-चार कीमती साड़ियाँ होनी ही चाहिए।

धीकल—गर्म, तपा हुआ। प्र०—अच्छी तरह धीकल तावा पर कपड़ा गरम करके सेकाई करिहऽ [अच्छी तरह गर्म/तपे हुए तवे पर कपडा गरम करके सेकाई कर दो]।

बर—(दे० अबर), अशक्त, अक्षम। प्र०—न एहिजा के भासा भाई बहिन के नाता करे में कवनो भासा मे नाबर बिया (भोज० लोक पत्रिका) [न यहाँ की भाषा भाई बहन का सम्बन्ध करने में किसी भाषा से अक्षम है]।

खुरखी—बिना सन्तान की स्त्री, बन्ध्या, बांझ। प्र०—अन्ध बिस्वासी मेहरारू लोग छठी-बरही मे निखुरखी मेहरारू से कवनो काम ना करवावेली, ई बहुत खराब बात हऽ [अंधविश्वासी स्त्रिया छठी-बरही में निःसन्तान स्त्रियो से कोई काम नहीं करवातीं, यह बहुत खराब बात है]।

खुराह—नखरे से खाने-पहनने वाला। प्र०—का करीं, हमार लरिकवा एतना निखुराह हऽ कि कवनो चीज ओके जल्दी पसन्द नाहीं आवेला [क्या करूँ, मेरा लड़का इतना नखरेवाला है कि उसे जल्दी कोई चीज पसन्द नहीं आती]।

ठाह—दृढ, मजबूत। प्र०—ई पलंगवा खूबे निठाह बाटे [यह पलंग बहुत मजबूत है]।

म्मन—अच्छा, बढ़िया। प्र०—निम्मन बात सोचले से चरित्रो निम्मन होला [अच्छी बातें सोचने से चरित्र भी अच्छा होता है]।

यर/नीयर—समान, तरह। प्र०—तोहरे नियर सोभाव हम कहाँ से पाईं [तुम्हारे तरह स्वभाव मैं कहाँ से पाऊ?]

नरबंसी—(दे० निखुरखी)।

हंग—दिवालिया। सब कुछ त्याग कर जीवन व्यतीत करने वाला बीतरागी प्र०—ऊ त आपन सगरो जमीन जयदाद छोड़ के निहग हो गइलन [वह तो अपनी सभी जमीन-जायदाद त्याग कर वीतरागी हो गये]

नीक—(दे० निम्मन)। प्र०—देखऽ, हमरा से नीक-नीक-बात बोलऽ, ई तोहार अटर-पटर बात हमके अच्छा ना लागेला [देखो, मुझसे अच्छी-अच्छी बाते बोलो, यह तुम्हारी उल-जलूल बात मुझे अच्छी नहीं लगती]।

नीमन—(दे० नीक)। प्र०—एक ठो नीमन इनाम तोहरे पास भइला पर मीली [एक बढ़िया इनाम तुम्हारे पास होने पर मिलेगा]

प

पइसल—प्रवेश किया हुआ, घुसा हुआ। प्र०—तोहके अपने मन में पइसल सैतान के निकाल के बाहर क देबे के चाहीं [तुम्हें अपने मन में घुसे हुए शैतान को निकाल बाहर कर देना चाहिए]।

पर—गत, पिछला, बीता हुआ (वर्ष) प्र०—पर साल खेत में फसल अच्छा भइल रहे [गत वर्ष खेत में फसल अच्छी हुई थी]।

परियार—गत वर्ष के पूर्व का (वर्ष)। प्र०—परे साल से नाहीं परियार साल से ई बात चलत आवत बा [पिछले साल से ही नहीं उसके पहले साल से यह बात चली आ रही है]।

पितिआउत—चचेरा, चाचाजात। प्र०—भोला हमार पितिआउत भाई हउअन [भोला मेरे चचेरे भाई है]

यर—पीला, पीत। प्र०—बसन्त पचमी क दिन जादातर लोग पीयर बस्तर पहिरेला [बसन्त पंचमी के दिन अधिकाश लोग पीत/पीले वस्त्र पहनते है]।

रनिया—वृद्ध, बुजुर्ग। प्र०—बूढ-पुरनिया मनई के दुख ना देवे के चाही [बुजुर्ग मनुष्य को दुःख नहीं देना चाहिए]। लोकोक्ति—बात बोले क पुरनिया, हगे के चुहनिया [बात तो बुजुर्ग जसा करते है और चौके में पाखाना कर देते हैं (बच्चे क लिए प्रयुक्त)]।

पुरहर—सम्पूर्ण, पूरी तरह। प्र०—ई कविते के उपयोगिता कहाई, पुरहर उपयोगिता कहाई [यह कविता की ही उपयोगिता कहलाएगी, पूरी तरह उपयोगिता कहलायेगी]।

पेपच—अत्यधिक मात्रा म, भरपूर, इफरात प्र०—अबकी हमरे इहाँ पेपच लउका फरल रहे [अबकी मेरे यहाँ बहुत अधिक लौकी फली हुइ थी]।

पोसुआ (स्त्री०-पोसुई)—पालतू, पाला हुआ। प्र०—(१) ऊ त पोसुआ पिल्ला जइसन पोंछ हिलावत लाला के पाछे-पाछे घूमत रहेलें [वह तो पालतू कुत्ते जैसे पूँछ हिलाते लाला के पीछे-पीछे घूमते रहते हैं]। (२) (कविता) चुनिया आइल पोंछ हिलावत जइसे पोसुई पिल्ली [चुनिया पूँछ हिलाती आई, जैसे पालतू बिल्ली]।

फ

लड़कों के खेलने के लिए विस्तृत जगह है]।

फरहर—फुर्तीला, स्फूर्तिवान। अलग-अलग छिटका हुआ (पके चावल के लिए)। प्र०—उनके पतोह बहुत फरहर बिया घण्टा डेढ घण्टा म घर के सगरो काम निबटा देले [उनकी पुत्र वधू बहुत फुर्तीली है घण्टे-डेढ़ घण्टे मे घर के सभी काम निपटा देती है]। (२) मेहमान खातिर फरहर भात बनइहऽ, लेई जनि कर दीहऽ [मेहमान के लिए छिटका चावल बनाना, लेई मत कर देना]।

फराकित—मल त्याग किया हुआ, शौच क्रिया से निवृत्त। प्र०—भोरे फराकित होके, हाथ मुँह धोके चल दीहल जाई [भोर मे ही शौच से निवृत्त होकर हाथ मुँह धोकर चल दिया जायेगा]।

फाँफर—सकरा खुला हुआ। प्र०—आम क लकड़ी ह न। एही मारे दरवजवा सुखि के फाँफर हो गइल बा [आम की लकड़ी है ना इसी कारण दरवाजा सूख कर बीच में दरार वाला हो गया है]।

फुफुआउत—फुफेरा, बुआजात, फुफीजात। प्र०—राकेश हमार फुफुआउत भाई हउअन [राकेश मेरे फुफेरे भाई हैं]।

फोफर—खोखला, बीच में छिद्र वाला अथवा खाली। प्र०—नलिया बीच मे फोफर होई तबे त फूकले पर हवा निकरी [नली बीच में खोखली होगी तभी तो फूकने पर हवा निकलेगी?]।

ब

जमीन बजर है]।

बसहा—जटायुक्त (बैल)। प्र० (गीत)—बॅसहा बएला सिब घुरमत आवेलें, भभुतिन रमेला सरीर [शिव बॅसहा बैल पर झूमते हुए आ रहे है। भभूत मे उनका शरीर शोभित है]।

बउक—(स्त्री० बउकी)—मूर्ख, पागल, विक्षिप्त। प्र०—का बउक आदमी जइसे उलटा-पुलटा बात बकत हउअऽ? [क्या पागल आदमी जैसे उल्टी-पल्टी बात बक रहे हो?]

बउराह (स्त्रीलिंग-बउरही दे० बउक), मन्दबुद्धि। प्र०—एगो बउराह आदमी से सही-सही बात करेके उमीद काहें करत हउअ? [एक पागल आदमी से सही-सही बात करने की उम्मीद क्यों कर रहे हो?] (२) उनके लरिकवा तनी बउराह हउए, ओके अकिल कम बा [उनका लड़का थोडा मन्दबुद्धि है, उसे अक्ल कम है]।

बकलोल—(दे० बउराह)। प्र०—ऊ बकलोल मनई से के बात करे? [उस बौरहे आदमी से कौन बात करे?]

बगट—बदमाश। प्र०—एहो, उनके पुतवा त एकदमे बगट निकरि गइल हो। [अजी, उनका पुत्र तो एकदम बदमाश निकल गया]।

बटवार—बटमार, राहजनी करने वाला, लुटेरा, ठग। प्र०—उनके बडका लरिकवा त चोर-बटवार निकरि गइल [उनका बड़ा बेटा तो चोर-लुटेरा निकल गया]

बढ़इता (स्त्री० बढ़इतिन)—आदरणीय, बडा, बुजुर्ग। प्र० (गीत)—दुअरा ही बइठल ससुर बढ़इता कि कइसे आई ना, धना तोहरे महलिया कि कइसे आई ना [द्वार पर आदरणीय ससुर जी बैठे हुए हैं (अत:) हे धना (प्रिया), तुम्हारे महल मे कैसे आऊँ?]। (२) (गीत) मचिया ही बइठलि सासु बढ़इतिन रे ना सासू का हो बनाई जेवनरवा रे ना [मचिया पर माननीया सासू जी बैठी थीं। पूछा कि हे सास जी, भोजन क्या बनाऊँ?]।

बड़हन—बडा (माप मे), बड़ा (पद-प्रतिष्ठा मे)। उनके बिटिउआ हमरे बिटिउआ से छोट हऽ बाकी कद मे बडहन देखाले [उनकी बेटी मेरी बेटी से छोटी है किन्तु कद में बड़ी दिखती है]। (२) आरे भाई, तू बड़हन मनई हो गइलऽ, अब भला हमके काहे चिन्हबऽ? [अरे भाई, तुम बड़े आदमी हो गये, अब भला मुझे क्यो पहचानोगे?]।

बरजोर—बलवान, मजबूत, बलिष्ठ, शक्तिशाली, जबरदस्ती करने वाला। प्र०—आरे, ऊ बहुते बरजोर मनई हउअन। एही से उनसे सभे डेराला [अरे, वह बहुत ही शक्तिशाली आदमी है। इसी से उनसे सभी डरते हैं]।

बरिआर (दे० बरजोर)। प्र०—बरिआर आदमी से सभे डेराला। चाहे देह से होखे, चाहे धन सम्पत्ति से [बलशाली आदमी से सभी डरते है। चाहे शरीर से हो, चाहे धन-सम्पत्ति से]।

बहिला—बन्ध्या, बाँझ (मवेशी के लिए प्रयुक्त)। उनकर गइया बहिला निकरि गइल। [उनकी गाय बाँझ निकल गयी]।

हेतू—बिगड़ैल, निरंकुश, आवारा। प्र०—उनके लड़िकवा बेहेतू हो गइल बा। दिन रात एहर-ओहर घूमत रहेला [उनका लड़का आवारा हो गया है। दिन-रात इधर-उधर घूमता रहता है]।

ाँव—बेकार, व्यर्थ, निष्फल। प्र०—ई हालत मे तोहार समझावल हमरे लिए बाँव साबित होई [इस हालत मे तुम्हारा समझाना मेरे लिए बेकार साबित होगा]।

ाउर—खराब, बुरा। प्र०—(१) ई लुगवा एतना बाउर त नइखे, जेके देखि के नाक सिकोरत हऊ [यह साड़ी इतनी खराब तो नहीं जिसे देखकर नाक सिकोड़ रही हो]। (२) ए बबुआ, परदेस जा के कौनो बाउर रस्ता मति पकरिहऽ [ए बच्चा, परदेश जाकर कोई बुरा रास्ता मत पकड़ना]।

ाझल—बझा हुआ, फँसा हुआ, व्यस्त। प्र०—बहरा के काम काज में बाझल मेहरारू घर के काम काज ठीक से ना कर सकेले [बाहर के कामकाज में व्यस्त महिला घर का कामकाज ठीक से नहीं कर सकती]।

ुड़बक/बुरबक—बेवकूफ, बुद्धू, उजबक। प्र०—अरे तू बड़ा बुड़बक बाड़ऽ, एतना छोट बात तोहरे समझ मे नइखे आवत? [अरे, तुम बहुत बेवकूफ हो, इतनी छोटी बात तुम्हारी समझ मे नही आ रही है?]।

ेजाइं—बेजाँ, अनुचित, बुरा। प्र०—हमरा बेजाइं बात से बड़ा क्रोध आवेला [मुझे अनुचित बात से बहुत क्रोध आता है]।

बेटहा—बेटा वाला, बेटा पक्ष वाला, वर पक्ष का। प्र०—(१) बेटहा काल ना परेला [बेटे वाले को कमी नहीं होती]। (२) बेटहा पच्छ के लोग बेटिहा पच्छ वालन के दबा लेला [वर पक्ष वाले कन्या पक्ष को दबा लेते है]।

बेरमिहा—बीमार, बिमरिहा, अस्वस्थ। प्र०—हम बेरमिहा आदमी, हमसे एतना काम कइसे होई? [मैं बीमार/बिमरिहा आदमी, मुझसे इतना काम कैसे होगा?]।

बेराम—(दे० बेरमिहा)।

बेलूर—बिना ढंग का, बेशऊर, जिसे कुछ मर्यादित रूप से करना न आता हो। प्र०—ई एतना बेलूर लरिका बा कि कवनो काम ठीक ढंग से ना कर सकेला [यह इतना बेशऊर लड़का है कि कोई काम ठीक ढंग से नहीं कर सकता]।

भ

भकचोन्हर—मूर्ख, बेवकूफ। प्र०—तू कइसन भकचोन्हर आदमी हवऽ होऽ? [तुम कैसे बेवकूफ आदमी हो जी?]।

भड़भड़िया—बिना विचारे बातों को कह जाने वाला। प्र०—ऊ बहुते भड़भड़िया हउएँ, बिना सोचले समझले जवन चाहेले बक देले [वह बहुत भड़भड़िया आदमी हैं, बिना सोचे-समझे जो चाहते हैं बक जाते हैं]।

भरभंड—अपवित्र। प्र०—बिना नहइले-धोअले छू के सगरो पूजा के समान भरभंड कर दिहलस [बिना नहाये धोये

सारा पूजा का सामान छूकर अपवित्र कर दिया]।

ैथर—कुंठित, धार रहित (चाकू, हंसिया के लिए) प्र०—अइसन भोथर छुरी से कलमिया ना बनी [ऐसी कुंठित छुरी से कलम नहीं बनेगी]।

म

ल/मइला—गन्दा, मलिन। प्र०—एतना मइल कुरता पहिर के कहवाँ जात हउअऽ [इतना गन्दा कुर्ता पहनकर कहाँ जा रहे हो?] (२) केहू के मइला घर-दुआर देखिके हमार मनवा बिचक जाला [किसी का गन्दा घर-द्वार देख कर मेरा मन बिचक जाता है]।

उग/मउगा—मेहरा, नपुंसक। पुरुष होकर भी स्त्रियों जैसी भाव-भंगिमा करने वाला। तू बड़ा मउग आदमी हउअऽ, दिन रात घरही में घूसल रहेलऽ [तुम बहुत मेहरा आदमी हो, दिन-रात घर मे ही घुसे रहते हो]।

गर—मजे का, बढ़िया, पर्याप्त। प्र०—(१) ओकरा मजगर मलगोझा चाभे के मौका मील गइल [उसे मजे का मालपुआ चाभने का मौका मिल गया]। (२) एही बीच खिलारिन के मजगर मोका मील गइल [इसी बीच बिल्लियो को बढ़िया मौका मिल गया]।

तेन—रूपी, जैसा, समान। प्र०—जबले ऊ ना चढी तबले दुलहा मतिन पत्रिका के रूप ना निखरी (भोज. लोक) [जब तक वह नहीं चढ़ेगा तब तक दूल्हा रूपी पत्रिका का रूप नही निखरेगा]।

देने वाला प्र०—मतौना कोदो के भात खइला से घर भर मतिया गइल [मतौना कोदो का भात खाने से पूरे घर के लोग मतिया गये]।

मद्धिम—धीमा/धीमी, मन्द। प्र०—मद्धिम रोसनी में पर्हले से आँखि खराब हो जाले [धीमी रोशनी मे पढने से आँखे खराब हो जाती हैं]।

मनसहर—मनचला, चुलबुल (स्त्री० चुलबुली)। प्र०—गाँव के मनसहर मेहरारू नगीना से अउरो चुहुल करे लगली सन् [गाव की मनचली औरतें नगीना से और भी चुहल करने लगीं]।

मनसाएन/मनसायन—चुहल, मनोरंजन पूर्ण, चहलपहल वाला, खुशियों से भरा। प्र०—तोहरे लोगन के अइला से घरवा मनसाएन हो गइल, नाही त ई जगहिया भायं-भायं करत रहे [तुम लोगों के आने से घर चुहल हो गया नहीं तो यह जगह भायं-भायं करती थी]।

मनिआर—मणिहार, मणिधारी, मणिवाला (साँप)। प्र०—सगरो साँप मनिआर ना होखेला [सभी साँप मणिवाले नहीं होते]।

मराछ—वह स्त्री जिसका बच्चा पैदा होते मर जाता हो। प्र०—अन्धबिस्वासी लोग मराछ मेहरारू के मुंह देख के कवनो सुभ काज कइल ठीक ना समझेले [अन्धविश्वासी मराछ स्त्री का मुह देखकर कोई शुभ काम करना ठीक नहीं समझते]।

मरिहया—कंजूस, मोजू, जिसे कुछ खर्च करने में कष्ट होता है। प्र०—पण्डित

दीनदयाल अइसन मक्खिचूस हउअन कि अपनो ऊपर दू टका ना खरच करि सकेलन [पं० दीनदयाल ऐसे कंजूस हैं कि अपने ऊपर भी दो पैसे नहीं खर्च कर सकते]।

मातल—नशाग्रस्त, मतिआया हुआ, मदयुक्त। प्र०—धन के मातल आदमी क नसा कबो ना कबो चूर हो के रहेला [धन के मद में चूर आदमी का नशा कभी न कभी चूर होकर ही रहता है]।

मुअल—मरा हुआ, मृत। प्र०—आरे जा, मुअल आदमी के मार के का पइबऽ? [अरे जाओ, मरे आदमी को मार कर क्या पाओगे?]।

मुहँझउँसा—जिसका मुँह झुलस गया हो (गाली के अर्थ में)। प्र०—तोरे जइसे मुहँझउँसा आदमी के मुहों देखल पाप समुझीले [तुम्हारे जैसे मुँहझौंसे आदमी का मुँह देखना भी पाप समझती हूँ]।

र

रचिको—रंचमात्र, थोड़ा भी, तनिक भी। प्र०—हम जानऽतानी जे तोहरे मन में हमरे बरे रचिको दाया नइखे [मैं जानती हूँ कि तुम्हारे मन में मेरे लिए रंचमात्र भी दया नहीं है]

रिन्हाइल—आँच पर पका हुआ, सीझा हुआ (खाद्य पदार्थ के अर्थ में)। प्र०—काँच अनाज ले के का करबऽ, रिन्हाइल अनाज मीली त तुरते पेट भरि जाई [कच्चा अनाज लेकर क्या करोगे, पक्का अन्न मिलेगा तो तुरन्त पेट भर जायेगा]।

ल

लकधप—ओगरक प्रदेश चमकदार। प्र०—ई लकधप धोती-कुरता पहिन के कहवाँ जात बाड़? [यह बढ़िया सफेद धोती कुरता पहन कर कहाँ जा रहे हो?]।

लकालक—(दे० लकधप)। प्र०—सभीन के रूप रेखा बदल गइल। खूब बढ़िया हजामत, महकऊआ तेल आ लकालक कुरता धोती [सभी की रूप रेखा बदल गया। खूब बढ़िया हजामत, खुशबूदार तेल और लकालक कुरता धोती]।

लटपट—अटपटा, बेतुका। प्र०—तोहार अइसन लटपटा बातचीत हमके भावत नइखे [तुम्हारी ऐसी बेतुकी बात हमें नहीं भाती है]।

लदरल—फल या फूलों से लदा हुआ या भरा हुआ। प्र०—एबकी आम के फसल बढ़िया भइल बा, सगरो पेड़वा आम से लदरल देखात बाड़े सन [इस बार आम की फसल बढ़िया हुई है। सभी पेड़ आम से लदे हुए दिखाई दे रहे हैं]।

लबर-झबर—बिना ठीक ढंग का, जिसमें रहन सहन या पहनने ओढ़ने का ठीक ढंग न मालूम हो। प्र०—उनके अइसन लबर-झबर मेहरारू त हम कतहूँ ना देखले रहीं [उनके जैसी लबर-झबर औरत तो मैंने कहीं नहीं देखी है]।

लम्महर—लम्बा, बड़ा, दीर्घ। प्र०—एतने कम उमिर में तोहार लरिकवा केतना लम्महर हो गइल! [इतनी ही कम उम्र में

तुम्हारा लड़का कितना लम्बा हो गया।]।

लम्हर-चाकर—लम्बा-चौड़ा, विस्तृत। प्र०—भोजपुरी के क्षेत्र बड़ा लम्हर-चाकर बाटे [भोजपुरी का क्षेत्र बहुत लम्बा-चौड़ा, विस्तृत है]।

लरकोरी—नवजात शिशु वाली (मां)। प्र०—(१) लरकोरी मेहरारू से एतना ज्यादा काम कइसे संपरी [लरकोरी स्त्री से इतना अधिक काम कैसे सम्हलेगा?]।

लरबर—ढीला-ढीला, झामरझोला। प्र०—हमार कुरतवा केतना लरबर बन गइल बा, जइसे कवनो मंगनी के होखे [मेरा कुरता कितना ढीलाढाला बन गया है, जैसे कोई मंगनी का हो]।

लेंगटा—नीच, दुष्ट। प्र०—पुनिया के लरिका बहुते लेंगटा हऽ, केहू ओके पसन्द ना करेला [पुनिया का लड़का बहुत दुष्ट है कोई उसको पसन्द नहीं करता]।

लेखा/लेखे—समान, जैसे, तरह। प्र०—सूरज के लाल परिछाही लेखा उनके ओठ मुस्किआइये गइल [सूरज की परछाहीं जैसे उनके ओठ मुस्करा ही गये]।

स

सउँसे—सम्पूर्ण, अखिल, पूरा, समूचा। विशाल। प्र०—(१) ई मन्त्र खाली राष्ट्रपति जी खातिर नइखे, ई त सउँसे राष्ट्र क नागरिक खातिर एगो राष्ट्रीय मन्त्र बाटे [यह मन्त्र केवल राष्ट्रपति जी के लिए नहीं है, यह तो सम्पूर्ण राष्ट्र के नागरिकों के लिए एक मन्त्र है]। (२) आरे, ई एतने उमिर में सउँसे हो गइल [अरे, यह इतनी ही उम्र में इतना बड़ा (विशाल) हो गया]।

सगरो—सभी, सम्पूर्ण, समस्त। प्र०—(१) घरवा के सगरो कमवा अबहिने निबटा लेबू का? [घर के सभी काम अभी निपटा लोगी क्या?]। (२) मुहा०—सगरो काज भरत जी के हाथे [सभी कार्य भरत जी के हाथ में है]।

सबुज—हरा। प्र० (गीत)—एक नाहीं देबो सबुज रंग सुगवा, लेला रमइया जी के नाम। [केवल एक हरे रंग का सुग्गा नहीं दूँगी (क्योंकि) वह राम का नाम लेता है]।

सभ—सब प्र०—सभ लोग मील के राष्ट्रहित के बात सोची, तबे राष्ट्र उन्नति करी [सब लोग मिल कर राष्ट्रहित की बात सोचेंगे, तभी राष्ट्र उन्नति करेगा]।

सयगर/सैगर—बढोतरी को प्राप्त। प्र०—ओकरे हथवा में एतना जादू बा कि थोड़हू चीज बनावेले त सयगर हो जाले [उसके हाथ में इतना जादू है कि थोडी भी चीज बनाती है तो बढ़ जाती है]।

सरकवाँसी—बन्धन की वह गाँठ जो एक छोर खींच देने पर आसानी से खुल जाती है। प्र०—गठवा सरकवाँसी बन्हिहऽ जेमे असानी से खुलि जा [गांठ सरकवाँसी बाधना, जिसमे आसानी से खुल जाय]।

सरीखे—(दे० लेखा)। प्र०—उनके पतोहुआ सरीखे दुलहिन अबहिन ले हमरे परिवार में ना आइल रहल [उनकी पतोहू जैसी दुलहिन अभी तक मेरे परिवार में नहीं आई थी]।

सहकल—शोख, बढ़ावा पाकर बिगड़ा हुआ। प्र०—माई-बाप के गलत दुलार से सहकल औलाद खानदान नाम कर देले [माता-पिता के गलत दुलार से बिगड़ी हुई औलाद परिवार नष्ट कर देती है]।

सहजोर—दृढ, मजबूत। प्र०—ई खभवा नगदे महजोर बाटे, असानी से ना टूटी [यह खंभा बहुत मजबूत है, आसानी से नहीं टूटेगा।]

सहमिल—मिलनसार। प्र०—ऊ बहुते सहमिल मनई हउअन [वह बहुत ही मिलनसार आदमी हैं]

सुरहुर—सीधा लम्बा। प्र०—इ लठिया बड़ा सुरहुर बा, कवनो ओर से टेढ-बकटेढ़ नइखे [यह लाठी बहुत सीधी है, किसी ओर से टेढ़ी-मेढ़ी नहीं है]।

सुरखुरू—अच्छा, नेक, चिकना चुपड़ा। प्र०—ऊ० घरे में चाहे जइसन बेवहार करें, बाहर वालन खातिर बहुत सुरखुरू हउअन [वह घर में चाहे जैसा व्यवहार करे, बाहर वालों के लिए बहुत नेक/चिकने-चुपड़े हैं]।

सुसुम—हल्का गर्म, कुनकुना। प्र०—सुसुम पानी में नीमक डार के कुल्ला करबऽ त नटइया खूल जाई [कुनकुने पानी में नमक डालकर कुल्ला करोगे तो गला खुल जायेगा]।

सुहवा—सौभाग्यवती, सुहागिन। प्र०—(गीत) हम त लेइब ओही सुहवा कवन देई, धरि जइहें बखरी हमार [मैं तो उसी सौभाग्यवती (कन्या का नाम सम्बोधन) को लूँगा जिससे मेरी बखरी (भंडार) भर जायेगी

सूतल—सोया हुआ। प्र०—(१) सूतल बेमरिहा के जगावे के ना चाहीं [सोये हुए बीमार/मरीज को जगाना नहीं चाहिए]। (२) सूतल हॉर अमला के हो जगावे...।

सेंतिहा के—बिना मूल्य का, सेंत का, मुफ्त। प्र०—(१) एमें बहुत पइसा खरच भइल बा। कवनो सेंतिहा के थोड़े हऽ [इसमें बहुत पैसा खर्च हुआ है। कोई मुफ्त का थोड़े है]। (२) सेंतिहा के साग गदपुरना के भाजी [मुफ्त का साग गदपूर्णा (स्वयं उत्पन्न होने वाला) का साग समझा जाता है]।

सोगहग—सम्पूर्ण, समूचा, पूरा जो खण्डित न हुआ हो। प्र०—भोजपुरी कथा साहित्य अपना कोरा में भोजपुरी जनपद के सोगहग संस्कृति समेटले रोज-ब रोज आगे बढ़ रहल बा [भोजपुरी कथा साहित्य अपनी गोद में भोजपुरी जनपद की सम्पूर्ण संस्कृति को समेटे रोज-ब-रोज आगे बढ़ रहा है]।

सोझ—सीधा (टेढ़ा-मेढ़ा या कुटिल नहीं), सुलझा हुआ। प्र०—(१) टेढ-मेढ़ डंडा मत लऽ, सोझ डंडा लऽ [टेढ़ा-मेढ़ा डंडा मत लो, सीधा डंडा लो]। (२) ऊ दुनिया के छल परपंच से दूर एकदम सोझ बेकति हउएँ [वह दुनिया के छल-प्रपंच से दूर एक दम सीधे व्यक्ति हैं]।

सोझबक—भोला भाला, बहुत ही सीधा। बुद्धू। प्र०—रामे के सोझबक होखले से जे चाहे से उनके बुद्धू बना देला [रामे के सीधा होने से जो चाहे वही उन्हें बुद्धू बना देता है]

न्ह—सोध, सोधी सुगन्धि वाला। प्र०—भडभूजा कीहाँ से भूजा के सोन्ह महक आवत हउए [भडभुजवा के यहाँ से चबेने की सोधी महक आ रही है]।

ह

तहत—(दे० एतहत)। प्र०—हतहत उपाधि पा के हम अपना के धन्य मननी [इतनी बड़ी उपाधि पाकर मैंने अपने को धन्य माना]।

लपक—चोर, आँख बचाकर चुराने वाला। प्र०—ऊ एतना हथलपक हऽ कि सामने से चीज गायब करि देला [वह इतना हथलपक है कि साम्ने से चीज गायब कर देता है]।

थछुट—तुरन्त चाँटा लगा देने वाला या मारपीट करने वाला। प्र०—तोहार बेटवा बड़ा हथछुट बा, जब देखऽ तब हमरे बिटिउआ पर हाथ चला देला [तुम्हारा बेटा बहुत हथछुट है, जब देखो तब मेरी बेटी पर हाथ चला देता है]।

हराठा—हृष्ट-पुष्ट, बलिष्ठ। प्र०—एतना ऊमिर होखलहू पर ऊ अबहिन नगदे हराठा बाने। [इतनी उम्र होने पर भी वह अभी अच्छे-खासे हृष्ट-पुष्ट हैं]।

हलुक/हल्लुक—हल्का, भाररहित। प्र०—जात्रा में हल्लुक समान लेके चले के चाही [यात्रा में हल्का सामान लेकर चलना चाहिए]।

हेतना—(दे० एतना)। प्र०—ई बिआह खाती हम हेतना धन कइसे जुटा सकीले [इस विवाह के लिए मैं इतना धन कैसे जुटा सकती हूँ]।

हेतीचुकी—इतनी छोटी। प्र०—आरे ई बचिया हेतीचुकी बिया, बाकी बड़ी समझदार बिया [अरे, यह बच्ची इतनी छोटी है, लेकिन बहुत समझदार है]।

होसगर—समझदार, सचेत। प्र०—(१) पढ लिख के होसगर हो गइलन, नाही त उनके रचिको समझ ना रहे [पढ लिख कर समझदार हो गये, नही तो उन्हे तनिक भी समझ नहीं थी]। (२) उनकर चाल पेच देखि के हम होसगर हो गइनी [उनकी चालबाजी देखकर मैं सचेत हो गया]।

•••

क्रिया

अ

अँखुआना—अंकुरित होना, अँखुआ निकलना। प्र०—धान के खेत अखुआ गइल। अब पानी देहल जरूरी हो गइल बा [धान के खेत में अँखुआ निकल आया है। अब पानी देना (सींचना) जरूरी हो गया है]।

अंटना—समा जाना, एक सीमित स्थान या पात्र में कुछ वस्तुओं का समावेश हो जाना या जगह पूरा पड़ जाना। प्र०—ई छोट के सन्दूक मे एतना कपड़ा कइसे अंटी? [इस छोटे से सन्दूक मे इतना कपड़ा कैसे समायेगा?]। (२) एतने भतवा म सबके अंट जाई? [इतने ही भात मे सबको पूरा पड़ जायेगा?]।

अंटाना—समो देना या समावेश करा देना, पूरा कर देना। प्र०—(१) ई छोट सन्दूक मे सगरो कपड़वा अंटा देबू? [इस छोटे से सन्दूक मे सभी कपड़े अटा दोगी?]। (२) एतना कम भात मे सबके कइसे अटइबू? [इतने कम भात मे सबको कैसे अटाओगी?]।

अड़सना—फंस जाना, कस जाना तंग जगह में फंस जाना। प्र०—(१) ऊ देखु हो! बटुलिया मे कुतवा के मुहवा अडसि गइल बा! [वह देखो जी, बटलोई में कुत्ते का मुँह फंस गया है। (२) एतना लोग हो गइलन की ऊ सांकर जगह मे अडसि गइलन [इतने लोग हो गये कि उस तंग जगह में फंस/कस गये]।

अइंछना—किसी रोगग्रस्त अथवा कष्ट में पड़े हुए व्यक्ति के कष्ट निवारण हेतु देवी-देवता से विनती करते हुए उस व्यक्ति के सिर के चारों ओर पैसा सिक्का आदि घुमाकर उसे देवी देवता पर चढ़ाने के लिए रखना, नेवछना। जादू टोने के द्वारा उपचार की प्रक्रिया। प्र०—बेटवा बहुत कष्ट मे बा। ओके देवी के नाम पर पइसा अइंछ के रख द, पाछे उनके थान पर जाके चढ़ा दीह [बेटा बहुत कष्ट में है। देवी के नाम पर इसे पैसा नेवछ कर रख दो, बाद में उनके थान पर जाकर चढ़ा देना]। (२) राई, नून बचवा के अइंछ के आगी मे डाल द, नजर बलाइ दूर हो जाई [राई नमक बच्चे को नेवछ कर आग में डाल दो, नजर बला दूर हो जायेगी]।

अउँसियाना—अकुलाना, उमस का अनुभव करना, दम घुटना। प्र०—(१) [illegible] अउँसा गइल बा [इतने [illegible] में [illegible] है]। (२) बछरू के मुँहवा मे कपड़वा हटा द, नाहीं त अउँसिया जाई [बच्चे के मुँह से कपड़ा हटा दो नहीं तो उसका दम घुट जायेगा]।

अउँलियाना—तंग आ जाना या तंग करना, परेशान हो जाना या करना, मुश्किल में पड़ना, ऊब जाना। प्र०—हम घर गिरहस्थी के एतना बखेड़ा से अब

अउँतिया डल बानी [मैं घर गृहस्थी के इतने झझट मे अब तंग आ गयी हूँ]

नना—उमसना, अधिक गर्मी के कारण किसी वस्तु का खराब हो जाना। अउंसना, किसी कोरे बर्तन को प्रयोग मे लाकर उसका कोरापन समाप्त कर देना। प्र०—(१) गरमी में उनके बन्द कोठरिया अउसे लागेले [गरमी मे उनकी बन्द कोठरी उमसन लगती है]। (२) बरसात मे बसिया खैंका जादा देर रखले से अउस जाला [बरसात मे बासी खाना ज्यादा देर रखने से उमस (बसिया) जाता है]। (३) ई घइलिया कोर परल बाटे, कोनो नीक-दिन पानी भर के अउँस दऽ [यह घडा अभी तक कोरा पड़ा है, किसी अच्छे दिन पानी भर कर अवाँस दो]।

बकाना—हकबकाना हक्का-बक्का हो जाना, हतप्रभ होना, आश्चर्य चकित होना। प्र०—हम अकबकइनी-'सालि-ग्राम्' कइसे निराकार हऽ? [मैं आश्चर्य चकित हो गई—शालिग्राम कैसे निराकर है?]।

ताना—उकताना, ऊब जाना। प्र०—रोज-रोज सूखल रोटी खात-खात हम अकुता गइनी [रोज-रोज सूखी रोटी खाते-खाते मैं उकता गई]।

गना—दुलार दिखाना, इतराना। प्र०—(१) ई देखऽ, बचवा कइसे अपने माई के देखिके अगराए लागल। [यह देखो, बच्चा कैसे अपनी माँ को देख कर अगराने लगा है।] (२) बहुत हो गइल, अब एतना जनि अगरा [बहुत हो गया, अब इतना दुलार मत दिखाओ]।

अगियाना—जलन होना जलने के समान पीड़ा होना। प्र०—देही भर मे फुन्सी निकरले से सगरो देहिया अगियात बाटे [शरीर भर में फुन्सी निकलने से पूरा शरीर जल रहा है]।

अगोरना—रखवाली करना। प्रतीक्षा करना, राह देखना। प्र०—रात भर मचान पर बइठ के फसल अगोरीलाँ, नाहीं त जनवरवन चरि जइहे सन् [रात-भर मचान पर बैठ कर फसल अगोरता हूँ, नहीं तो जानवर सब चर जायेंगे]। (२) हे प्रीतम, अब त आ जा। तोहार राह अगोरत-अगोरत हम खटिया लागि गइलीं [हे प्रियतम, अब तो आ जाओ। तुम्हारी राह देखते-देखते मैं खटिया लग गई]।

अघाना—तृप्त होना, बहुत सन्तुष्ट होना। प्र०—लखन कीहा भोज खाके सभ केहू अघा गइल [लखन के यहाँ भोज खाकर सब लोग तृप्त हो गये]।

अझुराना—उलझना, एक दूसरे मे फँस जाना। प्र०—ई का कइले रे, सगरो डोरवा अझुरा दिहले। अब तेही सुर झाउ [यह क्या किया रे, सब धागा उलझा दिया। अब तू ही सुलझा]।

अड़ना—हठ करना, जिदकर लेना। प्र०—ऊ घड़ी खातिर अड़ गइलन त लेके छोड़लन [वह घड़ी के लिए अड़ गये तो लेकर छोडा]।

अड़ाना—किसी वस्तु से अवरोध उत्पन्न करना, यथा—लग्गी अड़ाना, टांग अड़ान (मुहा०)। प्र०—गलियरवा में लग्गी अड़ा दिहले, जेसे कवनो ऊ पार ना जा सके [गलियारे मे डंडे से रोक

लगा दिया जिससे कोई उस पार न जा सके] (२) हमरे काम में जो तूं टाग अड़इबऽ त नतीजा अच्छा ना होई [मेरे काम मे यदि तुम हस्तक्षेप करोगे तो नतीजा अच्छा नहीं होगा]।

अदराना—इठलाना, घमंड दिखाना। प्र०—इनके तनी इज्जत कर दऽ त बहुते अदरा जालन [इनकी थोड़ी इज्जत कर दो तो बहुत ही इठलाने लगते हैं]।

अफनाना—(दे० औंजियाना), ऊभचूभ होना। प्र०—हम भीड़भाड़ में एकदमें अफना जानी [मैं भीड़भाड़ में एकदम ऊभचूभ हो जाती हूँ] ।

अमाना—(दे० अँटना)। प्र०—एतना छोट झोरा में एतना बड़ तरबूजा कइसे अमाई? [इतने छोटे झोले में इतना बड़ा तरबूज कैसे समाएगा?]।

अरियाना (दे० अड़ना), दुराग्रह करना। नखरे दिखाना। प्र०—(१) पैदल चलत चलत ललुआ एतना थकि गइल की गोदी चढ़े खातिर अरिया गइल [पैदल चलते चलते ललुआ इतना थक गया कि गोद में चढ़ने के लिए जिद करने लगा]। (२) मुहा०—घीव देत बाभन अरियाय [घी देने पर ब्राह्मण नखरा दिखाता है]।

अरुआना—बसियाना, उमस जाना, भोजन को बहुत देर तक रखने से खराब होने की स्थिति में होना। प्र०—गरमी में बहुत देर तक खैका रखले से अरुआ जाई। [गर्मी में बहुत देर तक खाना रखने से बसिया जायेगा]।

अरुझना—(दे० अझुराना)। जटिल हो जाना। झगड़ना प्र (१) आखिर सगरो डोरवा अरुझा दिहले न। अब कपड़वा कइसे सीं? [आखिर सभी धागा/डोरा उलझा दिया न। अब कपड़ा कैसे सिलूँ?]। (२) तू दूनी बेकत आपस में अरुझ के का पइबऽ? [तुम दोनो व्यक्ति आपस में झगड़कर क्या पाओगे?]।

अरहाना—काम करने का आदेश देना। काम करने को कहना। प्र०—हमार माई सगरो काम खातिर हमहीं के अरहावेले [मेरी माँ सभी काम के लिए मुझे ही कहती है]।

अवाँसना —(दे० अउँसना)। प्र०—आज नीमन दीन बा। घइलिया मे पानी भर के अवाँस दऽ [आज अच्छा दिन है। घड़े मे पानी भर कर अवाँस दो]।

असकतियाना—आलस्य करना, शिथिल होना, काम करने का मन न होना। प्र०—आज काम पर जाये में काहे असकतियात हउअऽ? [आज काम पर जाने में क्यों आलस्य कर रहे हो?]।

अहँकना—फूट फूट कर रोना। प्र०—बिदाई के जून हमार बछिया (प्यारी बेटी) कइसन अहँकत रहली! [बिदाई के समय मेरी प्यारी बेटी कैसे फूट फूट कर रो रही थी!]।

आ

आनना—ले आना, लाना। प्र०—ए बाबू तनी हमार एगो समान बजार से आन देबऽ? [ए बाबू, जरा मेरा एक सामान बाजार से ला दोगे?]।

आह लेना—आहट लेना जानकारी लेना

प्र०—उनके आवे के आह लेत रहिहऽ। अइसन ना होखे की ऊ धीरे से आके लउट जायं [उनके आने की आहट लेते रहना। ऐसा न हो कि वह धीरे से आकर लौट जायं]।

इ

सना—निकलना। प्र०—हम त दरवजवा बन क देहले रहनी। ना जाने कइसे इकम्ह गइल [मैंने तो दरवाजा बन्द कर दिया था। न जाने कैसे निकल गया]।

उ

उना—पेड पौधे का जड से उखड जाना। प्र०—पिपरा के पेडवा बहुत पुराना रहल, एही से उकठि/उकठ के गीर परल [पीपल का पेड़ बहुत पुराना था इसी से उखड़ कर गिर पड़ा]।

ट्ना—किसी को कुछ देकर अथवा किसी का उपकार करके अपने किये का उसे ताना देना। प्र०—तोहार ई बात हमके तनिको अच्छा ना लागेला की केहू के साथ तनिको कुछ करेलू त तुरन्त उघट देलू [तुम्हारी यह आदत मुझे तनिक भी अच्छी नहीं लगती कि किसी के साथ तनिक भी कुछ करती हो तो तुरन्त उघट देती हो या ताना दे देती हो]। (२) केहू के साथ कुछ क के उघट दिहले से कइल-धइल सब बिरथा जाला [किसी के साथ कुछ करके उघट देने से किया धरा सब व्यर्थ जाता है]

उघरना—खुल जाना, आवरण रहित हो जाना। प्र०—हम कपडवा से ओके ढाँपि दिहले रहनी बाकी तेज बयार से ऊ उघरि गइल [मैंने कपडे से उसे ढंक दिया था लेकिन तेज हवा मे खुल गया]।

उघारना—खोलना, नगा कर देना। प्र०—(१) सगवा काहें ढपले बाड़ू? उघार के रख द, नाही त सड़ि जाई [साग को क्यों ढका है? खोल कर रख दो, नहीं तो सड जायेगा]। (२) बचवा आपन सगरो कपडवा उतार के आपन देहिया उघार दिहलस [बच्चे ने अपने सब कपड़े उतार कर अपना शरीर नगा कर दिया है]।

उचरना—उच्चारण करना, बोलना। प्र०—खपड़ा पर कउआ उचरत बा, आज केहू जरूरे आई [खपडे पर कौआ बोल रहा है, आज कोई जरूर आयेगा]। (२) (गीत)—उचरत काग अंगनवा सनेसवा सुनावत हो, आरे तोर बीरन आवेलें आज सनसेवा सुनावत हो [कौआ आंगन मे बोलकर सन्देश सुना रहा है कि तुम्हारे भैया आज आ रहे हैं]।

उजबुजाना—आकुल-व्याकुल होना। प्र०—उजबुजाइल ई मन! कइसे सगेराई एकर भूख, एकर पिआस? [व्याकुल हुआ यह मन! कैसे मिटेगी इसकी भूख, इसकी प्यास?]।

उजरना—उजडना, उखडना, निर्जन हो जाना। प्र०—(१) तेज आंधी में हमरे झोपड़िया के छानी उजरि के ना जाने कहवा उड़ि गइल [तेज आंधी में मेरी झोपड़ी का छप्पर उजड कर न जाने

कहाँ उड़ गया]। (२) आरे उनके गउआ त एकदमे उजरि/उजड़ गइल, एको परिवार उहाँ ना देखाई दीहल [अरे, उनका गाँव तो एकदम ही उजड़ गया, एक भी परिवार वहाँ नहीं दिखाई दिया]।

उझिलना—एक पात्र से दूसरे पात्र या बर्तन मे कुछ डालना या उडेलना। प्र०—जवन धान बोरा में रखल बा ओके कोठिला मे उझिल के बोरवा खाली कर दऽ [जो धान बोरे मे रखा है उसे बखार मे उडेल कर बोरा खाली कर दो]।

उढकना—लुढ़कना। प्र०—आरे देखऽ होऽ, बचवा मिढिया से उढ़कि के नीचे गीर गइल [अरे, देखो जी, बच्चा मीढ़ा से लुढक कर नीचे गिर गया]।

उदहना—उलीचना, किसी स्थान पर एकत्रित जल को हाथ या किसी पात्र से निकाल कर फेंकना। प्र०—छनिया से पानी चू-चू के कोठरिया में भरि गइल बा, कौनो तरह से पनिया उदहि दऽ [छप्पर से पानी चू-चू कर कोठरी में भर गया है, किसी तरह से यह पानी उलच दो]।

उधियाना—हल्की वस्तु का हवा मे उड़ जाना। प्र०—तेज आन्ही में हमार गमछवे उधिया गइल [तेज आँधी में मेरा गमछा ही उड़ गया]।

उपटना—उखड़ना उजड़ना (दे० उकठना)। प्र०—काल्हि एतना जोर के आन्ही आइल की हमार पूरा छन्हिये उपरि गइल। इहाँ ले की लमहर-लमहर पेड़ो उपरि गइले सन् [कल इतने जोर की आँधी आई कि मेरी झोपड़ी ही उजड़ गई यहाँ तक कि बड़े बड़े पेड़ भी उखड़ गये]।

उपरना—(दे० उपटना)।

उपराजना—उपार्जित करना, उपजाना। प्र०—अपने मेहनते से त ऊ एतना धन-दउलत उपराजत हउएँ [अपनी मेहनत से ही तो वह इतना धन दौलत उपार्जित कर रहे हैं]।

उरेखना—उल्लिखित करना, चित्रित करना रेखाबद्ध करना, उत्कीर्ण करना खींचना। प्र०—उनके इयाद में मन्दिर बनवा के ओकरे दिवारन पर बहुत तरह के धार्मिक चित्र अउर मूर्ति उरेखल गइल बा [उनकी याद में मन्दिर बनवा कर उसकी दीवारों पर बहुत तरह के धार्मिक चित्र और मूर्तियाँ उत्कीर्ण की गई हैं]।

उरेहना—(दे० उरेखना)। उकेरना। प्र०—मन्दिर के देवाल पर रंग बिरंग के चित्र उरेहल गइल बा [मन्दिर की दीवार पर रंग बिरंग के चित्र उकेरे गये हैं]।

उसकाना—उकसाना, प्रेरित करना। दीपक की बत्ती को ऊपर उठाना। प्र०—(१) भोला दूनो जमात के उसका के आपुस में झगड़ा करवावे में माहिर हउए [भोला दोनों दलों को उकसा कर आपस में झगड़ा करवाने में माहिर है]। (२) तनी दिअवा के बतिया ऊपर उसका दऽ, त जरे लागी [जरा दिये की बत्ती ऊपर खिसका दो तो जलने लगेगी]।

उसिनना—उबालना, पानी मे डाल कर पकाना। प्र०—तरकारी बनावे खातिर थोरे आलू उसिन लऽ [तरकारी बनाने के लिए थोड़ा आलू उबाल लो]

ओ

ओइछना—(दे० अइँछना)।

ओंघाना—निद्रासा होना, तन्द्रा में आना, अर्द्ध निद्रा में होना। प्र०—बइठल बइठल काहे ओंघात हउअऽ? जा खटिया बिछा के सूति रहऽ [बैठे बैठे क्यों ऊँघ रहे हो? जाओ, खटिया बिछाकर सो रहो]।

ओकताना—उबियाना, ऊब जाना, अनिच्छित होना। प्र०—पूरी-कचउरी खात-खात ओकता गइनी। आज भात-दाल बनावऽ [पूड़ी-कचौडी खाते-खाते ऊब गया। आज भात-दाल बनाओ]।

ओकाना—कै या उल्टी करना। उबकाई आना। प्र०—का खा लिहलऽ जे बार-बार ओकात हउअऽ? [क्या खा लिया है कि बार बार उल्टी कर कर रहे हो?]।

ओठंगना—लेटना, पौढ़ना, किसी वस्तु का सहारा लेकर टेक लगाना। प्र०—देर से काम करत-करत बहुत थकि गइल बानी। तनी ओठग जाईं त थकाई दूर होखे [देर से काम करते-करते बहुत थक गया हूँ। तनिक लेट जाऊँ तो थकान दूर हो]।

ओदारना—किसी वस्तु से चिपकी हुई वस्तु को उससे अलग करना, उचारना, छिलका अथवा छाल आदि मूल तत्व से अलग करना, छीलना। प्र०—(१) पपड़वा सूखि गइल होखे त कपडवा से ओदार लऽ [पापड सूख गया हो तो कपडे से उचारकर रख लो] (२) केरवा के बोकलवा ओदार के बचवा के दीहऽ नाहीं त ऊ बोकलवा समेत खा जाई [केले का छिलका अलग करके बच्चे को देना नहीं तो वह छिलका समेत खा जायेगा]।

ओनवना—नीचे की ओर झुक जाना, लटक जाना, छा जाना। प्र०—(१) बदरा घेरि के नीचे ओनवत आवत बा [बादल घिर कर नीचे झुकता आ रहा है]।

ओन्हाना—औंधाना, किसी गहरी वस्तु को किसी वस्तु पर औंधा रख देना। प्र०—सगरो छँटिया एक जगह बटोर के ओपर खचिया ओन्हा दऽ [सब कुट्टी चारा एक जगह बटोरकर उस पर खाँची/झाबा औंधा दो]।

ओरमना—झुकना, नीचे लटकना (दे० ओनवना) प्र०—(१) बहू-बेटी के अपने से बड़ लोगन के सामने ओरम के चले के चाही [बहू-बेटियो को अपने से बडे लोगों के सामने झुक कर चलना चाहिए]। (२) देखऽना! छनिया नीचे ओरमत आवत बिया। [देखो न! छानी (छप्पर) नीचे लटकती आ रही है!]।

ओराना—समाप्त होना, चुक जाना, खतम हो जाना। प्र०—आज काल्ह घर मे कुछो नइखे। दाल-चाउर सगरो ओरा गइल बा [आज कल घर में कुछ भी नहीं है। दाल-चावल सब खतम हो गया है]।

ओरवाना—समाप्त कर देना, खतम कर देना। आपन सगरो धन त तूँ एहर-ओहर में ओरवा दिहलऽ, अब आगे के जिनगी कइसे कटी? [अपना सब धन तो तुमने इधर-उधर में समाप्त कर दिया, अब आगे की जिन्दगी कैसे कटेगी?]।

सरना—सपरना, पूरा हो जाना, सम्पन्न हो जाना। प्र०—महाप्रभु के किरपा से हमार एतना बडहन अनुस्ठान आनन-फानन में ओसर गइल [महाप्रभु की कृपा से मेरा इतना बड़ा अनुष्ठान आनन-फानन में सम्पन्न हो गया]।

ओसाना—सुखा कर रौंदी हुई गेहूँ आदि की फसल को हवा में उड़ाकर अन्न और भूसी को अलग-अलग करना। प्र०—पछुआ हवा चली तबे न गोहुआँ ओसावल जाई? [पछुआ हवा चलेगी तभी तो गेहूँ ओसाया जायेगा?]

ओइना—किसी वस्तु का उथल-पुथल करना या तितर बितर करना, इधर उधर बिखेर देना। प्र०—सन्दुकिया के सगरो कपड़वा काहे ओइत हउअ? [सन्दूक के सब कपड़े क्यों तितर-बितर कर रहे हो?]।

औ

औंजियाना—(दे० अउँजियाना) दमघुटना, अफनाना, घुटन का अनुभव होना, बन्द जगह में श्वास-प्रश्वास की क्रिया में बाधा होना प्र०—बन्द कमरा में गैस के धुआ फइलले से ओकरे भीतर के लोग औंजिया के दम तूरि दिहलें [बन्द कमरे में गैस का धुआ फैल जाने से उसके भीतर के लोगों ने घुट घुट कर दम तोड़ दिया]

औंटना—उबालना, भलीभाँति गरम करना। प्र०—दुधवा ठीक से औंट द:, नाहीं त फाटि जाई [दूध ठीक से गरम कर दो नहीं तो फट जायेगा]।

औंतियाना—ऊब जाना घबड़ा जाना उलझन महसूस करना। प्र०—घर के एतना झंझट-बात से त हम औंतिया गइल बानी [घर के इतने झञ्झट-बात से तो मैं ऊब गई हूँ/उलझन महसूस करने लगी हूँ] (दे० अउँतियाना)।

क

कउँचना—चिढ़ना झुझलाना चिल्लाना प्र०—ई तोहार कइसन आदत पड़ गइल बा कि तनी तनी बात पर कउँचे लागत बाड़: [यह तुम्हारी कैसी आदत पड़ गई है कि थोड़ी थोड़ी बात पर चिल्लाने लगते हो?]।

कउँचाना/कउँचवाना—चिल्लवाना, झुझला जाना। प्र०—मार अइसन-ओइसन बात कहि के बचवा के काहे कउँचवावत हउअ: [और ऐसी वैसी बात कहकर बच्चे को क्यों चिल्लवा रहे हो?]।

कउलाना—अन्न को तपे हुए बालू में डालकर हल्का-हल्का भुनना। प्र०—रहरिया कउला के दरले से दलिया सोन्ह लागेले [अरहर कौला कर दलने से दाल सोंधी लगती है]।

ककोरना/किकोरना—खुरचना। प्र०—कड़हिया में दुधवा जमल लागि गइल बा ओके किकोर द: [कड़ाही में दूध जो लग गया है उसे खुरच लो]।

कगरियाना—बगल से रास्ता बनाकर निकल जाना, आँख बचाकर गुजर जाना। प्र०—(१) सड़किया पर बहुत भीड़ रहे, बाकी हम कगरिया के निकरि गइनी [सड़क पर बहुत भीड़ जमा थी लेकिन मैं बगल से या किनारे से निकल गयी] (२) हमरा के देखत ऊ कगरिया

के निकरि गइले [मुझे देखते ही वह आँख बचाकर निकल गये]।

चरना—कुचलना, गोंटना, कूचना, चबाना। प्र०—ऊ लरिकवा के मोटरवा कचरि के निकरि गइल [उस लड़के को मोटर कुचलकर निकल गई] (२) खेका अच्छी तरह दाँत से कचर के खाये के चाही [खाना अच्छी तरह दांतो से कूचकर/चबाकर खाना चाहिए]।

चारना—फींचना, पछारना, धोना (कपड़ा)। प्र० तनी हमार लुगवा कचारि के घामे में फइला दऽ [तनिक मेरी धोती पछार कर धूप/घाम मे फैला दो]।

कचोटना—दुःख होना, आन्तरिक पीड़ा होना, पश्चाताप होना। प्र०—(१) ओकर दुख देखि के हमार जियरा हरमेस कचोटत रहेला [उसका दुःख देखकर मेरा जी हमेशा दुखी रहता है]। (२) उनके हम दुई बात कहि का दिहली, हमार मन हरदम कचोटत रहेला [उनको मैंने दो बातें कह क्या दी, मेरा मन हमेशा पश्चाताप करता रहता है]।

कदुआना—ठंड से ठिठुरना, अधिक ठंडा हो जाना, ठंड से कड़ा पड़ जाना। प्र०—अबकी के जाड़ा में जब आदमी कदुआ जात, त अउर चीज काहे ना कदुआई [इस बार की ठंड से जब आदमी अकड़ जाता है तो और चीज क्यो न अकड़ जायेगी]।

कढाना—आरम्भ करना (गाने आदि के सम्बन्ध मे)। गितिया पहिले तू ही कढावऽ, पाछे सभे पारी-पारी से गाई [गीत पहले तुम्हा शुरू करो बाद मे सभी बारा बारी से]

करमोना—हल्ला पानी डालकर किसी वस्तु को गीला करना, नम करना। प्र०—सगवा तनिक पानी स करमो के राखि दबू त ताजा बनल रही, सूखी नाही [साग थोडा नम करके रख दोगी तो ताजा बना रहेगा, सूखेगा नही]।

काँड़ना—कूटना, धान से चावल तथा भूसी अलग अलग करने के लिए अथवा किसी भी अन्न जैसे-गेहूँ, जौ आदि का छिलका अलग करने के लिए ओखली में मूसल से कूटने की क्रिया। दबाना (पैर आदि से)। प्र०—(१) चाउर नइखे। धान ले जाके ओखर में कॉड लऽ [चावल नही है। धान ले जाकर ओखली में कूट लो] (२) ए बाबू, हमार करिहइयाँ बडा बथऽता, तनी गोडवा से काँड़ि त दऽ [ए बच्चा मेरी कमर में बहुत दर्द है जरा पैर से दबा तो दो]

काढ़ना—बाहर निकालना। सूत अथवा रेशम आदि से सूई द्वारा कपडे पर फूल पत्ती अथवा चित्रादि बनाने की प्रक्रिया। प्र०—(१) दुधवा में चिउंटी पडि गइल बा, ओके काढि दऽ [दूध मे चींटी पड गयी है उसे निकाल दो] (२) उनके पतोहिया चदरा पर बहुते बढिया बूटी काढ़ऽतिया [उनकी पतोहू चादर पर बहुत बढ़िया फूल काढ़ रही है]।

किकुरना—ठंड के कारण शरीर के अंगो को सिकोड लेना, ठिठुरना। प्र०—एतना जाड़ा में तन पर कपडा ना रहले से बेचारा किकुरल जात बाटे [इतने जाडे में शरीर पर कपडा न रहने से बेचारा जा रहा है

ना—क्रय करना, खरीदना। प्र०—(१) ई पइसवा से घर बनवाइब आ खेत कीनब [इस पैसे से घर बनवाऊँगा और खेत खरीदूंगा]। (२) जा हो बजार से साग-भाजी कीन ले आवऽ [जाओ जी, बाजार से साग-भाजी खरीद लाओ]।

याना—अन्न, फल, सब्जी आदि को एक स्थान पर बटोरकर सीमित कर देना, ढेर लगाना, उड़ेल देना प्र०—ए बाबू, सगरो धनवा बटोर के एक जगह कुरिया दऽ [ए बाबू, सब धान बटोर कर एक ही जगह इकट्ठा कर दो]। (२) अनजवा एहीजा कुरिया के बोरवा खाली कइ लऽ [अनाज इसी जगह उडेल कर बोरा खाली कर लो]।

रना—धिक्कारना, बुरा-भला कहना। प्र०—ऊ तोहार का बिगरले बा जे हरदम कोसत सरापत रहेलुऽ? [उसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है कि हरदम कोसती-सरापती (श्राप देती) रहती हो?]।

नाना/कोंहाना—रुष्ट हो जाना, रूठ जाना, बोलचाल बन्द कर देना, विमुख हो जाना। प्र०—उनके त हम कुछऊ ना कहनी, तबो हमसे कोंहनाइल/कोंहाइल हउएँ [उनको तो मैंने कुछ भी नहीं कहा, तब भी मुझसे रुष्ट/रूठे रहते हैं]।

ख

ना—तरसना, ललचाना, लालायित रहना। प्र०—गरीब के लरिकन एक-एक चीज खातिर खखात रहेले सन् [गरीब के बच्चे एक एक चीज के लिए तरसते रहते हैं]।

खखोरना/खिखोरना—(दे० किकोरना)।

खदेड़ना/खदेरना—भगाना, दौड़ाना, पीछा करना। प्र०—गाँव के लोग एकट्ठा होके सगरो चोरवन के गाँव के बहरा खदेड़ दिहलन [गाँव के लोगों ने इकट्ठा होकर सभी चोरों को गाँव के बाहर भगा दिया]।

खपचना—नुकीली वस्तु से छेद करना या आघात करना, गोदना। प्र०—मोरब्बा बनावे खातिर आँरा के काँटा से खपचल जाला, तबे ओमे रस भीनला [मोरब्बा बनाने के लिए आँवले का काँटे से गोदा जाता है, तभी उसमें रस भीनता है]।

खरकना—हिलना। प्र०—हवा त अइसन बन्द बा कि पिपरो के पता नाहीं खरकत [हवा तो ऐसी बन्द है कि पीपल का पता भी नहीं हिल रहा है]। मुहा०—उनके आज्ञा के बीना घर के एको पता ना खरकेला [उनकी आज्ञा के बिना घर का एक पत्ता भी नहीं हिलता]।

खरकोचना—किसी तेज पदार्थ से किसी वस्तु को खरोचना। प्र०—(१) लउकिया के छिलकवा छुरिया से खरकोच के निकाल दऽ [लौकी का छिलका छुरी से खरोच कर निकाल दो]।

खरबोटना—बकोटना। प्र०—देखऽ ना! खिसिया के हमार सगरो हथवे खरबोट लिहलस [देखो न! खिसिया कर मेरा सारा हाथ बकोट लिया]।

खुनसाना क्रोध करना गुस्सा आना बुरा

मान जाना। प्र०—तू त निमनो बतिया कहले पर खुनसा जालू [तुम तो अच्छी बात कहने पर भी बुरा मान जाती हो]।

ना—(दे० खदेड़ना)। प्र०—हमनी के सगरे बदमसवन के अइसन खँदि-खदि मरनी हँ जा कि उनके होस ठिकाने लागि गइल [हम लोगों ने सभी बदमाशों को एसा दौड़ा-दौड़ाकर मारा कि उनके होश ठिकाने लग गये]।

ना—कठिन समय को किसी तरह व्यतीत करना, तथा झेल लेना। प्र०—इ मुसीबत के दीन हम कइसे खेपऽतानी बतावल मुश्किल बा [यह मुसीबत का दिन मैं कैसे बिता रही हूँ, बताना मुश्किल है]।

ना—पुष्ट पड़ना। प्र०—(१) ई मेटवा (अचार रखने का मिट्टी का बर्तन) तेल पी-पी के खेह गइल बा, अब जल्दी फूटी ना [यह मेटा तेल पी-पाकर पुष्ट मजबूत हो गया है, अब जल्दी फूटेगा नहीं]। (२) जाड़ा-गरमी-बरसात सहत-सहत अब उनके देहिया एतना खेहि गइल बा की ओपर कवनो मौसम के असर नइखे परत [जाड़ा-गरमी-बरसात सहते-सहते अब उनका शरीर इतना पुष्ट पड़ गया है कि उस पर किसी मौसम का असर नहीं पड़ता]।

खना—खाँसना। प्र०—बबुआ के जब खोंखी के दउरा आवेला त खोंखत-खोंखत ढांसे लागेला [बच्चे को जब खासी का दौरा आता है तो खाँसते-खाँसते ढल्ठी करने लगता है]

ना—टूंगना तोड़ना प्र०—(१) जा थोरके चौराई के साग खोंटिले आवऽ त बना देईं [जाओ, थोडे चौराई का साग टूंगकर लाओ तो बना दूं। (२) गीत—बहुअरि खोटि लवली बथुआ के सगवा रे ना।

खोनना—खोदना। प्र०—एतना गहिर गडहा काहे खाती खोनऽतारऽ? [इतना गहरा गड्ढ़ा किसलिए खोद रहे हो]। मुहा०—गड़हा खोनना—आहत करना। प्र०—जे हमरा जइसे नेक बेकत खाती गड़हा खोनी, ओकरा खाती भगवान के ओर से खाई खोना जाई [जो मेरे जैसे व्यक्ति के लिए गड्ढा खोदेगा, उसके लिए भगवान की ओर से खाई खुद जायेगी]।

खोभना—नुकीली चीज घुसाना, छेदना, गोदना। प्र०—दमालू नोकदार सूजा भा सलाई से सैगा आलू क अच्छी तरह खोभ के बनावल जाला [दमालू समूचे आलू को नोकदार सूजा या सलाई से अच्छी तरह छेदकर/गोदकर बनाया जाता है]। (दे० खपचना)

खोरना—खोदना, तितर-बितर करना, उथल पुथल करना। प्र०—बोरसी के अगिया राखी में दबा गइल बा, तनी चिउँटवा से खोर दऽ त अगिया फेर धधक जाई [गोरसी की आग राख मे दब गयी है, तनिक चिमटे से खोद दो तो आग फिर धधक जाय]।

ग

गँथाना—गुथ जाना, गुम्फन होना, एक दूसरे में उलझ जाना प्र मेलवा में एतना भीड रहे जइसे सभ लोग एक दसरा

अपने देवता के पहिरावे ग्वाती फूल के माला गूहऽतानी [अपने देवता को पहनाने के लिए फूल का माला गूथ रही हूँ]। (२) आवऽ, तोहार मथवा गूह दी [आओ, तुम्हारे बाल की चोटी कर दूँ]। (२) (गीत)—सब सखियन मिलि मथवा हो गुहवली, मोर बबइया हो हमहीं एक बारी कुआर।

ना—घेरना, किसी खेत या स्थान का घेरा अथवा खेत को मेड़ बनाकर सीमाबद्ध करना। प्र०—आज पियाज-लहसुन के कियरियन के गेड़ दीहऽ, जेमे पानी डारे लायक हो जाय। आज प्याज-लहसुन की क्यारियो की मेड बनाकर घेर देना जिससे पानी डालने लायक हो जाय]।

ाना—दाने पड़ना। गेहूँ जौ आदि की बालियों मे दाने कड़े पड़ने की प्रक्रिया। प्र०—चइत के महीना मे गोजई/गोहूँ-जौ नगदे गोटा जाला [चैत्र मास मे गेहू-जौ में दाने भलीभाँति कड़े पड जाते हैं]। (गीत)—ठूंठ भइले चनक गोटइली गोजइया [चना ठूंठा हो गया, गोजई/गेहूँ-जौ में दाने कड़े पड़ गये]।

राना—पुकारना, जोर जोर से बुलाना। प्र०—आरे, बहरा जा के बेटउआ के गोहरावऽ, ना जाने केहर चलि गइल बा [अरे, बाहर जा कर बेटे को पुकारो, न जाने किधर चला गया है]।

घ

`टना—गुर्राना, क्रोध में बोलना। आरे, हम अइसन का कहि दिहनी की तूँ हमरा के घपोटे लगलऽ [अरे, मैंने ऐसा क्या कह दिया कि तुम हमारे ऊपर गुर्रा रहे हो?]।

घिसरना—घिसटना। प्र०—अब उनके देही मे दम नइखे। कउनो तरह से घिसर-घिसर के एहर-ओहर जात बाडन [अब उनके शरीर मे दम नही है। किसी तरह से घिसट-घिसट कर इधर-उधर जाते है]।

घिसराना—घसीटना, बलपूर्वक खींचना। प्र०—बेचारा के कौनो दोस न इख तबो ओके घिसरावत ले आवत बाने [बेचारे का कोई दोष नहीं है, तब भी घसीटते हुए ला रहे हैं]।

घींचना—खींचना। प्र०—जोर लगा के घींचऽ, तबे ऊपर आई [जोर लगा कर खीचो, तभी ऊपर आयेगा]।

घुसुकना—खिसकना। प्र०—(१) तनी आग घुसुकऽ त हमहूँ इहवाँ बइठ जाई [तनिक आगे खिसको तो मै भी यहाँ बैठ जाऊँ]। (२) (गीत)—अगस घुसुकहु चेलिक रे। आरे, पाट चोलिया भीजेला पसेनवा, भलहि घरे बँसहर।

घोरना—घोलना। प्र०—एक लोटा ठडा पानी में गुड घोर के रस बना लऽ [एक लोटा ठंडा पानी मे गुड घोल कर रस बना लो]।

च

चभोरना—डुबाना, तर करना (घी आदि से)। प्र०—मोट-मोट मकई के रोटी बना के घीउ में चभोर के खाये मे नीक लागेला [मोटी-मोटी मक्के की रोटी बनाकर घी में डुबोकर/तर करके खाने में अच्छा लगता है]

चहुँपना—पहुँचना, गन्तव्य तक चले जाना। प्र०—संझा होत-होत हम गांव चहुँप जाइब [शाम होते होते मैं गांव पहुँच जाऊंगा]।

चहुँपाना—पहुँचाना। प्र०—बबुआ के उनकर घरे ले चहुँपा दऽ [बबुआ को उनके घर तक पहुँचा दो]।

चाभना—स्वाद ले-लेकर खाना, गन्ने आदि का रस चूसना। प्र०—(१) उहवाँ जा के खूब बढियाँ-बढियाँ पकवान चाभऽ न [वहाँ जा कर खूब बढ़िया बढिया पकवान खाओ न]। (२) इहवां बइठि के तू मजे से ऊँख चाभत हवऽ आ उहवाँ तोहार माई तोहरे खाती बेचैन बाड़ी [यहाँ बैठ कर तुम मजे से गन्ना चाभ रहे हो और वहाँ तुम्हारी मां तुम्हारे लिए बेचैन है]।

चासना—ऊपर ऊपर तराशना या छीलना। जोतना। (१) लउकिया के ऊपरे ऊपर से चास दऽ, मोट बोकला मत निकालऽ [लौकी को ऊपर-ऊपर से ही तराश दो, मोटा छिलका मत निकालो]। (२) एह बेरा ऊ आपन खेत चासऽताने [इस समय वह अपना खेत जोत रहे हैं]।

चिखुरना—घास उखाड़ना, निराई करना। प्र०—खेतवा में जादा घास उगि आइल बा, अब ओके चिखुरल जरूरी बा [खेत में ज्यादा घास उग आया है, अब उसकी निराई जरूरी है]।

चिन्हवाना—पहचान करवाना, परिचय देना। प्र०—ऊ हमके अकेले में ना चिन्हिहें, तू चल के चिन्हवा दऽ [वह मुझे अकेले में नहीं पहचानेंगे, तुम चलकर मुझे पहचनवा दो]।

चिन्हाना—पहचाना जाना, जाना जाना [प्र०—परबतिया त शहर में रहला के बाद अइसन बदल गइल की चिन्हात नइखे [परबतिया तो शहर में रहने के बाद ऐसी बदल गयी कि पहचानी नहीं जा रही है]।

चिहाना—चौंकना। प्र०—हमार बतिया सुनके काहे चिहात हउअऽ? हम जवन कहऽतानी, सच बाटे हऽ [मेरी बात सुन कर क्यों चौंक रहे हो? मैं जो कह रहा हूँ सच सही है]।

चिहुँकना—चौंक उठना, हिचकी भरना (नवजात शिशु के लिए)। प्र०—देखऽ, बचवा सूतल सूतल कइसे चिहुँकऽता। [देखो, बच्चा सोते सोते कैसा चौंक रहा है]।

चीन्हना—पहचानना, जानना। प्र० तू हमके चीन्हऽताड़ कि ना? हम त तोहके अच्छी तरह चान्हऽतानी [तुम मुझे पहचान रहे हो कि नहीं? मैं तो तुमको अच्छी तरह पहचान रहा हूँ]।

चुहचुहाना—पसीना निकलना, पसीना चूना। प्र०—एतना ठँडा पानी में नहाए के बादो बदन से पसीना चुहचुहात बाऽ [इतने ठंडे पानी से नहाने के बाद भी शरीर से पसीना चू रहा है]।

चेंव-चेंव करना—चिड़ियों का बोलना। चें-चें करना। प्र०—घोंसलवा में चिरइया के बचवन चेंव चेंव करऽताने सन [घोंसले में चिड़िया के बच्चे चें चें कर रहे हैं]।

चेंव बोल जाना—हार जाना। प्र०—भोला के संगे कुस्ती लड़ले पर ललुआ चेंव बोल गइल [भोला के साथ कुश्ती लड़ने पर लल्लू हार गया

जाना—सतर्क हो जाना, सचेत हो जाना, होश मे आना, सम्भल जाना। प्र०—अरे, अब तऽ चेत जा, अबहिन कुछा नइखे बिगरल [अरे, अब तो सचेत हो जाओ, अभी कुछ नहीं बिगड़ा है]।

रना— फाडना, नोचना। जान चोथना—तंग करना (तंग करने के अर्थ में अधिक प्रयोग किया जाता है)। प्र०—(१) देखऽना, लरिकवा खिसिया के हमार लुगवे चोथ दिहलस [देखो न, लडके न खिसियाकर मेरी साड़ी ही फाड/नोच डाली]। (२) ए भाई, हमार जान मति चोथऽ, हम त अपने परेसान बानी [हे भाई, मेरी जान मत खाओ/मुझे तंग न करो, मैं तो खुद ही परेशान हूँ]।

करना—चीखना, चिल्लाना, जोर जोर से बोलना। प्र०—देखऽ, चोकरऽ जनि। हमार कनवा बहिर नइखे [देखो, चिल्लाओ मत/चीखो मत। मेरे कान बहरे नहीं है]।

ना—इतराना, दम्भ करना। प्र०—तनी स सफलता पर त एतना चोन्हात हउए। जादा सफलता मीले पर त असमान पर पैर रखि के चलिहें [थोडी सी सफलता पर तो इतना इतरा रहे हैं अधिक सफलता मिलने पर तो आसमान पर पैर रख कर चलेगा]।

छ

ना—अकिंचनता की स्थिति मे इधर-उधर भटकना लालायित होना प्र०—का करें बचरऊ रोटी दाल के मोहताज होखले से काम काज खाती एहर-ओहर छछात रहेलन [क्या करे बेचारे रोटी-दाल के मोहताज होने से काम-काज के लिए इधर उधर भटक रहे हैं]।

छनकना—बुरा मान जाना, शंकित हो जाना। प्र०—(१) अपने बारे में ई सुनते तूँ काहे छनक गइलू? [अपने बारे में यह सुनते तुम बुरा क्यों मान गयी?] (२) उनके मुँह से बात निकरते हमार मनवा छनक गइल [उनके मुह से बात निकलते ही मेरा मन शंकित हो गया]।

छरछराना—कटे या जले हुए स्थान पर पीडा होना, जलन होना, दुखना। प्र०—कटले अंगुरिया पर नून लगले से बहुते छरछगला [कटी उँगली पर नमक लगने पर बहुत छरछराता है]।

छरिआना—मचलना, अनायास रोना-चीखना (बच्चे के सन्दर्भ मे)। प्र०—(१) हमार पुतवा जवने कुछ देखेला, ओही खाती छरिआए लागेला [मेरा पुत्र जो कुछ भी देखता है, उसी के लिए छरियाने/मचलने लगता है]। (२) बचवा काहे छरिआ गइल बा रे, तनी ओके पोल्हा दे [बच्चा क्यो मचला है रे, जरा उसे बहला दे]।

छिछिआना—इधर-उधर निरुद्देश्य भटकना। प्र०—ना ऊ कौनो काम करे ना काज, खाली एहर-ओहर छिछिआत फीरेला [न वह कोई काम करता है न काज, केवल इधर उधर बेकार घूमता रहता है]।

छितराना बिखरना/बिखराना बिखेरना फैलाना छींटना प्र (१) हम त

गोहुआँ बटोर के रखले रहली, ना जाने कइसे छितरा गइल [मैंने तो गेहूँ बटोर कर रखा था, ना जाने कैसे बिखर गया]। (२) तोहार बेटउआ सगरा गोहुआँ छितरा दिहलस [तुम्हारे बेटे ने सब गेहूँ बिखेर/बिखरा दिया है]। (३) घाम हो गइल बा, गोहुआ चदरा पर छितरा दऽ जेसे दिनभर में सूखि जा [धूप हो गयी है, गेहूँ चादर पर फैला दो, जिससे दिन भर में सूख जाय]।

छीजना—क्षीण होना, कम होना, दुर्बल होना (शरीर)। प्र०—काफी दिन ले बेमार रहनी हँऽ, एही से हमार देहिया एकदम छीज गइल [काफी दिन तक बीमार रहा, इसीलिए मेरा शरीर इतना क्षीण हो गया]।

छुछुआना—अतृप्त अवस्था में इधर उधर भटकना, कुछ पाने की लालसा में चारों ओर मारा मारा फिरना (दे० छिछिआना)। प्र०—उनके थोड़ में सन्तोष ना होला, एही से त चारों ओर छुछुआत फीरेलें [उनको थोड़े में सन्तोष नहीं होता है, इसी से तो चारों ओर छुछुआते फिरते हैं]।

छोरना—छीनना/छीलना। प्र०—तोहार लइकवा जबरदस्ती हमरे धिअवा के हाथ मरोर के पइसवा छोर लिहलस [तुम्हारे लड़के ने जबरदस्ती मेरी बेटी का हाथ मड़ोर कर पैसे छीन लिये]। (२) भोला अपने खेत मे ऊँख छोरत हउअन [भोला अपने खेत में ईख/गन्ना छील रहे हैं]।

छोलना—(दे० छोरना)।

बेचैन हो जाना

[illegible] हो जाना, छौंक जाना। अपेक्षा से कम अन्न पाकर अतृप्तावस्था में हो जाना। प्र०—(१) हमार पूत दरद के मारे [illegible] छौंकिया [illegible] जात बाटे [मेरा पुत्र दर्द के मारे बेचैन होकर-[illegible]]। (२) हमके आज अइसे गहना भूख लागल रहे कि थोड़ कुछ भात मिलले पर छौंकिया गइनी [मुझे उस समय इतनी भूख लगी थी कि थोड़ा और भात मिलने पर छौंकिया गयी]।

ज

जँताना—भार के मारे दबना। प्र०—बनारा भारी पत्थर के नीचे अइसन जँता गइल की ओकरा निकलन के नउबत ना आइल [बेचारा भारी पत्थर के नीचे ऐसा दबा कि जीवित निकलने की नौबत नहीं आई]।

जम्हुआना—जम्हाई लेना। प्र०—आज तोहार नींद पूरा ना भइल बा, एही मारे तू एतना जम्हुआत हउअऽ [आज तुम्हारी नींद पूरी नहीं हुई है इसीलिए तुम इतनी जम्हाइयाँ ले रहे हो]।

जरिआना—रूढ़ होना, जड़ पकड़ लेना। प्र०—उनके बोखरवा जरिया गइल बा। अब उतरे में देर लागी [उनके बुखार ने जड़ पकड़ लिया है; अब उतरने में देर लगेगी]।

जाँ/जा—हैं, थे। 'है' क्रिया का बहुवचन प्रयोग। प्र०—(१) हमनी के आवऽतानी जाँ/जा [हमलोग आ रहे है]। (२) ऊ लोग आवत रहलें जा [वे लगो आ रहे थे]

ना—दबाना/दाबना। प्र०—(१) अरे, ओके चकरिया के पटवा के नीचे जाँत द ऽ त अच्छी तरह बइठ जाई [अरे, उसे चकरी के पाट के नीचे दबा दो तो अच्छी तरह बैठ जायेगा]। (२) ई समनवा अपने बगलिया में जाँत के लेत जा [ये सामान अपनी बगल मे दबाकर लेते जाओ]।

ना—जमना, उगना, उपजना। प्र०—(१) अबहिने जोरन डार द, जेसे सबेरे ले दहिया जाम जा [अभी जामन डाल दो जिससे सबेरे तक दही जम जाय]। (२) अमवा के अँठुलिया घुरवा पर जाम गइल बा [आम की गुठली घूरे पर जम गयी है]।

ना—ठढ खाना, शीतल होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट हो जाना। प्र०—बचवा ठंढा म जुड़ा गइल ह ऽ, एही स सरदी-खाँसी पकड़ लिहलस [बच्चा ठंढे मे ठढ खा गया है, इसी से सर्दी-खाँसी ने पकड़ लिया है]। (२) तोहरा के कोनो तरह देख लिहलीं, बस जियरा जुड़ा गइल [तुम्हें किसी तरह देख लिया, बस मन शीतल/तृप्त हो गया]। (२) तोहसे दुइये बात सुन के हम जुड़ा गइलीं [तुमसे दो ही बातें सुनकर मैं सन्तुष्ट हो गया]।

ना—भिड़ना, लड़ना, झगड़ना। प्र०—(१) दुनो लड़िकवा आपस में जूझ ऽ ताने सन्, केहू जाके छोड़ावत काहे नइखे? [दोनों लड़के आपस में लड़ रहे हैं, कोई जाकर छुड़ाता क्यों नहीं है?]। (२) गीत—हासन-हुसन करबलवा में जुझि गइले आज कतल के राति ह ऽ [हसन हुसैन कर्बला मे लड़कर मर गये हैं, आज कत्ल की रात है]।

जेवना—जीमना, सम्मान या आदर सहित भोजन करना। प्र०—रउरे इहाँ हम छप्पन भोग जेव ऽ तानी आ घर में हमार बाल-बच्चन भूखन मर ऽ ताने सन् [आपके यहाँ मै छप्पन भोग जीम रहा हूँ और घर में मेरे बाल-बच्चे भूखो मर रहे हैं]। (२) गीत—जेवन बइठें रामा सार-बहनोइया, देली सखी सब गारी जी [साले-बहनोई जीमने बेठे हैं (और) सखियाँ गाली दे (गा) रही हैं]।

जोखना—तौलना, तराजू से मापना। प्र०—(१) चार सेर चाउर जोख द ऽ [चार सेर चावल तौल दो]। (२) मुहा०—नाप-जोख कर करना (समझ-बूझ कर करना)। प्र०—समझदार लोग हर काम नाप-जोख के करेला [समझदार व्यक्ति हर काम नाप-तौल कर करते हैं]।

जोगाना—सजोना, सम्भालना, बचाना, सहेजना। प्र०—(१) हम जेतने समनवा जोगावत रहीलें, ऊ ओतने एहर-ओहर छितरावत रहेले [मैं जितना ही सामानों को सम्भालती रहती हूँ, वह उतना ही इधर-उधर बिखेरती रहती है]। (२) कवनो तरह जोगा के एतना पइसा इकट्ठा कइनी कि बिटिउआ के हाथ पीयर कर देई [किसी तरह बचा कर इतने पैसे इकट्ठे कर लिये हैं कि बिटिया के हाथ पीले कर दूँ]।

जोहना—खोजना, ढूढ़ना। प्र०—सब कोना अतरा मे जोह डरनी, हमार नथुनिया ना मीलल [सब कोने-अतरे में ढूँढ़ लिया मेरी नथुनी नहीं मिली]

मुहा०—बाटजोहना—प्रतीक्षा करना। प्र०—हे प्रीतम एतना दिन से तोहार बाट जोहऽतनी अब त घरे आ जा [हे प्रियतम, इतने दिन से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हूँ/राह देख रही हूँ, अब तो घर आ जाओ]।

झ

ना—झींखना, दुखी होना, परेशान होना। प्र०—हम त अपने भाग के ऊपर झखत हई [मैं तो अपने भाग्य के ऊपर झींख रही हूँ]। (२) काम बिगाड़ के अब झखे से का फायदा? [काम बिगाड कर अब परेशान होने से क्या फायदा?]।

ना—आग का नम पड़ जाना, जलता हुई लकड़ी या कोयले का बुझ जाना। प्र०—अगिया देखते-देखत झँवा गइल, तापे से का फायदा? [आग देखते ही देखते बुझ गयी अब तापने में क्या फायदा?]।

सना—जलना या जला देना, झुलसना या झुलसा देना। प्र०—(१) एतना जोर से आगी के लपट उठल की उनके मुँहवे झउँस गइल [इतने जोर से आग की लपट उठी कि उनका मुँह ही झुलस गया]। (२) तू अपने नादानी से अनजवा के सगरो बोझवा झउँस दिहलऽ हऽ [तुमने अपनी नादानी से अनाज के सारे बोझे झुलसा दिये हैं/जला दिये हैं]।

कना—छनकना, तिनकना, झुझलाना, चिढ़ना। प्र०—तनी-तनी से बात मे तूँ झनक जालू, ई हमरा अच्छा ना लगेला [थोड़ी थोड़ी सी बात में तुम छनक तिनक जाती हो, यह मुझे अच्छा नहीं लगता]।

झमकना—इतराना, अठलाना। गहना-जेवर आदि पहनकर गर्वाधिन होना। प्र०—(१) तनी भर ज्यादा का हो गइल बा की देखऽ, कइसे झमक के चलत हई। [थोड़ा भर अधिक क्या हो गया है कि देखो, कैसे इतरा कर चलती है]। (२) देखऽहो, दुलहिन गहना गुरिया पहिर के कइसन झमकऽतारी [देखो जी, दुल्हन गहना गुरिया पहनकर कैसी झमक रही है]।

झुझुआना - अतृप्त अनुभव करना, सन्तोष न होना। प्र०-एतना जोर के भूख लागल रहे की एगो रोटी मिलले पर झुझुआ के रहि गइनी [इतनी जोर की भूख लगी थी कि एक रोटी मिलने पर झुझुआकर रह गया]।

झुराना—सूखना। प्र०—ई साल पानी ना बरसले से सगरा फसल झुरा गइल [इस वर्ष पानी न बरसने से सारी फसल सूख गयी]।

ट

टकटोरना—टटोलना, खोजना, ढूँढना। प्र०—कतनो टकटोरनी हँऽ, भेंटाइल ना कछु छोर [कितना ढूढा, कुछ किनारा नहीं पाया/किसी किनारे से भेंट नहीं हुई]।

टपरा गाना—पछताना, समय निकल जाने पर पश्चाताप करना। प्र०—जब समय रहे त ना चेतलू, अब टपरा गावे से कौनो फायदा नइखे [जब समय रहा तो नहीं चेता अब करने से कोई फायदा नहीं है

पना—पार करना या कर लेना। प्र०—एतना रस्ता त हम टापि अइनी, अब थोड़े मे बचल बा, ऊहो टापि जाई [इतना रास्ता तो मैं पार कर लिया, अब थोड़ा बचा है वह भी पार हो जायगा]।

पाना—निशाने पर लग जाना।

पना—निशाना लगाना। प्र०—तोहार निसाना त चूक गइल। अब हम टीपऽतानी, देखऽ, टिपा जाय त अच्छे बा [तुम्हारा निशाना तो चूक गया। अब मैं निशाना लगा रहा हूँ। देखो, निशाना लग जाय तो अच्छा है]।

टियाना—१ टेंट मे खोंसना (दे० संज्ञा—टेंट)। प्र०—घूस क रकम ले के हाली म टेंटिया लिहलऽ? [घूस की रकम लेकर जल्दी में टेंट में खोंस लो?]। २ टेंटें करना, अनर्गल बोलते जाना। प्र०—आरे चुप रहऽ, बिना मतलब टेंटियात हउअऽ [अरे चुप रहो, बिना मतलब टेंटें करते जा रहे हो]।

ोना—छूना, हाथ से टटोलना, स्पर्श करके किसी वस्तु की वास्तविकता का अन्दाज लगाना। प्र०—(१) उनके मथवा टोके देखऽ, बोखार त नइखे [उनका माथा छूकर देखो, बुखार तो नहीं है]। (२) अँखिया से देखात नइखे। तोहरा के टोके हम अन्दाजा लगवनी हँऽ कि तू ही होखबऽ [आँख से दिख नहीं रहा है। तुमको टटोलकर मैंने अनुमान लगाया कि तुम्हीं होगे]।

ोभना—बीज बोने के लिए जमीन मे छेद करना। प्र०—तू थोरे-थोरे दूरी पर टोभत जा, अउर हम बीया डारत जाईं [तुम थोड़ी-थोड़ी दूरी पर छेद करते जाओ और मैं बीज डालता जाऊँ]

ठ

ठकुआ मार जाना—हक्का-बक्का हो जाना, भौचक्का हो जाना। प्र०—एकाएक उनके बारे मे अइसन बात सून के हमके ठकुआ मार गइल। [अचानक उनके बारे मे ऐसी बात सुनकर मैं हक्का-बक्का हो गयी]।

ड

डगरना—पहिया की भाँति चलना, लुढ़कना, पैरों के बल चलना (शिशु के लिए)। प्र०—(१) देखऽ न, गेनवा डगरि के केतना दूर चलि गइल [देखो न, गेंद लुढ़ककर कितनी दूर चली गयी]। (२) तोहार बचवा अब धीरे-धीरे डगरे लागल होई [तुम्हारा बच्चा अब धीरे-धीरे चलने लगा होगा]।

डभकना—उबलना, उफान की स्थिति मे आ जाना। प्र०—जब दलिया डभके लागे त नून-हरदी डार देबे के चाहीं [जब दाल उबलनी शुरू हो या उफनने लगे तो नमक-हल्दी डाल देनी चाहिए]।

डसाना—बिछाना, बिस्तर लगाना। प्र०—हे प्रीतम, तोहरे खातिर हम सेजिया डसा के तोहार राह देखत बानी [हे प्रियतम, तुम्हारे लिए मैं शय्या बिछाकर तुम्हारी राह देख रही हूँ]।

डहकना—बिलखना, बिलख कर रोना। प्र०—तूँ जोर से डाँट दिहलऽ, एही से बचवा डहकत बा/डहकि-डहकि के रोऊऽता [तुमने जोर से डाँट दिया इसी से बचवा बिलख-बिलखकर रो रहा है]

डहना—कष्ट देना, त्रास देना। प्र०—आरे, तें अपने कुचाल से हमके काहे डहऽतारे रे? [अरे, तूँ अपने कुचाल से मुझे क्यों त्रस्त कर रहा है रे?]।

डुगरना—(दे० डगरना)।

डेकरना—दहाड मारकर या चीखकर रोना अथवा विलाप करना, बिलखना। प्र०—चमेलिया के लरिकवा कहीं बिला गइल बा, एही मारे ऊ एतना डेकरऽतिया [चमेलिया का लडका, कहीं खो गया है इसी से वह इतना विलाप कर रही है]।

ढ

ढकचना—कै करना, उल्टी करना, ओकलाना। प्र०—एतना काहे खा लिहलऽ की तब से ढकचऽतारऽ? [इतना क्यों खा लिया कि तब से उल्टी कर रहे हो?]।

ढरकना—गिरना, उडलना, बहना। प्र०—देखऽ न, सुरहिया के सगरो पनिया ढरकि गइल [देखो न सुराही का सब पानी गिर गया/उड़ल गया]।

ढरकाना—गिराना, उड़ेलना, बहाना। प्र०—ऊ देखऽ, लडिकवा गगरवा के सगरे पनिया अइसहीं ढरका दिहलस [वह देखो, लड़के ने गगरे का सब पानी यों ही ढरका दिया/बहा दिया]।

ढाँसना—बचवा के एतना जोर के खांखी भइल बा कि खोखत-खोंखत ढाँसे लागेला [बच्चे को इतनी जोर की खाँसी हुई है कि खाँसते-खाँसते उल्टी करने लगता है]।

गिरना कर

गिरना। प्र०—(१) बबुआ नींन के मारे एहर ओहर ढिमलाता [बच्चा नींद के मारे इधर उधर लुढ़क रहा है]। (२) हउ देखऽ भोला कइसन गाजा के नसा में ढिमलात चलल आवत हउअन [वह देखो, भोला कैसे नसे मे लुढ़कते हुए चले आ रहे है]।

ढुकना/ढुकाना—भीतर घुस जाना, छिप जाना। प्र०—चूहवा हमके देखते बिलिया में ढुक/ढुका गइल [चूहा मुझे देखते ही बिल में घुस गया]।

त

ततवना—अन्न को हल्का भूनना। प्र०—रहर ततव के दरे से दलिया सोंध आवेले [अरहर को हल्का-हल्का भूनकर दलने से दाल सोंधी आती है]।

तवँकना—तपना, बहुत गर्म होना। प्र०—एतना गरमी परत बा कि धरती आवाँ जइसन तवँकत बिया [इतनी गर्मी पड़ रहीहै कि धरती आवाँ जैसी तप रही है]।

तोपना—ढँकना, मूदना। प्र०—लाज के मारे ऊ दूनों हाथ से आपन अँखिया तोप लिहली [लज्जा के मारे उन्होंने दोनों हाथों से अपनी आँखे ही ढक ली]।

थ

थउँसना—भारी भरकम होने से चलने फिरने में असमर्थ हो जाना, भारी शरीर से बैठ जाना, बैठ जाना। प्र०—ऊ एतना मोटा गइल बाड़ी कि थोड़े दूर चलि के थउँसि जाली [वह इतना मोटी

हो गयी हैं कि थोड़ी दूर चलकर थककर बैठ जाती है]।

थम्हना—रुक जाना। प्र०—पानी थम्ह जाये पर हम पाचन फिर चल देब [पानी रुक जाने पर हम लोग फिर चल देंगे]।

थसकना—थककर या शिथिल होकर बैठ जाना। प्र०—का करीं, कमजोरी के मारे चल ना पावत हईं, एही मे थसक के बइठ जात हईं [क्या करूँ, कमजोरी के कारण चल नहीं पाती इसीलिए थककर बैठ जाती हूँ]।

थुरना—पीटना, मारना। प्र०—रमुआ सराब पीके अपने मेहरारू के एतना थुरलस कि ओकर उठल बइठल मुसकिल हो गइल बा [रमुआ ने शराब पीकर अपनी पत्नी को इतना पीटा कि उसका उठना-बैठना मुश्किल हो गया है]।

द

दउरना—दौड़ना। प्र०—तोहरे बोलवले पर त ऊ दउरत चलि आई [तुम्हारे बुलाने पर तो वह दौड़ता चला आयेगा]।

दहना—जल में बह जाना। प्र०—बाढ़ के पानी में ना जाने केतना लोगन के घर दहि गइल [बाढ़ के पानी में न जाने कितने लोगों का घर बह गया]।

दहवाना—बहा देना, जल में प्रवाहित कर देना। प्र०—गंगा पूजन क के दीया गंगा के जल मे दहवा दीहल जाला [गंगा-पूजन करके दीपक को गंगा के जल में प्रवाहित कर दिया जाता है]

दिकियाना—तंग होना/तंग करना, सताना। प्र०—(१) हम तोहरे बेवहार से दिकिया गइनी [मैं तुम्हारे व्यवहार से तंग आ गयी]। (२) ए, हमके एतना ना दिकियावऽ कि हम घर छोड़ के भाग जाईं [ऐ, मुझे इतना मत तग करो कि मैं घर छोड़कर भाग जाऊँ]।

दीक करना—तंग या परेशान करना (दे० दिकियाना)। प्र०—ई लरिकवा त हमके बड़ा दीक करत बाटे होऽ [यह लडका तो मुझे बहुत तंग कर रहा है, जी!]।

दुलुकना—तेज चाल से चलना। प्र०—लागऽता कउनो खुसी के बात बा, एही से दुलुकत चलल आवत बाने [लगता है कि कोई खुशी की बात है इसी से तेज चाल से चले आ रहे हैं]।

ध

धउरना—धाना, दौडना (दे० दउरना)। प्र०—एतना जोर से मत धउरऽ, सास फूले लागी [इतने जोर से मत दौड़ो, सास फूलने लगेगी]।

धकियाना—धक्का देना, ठेलना। प्र०—गाड़ी रुक गइल बा, दू-चार जने धकिया दऽ त चल पड़ी [गाड़ी रुक गई है, दो-चार जन धक्का मार दो तो चल पड़ेगी]।

धधाना—पुलकित होना, आनन्द विभोर हो जाना। प्र०—बेटवा के बहुत दिन बाद पा के माई धधा के छाती से लगा लिहली [बेटे को बहुत दिन बाद पाकर माँ ने पुलकित हो हृदय से लगा लिया]

धरना —रखना। पकड़ना। प्र०—(१) हमार हँसुलिया तूँ अपना पास धर लऽ नाहीं त कवनो चोर ले जाई [मेरी हँसुली (गले का आभूषण) तुम अपने पास रख लो नहीं तो कोई चोर ले जायेगा]। (२) ओके धर ले आवऽ स, देखऽ, भागल जात बा [उसको पकड़ लाओ तो, देखो, भाग जा रहा है]।

धम्मोरना—धक्का देना, ढकेलना। प्र०—एतना भीड़ में लोग एक दूसरे के धम्मोरत चलल जात हवन [इतनी भीड़ में लोग एक दूसरे को धक्का देते चले जा रहे हैं]।

धिकाना—गरम करना, तपाना। प्र०—खनकवा ठंडा हो गइल बा, बोरसिया पर रख के तनी धिका दऽ त खा लीं [खाना ठंढा हो गया है। बोरसी/सिगड़ी पर रखकर जरा गरम कर दो तो खा लूँ]।

धिराना—धमकाना, धमकी देना, चेतावनी देना। प्र०—देखऽ, बेकार हमके धिरावऽ जनि, हम तोहरे धिरावे से ना डेराइब [देखो व्यर्थ में मुझे धमकाओ मत, मैं तुम्हारे धमकाने से डरूँगा नहीं]।

धीकना—गरम होना, तपना। प्र०—कटोरिया धीक गइल बा, चिउँटा से पकरिहऽ [कटोरी गरम हो गयी है, चिमटे से पकड़ना]।

धुकुर-पुकुर होना—शंका में जी धड़कना, शंकित होकर भयभीत होना, धुकधुकी होना। प्र०—आज हमार परीक्षाफल निकले वाला बा, एही मारे हमार जिउआ धुकुर पुकुर होत बा [आज मेरा परीक्षाफल निकलने वाला है इसी से मेरा जी शंका में धड़क रहा है]।

धोती खोंटना—कमर कसना, तैयार होना। प्र०—ऊ कठिन से कठिन काम करे खातिर धोती खोंट के तइयार हो जाले [वह कठिन से कठिन कार्य के लिए कमर कसकर तैयार हो जाते हैं]।

न

नजरियाना—कुदृष्टि पड़ना या कुदृष्टि डालना। प्र०—(१) बचवा दूध नइखे पीयत, सायद नजरिया गइल बा [बच्चा दूध नहीं पी रहा है, शायद नजरिया गया है]। (२) बचवा दूध नइखे पीयत, साइत कौनो नजरिया दिहले बा [बच्चा दूध नहीं पी रहा है, शायद किसी ने नजरिया दिया है]।

नधाना—हल या गाड़ी में बैल या भैंस का जोड़ा जाना। प्र०—हरवा में बैलवा नधा गइल कि ना? [हल में बैल जुट गया कि नहीं?]।

नवना—झुकना, नीचे की ओर जाना, मुड़ जाना। प्र०—(१) जवन सिर कहू के आगे ना नवेला, ऊ तोहरे आगे नव गइल बा [जो सिर किसी के आगे नहीं झुकता, वह तुम्हारे आगे झुक गया है]। (२) बुढ़ापा के मारे उनके कमर नव गइल बाटे [बुढ़ापे के कारण उनकी कमर ही मुड़ गई है या झुक गयी है]। (गीत) नाहिं नवे पत्थल नाहिं सिर कबहूँ ना नवे बेटी हो कवन देई के कारने सिर आज नवला।

नवाना—झुकाना, नीचे की ओर करना, मोड़ना। प्र०—आ पेड़वा के डरिया एतना ना नवावऽ कि टूट जाय [आ

पेड़ की डाल इतना न झुकाओ कि टूट ही जाय]।

नाधना—जोड़ना। आरम्भ करना। प्र०—(१) अब गाड़िया में बलवन के नाधि द5 [अब गाड़ी में बैलों को जोड़ दो] (२) अब हम बड़हन काम नाधे जात हईं, तोहार सहयोग चाहीं [अब मैं बड़ा काम आरम्भ करने जा रहा हूँ, तुम्हारा सहयोग चाहिए]।

निकरना—निकलना, बाहर होना। प्र०—ऊ घुसल त सामने से बाकी पिछवारे से निकरि गइल [वह घुसा तो सामने से किन्तु पिछवाड़े से निकल गया]।

निकसना—(दे० निकरना)। प्र०—(१) अबहिन घर से निकसल हउएँ, ना जाने कहवाँ खातिर [अभी घर से निकले हैं, न जाने कहाँ के लिए]। (२) ऊ अपने घरवा से कबो न निकसेली [वह अपने घर से बाहर कभी भी नहीं निकलती है]।

निकारना—निकालना, बाहर करना। प्र०—(१) रामबाबू आपन मेहरारू के घर से निकार के ठीक ना कइलें [रामबाबू ने अपनी पत्नी को घर से निकालकर ठीक नहीं किया। (२) उनके मालिक नोकरी से निकार दिहलें [उनके मालिक ने नौकरी से निकाल दिया]।

निकासना—(दे० निकारना)। प्र०—(१) हमके अपने घरे से निकास देबऽ त हम कहाँ जाइब? [मुझे अपने घर से निकाल दोगे तो मैं कहाँ जाऊँगी?]। (२) दुधवा में चिउँटी परल बाऽ निकास दऽ [दूध में चींटी पड़ी है

निखोरना—नाखून से या किसी अन्य उपकरण से किसी वस्तु को थोड़ा-थोड़ा ऊपर से छीलना या काटना। प्र०—छोट-छोट आलू कबले निखोरत रहबू, उसिन के छील लऽ [छोटे छोटे आलुओं को कब तक छीलती रहोगी, उबाल कर छील लो]।

निछुटाना—सपरना, समापन होना। प्र०—काम निछुटाते हम टोनहिन के नजर हो गइनीं [काम समाप्त होते मैं टोनहिन की नजर हो गयी अर्थात काम समाप्त होते ही वह मुझसे बचने लगे]।

निबहना—निर्वाह होना, निभना। प्र०—तोहार उनके रिस्ता आगे निबहि जा, तब जानी [तुम्हारा उनका रिश्ता आगे निभ जाय, तब जानें या तुम्हारे उनके रिश्ते का आगे निर्वाह हो जाय तो जानूँ]।

निबाहना—निभाना, निर्वाह करना। प्र०—हम त तोहरे साथे जइसे तइसे निबाह देइब बाकी ऊ ना निबहिहें [मैं तो तुम्हारे साथ जैसे-तैसे निभा दूँगी किन्तु वह नहीं निभायेंगी]।

निरेखना—ध्यान से देखना, निरीक्षण करना। प्र०—सब केहू देखेला बर बरिअतिया, सासु निरेखेली दमाद [सब कोई वर और बारात देख रहे है (किन्तु) सास दामाद को गौर से देख रही है]।

निहारना—देखना। प्र०—तू हमरे ओर एतना पियार से काहे निहारत हऊ? [तुम मेरी ओर इतने प्यार से क्यो देख रही हो?]।

निहुरना—झुकना। प्र०—(१) ऊ गुफा के भीतर निहुर के जाये के पडेला [उस गुफा के भीतर झुककर जाना पड़ता

निसरना—चूना, टपकना, रिसना। प्र०—छनिया से एतना पानी निसरत हउए की कतहूँ बइठे के जगह नाहीं [छप्पर में इतना पानी टपक रहा है कि कहीं बैठने की जगह नहीं है]।

प

पँइचना—अनाज को सूप में रखकर कंकड़-पत्थर अलग करने की एक विधि। प्र०—चाउर पँइचला से ओ में से कँकर पाथर सब अलग हो जाई [चावल पँइचने से तो कंकड़ पत्थर सब अलग हो जायगा]।

पँवरना—तैरना, पैरना। प्र०—ऊ नदी के एतना चाकर पाट पँवरि के पार करि लिहलन [उन्होंने नदी का इतना चौड़ा पाट तैरकर पार कर लिया]।

पइठना—घुसना, गहराई में जाना, प्रवेश करना। प्र०—हम जइसहीं उनके घरवा में पइठनी, ऊ उठिके चल दिहलीं [मैंने जैसे ही उनके घर में प्रवेश किया, वे उठकर चली गयीं]।

पइसना—(दे० पइठना) प्र०—(गीत) पइसि जगावेली बेटी हो कवन देई उठीं बाबा भइले भिनसार [(कमरे में) प्रवेश करके अमुक देवी बेटी जगाती हैं कि हे पिता उठिए, सबेरा हो गया]।

पगुराना—जुगाली करना। प्र०—(१) गइया के कवनो बीमारी धामि लिहले बा, एही से पगुरात नइखे [गाय को कोई बीमारी लग गयी है इसी से जुगाली नहीं कर रही है]।

—— पिचकना फूली हुई वस्तु का दब जाना प्र हमार पेटवा एतना फूलल रहल, बाकी दवइया से पचक गइल [मेरा पेट इतना फूला था, किन्तु दवा से पिचक गया]।

पटरापड़ना—बहुत अधिक होना, बहुतायत होना। प्र०—अबकी आम के बजार में पटरा परि गइल [इस बार आम का बाजार में बहुतायत हो गया]।

पटरी खाना—मेल खाना, परस्पर सहमति होना। प्र०—कुछ बतियन में हमार उनसे बहुते पटरी खाला [कुछ बातों में मेरा उनसे बहुत मेल खाता है या मेरी उनसे बहुत सम्मति होती है]।

पटरी बइठना—सहमति हो जाना, मान लेना, मित्रता होना। प्र०—देखऽ, जो तूँ हमार कहना ना मनबू त हमार तोहसे पटरी ना बइठी [देखो, यदि तुम मेरा कहा न मानोगी तो मेरी तुमसे दोस्ती न होगी]।

पटाना[१]—शान्त हो जाना, खामोश हो जाना, समाप्त हो जाना। प्र०—(१) उनके बीच बचाव कइले पर झगड़ा पटा गइल [उनके बीच बचाव करने पर झगड़ा समाप्त हो गया]। (२) बाबू जी के देखते उनके लोगन के हल्ला गुल्ला पटा गइल [बाबूजी को देखते ही उन लोगों का हल्ला-गुल्ला शान्त हो गया]।

पटाना[२]—तय करना, समझौता करना। प्र०—(१) ओकर दाम जादा रहल बाकी मोल-भाव कके हम कमे दाम में पटा लिहनी [उसका दाम ज्यादा था किन्तु मोल भाव करके मैंने कम दाम में ही तय कर लिया] (२) आपुसे में दूनो भाई लरि लरि मुअत रहने त

जोखन बीच बचाव करिके उनके आपुस में पटा दिहले [दोनों भाई लड़ लड़ मर रहे थे तो जोखन ने बीच बचाव करके आपस में समझौता करा दिया]।

पतियाना—विश्वास करना, प्रतीति होना। प्र०—(१) तूँ हमरे बात पर पतिया चाहे ना पतिया, बाकी हम सब साँचे कहऽतानी [तुम मेरी बात पर विश्वास करो या न करो किन्तु मैं सब सत्य कह रहा हूँ]। (२) (गीत) तनिएक भभुती उतारो ए महादेव, नइहर लोग पतियासु।

पनकना—किसी पौधे मे पत्ते उगना या फिर से पौधा हरा भरा होना। प्र०—गरमिया में जवन पौधवा सूख गइल रहले सन् अब पनिया बरसे से फेर पनप गइले सन् [गर्मी में जो पौध सूख गये थे, अब पानी बरसने से फिर हरे भरे हो गये]।

पराना—भागना, पलायन कर जाना। प्र०—भजन लाल के पुतवा ना जाने कहवाँ परा गइल [भजन लाल का पुत्र न जाने कहाँ भाग गया]।

परिकना—परचना, हिलमिल जाना। प्र०—उनके दुलार पियार से हमार लरिकवा उनसे अइसन परिक गइल बा कि हमरा के कुछ समझते नइखे [उनके दुलार-प्यार से मेरा लड़का उनसे इतना हिलमिल गया है कि मुझे कुछ समझता ही नहीं]। लोकोक्ति—हमरा उनके मरले के गम नइखे, भगवान के परिकले के डर बा [मुझे मरने का गम नहीं है भगवान के परचने का डर है]

लेटना सोये पड़े रहना प्र०—ऊ कवनो काम-काज ना करि के दिन रात पलरल रहेलें [वह कोई काम-काज न करके दिन रात लेटे पड़े रहते हैं]।

पिराना- दुखना, पीड़ा होना। प्र०—बचवा के पेट पिराता/पिरात हउए, कवनो दवाई दे दऽ [बच्चे क पेट मे पीडा हो रही है, कोई दवा दे दो]।

पुरवाना—साक्ष्य करना, सबूत दिलवाना। प्र०—हम अपने सचाई के बात केहुए से पुरवा सकीलों [मै अपनी सच्चाई की बात का सबूत किसी से भी दिलवा सकती हूँ]।

पोंकना—ढीला पाखाना करना, दस्त आना, पेट झरना। प्र०—बिना अन्दाज के खा लिहले से अपच हो गइल । एही से ऊ रात भर पोंकलस [बिना अन्दाज के खा लेने से अपच हो गया। इसलिए उसने रात भर पतली टट्टी की या उसे रात भर दस्त आया]।

पोंकियाना—खदेड़ना, दौडा लेना। प्र०—ऊ जइसे हमरी ओर बढ़ल, हम उलटे ओके पोकिया लिहली [वह जैसे ही मेरी ओर बढ़ा मैने उल्टे उसे खदेड दिया]।

पोंतना—लीपना, चुपड़ना। प्र०—(१) धनिया आपन घरवा लीप-पोत के चमकवले रहेले [धनिया अपना घर लीप-पोंत कर चमकाए रहती है]। (२) चुल्हवा पीयर माटी से पोंतिहऽ [चूल्हा पीली मिट्टी से पोंतना] (३) रोटिया मे तनी घीउ पोंत दऽ त बचवा पसन्द से खा लेई [रोटी मे थोडा घी चुपड दो तो बच्चा पसन्द से खा लेगा

हो अपना ध्यान [illegible] चाहती हूँ, [illegible] बार [illegible] [illegible] ही आ [illegible] है]।

[illegible]आना--सोने में अंड बंड बकना, बउआना। प्र०--रात भर तू एतना बउआलऽ कि सभे के नींद हराम कर देलऽ [रात भर तुम इतना [illegible] कि दूसरों की नींद हराम कर देते हो]।

[illegible]ना--फंस जाना, व्यस्त हो जाना। प्र०--मोहन अपने [illegible] धन्धा में अइसन [illegible] गइल बाने कि इनके कतहूँ आइल-गइल मुश्किल हो गइल बा [मोहन अपने उस धन्धे में ऐसे व्यस्त हो गये हैं [illegible] गये हैं कि उनका कहीं आना जाना मुश्किल हो गया है]।

[illegible]ना फँसाना। धन्धे को बझवाना। प्र०--का हो, तू [illegible] काम में हमके अइसन बझा दिहलऽ कि हमार कतहूँ आइल गइल मुश्किल हो गइल बा [क्या जी! तुमने तो इस काम में मुझे ऐसा फँसा दिया है कि मेरा कहीं आना जाना मुश्किल हो गया है]। (२) बबुआ काहे [illegible] [illegible], ले आवऽ, हम बझा दीं [बच्चा क्यों [illegible] [illegible] [illegible] लाओ मैं [illegible] दूँ] (३) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] चिरई बझावत रहेले। [illegible] [illegible] [illegible] लेकर चिड़ियाँ फँसाते रहते हैं]।

[illegible]ना दुखना, दर्द होना, पीड़ा होना। प्र०--हमार कपार बहुत जोर से बथऽता, कौनो दवाई देबू? [मेरा सिर बहुत जोर से दुख रहा है। कोई दवा दोगी?]

[illegible]ना--बचाना परहेज करना छाँटना प्र० (१) अइसन ओइसन काम से हम अपना के हरदमे बरावत रहीले [ऐसे-वैसे काम से मैं अपने को सदा ही बचाती रहती हूँ]। (२) जवन कुछ बा ईहे बा, तूँ नीक-नीक बरा के ले लऽ [जो कुछ है सो यही है, तुम बढ़िया-बढ़िया छाँटकर ले लो]।

बवाना--खुलना। प्र०--ना जाने कवन रोग हो गइल बा जे उनके मुँहवे नइखे बवात [न जाने कौन रोग हो गया है कि उनका मुँह ही नहीं खुलता]।

बसाना--बास आना, दुर्गन्ध आना। प्र०--इहवाँ किछु सड़ऽता, एही मारे एतना बसाऽता [यहाँ कुछ सड रहा है, इसीलिए इतनी दुर्गन्ध आ रही है]।

बाँचना--पढ़ना, वाचन करना। प्र०--का करत हउअऽ अखबार बाँचत हउअऽ? [क्या कर रहे हो अखबार पढ़ रहे हो?]।

बाँव जाना--बेकार जाना, निष्फल होना व्यर्थ होना। प्र०--हमार सब कइल-धइल बाँव चलि गइल [हमारा सब किया धरा व्यर्थ हो गया]।

बा--है। प्र०--(१) तोहरे पास रुपया-पइसा बा, खरच करऽ [तुम्हारे पास रुपया-पैसा है, खर्च करो]। (२) बैलगाड़ी से जाये के बा आ ओही से थोरके देरी में लौट के आ जाये के बा [बैलगाड़ी से जाना है और उसी से थोड़ी ही देर में लौट कर आ जाना है]।

बाझना--व्यस्त रहना, फँसा होना या फँस जाना। बझल जाना। प्र०--हम एह घरी खाली नइखीं, एगो जरूरी धन्धा में बाझल बानी [मैं इस समय खाली नही हूँ, एक जरूरी व्यवसाय में व्यस्त हूँ या फसा हुआ हूँ] (२) चिरइया ओह जाल में बाझ गइल बिया अब निकल

ना सको। [चिड़िया उस जाल में फँस गयी है, अब निकल नहीं सकेगी]। (३) हमरे गोदी में आवते लरिकवा बझ गइल [मेरी गोद में आते ही बच्चा बहल गया]।

ा—(मुंह के अर्थ में) खोलना, फैलाना। प्र०—हमार बतिया सुनिके ऊ मुहँ बा के रहि गइलन [मेरी बात सुनकर वह मुँह फैलाकर रह गये]।

ना—(दे० बाना)। प्र०—मुँह बावऽ त देखीं तोहरे गंटइया में का फँसल बा [मुँह खोलो या फैलाओ तो, देखूं तुम्हारे गले में क्या फंसा है]।

ना—बालना, जलाना। प्र०—अन्हार हो गइल, दीया बार दऽ [अन्धेरा हो गया दीपक जला दो]। (२) बहुत जाड़ा बा आगी बार के तापऽ लोगन [बहुत जाड़ा है, आग जलाकर तापो (तुम) लोग]।

आना—जन्म देना, पैदा करना, जनना (विशेषत: पशु के अर्थ में) प्र०—(१) गइया बछवा बिआइल बिया [गाय ने बछड़े को जन्म दिया है]। (२) (गीत)—बहुअरि बेटवा बिअइली तऽ सबके नेवत स्ती म् हो ..(लोकोक्ति)—बिटिया बिअइली देवरे के आस।

छलाना—फिसलना। प्र०—रहिया में काई जमले के मारे हम बिछला गइलीं [रास्ते में काई जमने के कारण मैं फिसल गई]।

जुकना—भड़कना। प्र०—पहिले त ऊ सभे कुछ करे के तइयार रहलें बाकी ना जाने काहें बिजुक गइलें जे अब कुछो करे के तइयार नइखन [पहले तो वह सब कुछ करने को तैयार थे लेकिन न जाने क्यों भड़क गये कि अब कुछ भी करने को तैयार नहीं हैं]।

बिलमना—रुकना, ठहरना। प्र०—रात हो गइल त हम उहवें बिलम गइलीं [रात हो गयी तो मैं वहीं रुक गया]।

बिलमाना—रोकना। प्र०—(१) हम त सीधे चलल आवत रहनी, बाकी उनहीं हमके बिलमा लिहले रहलें [मैं तो सीधे चला आ रहा था किन्तु उन्होंने ही मुझे रोक लिया था]। (२) (गीत) गोड़ तोरे लागीले अँगिला कहरवा हो तनी एक डोलिया बिलमावऽ दुअरा में।

बिलाना—खो जाना, गायब हो जाना। प्र०—हमार गइया ना जाने कहवाँ बिला गइल [मेरी गाय न जाने कहाँ खो गयी]।

बिसवना—अस्त होना, ढलना (दिन अथवा सूर्य के प्रसंग में)। प्र०—जहाँ दिन बिसव जाई, उहें रात्रि में रुकि जाये के पड़ी [जहाँ दिन ढल जायेगा, वहीं रात में रुक जाना पड़ेगा]।

बिसुकना/बिसुखना—मादा पशु का दूध देना बन्द हो जाना। प्र० गइया गाभिन हो गइल बिया, एही से अब बिसुक गइल बिया [गाय गाभिन हो गयी है, इसी से दूध देना बन्द कर दिया है]।

बिसुरना—शोक करना, सिसक सिसक कर रोना। प्र०—बेटवा के गम में हरदम बिसुरत रहेली [बेटे के गम में हरदम दुखी रहती हैं]।

बुझाना—समझ है प्रतीत होता है प्र०—

कमी बा त बस बिआह के। आ ऊ बुझाता कि होई ना [कमी है तो बस विवाह की और यह लगता है कि होगा नहीं]। समझ मे आ जाना। प्र०— (१) अब जादा कुछ मत कहS, हमके सब बुझा गइल [अब ज्यादा कुछ मत कहो, मुझे सब समझ में आ गया]। (२) हमरा त इहे बुझाला कि राजेन्द्र बाबू का राष्ट्र सेवा के सबसे नीमन अवसर ऊहे रहे [मेरी समझ में तो यही आता है कि राजेन्द्र बाबू की राष्ट्रसेवा का सबसे अच्छा अवसर वही था]। समझाना। प्र०—इनके समझा बुझा के घरे ले आवS [इसको समझा बुझाकर घर ले आओ]।

बुतना/बुताना—बुझना, बुझाना। प्र०— (१) हवा में दियवा बुता गइल/बुति गइल या बुता गइल [हवा से दीपक बुझ गया]। (२) खैकवा बन गइल होखे त अगिया बुता दS [खाना बन गया हो तो आग बुझा दो]।

बूकना[1]—चूर्ण करना, सूखा पीसना। प्र०— आँरा, हर्रा, बहेरा तीनों चीज मिलाके बूक के चूरन बना लS, पेट खाती फायदेमन्द होला [आँवला, हर्रा, बहेड़ा तीनों चीजें मिलाकर पीसकर चूर्ण बना लो, पेट के लिए फायदेमन्द होता है]।

बूकना[2]—बढ़ चढ़कर बोलना, बघारना। प्र०—देखS, हमरे आगे फिलासफी मत बूकS, हम तोहरे भोरावे में ना आइब [देखो, मेरे आगे फिलासफी मत बघारो, मैं तुम्हारे भुलावे में नहीं आऊँगी]।

बूझना—समझना। प्र०—हम तोहार बात अच्छी तरह बूझSतानी [मैं तुम्हारी बात अच्छी तरह समझ रही हूँ]।

बेलमना/बेलमाना (दे० बिलमाना)। प्र०— (१) तनी देर बेलम जा त हमहू साथे चलीं [थोड़ी देर रुक जाओ तो मैं भी साथ चलूँ]। (२) अब हमके जादा मत बेलमावS, बहुत दूर जाये के हS [अब मुझे अधिक मत रोको/ठहराओ बहुत दूर जाना है]।

बोकरना—(दे० ढकचना)। प्र०—एतना मत खा जे तुरन्ते बोकरे लागS [इतना मत खाओ कि तुरन्त कै करने लगो]।

भ

भरकना—गीली वस्तु का सूख जाना। फसल पूरी तरह पककर तैयार होना। प्र०— (१) मटिया के लोंदवा फोरिके फइला दS जेमे अच्छी तरह भरक/भरकि जाय [मिट्टी का गोला फोड़कर फैला दो जिससे अच्छी तरह सूख जाय]। (२) खेत के धान भरकि गइल, अब कटाई होखे के चाहीं [खेत का धान अच्छी तरह पक गया है, अब कटाई होनी चाहिए]।

भकोसना—भद्दे ढंग से बड़े-बड़े ग्रास या कौर बनाकर खाना। प्र०—सगरो खैकवा एके साथ भकोस लेबS? आरे, धीरे-धीरे, थोड़े-थोडे कइ के खाS [पूरा खाना एक ही साथ लील लोगे? अरे, थोड़ा-थोड़ा करके खाओ]।

भाखना—देवी देवता आदि की पूजा अथवा चढ़ावे आदि की मनौती करना। प्र०— लरिकवा के तबियत बहुत खराब बा। काली माई के थान पर जा के उनके चढावा भाख लS [लडके की तबीअत बहुत खराब है काली माई के स्थान

पर जाकर उनसे चढ़ावे की मनौती कर लो]।

भेंटना—प्रेम से गले मिलना, स्त्री का मिलने अथवा विदा के समय अपने प्रियजन (नारी पात्र) के गले लग कर अथवा (यदि पुरुष-पिता अथवा भाई है तो) पैर पकडकर विलाप करना। प्र०—बिटिउआ के बिदाई के समै हो गइल सब लोग चलि के भेंट लऽ [बेटी की विदा का समय हो गया, सब लोग चलकर भेंट लो]।

भेंटाना—भेट होना, मिलना, पकड़ मे आना, प्राप्त होना। प्र०—सुख के खोज में दर-दर भटकनी, बाकी सुख कबहूँ ना भेंटाइल [सुख की खोज में दर दर भटकी किन्तु सुख से कभी भेंट नहीं हुई]।

भेंना—भिगोना, अन्नादि को पानी में डाल कर भीगने के लिए रखना। प्र०—आज उरिद के दाल भें/भेंव दीहऽ कचउरी खातिर [आज उर्द की दाल भिगों देना कचौड़ी के लिए]।

भोंकरना—चीत्कार करना, जोर-जोर से रोना। प्र०—तनी से चोट का लागि गइल जे एतना जोर से भोंकरे लगलऽ [थोड़ी सी चोट क्या लग गई कि इतना चीख मार कर रोने लगे]।

भोंकार पारना (दे० भोंकरना)। प्र०—ई देखऽ, तनी से डँटले पर कइसन भोंकार पारि के रोअऽता [यह देखो, जरा से डाँटने पर कैसा जोर-जोर से रो रहा है]।

भोराना भूल जाना खो जाना प्र०—(१) तू जवन कहले रहलू, हम भोरा गइनी [तुमने जो कहा था, मैं भूल गया]। प्र०-(२) हम त आकर मार-मार [illegible] मे भोरा गइनी। [मैं तो उसकी मीठी मीठी बातों में [illegible] गयी]।
फफलाना भरमाना, बहकाना। प्र०—(१) अरे हमरे त्याग भाभा लरिका के [illegible] अइसन भोरा दिहले बानी कि हमरो आर आँखिये नउखु फेरत। [अरे मेरे सीधे सादे लड़के को उन्होंने ऐसा बहका/भरमा लिया है कि मेरी ओर आँख भी नहीं घुमाता] (२) (गीत)—ई दरद भैं गनी कुँवरी के हो, कता राखु भोराय [यह दर्द गनी कुँवरी पर पड़े [illegible] कहाँ भरमा रखा है अथवा फुसलाकर अपना बना लिया है]।

म

मटियाना—शौच आदि से आने के बाद मिट्टी से हाथ धोना। प्र०—फराकित होके आइल बाड़ऽ नऽ, त हथवा मटिया लऽ [शौच से आये हो न। तो हाथ मिट्टी से धो लो]।

मभसना—उमसना, उमस भरी गर्मी होना भरा का गर्मी में [illegible] खराब हो जाना। प्र० (१) बरखा होखले से त अउरू मभसे लागल [वर्षा होने पर तो और उमस हो गयी] (२) भतवा गर्मी से मभसा गइल बा, मत खा [भात गर्मी से उमस गया है, मत खाओ]।

मीजना—मसलना। अंगो को दबाना या मालिश करना प्र० (१) चोखा बनावे खातिर थोरे आलू उसिन के

मीज लऽ [भर्ता बनाने के लिए थोड़े आलू उबाल कर मसल लो] (२) एक बबुनी, हमार देहिया आज बहुत पिराता, तनी मीज दऽ त [ए बच्ची, मेरा शरीर बहुत दुख रहा है जरा दबा दो तो] (३) बचवा के तेल से मीज के सुता दऽ [बच्चे को तेल मालिश करके सुला दो]।

ा—बन्द हो जाना, ढक जाना। प्र०—ओकर ढकनवा अपने से मुंद जाला [उसका ढक्कन अपने आप बन्द हो जाता है]। मुहा—आँख मुद जाना—मर जाना। प्र०—ई नस्वर संसार मे ना जाने कब आँख मुंदि जाई [इस नश्वर ससार मे न जाने कब आँख बन्द हो जाय]।

कना—मोच आ/खा जाना। प्र०—हमार गोड़वा मुरुक गइल बा एही मारे चल-फिर ना सकीले [मेरा पैर मोच मे आ गया है इसलिए चल फिर नहीं सकती]।

ना—बन्द करना, ढँकना। प्र०—दुधवा मृद/मूदि दऽ, नाही त ओमें कीरा-फतिगा परि जाई [दूध ढँक दो, नहीं तो उसमे कीड़ा-पतंगा पड़ जायेगा]।

मुहा०—आँख मूदना—मर जाना। प्र०—भोर होत ऊ आपन आँख मूँद लिहले [भोर होते ही उन्होंने अपनी आँखें बन्द कर लीं अर्थात मृत्यु को प्राप्त हो गये]।

ना—(दे० मूँदना)।

ा—मर जाना, मृत्यु को प्राप्त हो जाना। प्र०—बुढऊ त परे साल मू गइले [बुढऊ तो पिछल साल ही मर गये]

मेरवना—मिलाना। प्र०—चउरा-दलिया एके मे मेरव के खिचड़ी बना लऽ [चावल-दाल एक ही में मिलाकर खिंचड़ी बना लो]।

र

रिगाना—चिढ़ाना, खिझाना, बिराना। प्र०—देखऽ हमरा के मुंह बना-बनाके रिगावऽ मत, नाहीं त हम तोहके पीट देब [देखो मुझे मुँह बना-बना कर चिढाओ मत, नहीं तो मैं तुम्हें पीट दूंगा]।

रिरिआना—गिड़गिडाना, घीं-घीं करना। प्र०—हमरे सामने जब ऊ रिरिआए लागल त हमके ओकरे ऊपर दया आ गइल [मेरे सामने जब वह गिड़गिड़ाने लगा तो मुझे उसके ऊपर दया आ गयी]।

रिसिआना—क्रोध करना, क्रुद्ध होना, नाराज होना। प्र०—तू हमसे काहे रिसिआइल बाडऽ? [तुम मुझसे क्यों नाराज हो?] (गीत)—तोहार कवन बान राजा रोज रिसिआलऽ।

रीन्हना—पकाना (भोजनादि के सदर्भ मे)। प्र०—का करीं, खाली भात-दाल रीन्ह के रखि दिहलीं, तरकारी घर में रहबे ना कइल [क्या करूँ, केवल दाल-भात पका कर रख दिया, तरकारी घर में थी ही नहीं]।

ल

लँफाना—बढ़ाना, लपकाना। प्र०—ओकरे हाथे मे कवनो चीज-बस्तु देखेला त बाँह लफा के छीन लेला [उसके हा' में कोई चीज वस्तु देखता है तो हाथ

लपका कर छीन लेता है]। (गीत)—बहियाँ लफाइ भेद पूछेलें धनिया कवने रंगे [बाँह बढ़ा कर हाल पूछते है कि हे पत्नी! तुम्हारा हाल क्या है]।

कना—दिखाई देना, सूझना। प्र०—(१) एतना दिन हो गइल, ऊ हमके ना लउकने [इतने दिन हो गये, वह मुझे दिखाई नहीं पडे] (२) हमरे अँखिया से कुछ लउकत नइखे [मेरी आँख से कुछ सूझता नहीं]।

खेदना—खदेडना, भगाना दौडाना प्र०—गॉव में डाकू आइल रहने सन्, बाकी सब गाँववालन मिलके ऊ सभन के गाँव के बहरा लखेद दिहले [गाँव मे डाकू आये थे किन्तु सब गॉव वालों ने मिलकर उन सबको गाँव के बाहर खदेड़ दिया] व्यग्य—चार चोर चउदह हमनी के, चोरवा लखेदलन भगनी जा हमनी के, वाह रे हमनी के [चार चोर और चौदह हम लोग, चोर ने दौड़ाया तो हम लोग भाग गये, वाह रे हम लोग!]।

रना—डाल या लता का फल- फूल आदि से भर जाना या लद जाना। प्र०—(१) अबकी आम के गाँछ फल से लदर गइल बाने सन् [अबकी आम की डालें फलो से लदर गयी हैं]। (२) गीत—अब त लदरि गइल मनवा के गँछिया [अब मेरे मन की डाल फल-फूलो से अर्थात् खुशी से भर गयी]।

यानां—ललाना, ललचाना। प्र०—कौनो के कछु खात-पियत देखेलऽ त लरियाये लागेलऽ, ई ताहोर कइसन बान बा? [किसी को कुछ खाते पीते देखते हो तो ललाने लगते हो या ललचाने लगते हो, यह तुम्हारी कैसी आदत है?]।

लावना—लगाना, डालना। प्र०—(१) हम अपने अंगना मे एगो नेबू के पेड लवले बानी [मैंने अपने आंगन मे एक नीबू का पेड़ लगाया है] (२) गीत—एक बेइलि हरि लावेले अपने मन्दिर बीचे हो राम ...। (३) (गीत)—डालना के अर्थ मे—निबिया के डार भइया लावेली हिडोलवा कि झुलि-झुलि. ।

लुकाना/लुकवाना- छिपना (अ. क्रि.), छिपाना (स. क्रि.)। प्र०—(१) बचवा खेलत खेलत ना जाने कहवाँ लुका गइल [बच्चा खेलते खेलते न जाने कहाँ छिप गया]। (२) अरे छुरिया कहवाँ लुकवा दिहले रे, कि मीलत नइखे [अरे, चाकू कहाँ छिपा दिया है रे, कि मिल नहीं रहा है?]।

लोढ़ना—चुनना, तोड़ना (फूल के अर्थ मे)। प्र०—का हो, पूजा खातिर फूल लोढऽतारू? [क्यो जी, पूजा के लिए फूल चुन/तोड रही हो?]।

स

सकारना—स्वीकार करना, मान लेना। प्र०—हम त सकारऽतानी कि हमसे ई गलती भइल [मैं तो यह स्वीकारता हूँ कि मुझसे यह गलती हुई]।

सपरना—पूरा होना, सम्पन्न होना, निर्वाह होना। प्र०—जइसे-तइसे कइके सब काम सपर गइल [जैसे-तैसे करके सब काम सम्पन्न हो गया (गीत)—इनके बिगड़ल बा चलनिया कइसे सपरी [इनकी चाल-चलन बिगड़ गयी है, कैसे निर्वाह होगा?]

सपरना—(स० क्रिया)—पूरा करना, समापन करना, निपटाना। प्र०—(१) तू त आके हमार सभ कमवे सपरा दिहलू [तुमने तो आकार हमारा सब काम ही निबटा दिया] (२) ऊ बेटी के बिआह कइके एक बडा भारी जग्य सपरा दिहलें [उन्होने बेटी का बिवाह करके एक बहुत बड़ा यज्ञ सम्पन्न कर दिया]।

सरपोटना—गीले पदार्थ को चारो ओर से बटोर कर खाना। प्र०—बचवा तनी से भात ढेर से दाल में मिला के बहुते रुचि से सरपोट के खा लेला [बच्चा थोडा सा भात ढेर सी दाल में मिलाकर बहुत रुचि से सरपोट कर खा लेता है]।

सरियाना/सरिहाना—सुलझाना, सहेजना, तरतीबवार लगाना। प्र०—घरवा में चारों ओर जवन समान बिखरल बा ओ सबके सरिया के रख काहे ना देलू? [घर मे चारो ओर जो सामान बिखरे हैं उन सब को सम्भाल कर या सहेजकर रख क्यो नहीं देती हो?]।

सहोथना—बटोरना, इकट्ठा करना। प्र०—ई कुल काहे फइला के रखले हउअऽ, एक जगह सहोथ दऽ [यह सब क्यो फैलाकर रखा है, एक जगह बटोर दो]।

सान्हना—सानना, गूँथना, रूधना। प्र०—तु आटा सान्ह दऽ, हम रोटी पका देइब [तुम आटा सान दो/गूंध दो. मैं रोटी पका दूँगी]। लाक्षणिक अर्थ—फंसाना, सम्मिलित करना। प्र०—देखऽ ई लड़ाई-झगड़ा में हमके मत सान्हऽ, हमार एह से कौनो मतलब नइखे [देखो इस लड़ाई-झगड़े में मुझे मत सम्मिलित करो, हमारा, इससे कोई मतलब नही है]।

सिहाना—ईर्ष्या करना, स्पर्द्धा रखना। प्र०—ऊ अपने भाई के बढ़ोतरी से एतना सिहाता, ई ठीक नइखे [वह अपने भाई की बढ़ती या समृद्धि से इतनी ईर्ष्या रखता है, यह ठीक नहीं है]।

सींझना—पकना, गलना, चुरना। प्र०—(१) चउरा जबले सींझऽता, तबले तरकरियो काटि के रखि दऽ [चावल जब तक पक रहा है, तब तक तरकारी भी काट कर रख दो]। (गीत)—आगे मसवा त सींझेला रसोइया खलरिया हमके देतू न हो। [अरे, मास तो रसोई मे पक रहा है, खाल मुझ दे देतीं]।

सुकुठना—सूख कर चिपक जाना या सिकुड जाना। प्र०—का होऽ, बीमार परल पर त एकदमे सुकुठ गइलऽ [क्या जी, बीमार पडने पड तो एक दम सूख गये]।

सुधियाना—ठीक ठाक करना, सुलझाना संजोना (दे० सरियाना भी)। प्र०—(सुलझाना के अर्थ में)—(१) सगरो कपडा-लता एहर-ओहर फइलल बा, ई सबके सुधिया के रखि दऽ [सभी कपड़े लते इधर-उधर फैले है, इन सबको सहेज कर रख दो]। (२) डोरवा एकदम अझुरा गइल बा. तनी एके सुधिया त दऽ [डोरा एकदम उलझ गया है जरा इसे सुलझा दो दो]।

सुनुगना—सुलगना। प्र०—ऊ दूनोजन के वैमनस्य के आगी बहुत दिन पहिले से सुनुगत रहे [उन दोनो जनो के

वैमनस्य की आग बहुत दिनो से सुलग रही थी]।

सुनुगाना—सुलगाना। प्र०—तू अगिया सुनुगावऽ तब ले हम दलिया धो के ले आवत हईं [तुम आग सुलगाओ तब तक मैं दाल धोकर ला रही हूँ]।

सूतना—सोना, निद्रावश होना। प्र०—बहुत रात हो गइल, जो, खटिया बिछा के सूति रहु [बहुत रात हो गयी, जा खाट बिछाकर सो जा]। (२) (गीत) सूतल हरि अमला के हो जगावे [सोये हुए नशेबाज पति को कौन जगाये]।

सेगना—ठंढा होना, ठंढा करना/सिराना, विसर्जित करना। प्र०—(१) जल्दी खालऽ, नाहीं त खैकवा सेग जाई [जल्दी खा लो, नही तो खाना ठढा पड़ जायेगा] (२) दुधवा सेग दऽ, बड़ा गरम बा [दूध ठडा कर दो, बहुत गरम है] (३) बिआह भइले पर मउर नदी मे सेरा दिहल जाला [विवाह होने पर मौर नदी मे विसर्जित कर दिया जाता है]।

सोझिआना—उलझी हुई वस्तु को सुल झाना, सीधा करना। प्र०—ए बबुनी, देखऽ, ई उनवा अझुरा गइल बा, तनी सोझिआ दऽ [ए बिटिया, देखो, यह ऊन उलझ गया है, जरा सुलझा दो] (२) ई तरवा टेढ़-मेढ़ हो गइल बा, एके सोझिआवे बिना काम ना चली [यह तार टेढ़ा-मेढ़ा हो गया है, इसको सीधा किये बिना काम नही चलेगा]।

ह

*[illegible]—गाय का अपने बच्चे के लिए आवाज देना अथवा बच्चे को बुलाने की प्रक्रिया, रम्भाना। प्र०—गइया अपने बछवा खातिर हँकरऽतिया या हँकरत बिया [गाय अपने बछड़े के लिए रम्भा रही है]।

हऽ/हउए/हवे—है। प्र०—ऊ अबहिने घर से आवत हऽ/हउए/हवे [वह अभी घर से आ रहा है]।

हउआना—जल्दी बाजी करना, शीघ्रता करना। प्र०—एतना जनि हउआ। हउआए मे बनतो काम बिगरि जाई [इतनी जल्दबाजी न करो। जल्दी बाजी करने मे बनता हुआ काम भी बिगड़ जायेगा]।

हउए—है। हमरे लगे एतना रुपया हउए [मेरे पास इतने रुपये हैं]।

हकसना—थकना। प्र०—अब हम जिनगी से हकस गइनी। [अब मैं जिन्दगी से थक गई]।

हगना—मल विसर्जन करना, पैखाना या टट्टी करना। प्र०—दुअरवे पर हगऽतारे रे, मैदान मे काहे नाहीं चलि गइले [द्वार पर ही टट्टी कर रहा है रे, मैदान मे क्यों नहीं चला गया]।

हरखना—हर्षित होना, प्रसन्न होना। प्र०—तोहरे अइला से हमार जियरा हरखि गइल [तुम्हारे आने से मेरा मन हर्षित हो गया]।

हरपेटना/हुरपेटना—पशु का किसी को अपने सर या सींग से टक्कर मारना। प्र०—आरे किनारे हटि जा, नही त गइया हरपेट देई [किनारे हट जाओ नहीं तो गैया टक्कर या सींग मार देगी]।

हींकना—(१) खाद्य पदार्थ मे एक खराब

स्वाद आन प्र०- दलिया हीकऽ तिया, खाइल नइखे जात [दाल में हीक आ रही है, खाई नहीं जा रही है]। (२) गोदना, सुअर को वध करने से पूर्व काँटेदार अस्त्र से बेधकर शिथिल करने की प्रक्रिया। प्र०—सुअरन के मार के पहिले अच्छी तरह हीक दीहल जाला [सुअरो को मारने के पूर्व उन्हें नुकीले हथियार से गोद-गोद कर शिथिल कर दिया जाता है]।

ना—किसी भी द्रव पदार्थ में हाथ डालकर उसे अभद्र तरीके से हिलाना या उथल-पुथल करना। प्र०—(१) दलिया-भतवा हौंड के छोड दिहले, अब ओके हम ना खाइब [दाल-भात हौंडकर छोड दिया है, अब उसको मैं नही खाऊँगा]। (२) आरे पनिया काहे हौंडत बाडे बचवा, गन्दा ना हो जाई? [अरे बच्चा, पानी क्यो हौंड़ रहा है, गन्दा नही हो जायेगा?]।

सना/हुरेसना—बलपूर्वक घुसाना, धसाना, घुसेड़ना। प्र०—बहुत बोलबे न तोरे नटई में डंडा हुड़ेस/हुरेस देइब, समझले? [बहुत बोलेगा तो तेरे गले में डंडा घुसा दूँगा, समझा?]।

टना—लाठी-डंडा के छोर अथवा कोहनी से किसी के शरीर को धक्का देना या मारना, सींग मारना। प्र०—(१) ऊ ओकरे छाती मे लठिया से एतना कस के हुरपेटलस कि ओकरे छाती के हड्डी चरमरा गइल [उसने उसकी छाती में लाठी से इतने जोर से मारा कि उसकी छाती की हड्डी चरमरा गई]। (२) आरे, किनारे हट जा नाहीं त गइया सींग से हुरपेट देई [अरे किनारे हट जाओ नहीं तो गैया सींग मार देगी]।

हुलकाना—भगाना, उड़ाना (पक्षियो के सन्दर्भ मे) प्र०—चिरइयन से फसल बचावे खातिर टीन भा थरिया बजा के चिरइयन के हुलकावल जाला [चिडियों से फसल बचाने के लिए टिन अथवा थाली बजाकर चिडियों को उड़ाया जाता है]।

हूलना—दूध पीते समय बछड़े या बछिया का गाय के थन मे सिर से प्रहार करना। प्र०—बछरुआ जब थन में लागि के हूलेला तबे गइया दूध देले [बछडा जब थन में लगकर हूलता है तभी गाय दूध देती है]।

हूरना—ठूँसना, घुसाना (दे० हुडेसना)। प्र०—सगरो रोटिया एके साथ मुहवाँ मे हूर लिहले? [पूरी रोटी एक ही साथ मुँह मे ठूँस लिया?]।

हेखना—बुरी नजर से देखना॥ प्र०—ऊ हमरे बचवा के अइसने हेखत रहेली [वह मेरे बच्चे को ऐसे ही बुरी नजर से देखती हैं]।

हेरना—ढूढना, खोजना, देखना। प्र०—(१) का हेरऽतारू होऽ? का कुछ हेरा गइल बा? [क्या ढूंढ रही हो जी, क्या कुछ खो गया है?] (२) तू हमके एतना पियार से काहे हेरत हउअऽ? [तुम मुझे इतने प्यार से क्यो देख रहे हो?]।

हेराना—खोना, गुम होना। प्र०—भोला के दुई सौ रुपया ना जाने कहवाँ हेरा गइल [भोला के दो सौ रुपये न जाने कहाँ खो गये]।

होखना—'होना' का रूप। प्र०—ना जाने ऊ एह बेरा कहँवा होखी या होखिहें [न जाने वह इस समय कहाँ होगा या होंगे]।

हेलना—पार होना। प्र०—ए बाबू, जोर से छलाग मार के नलिया हेल जा [ए बच्चा, जोर से छलांग मारकर नाली पार कर लो]।

हेलाना—पार करवाना। प्र०—ई लरिकवा के गोदी मे लेके नलवा के ओह पार हेला दऽ [इस लडके को गोद मे लेकर नाले के उस पार कर दो]।

●●●

अव्यय

क्रियाविशेषण

अ

अकसर— अकेले। प्र०—(गीत)—अस्सिय कोस ससुररिया बसे, कइसे जइबो अकसर [अस्सी कोस पर ससुराल बसा है अकेले कैसे जाऊँगा]।

अकसरहा—प्रायः, बहुधा, अकसर। प्र०—गरमी मे लोग अकसरहा देर रात ले जागत रहेला [गर्मी में लोग बहुधा देर-रात तक जागते रहते हैं]।

अगसर—अग्रसर, आगे। प्र०—रउआँ अगसर होके चलीं हम पीछे-पीछे आवऽतानी [आप आगे होकर चलिए मैं पीछे पीछे आ रहा हूँ]।

अचके—अचानक। प्र०—हम कवनो उमीद ना करत रहनी कि अचके ऊ आ गइलन [मैं कोई उम्मीद नही कर रही थी/रहा था कि अचानक वह आ गये]।

अदबदा के—हठपूर्वक, जिद से। प्र०—जवन काम के वरे हम मना करब, अदबदा के तें ऊहे करबे [जिस काम के लिए मैं मना करूँगी, तू जिदन वही करेगा]।

अनगुते—सबेरे, भोर में। प्र०—रात भर रुकि के अनगुते आ जइहऽ [रात भर रुककर सबेरे/भोर में आ जाना]।

अनचिते—(दे० अचके)। प्र०—हम उनके बतिया करते रहनी कि अनचिते ऊ आ धमकलें [मैं उनकी बात कर ही रहा था कि अचानक वह आ धमके]।

अनचीत—निश्चिन्त, बेखबर। प्र०—(१) एतना काम परल बाटे तबो तू अनचीत बइठल बाड़ [इतना काम पड़ा है तब भी तुम निश्चिन्त बैठी हो]। (२) (गीत) जेकरा ही घरे बाबा कन्या कुआरी से कइसे सूते अनचीत।

अनासे—व्यर्थ, अकारण बेकार। प्र०—(१) ऊ भला आदमी त अनासे प्रचार बन्द कऽ दिहलें [उन भले आदमी ने तो व्यर्थ ही प्रचार बन्द कर दिया]। (२) हम तोहके कुछ कहनी न सुननी तू अनासे हमसे दुस्मनी निकारत हउअऽ [मैंने तुमसे कुछ कहा न सुना, तुम अकारण मुझसे दुश्मनी निकाल रहे हो]।

अनेरे—(दे० अनासे)। प्र०—का बताईं, अनेरे हम तोहसे ई बात छेड़ दिहनी [क्या बताऊँ, व्यर्थ ही मैंने तुम से यह बात छेड़ दी]।

अबले— अब तक, इस समय तक। प्र०—अबले त ई नजर खाली राजेन्द्र बाबू के न देखत रहेऽ [अब तक तो ये आँखें केवल राजेन्द्र बाबू को ही न देखती थीं]।

अबहिन—अभी, सम्प्रति। प्र०—अबहिन ऊ घर के काम-काज में बाझल बाड़ी [अभी वह घर के काम-काज में फँसी है

अबहिने—अभी-अभी, इसी समय। प्र०—अबहिने त हम तोहरे घरे से चलल आवत हईं [अभी-अभी तो मैं तुम्हारे घर से चला आ रहा हूँ/रही हूँ]।

अबेर—देर, विलम्ब। प्र०—(१) हमके काम पर जाए में अबेर होत बा [मुझे काम पर जाने में देर हो रही है]। (२) काहे घबड़ात बाड़ऽ? अबेर सबेर कमवा त होइए जाई [क्यों घबड़ा रहे हो? देर सबेर काम तो हो ही जाएगा]।

अलगरजी—निश्चिन्त, बेफिक्र। प्र०—(कहा०) काँचे पानी दाल मिलाईं जब फफाय तब हरदी, ओकरे पाछे नन मिलाईं, बइठ रहीं अलगरजी [कच्चे पानी में दाल मिलाइए, जब फेन आये तब हल्दी। इसके बाद नमक मिलाइए और बेफिक्र बैठ जाइए]।

अगो—इस वर्ष, इस साल। प्र०—(१) अगो धान के फसल बढ़िया ना भइल बा [इस साल धान की फसल अच्छी नहीं हुई है]। (२) कहावत—पर भुअली सास, अगो आइल आँसु [पिछले साल सास मरी, इस वर्ष आँसू आया]।

आ

आछोधार—बिलख-बिलखकर (रोना)। प्र०—उनके ऊपर अइसन बिपति आइल बा कि आछोधार रोवत रहल बाड़ी [उनके ऊपर ऐसी विपत्ति आई है कि बिलख-बिलख कर रोती रहती हैं]।

इ

इहवाँ—यहाँ इस जगह। प्र०—इहवाँ आवऽ उहवाँ काहे बइठल हउअ [यहाँ आओ, वहाँ क्यों बैठी हो?]।

इहाँ—(दे० इहवाँ)। प्र०—इहाँ हमार कवनो ठेकाना नइखे [यहाँ मेरा कोई ठिकाना नहीं है]।

उ

उहवाँ—वहाँ, उस जगह। प्र०—तूँ जहवाँ जइबऽ, उहवाँ हमहूँ जाइब [तुम जहाँ जाओगे, वहाँ मैं भी जाऊँगा/जाऊँगी]।

उहवें—वहीं उसी जगह। प्र०—तूँ जहवाँ रहेलू, उहवें हमहूँ रहीलें [तुम जहाँ रहती हो, वहीं मैं भी रहती हूँ]।

उहाँ—(दे० उहवा)। प्र०—उहाँ का करे जात हउअऽ, इहाँ आवऽ [वहाँ क्या करने जा रहे हो? यहाँ आओ]।

एइजा—यहाँ, इस जगह। प्र०—एइजा रहि के हम का करब? केहू पूछनहारो बा? [यहाँ रह कर मैं क्या करूँगी? कोई पूछने वाला भी है?]।

एने—इस ओर, इधर। प्र०—ए गोपाल! एने आवऽ [हे गोपाल! इधर आओ]।

एहर—इधर। प्र०—एहर आवऽ, ओहर का रखल बा [इधर आओ, उधर क्या रखा है?]।

एहिजा—(दे० एइजा)। प्र०—एहिजा तोहार गुजारा ना होई, कौनो अउरी ठेकाना ढूंढ़ऽ [यहाँ पर तुम्हारा गुजारा नहीं होगा, कोई और जगह ढूंढो]।

ओ

ओनिए—उधर ही। प्र०—जेनिए तू जइबऽ ओनिए हमहूँ जाइब [जिधर ही तुम जाओगे उधर ही मैं भी जाऊँगी]।

ओने/ओहर—उधर उस ओर। प्र०—आरे

आन मत जा आहर खतरा बाट [अरे उधर मत जाओ, उधर/उस ओर खतरा है]।

ओइजा/ओहिजा—वहाँ, उस स्थान पर। प्र०—जहवाँ तू बतवले रहलऽ, ओइजा/ओहिजा केहू नइखे [जहाँ तुमने बताया था, वहाँ कोई नहीं है]।

ओहीजा—वहीं, उसी स्थान पर। प्र०—जहवाँ तोहार लरिकवा गइल बा, ओहीजा त हमरो बेटवा गइल बा [जहाँ तुम्हारा लड़का गया है, वहीं तो मेरा बेटा भी गया है]।

क

कतहूँ—कहीं, किसी स्थान पर। प्र०—हम का जानी कतहूँ गइल होखिहे [मैं क्या जानूँ, कहीं गये होंगे]।

कतों—(दे० कतहूँ) प्र०—कतो लोकगीत के ध्वनि बा, कतो मुक्तक के छट-पटाहट [कहीं लोकगीत की ध्वनि है तो कहीं मुक्तक की छटपटाहट]।

कबो—कभी, किसी समय भी। प्र०—हमार केहू से कबो बिगाड़ ना भइल [मेरा किसी से कभी बिगाड़ नहीं हुआ] (२) एक दू दिन में कबो आ जइहऽ, हम घरवे रहब [एक दो दिन मे किसी समय भी आ जाना, मैं घर पर ही रहूँगा]।

कन्हइया—कन्धे पर। प्र०—बचवा कहलस ए बाबू, हम थकि गइलीं, कन्हइया ले के चलऽ [बच्चे ने कहा ए पिता, मैं थक गया हूँ, कन्हइया लेकर चलो]।

कले कले—धीरे धीरे प्र०—तनी कले कले चलऽ हो हम तेज ना चलि सकीले [थोड़ा धीरे-धीरे चलो जी, मै तेज नहीं चल सकती]।

कस के—जोर से, दृढता से। प्र०—रसरिया कस के पकड़ले रहिहऽ, नाहीं त हथवा से सरक जाई [रस्सी को जोर से पकड़े रहना, नही तो हाथ से खिसक जायेगी]।

कहिया—किस दिन। प्र०—तू कहिया अइबऽ हम तोहार बाट जोहत रहब [तुम किस दिन आओगे, मै तुम्हारी प्रतीक्षा करती रहूँगी]।

कहियो—किसी भी दिन। प्र०—तूँ कहियो आ के हमार ई काम करि दीहऽ, कवनो जल्दी नइखे [तुम किसी भी दिन आकर मेरा यह काम कर देना, कोई जल्दी नहीं है]।

कहूँ—(दे० कतहूँ)। प्र०—चारो ओर देखि अइनी, कहूँ देखाई ना दिहले [चारो ओर देख आया, कहीं दिखाई नही पड़े]।

कादो—शायद, सम्भवतः। प्र०—कादो ईहो केहू पर ताना भइल बा [सम्भवत/शायद यह भी किसी पर ताना/व्यंग्य हुआ है]।

किहाँ—के यहाँ, के घर, के पास। प्र०—तोहार बाबू रामलखन किहाँ गइल बाने [तुम्हारे पिता राम लखन के यहाँ गये है]।

केने—किधर, किस ओर। प्र०—उनकर घरवा केने बाटे, तनी बता [illegible] [उनका घर किधर है, जरा [illegible]]

केंहर—किधर। प्र०—बबुआ केंहर गइल बाने? [बाबू किधर गये हैं?]

ख

ाली—केवल, मात्र। प्र०—हम त खाली तोहरा के बोलावे चाहत बानी [मैं तो केवल तुम्हें बुलाना चाहता हूँ]।

ाले—नीचे, तल मे। प्र०—गेनवा लुढ़कत-पढकत एकदमे खाले चलि गइल [गेंद लुढकते-पढकते एकदम नीचे चली गई]।

ग

ाते-गते—धीरे-धीरे, शनैः शनैः। प्र०—(१) अरे, गते-गते चलऽ हो, काहें धउरत बाड़ऽ [अरे, धीरे-धीरे चलो जी, क्यों दौड रहे हो?] (२) गते-गते सब काम निबट जाई, जल्दीबाजी करे के कौनो जरूरत ना हऽ [शनैः शनैः सब काम निबट जायेगा, जल्दबाजी करने की कोई जरूरत नहीं है]।

गोंएड़े—पास, समीप, सीमा पर। प्र०—(१) गाँव के गोंएड़े पहुँच के ऊ रोवल शुरू कइ दिहली [गाँव के समीप पहुँचकर उन्होंने रोना शुरू कर दिया] (२) गीत—जब बहिनी अइली गोंएड़वे त भइया भितरइलन। आवऽतारी बाबा के दुलरुई गरब जनि बोलहु [जब बहिन (गाँव की) सीमा पर आयीं तो भैया भीतर हो गये (और अपनी पत्नी से कहा कि) बाबा की दुलारी आ रही हैं उनसे गर्व की बात मत बोलना]।

च

चवे चवे—कदम कदम पर, पग पग पर प्र०—हमरे खातिर त चवे चवे काँटा बिछावल गइल बा [मेरे लिए तो पग पग पर काँटे बिछाये गये हैं]।

ज

जइसे—जइसे तू कहबऽ, ओइसे हम कहि देब [जैसे तुम कहोगे वैसे मैं कह दूँगा]।

जनि—मत, नहीं। प्र०—अइसन काम जनि करिहऽ जेसे तोहार आबरू बिगड़े [ऐसा काम मत करना जिससे तुम्हारा मर्यादा बिगड़े] (२) गीत—आपन राम मे अपने परिछब जनि केह परीछे मोरे राम के ।

जबले—जब तक । प्र०—जब ले तू कहबऽ नाहीं, तबले हम कुछो ना करब [जब तक तुम नहीं कहोगे तब तक मैं कुछ नहीं करूँगा]।

जबहिंने—जभी, जब भी। प्र०- तूँ जबहिंने आदेश देबऽ, ई काम हो जाई [तुम जभी आदेश दोगे, यह काम हो जायेगा]।

जबे/जब्बे—(दे० जबहिंने)।

जवनेगा—जिस तरह, जैसे भी। प्र०—जवनेगा बनि पड़े, ई काम होखे के चाहीं [जिस तरह/जैसे भी बन पड़े यह काम होना चाहिए]।

जहवाँ—जहाँ। प्र०—तू जहवाँ जहवाँ जइबऽ उहवाँ उहवाँ हमहूँ जाइब [तुम जहाँ जहाँ जाओगे वहाँ-वहाँ मैं भी जाऊँगी]।

जहिया—जिस दिन। प्र०—जहिया तू बोलइबऽ ओ ही दिन हम आ जाइब [तुम जिस दिन बुलाओगे, मैं उसी दिन आ जाऊँगा]।

तरह जैसे भी (दे० जवनेगा)

प्र०—जैसा तोहसे बनि पड़े, ओही तरे ई काम कइ डालऽ [जिस तरह तुमसे बन पड़े, उसी तरह यह काम कर डालो]।

जेनिए—जिधर ही। प्र०—जेनिए तोहके मौका लागे ओनिए निकल जाइल करऽ [जिधर ही तुम्हें मौका लगे, उधर ही निकल जाया करो]।

जेने—जिधर। प्र०—जेने माई जाई, ओने बचवो जाई [जिधर माँ जायेगी, उधर बच्चा भी जायेगा]।

त

तइसे—उसी प्रकार उसी तरह। जइसे तू कहबू, तइसे हम कर देइब [जैसे तुम कहोगी, उसी प्रकार मैं कर दूँगी]।

तबले—तब तक। प्र०—जबले तूँ तइयारी करबऽ, तबले हम आपन काम निबटा लेइब [जब तक तुम तैयारी करोगे, तब तक मैं अपना काम निबटा लूँगा]।

तबो—तब भी, तो भी। प्र०—(१) रूपन कवनो पढल-लिखल ना रहलें, तबो रामायण के पाठ सस्वर गावस [रूपन कोई पढ़े-लिखे नहीं थे, तब भी रामायण के पाठ सस्वर गाते थे]। (२) कहावत—निबिया रे करुआइन तबो त सीतल छाहँ, भइया रे बीरनवा तबो त दाहिन बाहँ।

तरे—तले, नीचे। प्र०—तरे जा के बइठ, कोठा पर काहे चढ़ि अइले? [नीचे जाकर बैठ, कोठे पर क्यों चढ़ आया?]।

तहवाँ—तहाँ, उस जगह। प्र०—जहवाँ हमार मन करी तहवाँ हम जरूर जाइब [जहाँ मेरा मन होगा, तहाँ मैं जरूर जाऊँगा]

तहिया—उस दिन। प्र०—जहिया तूँ कहबऽ, तहिया हम आके लिया चलब [जिस दिन तुम कहोगे, उस दिन मैं आकर ले चलूँगा]।

ताबरतोर/ताबड़तोड़—जल्दी-जल्दी, शीघ्रता से। प्र०—इनके कहते ताबड़तोड सब केहू अपने-अपने काम मे लागि गइल [उनके कहते ही सब लोग जल्दी-जल्दी अपने-अपने काम में लग गये]।

तेने—उधर, उस ओर। प्र०—ऊ जेने चाहेलें, तेने ओके भेज देलें [वह जिधर चाहते है, उधर उसे भेज देते हैं]।

ध

धारोधार—बहुत अधिक (रोने के अर्थ में)। प्र०—हम केतना चुप करवलीं, बाकी ऊ धारोधार रोवते जात रहली [मैंने कितना चुप कराया लेकिन वह बहुत अधिक रोती जा रही थीं]।

धीमे—धीरे। प्र०—(१) धीमे बोलऽ, नाहीं त कवनो सुन लेई [धीरे बोलो, नही तो कोई सुन लेगा] (२) तनी धीमे चलऽ हो, हम एतना तेज ना चल सकीलाँ [जरा धीरे चलो जी, मै इतना तेज नही चल सकूँगा]।

न

नइखे—नही, नहीं है। प्र०—(१) जइसन ऊ नीक लागत रहे, ओकर सोभा बखानलो नइखे जात [जैसा वह अच्छा लग रहा था, उसकी शोभा का बखान भी नहीं किया जा रहा है] (२) घबड़ाए

के कवनो बात नइखे, सभ ठीक हो जाई [घबड़ाने की कोई बात नहीं सब ठीक हो जायेगा]।

नगीच—नजदीक, समीप। प्र०—ऊ एतना गुस्सावर बाड़े कि उनका नगीच केह ना आवला [वह इतने गुस्सावाले हैं कि उनके नजदीक/समीप कोई नहीं आता]।

नाहीं—नहीं। प्र०—हम ई काम कबो नाहीं करब [मैं यह काम कभी नहीं करूँगा]।

निगिचा—(दे० नगीच)। प्र०—उनके घरवा दूर नइखे, गइआँ से निगिचा बाटे [उनका घर दूर नहीं है, यहाँ से नजदीक है]।

नियरा/नियरे—(दे० निगिचा)। प्र०—तोहार गउआँ त हमरे गउआँ के नियरे बा [तुम्हारा गाँव तो मेरे गाँव के समीप ही है]।

निरभेद—निश्चिन्त, गहरी नींद में (दे० अनचीन)। प्र०—बेटी के बिआह क के अब ऊ निरभेद सूतल बाने [बेटी का विवाह करके अब वह निश्चिन्त सो रहे हैं]।

प

पंजरे—बगल में ही, पार्श्व में ही। प्र०—पंजरे बइठल हउएँ आ देखनी नाहीं [बगल में ही बैठे हैं और देखा नहीं] (दे० सम्बन्ध वाचक अव्यय के अन्तर्गत भी)।

पटकुनिया/पेटकुनिया—पेट के बल। प्र०—पेटकुनिया लोट जाऽ त तोहार पिठिया दबा देईं [पेट के बल/पट लेट जाओ तो तुम्हारी पीठ दबा दूँ]।

पनरहियन—पन्द्रह दिन, पन्द्रह दिन या उससे अधिक तक। प्र०—जवन काम दुइ दिन में होखे के चाहत रहे, ओमें पनरहियन लागि गइल [जो काम दो दिन में होना चाहिए था, उसमें पन्द्रह दिन से अधिक लग गया]।

पर/परु—गतवर्ष, पिछले वर्ष। प्र०—(लोकोक्ति)—पर/परु मुअली सास, अबें आइल आँस [पिछले वर्ष सास मरी (और) इस वर्ष आँसू आया] विशेष्य के साथ लगने पर यह शब्द विशेषण हो जाता है—दे० विशेषणों के अन्तर्गत 'पर'।

पाछे—पीछे। प्र०—तू आगे चलऽ, पाछे हम आवत हईं [तुम आगे चलो, पीछे मैं आ रहा हूँ]।

पाछे-पीछे—पीछे पीछे। प्र०—आगे आगे तूँ चलबऽ, पाछे-पाछे हमहूँ आइब [आगे आगे तुम चलोगे, पीछे-पीछे मैं भी आऊँगी]।

फ

फजीरे—भोर में, सबेरे। प्र०—रात में एगो गाँव में ठहरि के फजीरे ऊहाँ खातिर प्रस्थान क दिहलें [रात में एक गाँव में ठहर कर बहुत सबेरे वहाँ के लिए प्रस्थान कर दिये]।

फटाक से—झट से, तुरन्त। प्र०—हम जवन काम कहत बानी, फटाक से ओके कर त दऽ [मैं जो काम कह रहा हूँ, उसे झट पट कर तो दो]

फिनु—फिर, पुनः। प्र०- जवन काम खातिर हम मना कइले रहलीं, फिनु तूँ उहे काम करे लगलऽ [मैंने जिस काम के लिए मना किया था, फिर तुम वही काम करने लगे]।

फेन/फेर/फेरु—(दे० फिनु)। प्र०— (१) घरवा ले आके फेर लवट गइलन [घर तक आकर फिर लौट गये]। (२) फेर से कहऽ, का चाहत बाड़ऽ? [फिर से कहो क्या चाहते हो?]। (३) फेरु सुनाइ परल कि मुनिया पास हो गइल [फिर सुनाई पड़ा कि मुनिया पास हो गया]।

ब

बेर—(१) देर, विलम्ब। (२) बार, दफा प्र० (१) तोहार काम एतना जल्दी थोरे होई, अबहिन कुछ बेर लागी [तुम्हारा काम इतना जल्दी थोड़े होगा अभी कुछ देर लगेगी]। (२) केतना बेर हम तोहके समझवली, बाकी तू अपने आदत मे बाज ना अइलऽ [कितनी बार मैंने तुम्हें समझाया, किन्तु तुम अपनी आदत में बाज नहीं आये]।

भ

भकर-भकर—हक्का बक्का होकर या भकुआ बन कर (देखना)। प्र०—हमार बतिया तोहरे पल्ले एकदमे ना पड़ल का जवन भकर भकर हमार मुँह देखत बाड़ऽ? [मेरी बात तुम्हारे पल्ले बिल्कुल नहीं आई क्या, जो भकुआ बन कर मेरा मुँह देख रहे हो?]

भिनही/भिनहिए—सबेर ही, प्र०—रातभर रुकि के भिनहिए चल देबे के बिचार बा [रात भर रुककर सबेरे ही चल देने का विचार है]।

भुइयाँ—भूमि पर, जमीन पर। प्र०—(१) भुइयाँ जनि बइठऽ, खटिअवा पर बइठ जा [जमीन पर मत बैठो, खटिया पर बैठ जाओ] (२) (गीत)—सोने के खटोलवा मइया टूटि-फूटि जइहें हो भुइअवें लोटि जइहे बालक तोहार हो भुइअवें लोट.., [हे माँ सोने का खटोला टूट-फूट जायेगा इसलिए तुम्हारा बालक भूमि पर ही लेट जायेगा]।

म

मुन्हारे—मुहँ अँधेरे, भोर मे सबेरे प्रात. (दे० फजीरे)। प्र०—कौनो तरे रात बिता के मुन्हारे चल देबे के चाहीं जेमे सझा ले गाँव पहुँच जाइल जा [किसी तरह रात बिताकर भोर में ही चल देना चाहिए जिससे शाम तक गाँव पहुँच जाया जाय]।

र

रतिया—रात को। प्र०—(१) रतिया उनके घर मे चोर घुस आइल रहे [रात उनके घर में चोर घुस आया था] (२) (गीत)-रतिया सखि सपन जनायो सजन घरे आयो [हे सखी, रात में स्वप्न दिखा कि साजन घर आये हैं]।

लामे—दूर। प्र०—तोहार घरवा अबहिन बहुत लामे बा का हो? चलत चलत गोड़े

दुखा गइल [तुम्हारा घर अभी बहुत दूर है क्या? चलते चलते पैर दुख गया]।

स

सभत्तर— सब जगह, सर्वत्र। प्र०—घुरहू अपना घरनी से सलाह क क सभत्तर नेवता पटा दिहले [घुरहू ने अपनी पत्नी से सलाह करके सब जगह नेवता भेज दिया]।

ह

हबर-दबर/हरबर-दरबर— जल्दी जल्दी, तेजी से। प्र०—हमरा हबर दबर कइल काम अच्छा ना लागेला, सुचित होके धीरे-धीरे कौनो काम करे के चाहीं [मुझे जल्दी-जल्दी किया काम अच्छा नही लगता। सुचित होकर धीरे धीरे कोई काम करना चाहिए]। (२) (गीत) हरबर-दरबर बरवा चले हरवाहे के जमनल्न रे। धीरे धीरे मोर धीया चले पतिसाहे के जनमल रे [जल्दी जल्दी/तेजी से वर चलता है जो हरवाहे का जन्मा है। धीरे-धीरे मेरी बेटी चलती है जो शाहखान में जन्मी है]।

हरमेस— हमेशा, हरदम। प्र० - हम हरमेस तोहार भला चाहत रहीलां चाहे तु मानS चाहे ना मानS [मैं हमेशा तुम्हारा भला चाहती रहती हूँ चाहे तुम मानो या न मानो]।

हाली से— जल्दी, शीघ्र। प्र०—(१) अइसे तोहके ई बात के सूचना मीली, हाली से हमके खबर कर दीहS [जैसे ही तुमको इस बात की सूचना मिल जायेगी, जल्दी से मुझे खबर कर देना। (२) (गीत)— सोनार भइया के हाली भेजहु, हाली बेगि टिकवा ले आवे हो [सोनार भइया को हाल भेज दो कि जल्दी से जल्दी या शीघ्रातिशीघ्र टीका (बेंदी) ले आवे]।

हेठा/हेठे- नीचे। प्र०— ऊ हेठे रहने ऊपर नाहीं [वह नीचे रहते है, ऊपर नहीं]।

हेरफेर— बार बार। प्र० हेरफेर वह बनिया काहे दोहरावत जात बाड़ कवनो अउरो बात करS [और बार बही बात क्यों दोहराते जा रहे हो? कोई और बात करो]।

होने—(दे० आने)। प्र० हम ओने उनके होने जात देखले रहलीं [मैंने तो उन्हें उधर जाते देखा था]।

सम्बन्धबोधक अव्यय

अ

अइसन/अइसे—ऐसा, ऐसे, समान। प्र०—तोहरे अइसन/अइसे त हम कौनो आदमिये ना देखलीं [तुम्हारे ऐसे/समान तो मैं कोई आदमी ही नहीं देखती हूँ]।

आखत/आछत—रहते, होते हुए, उपस्थिति में। प्र०—(१) हमरे आखत तोहके कौनो दुख ना उठावे के पड़ी [मेरे रहते/होते हुए तुम्हें कोई दुख नहीं उठाना पड़ेगा] (२) तोहरे आछत ऊ हमके गरिया के भागि गइल? [तुम्हारी उपस्थिति में वह मुझे गाली देकर भाग गया?]।

ख

खानी—मामन, भाँति, तरह (दे० अइसे)। प्र०—(१) बदकिस्मती मयभाउत माई खानी सटका ले के खड़ा बिया। [बदकिस्मती सौतेली माँ की तरह सटका/छड़ी लेकर खड़ी है]।

ग

गवें—तरह, प्रकार। प्र०—एही गवें ऊ दिन रात माई के रट लगवले रहेले [इसीप्रकार वह दिन-रात माँ की रट लगाये रहता है]।

ज

जइसन/जइसे—जैसा, जैसे, समान, सदृश। प्र०—उनके जइसन ईमानदार त हम कतहूँ ना देखले हईं [उनके जैसा ईमानदार तो मैंने कहीं नहीं देखा है]।

जरी-जरी—किनारे-किनारे। प्र०—खेतवा के जरी-जरी पगडंडिया पर चलत जइहऽ [खेत के किनारे-किनारे पगडंडी पर चलते जाना]।

त

तरे[१]—तले, नीचे। प्र०—निबिया के पेड़ तरे छावं में बइठल होइहें [नीम के पेड़ के नीचे छाया के बैठे होंगे]।

तरे[२]—समान, तरह। प्र०—(१) तोहरे तरे त हम कौनो के ना देखली हँऽ [तुम्हारे समान तो मैंने किसी को नहीं देखा है] (२) हमरे तरे हाथ चलावऽ त काम जल्दी सपरी [मेरी तरह हाथ चलाओ तो काम जल्दी निपटेगा]।

प

पाछे[१]—पीछे। प्र०—तूँ हमरे पाछे लागि के चलत चलऽ [तुम मेरे पीछे लग कर चलते चलो]।

पाछे[२]—कारण, लिए, खातिर। प्र०—(१) तोहरे पाछे हम के एतना बेइज्जती सहे के परल [तुम्हारे कारण मुझे इतनी बेइज्जती सहनी पड़ी] (२) तोहरे पाछे हम आपन जान देबे के तइयार बानी [तुम्हारे लिए मैं अपनी जान देने को तैयार हूँ]।

ब

बदे—लिए। प्र०—तोहरे बदे हम सब कुछ निछावर करे के तइयार हईं [तुम्हारे लिए सब कुछ निछावर करने के लिए तैयार हूँ]।

बेग—समय। प्र०—आखिरी पखवारा सबेरे के बेग रहे [आखिरी पखवारा, सबेरे का समय था]।

ल

लगले—साथ ही। प्र०—एही लगले तूँ ऊहो काम निपटा लऽ [इसी के साथ ही तुम वह भी काम निपटा लो]।

लगे—साथ, समीप। प्र०—बाबूजी के लगे रहले में बहुत सुख मीलला [बाबू जी के पास रहने में बहुत सुख मिलता है]।

ले—तक। प्र०—जब ले हम ना आईं तब ले तू इहवें रहिहऽ [जब तक मैं न आऊँ, तब तक तुम यहीं रहना] (२) कहा०—जब ले करीं पूता-पूता तब ले चलाईं आपन बूता।

लेखे—लिए, हेतु। प्र०—(१) तोहरे लेखे जवन बतिया ठीक साबित होले, ओकरे लखे उह बतिया बेठीक हो जाले [तुम्हारे लिए जो बात ठीक साबित होती है, उसके लिए वही बात बेठीक हो जाती है] (२) (गीत) तोहरे लेखे ए अम्मा आँगनी के आँच, हमरे लेखे ओही अँगना मिलल बयार।

स

सोझा – सामने। तुलना में, समता में। प्र० – (१) हम ससुर भसुर से परदा करीले एही से उनके सोझा ना होइले [मैं अपने ससुर जेठ से पर्दा करती हूँ इसीलिए उनके सामने नहीं होती] (२) सुनरापा में उ गनी के पतोहू के सोझा कुछऊ नइखे [सुन्दरता में वह गनी की पतोहू की तुलना में कुछ भी नहीं है]।

ह

हेठे—नीचे, नीचे के स्थान पर। प्र०– राजन हमरे घर के हेठे रहेलन [राजन मेरे घर के नीचे रहते हैं]।

●●●

समुच्चयबोधक अव्यय

अ

अउर—और, तथा। प्र०—राम अउर स्याम दूनो सगे भाई हउअन [राम और श्याम दोनों सगे भाई हैं]।

आ

आ—(दे० अउर)। प्र०—(१) रमकलिया आ गुलबिया दूनो अपने समुरे चलि गइली सँ [रामकली और गुलाबी दोनों अपनी ससुराल चली गईं] (२) बबुआ काल्हि अइलें आ आजुए चलि गइलें [बबुआ कल आये और आज ही चले गये]।

आकि—या, अथवा। प्र०—ई० लेबऽ आकि ऊ लेबऽ, ठीक-ठीक बतावऽ [यह लोगे अथवा वह लोगे, ठीक ठीक बताओ]।

आतऽ—या तो, चाहे। प्र०—देखऽ, ई लऽ आतऽ ऊ लऽ, दूनो में से एगो हाली से उठा लऽ [देखो, यह लो या तो वह लो, दोनो में से एक जल्दी से उठा लो]।

इ

इहाँले कि—यहाँ तक कि। प्र०—हम सगरो गहना गहना गुरिया उनके सउँप दिहनी, इहाँले कि नाक के नथुनिओ उतार के दे दिहनी [मैंने उन्हें अपने सारे गहने उन्हे सौंप दिये, यहाँ तक कि नाक की नथुनी भी उतार कर दे दी]।

ए

एही खाती—इसीलिए। प्र०—उहवाँ जाये मे बहुत खतरा बा एही खाती हम तोहके मना करत बानी [वहाँ जाने मे बहुत खतरा है इसीलिए मैं तुमको मना कर रही हूँ]।

एही बेरे (दे० एही खाती)। प्र०—तोहसे कुछ जरूरी बात करे के रहे, एही बेरे हम तोहके बोलवली हँऽ [तुमसे कुछ जरूरी बात करनी थी इसलिए मैंने तुम्हें बुलाया है]।

क

काहें कि—क्योंकि। प्र०—तू हमके कुछ मत दऽ, काहे कि हम तोहार एहसान लेबे ना चाहत बानी [तुम मुझे कुछ मत दो, क्योकि मैं तुम्हारा एहसान नहीं लेना चाहता हूँ]।

की—कि। प्र०—ऊ कहली की आजु उनके नेओता जाये के बा [उन्होने कहा कि आज उनको न्योता जाना है]।

ज

जइसे—जैसे। प्र०—तूँ तऽ हमसे अइस डेरात हउअऽ जइसे हम कवनो शेर-बाघ होखीं [तुम तो मुझसे ऐसे डर रहे हो जैसे मैं कोई शेर-बाघ होऊँ]।

जनुक—मानो, जानो, जैसे। प्र०—बीना हिलले-डोलले ऊ अइसन ठाढ़ि रहे जनुक कौनो पुतरी ठाढ़ होखे [बिना हिले-डुले वह ऐसे खड़ी थी मानो कोई पुतली खड़ी हो]।

जे[१]—कि। प्र०—राजेन्द्र बाबू के व्यक्तित्व

अइसन रहे जे हरदम आगहीं रहत रहनी [राजेन्द्र बाबू का व्यक्तित्व ऐसा था कि हरदम आगे ही रहते थे]।

जे²—जो। प्र०—हम तोहरा के का कहि दिहनी जे तू एतना लाल-पीयर होखे लगलऽ? [मैंने तुम्हें क्या कह दिया जो तुम इतने लाल-पीले होने लगे]।

जेसे—जिसमें, ताकि। प्र०—तोहार चाल चलन अइसन होखे के चाही जेसे केहू तोहरे पर अंगुरी ना उठा सके [तुम्हारा चाल-चलन ऐसा होना चाहिए जिससे कोई तुम्हारे पर उगली न उठा सकें]।

त

त—तो। प्र०—हम ओहर से आवत रहनी त रहिये में ऊ मील गइले [मैं उधर से आ रहा था तो रास्ते में ही वह मिल गये]।

तबले—तब तक। प्र०—(१) तू थोरही दूर पहुँचबऽ तबले हम धउर के पहुँच जाइब [तुम थोड़ी ही दूर पहुँचोगे तब तक मैं दौड़कर पहुँच जाऊँगा] (२) जब ले हम ना कहीं तब ले तूँ इहवें ठाढ़ रहिहऽ, समझलऽ? [जब तक मैं न कहूँ तब तक तुम यहीं खड़े रहना, समझे?]।

तबो—तब भी। प्र० हम एतना समझवनी तबो ऊ आपन जिद ना छोड़लन [मैंने इतना समझाया तब भी उन्होंने अपनी जिद नहीं छोड़ी।] (लोकोक्ति)—निबिया रे करुआइन तबो त सीतल छाहँ। भइया रे बीरनवा तबो त दाहिन बाहँ [नीम कड़वी होती है तब भी (उसकी) छाया शीतल होती है (उसी प्रकार) भैया खराब भी होता है तब भी दाहिनी बाँह होता है]।

न

ना—न। प्र०—ना उनके भूख लागेला ना पियास [न उन्हें भूख लगती है न प्यास]।

नाकि—न कि। प्र०—अरे, इ सुशीला हई ना कि प्रभा, तू चीन्हत नइख? [अरे, यह सुशीला है न कि प्रभा, तुम पहचान नहीं रही हो?]।

नातऽ—न तो। प्र०—ई नातऽ चोर हऽ नातऽ जुआरी, एके कउन बात के सजाय दीहल जात बा? [यह न तो चोर है न तो जुआरी, इसे किस बात की सजा दी जा रही है?]।

नाहींतऽ—नहीं तो। प्र०—सीधे से आपन गलती कबूल कऽ लऽ, नाहीं त हम तोहके माफ ना कर सकब [सीधे से अपनी गलती कबूल कर लो, नहीं तो मैं तुम्हें माफ नहीं कर सकूँगा]।

ब

बलु—भले ही। प्र०—(गीत)—अइसन तपसिया से धीया नाहीं बिअहबि बलु धीया रहिहैं कुआँरि [ऐसे तपस्वी से बेटी नहीं ब्याहूँगी, भले ही बेटी क्वाँरी रह जायें]।

बलुक—बल्कि, प्रत्युत। प्र०—सराब के लत तूँ एकदमें छोड़ दऽ, बलुक ओकरे बदले पान-तमाकू भले अपना लऽ [शराब की आदत तो तुम एकदम ही छोड़ दो बल्कि उसके बदले पान-तम्बाकू भले ही अपना लो]।

बाकिर—किन्तु, परन्तु, लेकिन। प्र०—उनके

बारे मे हम बहुत कुछ जानत हईं बाकिर कहे के हिम्मत नइखे परत [उनके बारे में मैं बहुत कुछ जानती हूँ लेकिन कहने को हिम्मत नहीं पड़ रही है]।

बाकी--(दे० बाकिर) प्र०--हम अपने मन के बहुत समझावत बानी बाकी ई मन हऽ जे कुछ समझते नइखे [मैं अपने मन को बहुत समझा रही हूँ किन्तु यह मन है कि कुछ समझता ही नहीं]।

बाल्‌--(दे० बल्‌, बलुक) प्र०--हम आपन मोकदमा ना हटाइब बाल्‌ एकरे पीछे आपन जमीन-जयदाद सब बेच देइब [मैं अपना मुकदमा नहीं हटाऊँगा बल्कि इसके पीछे अपनी जमीन-जायदाद सब बेच दूँगा]।

भ

भा--या, अथवा, वा। प्र०--(१) मीरा भा लछमी कउनो घर में होखी त भेज दीहऽ [मीरा या लक्ष्मी कोई घर मे होगी तो भेज देना] (२) कालि अइहऽ भा परसों, बाकी अइहऽ जरूर [कल आना अथवा परसों, किन्तु आना जरूर]।

म

मानू--मानो, जानो। प्र०--तू त हमरे साथे अइसन बेवहार करत हउअऽ मानू हम तोहार दुसमन होखीं [तुम तो मेरे साथ ऐसा व्यवहार कर रहे हो मानो मैं तुम्हारा दुश्मन होऊँ]।

माने--(दे० मानू) प्र०--तोहरे बात-बेओहार से अइसन लागऽता माने सगरी खोट हमरे में होखे [तुम्हारे बात-व्यवहार से ऐसा लगता है मानो सभी खोट (बुराई) मुझमें ही हो]।

●●●

विस्मयादि बोधक अव्यय

आ

आरे!—अरे। प्र०—आरे! ई का हो गइल। [अरे! यह क्या हो गया!]।

आरे दइब!—हे भगवन/भगवान! प्र०—आरे दइब! हम कउन पाप के सजा भोगत हईं! [अरे भगवान! यह मैं किस पाप की सजा भुगत रहा हूँ]।

आरे माई!—अरे माँ! प्र०—आरे माई! ई पहाड़ जइसन जिनगी कइसे कटी! [अरे माँ, यह पहाड़ जैसी जिन्दगी कैसे कटेगी!]

आरे बाप!—अरे बप्पा!। प्र०—आरे बाप! ई हमरे कउने गुनाह के सजा हऽ! [अरे बप्पा, यह मेरे किस गुनाह की सजा है!]।

ए

ए दादा—अरे दद्दा!, हाय राम! प्र०—ए दादा! ई कुल का सुनत हईं, हो! [हाय राम! यह सब क्या सुन रही हूँ जी!]।

क

का![1]—क्या (आश्चर्य सूचक)। प्र०—का! उनके घर मे चोरी हो गइल! [क्या! उनके घर में चोरी हो गई!]।

का?[2]—क्या (प्रश्न सूचक)। प्र०—(१) मुन्नी के माइयो उहाँ जइहें का? [मुन्नी की माँ भी वहाँ जायेगी क्या?](२) का हम कउनो चोर उचक्का हईं? [क्या मैं कोई चोर उचक्का हूँ?]।

च

शाबस!—शाबाश!, वाह वाह!। प्र०—शाबस! तोहरे सफलता से हमार छाती जुड़ा गइल [शाबाश! तुम्हारी सफलता से मेरी छाती शीतल हो गयी] (२) लोकोक्ति - आन के आटा आन के घीव शाबस शाबस बाबाजी [दूसरे का आटा दूसरे का घी, शाबाश-शाबाश बाबाजी!]।

ध

धनि-धनि!—धन्य धन्य!। प्र०—धनि धनि! तोहरे जइसन सपूत भगवान सबके दे [धन्य धन्य! तुम्हारे जैसा सुपुत्र भगवान सबको दे]।

धनि-भाग!—धन्य भाग्य। प्र०—धनि भाग, जे रउआँ हमरे कुटिया में पदार्पण कइनी। [धन्य भाग्य, कि आपने मेरी कुटिया में प्रवेश किया!]।

ब

बक!—धत्!। प्र०—बक, अइसन गन्दा बात सुने के हम आदी नाहीं [धत्! ऐसी गंदी बात सुनने का मैं आदी नहीं हूँ]।

बाह-बाह!—वाह वाह! प्र०—बाह-बाह! आज तू अपने काम से कुल के नाम उजागर कइ दिहलऽ [वाह-वाह! आज तुमने अपने काम से कुल का नाम उजागर कर दिया]

भ

कू! (दे० धकू)। प्र०—भकू! हमसे बेकार के बात मत करऽ [धत्! मुझसे बेकार की बात मत करो!]।

ाई रे माई!—अरी माँ। प्र०—माई रे माई! एतना दुखवा हम कइसे सही रे माई! [अरी माँ! इतना दुःख मैं कैसे सहूँ माँ!]।

ार बढ़नी रे!—(इस प्रयोग का हिन्दी की अन्य भाषाओं में कोई विकल्प नहीं मिलता। प्र०—मार बढ़नी रे! अइसन तिरिया चरित्तर त हम कतहूँ ना देखल हई [अरे राम! ऐसा तिरिया-चरित्र तो मैंने कहीं नहीं देखा है]।

ल

.ऽ!—लोऽ!। प्र० लऽ! अब हमरो पर तोहार बिष बान चले लागल! [लो! अब मुझ पर भी तुम्हारा विष-बाण चलने लगा!]।

स

चहूँ!—सच! । प्र०—सचहूँ! ई त बहुत खतरनाक आदमी देखाना! [सच! यह तो बहुत खतरनाक आदमी दिखाई दे रहा है!]।

ाँचो!—(दे० सचहूँ!)। प्र०—साँचो! तोहरे जइसन ईमानदार आदमी दीया ले के खोजलो पर ना मीली! [सच! तुम्हारे जैसा ईमानदार आदमी दीपक लेकर ढूढ़ने पर भी नही मिलेगा!]।

ह

हँ!—हाँ!। प्र०—हँ! ईहे हमहूँ सोचऽतानी [हाँ! यही मै भी सोच रहा हूँ]।

हँ हो!—हाँ जी! । प्र०—हँ हो! हमहू ओकर कारनामा सुनली हँऽ, केतना सरम के बात बा! [हाँ जी! मैंने भी उसका कारनामा सुना है, कितने शर्म की बात है!]।

हूँ—हाँ! प्र०—हूँ! त तूँ अब हमसे बदला लेबे पर उतारू होई गइलऽ! [हाँ! तो तुम अब मुझसे बदला लेने को कटिबद्ध हो ही गये!]।

हूँ-हूँ!—हाँ-हाँ!। प्र०—हूँ-हूँ! सुनावत जा, जेतना सुनावे के होखे! [हाँ-हाँ! सुनाते जाओ जितना सुनाना हो!]।

हे जी!—अजी!। प्र०—हेजी! ई का सुनत हई! [अजी! यह क्या सुन रहा हूँ!]।

हेरे!—अरे!/अरी!। प्र०—(१) हे रे! ते का कहत बाडे? [अरे! तू क्या कह रहा है?]। (२) हेरे! तें ई सब सुन के चुप कइसे रहि गइले? [अरी! तू यह सब सुन कर चुप कैसे रह गयी?]।

●●●